ओरिजनल स्टीकर एवं मिथिला पब्लिकेशन की पट्टी देखकर लें।

*यं शैवाः समुपासते शिव इति ब्रह्मेति वेदान्तिनो बौद्धा बुद्ध इति प्रमाणपटवः कर्त्तेति नैयायिकाः *तिथिर्वारश्च नक्षत्रं योगः करणमेव च *श्रीगणेशाय नमः *लक्ष्मीः स्यादचला तिथिश्रवणतो वारात्तथायुश्चिरं नक्षत्रं कृतपापतापशमनं योगो वियोगापहः *गणाधिपोऽर्कश्च शशी धरासुतो बुधो गुरुर्भार्गवसूर्यनन्दनौ *

*अर्हन्नित्यथ जैनशासनरताः कर्मेति मीमांसकाः सोऽयं वो विदधातु वाञ्छितफलं त्रैलोक्यनाथो हरिः *पञ्चाङ्गस्य फलं श्रुत्वा गङ्गास्नानफलं लभेत् *मकरन्दानुसारि *सर्वाभीष्टकरन्तथैव करणं पञ्चाङ्गमेवं स्फुटं श्रोतव्यं गणकाननात्प्रतिदिनं श्रेयस्करं सिद्धिदम् *राहुश्च केतुश्च परं नवग्रहाः कुर्वन्तु वः पूर्णमनोरथान् सदा*

*तिथ्यम्बुवृद्धं करणारविन्दं पर्वप्रवालं सुकरावतारम् * *विदेहजाजन्मभुवोऽन्तराले कामेश्वरीये सदनेऽतिरम्ये * *अपेक्षितं सर्वमिहोपदिष्टं विसृष्टमन्यत्र नृणां यदिष्टम् *

*योगोपबन्धं मनुजैरजस्रं सरोऽवगाह्यं तिथिपत्रमेतत् * *गिरोनिकेते निरतैर्निबद्धं बुधैर्विबृद्धिं लभतां सदेदम् * *ततोऽधिदेशं विततं मुदेऽदो विपश्चितामर्चनमातनोतु *

श्रीसीतारामाभ्यान्नमः



दक्षिणे लक्ष्मणो यस्य वामे च जनकात्मजा।
पुरतो मारुतिर्यस्य तं वन्दे रघुनन्दनम्॥

# विश्वविद्यालय-पञ्चाङ्गम्

शकाब्दः १९३९-४०

जगल्लग्नम्-१०।२६




| विक्रमसंवत् | २०७४-७५ |
|---|---|
| लक्ष्मणसंवत् | ९०८-९०९ |
| कलिसंवत्सरः | ५११९ |

राजा - सूर्यः
वर्षा - ५
मन्त्री - बुधः
धान्यम् - ७

कार्तिके महाकुम्भयोगः सिमरियाधाम्नि

## सन् १४२५ साल

कामेश्वरसिंहदरभङ्गासंस्कृतविश्वविद्यालयप्रकाशितम्

प्रधानसम्पादकः- पं.श्रीरामचन्द्र झा
पूर्वप्राचार्यः,स्नातकोत्तरज्यौतिषविभागस्य
चलदूरवाणी-9430063648

वर्षलग्नम्-१०१




| शालिवाहनशकाब्दः | १९३९-४० |
|---|---|
| भारतीयस्वतन्त्रताब्दः | ७०-७१ |
| खृष्टाब्दः | २०१७-१८ |



संवत् २०७४-२०७५

*प्रवर्त्तकः- डॉ. रामकरण शर्मा, पूर्वकुलपतिः *संरक्षकः-डॉ. सर्वनारायण झा, कुलपतिः *निदेशकः - डॉ. गंगेश ठाकुरः *

सहसम्पादकः - पं.श्रीशिवाकान्त झा *गणितकर्त्ता सम्पादकश्च - पं.श्रीराकेशकुमार झा, पं. श्रीवरुणकुमार झा *

* मुद्रक एवं वितरक- मिथिला पब्लिकेशन, अम्बरटावर 201, एग्जीबिसनरोड, पेट्रोल पम्प से दक्षिण, पटना-800001 (विहार)। चलदूरवाणी-अजय मिश्र- 8298824189, अंशुमिश्र- 9122341760. *सूचना-१९४०-४१ शकाब्दस्य विश्वविद्यालयपञ्चाङ्गं १९४० शकाब्दस्य ज्येष्ठमासे प्रकाशमेष्यति *मूल्यम् १५०.०० रूप्यकाणि * विदेशे मूल्यम् $१० डॉलर *

## आनन्दादियोगचक्रम्

| योगनाम | सू. | चं. | मं. | बु. | वृ. | शु. | श. | फलम् |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| आनन्दः | अश्वि. | मृ. | आश्ले. | ह. | अनु. | उषा. | शत. | सिद्धिः |
| कालदण्डः | भ. | आ. | म. | चि. | ज्ये. | अभि. | पूभा. | मृत्युः |
| धूम्रः | कृ. | पुन. | पूफ. | स्वा. | मू. | श्रवणा | उभा. | दुःखम् |
| धाता | रो. | पु. | उफ. | वि. | पूषा. | धनि. | रे. | शुभः |
| सौम्यः | मृ. | आश्ले. | ह. | अनु. | उषा. | शत. | अश्वि. | सुखम् |
| ध्वांक्षः | आ. | म. | चि. | ज्ये. | अभि. | पूभा. | भ. | हानिः |
| केतुः | पुन. | पूफ. | स्वा. | मू. | श्रवणा | उभा. | कृ. | दुःखम् |
| श्रीवत्सः | पु. | उफ. | वि. | पूषा. | धनि. | रेवती | रो. | सम्पात्तिः |
| वज्रः | आश्ले. | ह. | अनु. | उषा. | श. | अश्विनी | मृ. | हानिः |
| मुद्गरः | म. | चि. | ज्ये. | अभि. | पूभा. | भरणी | आ. | नाशः |
| छत्रम् | पूफ. | स्वा. | मू. | श्रवणा | उभा. | कृत्तिका | पुन. | सम्मान |
| मित्रम् | उफ. | वि. | पूषा. | धनि. | रे. | रोहिणी | पु. | पुष्टिः |
| मानसम् | ह. | अनु. | उषा. | श. | अश्वि. | मृगशिरा | आश्ले. | सुखम् |
| पद्मः | चि. | ज्ये. | अभि. | पूभा. | भ. | आर्द्रा | म. | लाभः |
| लुम्बः | स्वा. | मू. | श्रवणा | उभा. | कृ. | पुनर्वसु | पूफ. | हानिः |
| उत्पातः | वि. | पूषा. | धनि. | रे. | रो. | पुष्य | उफ. | नाशः |
| मृत्युः | अनु. | उषा. | श. | अश्वि. | मृ. | आश्लेषा | ह. | मृत्युः |
| काणः | ज्ये. | अभि. | पूभा. | भ. | आ. | मघा | चि. | क्लेशः |
| सिद्धिः | मू. | श्रवणा | उभा. | कृ. | पुन. | पूफ. | स्वा. | सिद्धिः |
| शुभः | पूषा. | धनि. | रे. | रो. | पु. | उफ. | वि. | शुभः |
| अमृतम् | उषा. | श. | अश्वि. | मृ. | आश्ले. | हस्त | अनु. | सम्मान |
| मुशलम् | अभि. | पूभा. | भ. | आ. | म. | चित्रा | ज्ये. | लाभः |
| गदः | श्रवणा | उभा. | कृ. | पुन. | पूफ. | स्वाती | मू. | हानिः |
| मातंगः | धनि. | रे. | रो. | पु. | उफ. | विशाखा | पूषा. | वृद्धिः |
| राक्षसः | श. | अश्वि. | मृ. | आश्ले. | ह. | अनुराधा | उषा. | कष्टम् |
| चरः | पूभा. | भ. | आ. | म. | चि. | ज्येष्ठा | अभि. | सिद्धिः |
| सुस्थिरः | उभा. | कृ. | पुन. | पूफ. | स्वा. | मूल | श्रवणा | शुभः |
| प्रवर्द्धमानः | रे. | रो. | पु. | उफ. | वि. | पूषा. | धनि. | सुखम् |

## पञ्चाङ्ग देखने की विधि

**इस** पञ्चाङ्ग में सर्वप्रथम तिथि, उसके बाद सूर्यादि दिन का नाम एवं तिथि का दण्डात्मक मान, तिथि का घण्टा मिनट, उसके बाद नक्षत्र का नाम, दण्डपल एवं घण्टा मिनटात्मक मान, उसके बाद क्रमशः योग एवं करण के दण्डपलात्मक मान, मेषादि राशि में चन्द्रमा की अवस्थिति - दण्डपल एवं घंटामिनटात्मक समय, ततः क्रमशः सूर्य का मिश्रमान (मध्यरात्रि) कालिक स्पष्टराश्यादि, दण्डपलात्मक दिनमान, घण्टामिनटात्मक सूर्योदयास्त तथा राष्ट्रिय, सौर (गते) एवं अंग्रेजी तिथियाँ हैं। उसके बाद उस दिन के मुहूर्त्त एवं पर्वादि दिए गए हैं। यथा-श्रावणकृष्ण १ सोमवार को प्रतिपदातिथि का दण्डात्मक मान **१३।१२**, (दिन घं.३ मि.३०) तक, **उत्तराषाढ** का दण्डपल **३४।४६** (रात्रि घं. ७ मि. ०७) तक, आदि सारी बातें इसी तरह जाननी चाहिये। पञ्चाङ्ग के निचले भाग में निशीथ(मिश्रमान)कालिक स्पष्टग्रह एवं दण्डपलात्मक मिश्रमान दिया गया है। यथा-श्रावणकृष्ण १ सोम को मिश्रमानकालिक स्पष्टमंगल २।२८।४३।१० तथा स्पष्ट वुधराश्यादि ३।१४।१३।२४ आदि। दो दिनों के स्पष्टग्रहों का अन्तर ग्रह की दैनिक गति होती है। यथा-श्रावणकृष्ण तृतीया बुध एवं चतुर्थी गुरु को स्पष्ट मंगल का अन्तर ३६।१४ कलादि दैनिक गति मंगल की हुई। इसी तरह अन्य ग्रहों की भी गति समझनी चाहिये। इसके बाद इसी चक्र के अन्तिम भाग में दैनिक लग्नसारिणी दी गई है। सुविधा की दृष्टि से प्रतिदिन मेष से आरम्भ कर मीन तक लग्नों के मान रेलवे घड़ी के अनुसार लिखे गये हैं। अर्थात् १३, १४ आदि घण्टे से दिन के १, २ आदि घण्टे तथा शून्य घण्टे से २४ अर्थात् १२ बजे रात्रि समझना चाहिये। यथा श्रावणकृष्णप्रतिपदा सोम को रात्रि २३।५६ बजे से १।३५ तक मेष, १।३६ बजे से ३।३१ तक वृष, ३।३२ से ५।४४ तक मिथुन, ५।४५ से ८।०२ दिन तक कर्क, ८।०३ से १०।१८ तक सिंह, १०।१९ से १२।३३ दिन तक कन्या, १२।३४ से १४।५० तक तुला, १४।५१ से १७।०७ तक वृश्चिक, १७।०८ दिन से १९।१२ सायं तक धनु, १९।१३ से २०।५८ रात्रि तक मकर, २०।५९ से २२।२९ रात्रि तक कुम्भ एवं २२।३० से २३।५८ रात्रि तक मीन लग्न रहेगा। इसी तरह प्रतिदिन समझना चाहिये। पाक्षिक विषयों के साथ - साथ अन्य उपयोगी विषय विविधविषयाः में दिये गये हैं। उसके बाद पाक्षिक वातावरण एवं ग्रहस्थिति (ग्रहों के उदय, अस्त वक्र या मार्गी) लिखी गई है। शुद्धादि विषयों की सुविधापूर्वक जानकारी के लिए प्रत्येक पक्ष में पञ्चाङ्ग के ऊपरी भाग दाईं ओर गुरु और शुक्र के उदयास्त एवं शुद्धादि विवरण दिये गये हैं ताकि सामान्य जानकारी रखनेवालों को भी सुविधा हो। यात्रादिमुहूर्त्त अर्द्धप्रहररहित नहीं हैं। अतः अर्द्धप्रहर एवं आनन्दादियोग का विचार कर लेना चाहिए। शमिति।

मिश्रमान(निशीथ)कालिकग्रह से **इष्टकालिकग्रहस्पष्टीकरण** - यथा - श्रावणकृष्ण०६ शनि को ३०।४२ दण्डादि पर स्पष्ट मंगल बनाना है तो मिश्रमानवारादि ०।४६।५२ एवं इष्टकालवारादि ०।३०।४२ का अन्तर १६।१० मिश्रेष्टान्तर ऋणदण्डादि। तथा (३।०१।५९।१९)-(३।०१।२०।०६) = ३९।१३ मंगल की गति कलादि। अतः (१६।१०) (३९।१३)=१०।३४ कलादि फल। अब (३।०१।५९।१९)-(०।०।१०।३४) = ३।०१।४८।४५ इष्टकालिक मंगल। इसी तरह सभी ग्रह बनावें।

### समर्थका विद्वांसः

पं. श्री विद्येश्वर झा, वेद - विभागाध्यक्षः
पं. श्री श्रवणकुमार चौधरी साहित्य - विभागाध्यक्षः
पं. श्री वौआनन्द झा, दर्शन - विभागाध्यक्षः
पं. श्री गंगेश ठाकुर, ज्यौतिष - विभागाध्यक्षः
पं. श्री शशिनाथ झा, व्याकरण - विभागाध्यक्षः
पं. श्री पुरेन्द्रवारिक, धर्मशास्त्र - विभागाध्यक्षः

पं. श्री कालीकान्त मिश्र
पं. श्री हृषीकेश झा
पं. श्री रामजीवन मिश्र
पं. श्री उपेन्द्र झा
पं. श्री महाकान्त पाठक
पं. श्री किशोरनाथ झा
पं. श्री उमारमण झा
पं. श्री मीना कुमारी
पं. श्री अच्युतानन्द झा
पं. श्री हरिहर झा
पं. श्री गणेशकान्त झा
पं. श्री रामविलास चौधरी
पं. श्री चन्द्रनाथ मिश्र
पं. श्री हंसधर झा
पं. श्री उमानन्द मिश्र
पं. श्री शचीन्द्रनाथ मिश्र
पं. श्री शक्तिनाथ झा

पं. श्री श्यामानन्द झा
पं. श्री शिवकान्त झा
पं. श्री सुरेश्वर झा
पं. श्री लक्ष्मीनाथ झा
पं. श्री भोला झा
पं. श्री रवीन्द्रना. झा
पं. श्री रामजी ठाकुर
पं. श्री इन्द्रमणि दास
पं. श्री काशीनाथ मिश्र
पं. श्री चण्डेश्वर झा
पं. श्री राधाकान्त ठाकुर
पं. श्री कालिकादत्त झा
पं. श्री मदनमोहन पाठक
पं. श्री भगीरथ मिश्र
पं. श्री श्रीपति त्रिपाठी
पं. श्री सुप्रसन्न मिश्र
पं. श्री विद्याधर मिश्र

पं. श्री कीर्त्यानन्द झा
पं. श्री गोविन्द चौधरी
पं. श्री देवनारायण झा
पं. श्री श्रुतिधर झा
पं. श्री शशिकान्त झा
पं. श्री शुकदेव पाठक
पं. श्री उद्दिष्ट ना. झा
पं. श्री कमलेश झा
पं. श्री विकाऊ झा
पं. श्री विश्वनाथ झा
पं. श्री चित्रधर झा
पं. श्री वाचस्पति त्रिपाठी
पं. श्री दामोदर झा
पं. श्री जयकान्त मिश्र
पं. श्री शोभाकान्त झा
पं. श्री शंकरजी झा
पं. श्री दिलीपकुमार झा

पं. श्री महेश झा
पं. श्री हेमनारायण चतुर्वेदी
पं. श्री सत्यनारायण झा
पं. श्री ताराकान्त झा
पं. श्री विन्ध्याचल ठाकुर
पं. श्री शोभाकान्त झा
पं. श्री जगन्नाथ झा
पं. श्री रामगुलाम मिश्र
पं. श्री वीरचन्द्र राय
पं. श्री अमरनाथ झा
पं. श्री चन्द्रमोहन झा
पं. श्री धनेश्वर झा
पं. श्री राजनाथ झा
पं. श्री पारसनाथ मिश्र
पं. श्री राजेन्द्र प्र. दूबे
पं. श्री रामनारायण झा
पं. श्री स्वतन्त्रेश्वर झा
पं. श्री हरिनारायण झा
पं. श्री सिंहेश्वर झा
पं. श्री धीरेन्द्र झा
पं. श्री देवेन्द्र झा
पं. श्री विजय कुमार मिश्र
पं. श्री सच्चिदानन्द झा
पं. श्री रामनिहोरा राय
पं. श्री गुणानन्द झा
पं. श्री वेचनेश्वर झा
पं. श्री सुन्दर झा
पं. श्री शिवलोचन झा
पं. श्री ब्रह्मदेव शर्मा
पं. श्री थानेश्वर झा
पं. श्री चौठी सदाय
पं. श्री सुधीर कुमार झा
पं. श्री द्वारिकानाथ झा
पं. श्री वामदेव झा
पं. श्री गौरीनाथ राय
पं. श्री जगन्नाथ झा
पं. श्री दुर्गानाथ झा

पं. श्री दिगम्बर मिश्र
पं. श्री विघ्नेश झा
पं. श्री फणीन्द्र चौधरी
पं. श्री गंगाधर झा
पं. श्री शम्भुनाथ झा
पं. श्री सूर्यकान्त झा
पं. श्री इन्द्रनाथ झा
पं. श्री तारणीश झा
पं. श्री महेश मिश्र
पं. श्री श्रीधर त्रिपाठी
पं. श्री रघुपति झा
पं. श्री शशिधर झा
पं. श्री लक्ष्मीश्वर झा
पं. श्री शंकर कु. मिश्र
पं. श्री विनय कु. मिश्र
पं. श्री हरेराम शर्मा
पं. श्री रेणुका सिन्हा
पं. श्री वायुनन्दन मिश्र
पं. श्री विश्राम तिवारी
पं. श्री दयानाथ झा
पं. श्री रामलखन झा
पं. श्री राजकुमार झा
पं. श्री विघ्नेशचन्द्र झा
पं. श्री राधारमण झा
पं. श्री कुलानन्द झा
पं. श्री ओंकारनाथ मिश्र
पं. श्री रामप्रपन्न शर्मा
पं. श्री अभयकान्तठाकुर
पं. श्री ब्रह्मदेव मिश्र
पं. श्री उमेश मिश्र
पं. श्री गोविन्द झा
पं. श्री सीताचरण झा
पं. श्री उग्रानन्द प्रतिहस्त
पं. श्री रामलखन शर्मा
पं. श्री कुणाल कु. झा
पं. श्री चिरंजीव झा
पं. श्री काशीनाथ झा
पं. श्री बटोही झा
पं. श्री देवर्षि पाण्डेय
पं. श्री राजेन्द्र प्रतिहस्त

पं. श्री शशिधर मिश्र
पं. श्री गुंजन चौधरी
पं. श्री भूपेन्द्र ना. झा
पं. श्री हरेन्द्रकिशोर झा
पं. श्री धनेश झा
पं. श्री फूलेन्द्र झा
पं. श्री कामेश्वर मिश्र
पं. श्री देवोत्तम ठाकुर
पं. श्री भोलानाथ मिश्र
पं. श्री रामकृष्ण झा
पं. श्री इन्द्रदेव झा
पं. श्री सुशीलकान्त मिश्र
पं. श्री उमेशचन्द्र झा
पं. श्री लक्ष्मीकान्त झा
पं. श्री अभिराम झा
पं. श्री शिवानन्द झा
पं. श्री भवनाथ झा
पं. श्री घनश्याम मिश्र
पं. श्री जगन्नाथ मिश्र
पं. श्री चन्द्रकृष्ण मिश्र
पं. श्री सदानन्द झा
पं. श्री मदनकुमार झा
पं. श्री मुनीन्द्र झा
पं. श्री सुकदेव शर्मा
पं. श्री राजेश्वर झा
पं. श्री प्रेमकान्त झा
पं. श्री सुजीत कुमार मिश्र
पं. श्री खगेन्द्रनाथ झा
पं. श्री बबुआजी झा
पं. श्री कामेश्वर चौधरी
पं. श्री महानन्द ठाकुर
पं. श्री उमेश झा
पं. श्री महाकान्त ठाकुर
पं. श्री विजयकान्त झा
पं. श्री विनोदानन्द झा
पं. श्री अरुण कु. उपाध्याय
पं. श्री गंगानाथ झा
पं. श्री सत्यवान कुमार
पं. श्री सुरेश झा

पं. श्री कमलाकान्त मिश्र
पं. श्री श्रीरामकुमार शर्मा
पं. श्री भूपनारायण मिश्र
पं. श्री तेजनारायण झा
पं. श्री राजेन्द्र झा
पं. श्री रतीशचन्द्र झा
पं. श्री विष्णुदेव झा
पं. श्री दिनेश ओझा
पं. श्री हर्षनाथ झा
पं. श्री बाबूलाल मिश्र
पं. श्री रामदेव झा
पं. श्री वैद्यनाथ झा
पं. श्री नवीनचन्द्र ठाकुर
पं. श्री राजेश्वर झा
पं. श्री चन्द्रनाथ झा
पं. श्री कृष्णकान्त मिश्र
पं. श्री भुवनेश्वर झा
पं. श्री फूलचन्द्र मिश्र
पं. श्री मदनानन्द झा
पं. श्री श्रीकान्त प्रतिहस्त
पं. श्री कमलाकान्त ठाकुर
पं. श्री भागवत ठाकुर
पं. श्री कलाधर झा
पं. श्री विनयनाथ झा
पं. श्री रघुवीर झा
पं. श्री विश्वनाथ झा
पं. श्री हरिनारायण ठाकुर
पं. श्री गोपालकृष्ण झा
पं. श्री इन्दुनाथ ठाकुर
पं. श्री मनोज कुमार
पं. श्री कृपानाथमाहापात्र
पं. श्री इन्द्रनारायण झा
पं. श्री भुवनेश्वर मिश्र
पं. श्री पवन कुमार मिश्र
पं. श्री विन्ध्यनाथ मिश्र
पं. श्री भगलू झा
पं. श्री इन्द्रकान्त झा
पं. श्री शक्तिनन्दन झा
पं. श्री विद्याकान्त झा

# श्री मङ्गलमूर्त्तये नमः ★ श्रीसरस्वत्यै नमः

कलिसंवत्५११६, शकाब्दः१९३९-४०, विक्रमसंवत्२०७४-७५, सन्१४२५ साल, लक्ष्मणसंवत् ९०८-९०९, खृष्टाब्दः २०१७-१८ ई. तत्र प्रभवादिबार्हस्पत्यगताब्दादयः ४४।००।१४।१२।२९ भोग्याब्दादयः १५।११।१५।४७।३१।। अत्र विद्यमाने ग्रहगुणनवेन्दुमिते शकाब्दे रुद्रविंशतिकायां सोमदैवतयुगे चतुस्त्वत्वारिंशत् साधारणनामकमध्यमगुरुसंवत्सरफलम्- तोयपूर्णास्तथा मेघा वर्षन्तीह महीतले। साधारणे तु शस्यानां भक्षका मूषिकादयः।।

## वर्षेश (राजा) रविफलम्

धर्मांशौ विविधैर्ज्वरार्कदहनैराकम्पितं क्ष्मातलं, मेघा यान्ति च लाघवं प्रतिदिशं वज्राभिघातो भवेत्।
राजादेशविवादतः परिजनैर्मोहात् प्रकम्पायितश्चौरव्याघ्रभुजङ्गमैरुपहता पृथ्वी च वर्षाधिपे।।

## संवाहक(मन्त्री) बुधफलम्

राजानः सदसि-प्रसादकुशलैः शिष्टैः सदा सेविता, गीते नृत्यरता सदा विजयिनः कान्तामुखे षट्पदाः।
मेघोऽनेकजलं ददाति महती शस्यस्य वृद्धिः सदा, विप्रा यज्ञ समाकुलाङ्गनगृहाः सम्वाहके सोमजे।।

## पालक-बुधफलम्

क्षोणी याः प्रतिपालयन्ति वसुधां कीर्त्तिप्रतापान्विताः, नीति च प्रवदन्ति लोकसुखदाः शस्येन पूर्णा मही।
दातारो जलदाः सदा जलकराः विप्राश्च यज्ञान्विता, द्रव्यैः पूर्णविवृद्धिदानसहिताः सौम्ये यदा पालके।।

**मेघेशशनिफलम्-** मन्दे मन्दजला मेघा दुर्भिक्षैर्व्याकुला मही। वायुना प्रेरिताः मेघाः छिन्ना भिन्ना भवन्ति वै।।
**तोयेशसूर्यफलम्-** तिग्मांशौ मन्दशस्या च दग्धा भवति मेदिनी।
**शस्येशशुक्रफलम्-** शुक्रे शस्याधिपे भूपाः पालयन्ति वसुन्धराम्। शस्यवृद्धिर्भवेद् भूमौ भूयसां जलदाः सदा।।
**लोकेशशुक्रफलम्-**शुक्रे लोकाधिपे लोका बहुधान्य समन्विताः। धर्मैकनिरता नित्यं सदानन्दाः स्ववृद्धयः।।
**सम्वर्त्तकमेघफलम्-**संवर्त्तके महावृष्टिः शस्यवृद्धिकरी शुभा। जलपूर्णा मही नित्यं जलदैर्वेष्टितं नभः।।
**सन्धिगतरोहिणीफलम्-** सन्धि भे खण्डवृष्टिः स्यात्।
**चैत्रशुक्लप्रतिपद्बुधफलम्-**सौम्यो गुरुर्वा भृगुजो यदि स्यात् सम्पत्प्रयुक्ता धरणी सुशस्या।।
**पौषामावास्याचन्द्रफलम्-** मध्यमम्।।
**वायुः** - आवहः।। **आर्द्राप्रवेशफलम्** - मध्यमम्।। **दीपावलीफलम्** - मध्यमम्।।
**मेषसंक्रान्तिफलम्**-शोभनम्।। **शकाब्दफलम्** - अतिवृष्टिर्दुर्भिक्षञ्च।। **विक्रमसंवत्फलम्** - दुर्भिक्षं विपुलसुखञ्च।।
जलाढकमानम - १००।। **समुद्रे** ५०।। **पर्वते** ३०।। **भूमौ** २०।।

## ● वर्षादिविश्वाः ●

वर्षा५ धान्यं७ शीतं१३ तृणं ७ ऊष्णं१७ वायुः१३ प्रजावृद्धिः१५ प्रजाक्षयः१५ विग्रहः११ क्षुधा १ तृष्णा ३ निद्रा ११ आलस्यं ५ उद्यमं११ शान्तिः१३ क्रोधः११ दण्डः ३ मैत्री१ उत्सवः१३ पापं ७ पुण्यं ११ रसादि ९ उग्रत्वं १३ रसोत्पत्तिः१३, फलोत्पत्तिः१६ रोगः१६ रोगक्षयः१७ आचारः१७ अनाचारः५ मरणं१९ जननं११ चौरभयं१७ चौरशमनं५ अग्निभयं११ अग्निशमनं३

## ● मेषादिराशीनां सफलमायव्ययचक्रम् ●

| राशिः | मेषः | वृषः | मिथुनं | कर्कः | सिंहः | कन्या | तुला | वृश्चिकः | धनुः | मकरः | कुम्भः | मीनः |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| आयः | २ | ११ | १४ | ८ | ११ | १४ | ११ | २ | ५ | ८ | ८ | ५ |
| व्ययः | १४ | ५ | २ | २ | ११ | २ | ५ | १४ | ५ | १४ | १४ | ५ |
| फलं | विजयः | विजयः | विजयः | लाभः | अयशः | विजयः | विजयः | विजयः | लाभ | अयशः | अयशः | लाभः |

## ● सन् १४२५ साल, १९३९-४० शकाब्दीय शुद्ध्यशुद्धी ●

तत्र श्रावणकृष्णप्रतिपच्चन्दवासरादारभ्य भाद्रकृष्णादशम्याङ्गरौ २४।।४९ यावच्छुद्धस्तन्मानं मासादि ०१।०८।२४।४९ ततः सिंहादित्यदोषादाश्विनकृष्णद्वादश्यां रवौ २५।०० यावदशुद्धस्तन्मानं मासादि ०१।।०१।।००।।११ ततः कार्त्तिककृष्णषष्ठ्यां बुधे २७।१८ यावच्छुद्धस्तन्मानं मासादि ००।।२४।।०२।।१८ ततो गुरुक्षैण्यास्तबाल्यदोषेभ्य अग्रहायणकृष्णद्वादश्यां बुधे ०७।०३ यावदशुद्धस्तन्मानं मासादि ०१।०४।३९।४५ ततः पौषकृष्णतृतीयायां बुधे २९।३१ यावच्छुद्धस्तन्मानं मासादि ००।।२१।।२२।।२८ ततः शुक्रक्षैण्यास्त-धानुरादित्य- शुक्रबाल्यदोषेभ्यो माघशुक्लपूर्णिमायां बुधे २५।२१ यावदशुद्धस्तन्मानं मासादि ०१।२५।५५।५० ततः प्रथमज्येष्ठकृष्णामावास्यायाङ्कुजे ३०।२८ यावच्छुद्धस्तन्मानं मासादि ०३।१४।०५।०७। ततो द्वितीयज्येष्ठकृष्णामावास्यायां बुधे ५१।१७ यावदशुद्धस्तनमानं मासादिः ००।२९।२०।४९।। ततः आषाढ़ी यावच्दुद्धस्तन्मानं मासादिः ०१।१४।०८।४३। अतो **वर्षे शुद्धसमयमानं मासादि** ०७।२२।०३।२५। **अशुद्धसमयमानं** मासादि ०५।०।५६।३५। तेन वर्षपूर्त्तिदिनानि ३८३।।

## ● सन् १४२५ साल, १९३९-४० शकाब्दीय शुद्धादि ●

कार्त्तिके कार्त्तिकाकाशदीपतुलसीव्रतोद्यापनानि। अग्रहायण-फल्गुनवैशाखाषाढेषु विवाहदिनानि। फल्गुनचैत्र-वैशाखाषाढमासेषूपनयनदिनानि। फल्गुनवैशाखद्वितीयज्येष्ठशुक्लेष्वेकादशीव्रतोद्यापनानि। फाल्गुनादिषु देवादिप्रतिष्ठा-तडागवापीकूपखननयज्ञादिमुहूर्त्तः। मार्गे शुक्रोदयः पूर्वे तेन तदानीं दक्षिणपश्चिमदिशोस्तृतीयादिविषमवर्षीयद्विरागमन-दिनानि बहूनि, तदितर पूर्वोत्तरदिशोस्तु शुक्रान्ध( रे.अश्वि.रो.मृग. ) नक्षत्रेष्वेव। वैशाखफल्गुनयोः शुक्रोदयः पश्चिमे तेन तदानीं पूर्वोत्तरदिशोस्तृतीयादिविषमवर्षीयद्विरागमनदिनानि बहूनि, तदितर दिशोस्तु शुक्रान्धनक्षत्रेष्वेव।

## ● सन् १४२६ साल, १९४०-४१ शकाब्दीय सम्भावित-संक्षिप्तशुद्धादि ●



**माघाद्याषाढमासेषु समयशुद्धिः। तेषु विवाहोपनयनयज्ञदेवादिप्रतिष्ठैकादशीव्रतोद्यापनानि। गुरुस्तदानीं वृश्चिकराशौ मार्गफाल्गुनवैशाखेषु शुक्रोदयः पूर्वस्याम्। मार्गे कुरुक्षेत्रे कुम्भयोगः।**

## ● वर्षफलम् ●

इस वर्ष के राजा सूर्य, मन्त्री बुध, पालकेश बुध, मेघपति शनि, जलपति सूर्य, शस्यपति शुक्र, लोकपति शुक्र, सम्वर्त्तक मेघ तथा रोहिणीवास सन्धि में है। साधारण-विरोधी बार्हस्पत्यवर्ष है। वर्षा ५ विश्वा, धान्य ७ विश्वा, आवह नामक वायु तथा जलाढक २० विश्वा है। जगल्लग्न, वर्षलग्न, राजा-मन्त्री में समभाव जग्ल्लग्नेश शनि आयस्थ, शुभाशुभदृष्ट, उच्चगत सूर्य, बुधादित्य-मंगल योग, सप्तम राहु, अष्टम गुरु, कर्मस्थ चन्द्रमा नीचगत लग्नस्थ शुक्र-केतु, वर्षलग्नेश शुक्र उच्चगत आयस्थ बुधादित्य चन्द्रयुक्त, चतुर्थ राहु, पञ्चम बृहस्पति, अष्टम शनि,दशम केतु एवं व्ययस्थ स्वगृही मंगल हैं। आधिकारियों में शुभग्रहों की अधिकता है। अतएव साधारण वैमनस्य, बाधा एवं विलम्ब के बावजूद देश अभ्युन्नति की ओर बढेगा। वैज्ञानिक क्षेत्र जलवायु, रक्षा, सञ्चार, उर्जा, स्वास्थ्य एवं शिक्षा के क्षेत्र में नवीन कार्यों से लाभ होगा। व्यापार, उद्योग, कृषि की स्थिति सुदृढ होगी। आर्थिक अभ्युन्नति होगी तथा वैदेशिक नीति सुदृढ होगी। उपर्युक्त कुछ बाधक ग्रहस्थितवशात् तापाधिक्य, विद्युत् अग्निभय, हिंसा, अपराध एवं प्राकृतिक आपदाओं से क्षति सम्भावित रहेगी। खण्डवृष्टि एवं बाढ़ से साधारण रूप से कृषि प्रभावित हो सकती है। चैत्री, भाद्री एवं अगहनी फसल की उपज क्रमशः ९०, ८५ एवं ९० प्रतिशत होगी।

## ● मासफलम ●

**श्रावण**-इस मास में ५ रविदिन, सूर्य संक्रान्तिमुहूर्त्त ३०, चन्द्रदर्शन-मुहूर्त्त १५ एवं सौम्यशृंग है। अतएव खाद्यपदार्थ, खनिजपदार्थ, धातुपदार्थ, तरलपदार्थ, वस्त्रादि एवं फलादि के भाव में तेजी होकर साम्य की स्थिति रहेगी। ५ रविदिन होने के कारण तापाधिक्य, विद्युदग्निभय, कलह, दुर्घटना, उपद्रव, प्राकृतिक उत्पात-भूकम्पादि एवं राजनीतिक उथल-पुथल सम्भावित रहेगी। कहीं-कहीं बाढ, अतिवृष्टि या वृष्टि की कमी सम्भावित रहेगी। कल्याणार्थ धर्माचरण कर्त्तव्य है।
**भादव**-इस मास में ५ बृहस्पतिदिन, सूर्यसंक्रान्तिमुहूर्त्त३०, चन्द्रदर्शनमुहूर्त्त ४५ तथा सौम्यश्रृंग है। अतएव खाद्यपदार्थ, तरलपदार्थ, धातुपदार्थ, खनिजपदार्थ, फलादि एवं वस्त्रादि के भाव में साम्य-समर्घ की स्थिति बनेगी। ४ ग्रहों की युति के कारण बाढ, खण्डवृष्टि या अतिवृष्टि, उपद्रव, प्राकृतिक उत्पात, कलहसूचक हैं। कल्याणार्थ धर्माचरण कर्त्तव्य है।
**आश्विन-** इस मास में ५ रविदिन, सूर्यसंक्रान्तिमुहूर्त्त १५, चन्द्रदर्शनमुहूर्त्त ३० एवं सौम्यश्रृंग है। अतएव पवपिक्षया सभी वस्तुओं के मूल्य में तेजी का रुख रहेगा। औषधि, रक्तपदार्थ, खनिजपदार्थ एवं धातुपदार्थ के मूल्य में विशेष तेजी सम्भावित है। खण्डवृष्टि सम्भव है। ५ रविदिन एवं पञ्चग्रहयोग दुर्घटना, प्राकृतिक उत्पात, रोगाग्निभय, कहीं-कहीं अतिवृष्टि एवम् उपद्रवसूचक हैं। कल्याणार्थ धर्माचरण करना चाहिये।
**कार्त्तिक**-इस मास में ५ मंगलदिन, सूर्यसंक्रान्तिमुहूर्त्त४५, चन्द्रदर्शनमुहूर्त्त ४५ तथा सौम्यश्रृंग है। अतएव सभी प्रकार के वस्तुओं के भाव में सस्ती का क्रम रहेगा। धर्मकृत्य, यज्ञोत्सव एवं कल्याणकारी कार्य होंगे। ५ मंगलदिन एवं ४ ग्रहयोग खण्डवृष्टि, उपद्रव, प्राकृतिक उत्पात सूचक हैं। धर्माचरण कर्त्तव्य है।

**अगहन**-इस मास में ५ बृहस्पतिदिन, सूर्यसंक्रान्तिमुहूर्त्त१५, चन्द्रदर्शनमुहूर्त्त १५ तथा सौम्यश्रृंग है। अतएव सभी वस्तुओं के मूल्य में तेजी आयेगी। विशेषतः रक्तपदार्थ, तरलपदार्थ, धातुपदार्थ, प्रभावित होंगे। नवीन कार्यों का श्रीगणेश होगा। ४ ग्रहों का योग उपद्रवसूचक है। कल्याणार्थ धर्मकृत्य करना चाहिये।

**पौष**-इस मास में ५ शनिदिन, सूर्यसंक्रान्तिमुहूर्त्त३०, चन्द्रदर्शनमुहूर्त्त ४५ एवं सौम्यश्रृंग है। अतएव सभी वस्तुओं के मूल्यों में पूर्वापेक्षया साम्य की स्थिति रहेगी। तरलपदार्थ, श्वेतपदार्थ एवं वस्त्रादि के भाव में सस्ती का क्रम रहेगा। ५ शनिदिन एवं ४ ग्रहों का योग दुर्घटना, हिमपात, प्राकृतिक प्रकोप, झंझावात, राजनीतिक उथल-पुथल, शीतवृद्धि एवम् उपद्रवसूचक है। कल्याणार्थ धर्माचरण कर्त्तव्य है।

**माघ**-इस मास में ५ रविदिन, सूर्यसंक्रान्तिमुहूर्त्त३०, चन्द्रदर्शनमुहूर्त्त३० एवं सौम्यश्रृंग है। अतएव सभी पदार्थों के मूल्य में समता की स्थिति बनी रहेगी। फल-व्यञ्जनादि अपेक्षाकृत सस्ते होंगे। शीतवृद्धि एवं हिमपात सम्भावित है। ५ रविदिन एवं ४ ग्रहों का योग रोगाग्निभय, विद्युद्भय, प्राकृतिक उत्पात, झंझावात, ओलावृष्टि एवं दुर्घटना सूचक है। कल्याणार्थ धर्माचरण करना चाहिये।

**फाल्गुन**-इस मास मे५ सोमदिन, सूर्यसंक्रान्तिमुहूर्त्त४५, चन्द्रदर्शनमुहूर्त्त३० एवं समश्रृंग है। अतएव सभी पदार्थों के मूल्य मे समर्घसाम्य का क्रम रहेगा। मुख्यतः रक्तपदार्थ, धातुपदार्थ एवं खनिजपदार्थ सस्ते होंगे। ४ ग्रहों के योग से झंझावात, उपलपात,रोग-विद्युदग्निभय, दुर्घटना, उपद्रव एवं प्राकृतिक उप्पात होने की सम्भावना है। कल्याणार्थ धर्माचरण अपेक्षित है।

**चैत्र**-इस मास में ५बुधदिन, सूर्यसंक्रान्तिमुहूर्त्त३०, चन्द्रदर्शनमुहूर्त्त३० तथा याम्यश्रृंग है। अतएव सभी वस्तुओं के मूल्य में साम्यतेजी का क्रम रहेगा। तापधिक्य, अग्निभय, विद्युद्भय, झंझावात एवम् उपलपात् सम्भावित है। ४ ग्रहों का योग है। अतः दुर्घटना, प्राकृतिक उत्पात, राजनीतिक उथल-पुथल एवं रोगोपद्रव सम्भावित रहेगा। कल्याणार्थ धर्माचरण अपेक्षित है।

**वैशाख**-इस मास में ५ शनिदिन, सूर्यसंक्रान्तिमुहूर्त्त४५, चन्द्रदर्शनमुहूर्त्त१५ एवं याम्यश्रृंग है। अतएव पूर्वापेक्षया सभी वस्तुओं के मूल्य में तेजी की सम्भावना बनेगी। विशेषतः तरलपदार्थ, वस्त्रादि, फलादि एवं सभी श्वेतपदार्थों में तेजी रहेगी। झंझावात, विद्युदग्निरोगभय, उपलपात, दुर्घटना, तापाधिक्य एवम् उपद्रव सम्भावित रहेगा। कल्याणार्थ धर्माचरण करना चाहिये।

**ज्येष्ठ**-इस मास में ५ मंगलदिन, सूर्यसंक्रान्तिमुहूर्त्त१५, चन्द्रदर्शनमुहूर्त्त३० तथा समश्रृग है। अतएव पूर्वापेक्षया सभी वस्तुओं के भाव में साम्य-तेजी का रुख रहेगा। विशेषतः धातुपदार्थ, खनिजपदार्थ गृहोपकरण एवं रक्तपदार्थों के मूल्य में तेजी रहेगी। ५मंगलदिन होने के कारण तापाधिक्य, अग्निभय, झंझावात-उपलपात, दुर्घटना, उपद्रव एवं प्राकृतिक उत्पात सम्भावित है। कल्याणार्थ धर्माचरण अपेक्षित है।

**आषाढ़**-इस मास मे५ शुक्रदिन, सूर्यसंक्रान्तिमुहूर्त्त४५, चन्द्रदर्शनमुहूर्त्त४५-३० एवं सौम्यश्रृंग है। अतएव सभी वस्तुओं के मूल्य में समर्घता की स्थिति आयेगी। रक्तपदार्थ, श्वेतपदार्थ, तरलपदार्थ एवं धातुपदार्थ अपेक्षाकृत सस्ते होंगे। नवीन कार्य होंगे। झंझावात का योग है। कल्याणार्थ धर्माचरण करना चाहिये।

## राशिफलम्

**मेष (चु, चे, चो, ल, लि, लु, ले, लो, अ,)**-वर्षफल मिश्रित फलद है। उत्तरार्द्ध भाग अपेक्षाकृत लाभकर रहेगा। रक्तवातदोष, उदरपीडा, चोट की सम्भावना, कलह एवम् अशान्तिकर स्थिति समय-समय पर रह सकती है। सन्तान एवं पारिवारिक सुख मध्यम रहेगा। शिक्षा, उद्योग, व्यापार एवं कृषि से आंशिक लाभ होगा। उत्तरार्द्ध से राजनीतिक स्थिति लाभकर होगी। धर्मकृत्य, तीर्थाटन, स्थान परिवर्तन सम्भावित रहेगा। साढेसाती शनि की शान्ति हेतु वृश्चिकराशिवत् शनि की उपासना लाभकर होगी। मंगलव्रत एवं सुन्दरकाण्डपाठ करना कल्याणकर होगा।

**वृष (इ, उ, ए, ओ, ब, वि, बु, वे, वो)**- वर्षफल मिश्रित फलद है। रक्तवातदोष, उदरपीड़ा, मूत्रविकार एवं चोट की सम्भावना रहेगी। पारिवारिक सुख में कमी सम्भव है। सन्तान सुख एवं मित्र सहायता का योग बनेगा। शिक्षा, व्यापार एवं कृषि के क्षेत्र में बाधा एवं विलम्ब से अल्प लाभ होगा। स्थान परिवर्तन एवं व्यय तथा झंझट की सम्भावना रहेगी। शनि की साढेसाती शान्त्यर्थ वृश्चिकराशिवत् शनि तथा २८ सितंबर तक राहु की उपासना लाभकर होगी। मंगलव्रत एवं दुर्गापाठ करना श्रेयस्कर होगा।

**मिथुन (क, कि, कु, घ, ङ, छ, के, को, ह)**- वर्षफल शुभप्राय है। स्वास्थ्य अनुकूल रहेगा। उत्तरार्द्ध में वातरक्तदोष एवं मूत्रविकार से बाधा हो सकती है। नवीन कार्यारम्भ, उद्योग, व्यापार, स्थान परिवर्त्तन, कृषि, शिक्षा एवं राजनीति के क्षेत्र में लाभकर स्थिति रहेगी। सन्तान सुख एवं पारिवारिक सुख मिश्रित रहेगा। १८ नवम्बर से वृश्चिकराशिवत् शनि की साढेसाती शन्ति करना श्रेयस्कर होगा। विष्णुसहस्रनाम अथवा दुर्गापाठ करना श्रेयस्कर होगा।

**कर्क (हि, हु, हे, हो, ड, डि, डु, डे, डो)**-वर्षफल मिश्रित फलद है। कफ-जवर एवं वातरक्तदोष या उदरविकार सम्भावित रहेगा। पारिवारिक सुख अनुकूल किन्तु सन्तानसुख मिश्रित फलद रहेगा। भ्रमण, तीर्थाटन, व्यय एवं स्थान परिवर्तन का योग है। कृषि, उद्योग, व्यापार, शिक्षा एवं राजनीति के क्षेत्र में उत्तरार्द्ध में आंशिक लाभ हो सकता है। राहु-केतु की तथा १७ नवम्बर तक शनि की उपासना वृश्चिकराशिवत् कर्त्तव्य है। रविव्रत अनोना करना श्रेयस्कर होगा।

**सिंह (म, मि, मु, मे, मो, ट, टि, टु, टे)**- वर्षफल मिश्रित फलप्रद है। रक्तवातदोष, उदरपीडा, मूत्रविकार अथवा शल्यक्रिया सम्भावित है। पारिवारिक-सन्तानसुख मध्यम रहेगा। भ्रमण एवं स्थान परिवर्तन का योग है। कृषि, उद्योग, व्यापार, शिक्षा एवं राजनीति के क्षेत्र में बाधा एवं विलम्ब से आंशिक लाभ होगा। वृश्चिकराशिवत् शनि तथा राहु की तथा २८ सितम्बर तक केतु की उपासना लाभकर होगी। रविव्रत(अनोना) आदित्यहृदयस्तोत्रपाठ। दुर्गापाठ करना श्रेयस्कर होगा।

**कन्या (टो, प, पि, पु, ष, ण, ठ, पे, पो)**- वर्षफल मिश्रित फलप्रद है। रक्तवातदोष, कलह, उदरविकार, घाव एवं चोट की सम्भावना रहेगी। सन्तानसुख तथा पारिवारिकसुख अनुकूल रहेगा। शिक्षा, राजनीति, उद्योग, व्यापार एवं कृषि के क्षेत्र में मध्यमत्वेन लाभ होगा। भ्रमण, तीर्थाटन एवं स्थान परिवर्तन सम्भावित रहेगा। २८ सितम्बर तक राहु की तथा १८ नवम्बर से शनि की उपासना वृश्चिकराशिवत् करनी चाहिये। दुर्गापाठ/विष्णुसहस्रनामपाठ करना कल्याणकर होगा।

**तुला (र, रि, रु, रे, रो, त, ति, तु, ते)**- वर्षफल पूर्वार्द्ध की अपेक्षा उत्तरार्द्ध में लाभदायक रहेगा। वातरक्तदोष, उदरपीड़ा, वैमनस्य एवं व्यय का योग मध्यमत्वेन रहेगा। पारिवारिकसुख मध्यम एवं सन्तानसुख अनुकूल होगा। शिक्षा, उद्योग, व्यापार, कृषि एवं राजनीति के क्षेत्र में उत्तरोत्तर लाभ की स्थिति बनेगी। भ्रमण, तीर्थाटन, स्थान परिवर्तन सम्भावित रहेगा। १७ नवम्बर तक वृश्चिकराशिवत् शनि की तथा ५ सितम्बर तक गुरु की उपासना लाभकर होगी। दुर्गापाठ करना श्रेयस्कर होगा।

**वृश्चिक (तो, न, नि, नु, ने, नो, य, यि, यु)**-शनि की साढेसाती चल रही है। अतः रक्तवातदोष, घाव, चोट, उदरपीडा एवं शत्रुबाधा सम्भावित है। स्थान परिवर्तन का योग है। पारिवारिक एवं सन्तानसुख में बाधा सम्भावित है। शिक्षा, राजनीति, उद्योग, व्यापार एवं कृषि के क्षेत्र में आंशिक लाभ होगा। अतएव हनुमद्दर्शनपूजनस्तोत्रपाठ, गोसेवा, मंगलव्रत, दुगापाठ अथवा सुन्दरकाण्डपाठ, शनिपूजनस्तोत्रपाठमन्त्रजप, शनिदिन अश्वत्थपूजन, तिलदान, तिलतैल से हनुमद्दीपदान, हनुमानचालीसापाठ एवं शिवपूजनादि यथासम्भव शनिशान्त्यर्थ करना चाहिये। काले घोड़ानाल-वृषोत्सर्गदगनी-नाव के माडि के लोहे की अंगूठी, गंगाजल से सिक्त एवं शनिमन्त्राभिमन्त्रित कर, वाम हाथ की मध्यमा में शनिदिन पूर्वाह्न में धारण करना श्रेयस्कर होगा। २८ सितम्कर तक केतु की तथा ५ सितम्कर तक गुरु की भी उपासना करनी चाहिये।

**धनु (ये, यो, भ, भि, भु, ध, फ, ढ, भे)**-शनि की साढेसाती चल रही है। अतः रक्त-वात-कफदोष, उदरपीड़ा, घाव या चोट लगने की सम्भावना है। पारिवारिक तथा सन्तानसुख मिश्रित रहेगा। स्थान परिवर्तन, व्यय, भ्रमण एवं शत्रुबाधा सम्भावित है। शिक्षा, राजनीति, उद्योग, व्यापार एवं कृषि के क्षेत्र में बाधा तथा विलम्ब से आंशिक लाभ होगा। अतः वृश्चिकराशिवत् शनि की तथा २६ सितम्बर से राहु-केतु की उपासनाा कर्त्तव्य है।

**मकर (भो, ज, जि, जु, जे, जो, ख, खि, खु, खे, खो, ग, गि)**-वर्षफल मिश्रित फलद है। रक्तवातदोष, घाव एवम् उदरपीड़ा सम्भावित रहेगी। पारिवारिक एवं सन्तानसुख मध्यमकोटि का रहेगा। सद्व्यय, स्थान परिवर्तन, राजनीति एवं नवीन कार्यारम्भ में बाधा-विलम्ब के बाद सफलता सम्भावित रहेगी। कृषि, शिक्षा एवम् उद्योग-व्यापार के क्षेत्र में विलम्ब से आंशिक सफलता मिलेगी। अतएव वृश्चिकराशिवत् १८ नवम्बर से शनि की तथा राहु-केतु की उपासना लाभकर रहेगी। मंगलव्रत/ हनुमदुपासना कर्त्तव्य है।

**कुम्भ (गु, गे, गो, स, सि, सु, से, सो, द)**- वर्षफल शुभप्राय है। रक्तवातदोष, मूत्रविकार, घाव एवं चोट से स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है। सन्तानसुख अनुकूल तथा पारिवारिक सुख में बाधा सम्भावित है। राजनीति के क्षेत्र में लाभकर स्थिति रहेगी। कृषि, शिक्षा एवम् उद्योग-व्यापार के क्षेत्र में बाधा एवं विलम्ब से लाभ होगा। भ्रमण, तीर्थाटन एवं सद्व्यय का योग बनेगा। केतु की, २८ सितम्बर तक राहु की तथा ५ सितम्बर तक बृहस्पति की उपासना लाभकर रहेगी। मंगलव्रत/हनुमदुपासना कर्त्तव्य है।

**मीन (दि, दु, थ, झ, ञ, दे, दो, च, चि)**-वर्षफल मिश्रित फलद है। वातरक्तदोष, उदरपीडा एवं मूत्रविकार से स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ सकता है। शत्रुबाधा सम्भावित रहेगी। तीर्थाटन, भ्रमण स्थान परिवर्त्तन एवं सद्व्यय का योग लगेगा। पारिवारिक एवं सन्तानसुख मध्यमकोटि का रहेगा। कृषि, शिक्षा एवम् उद्योग-व्यापार के क्षेत्र में बाधा-विलम्ब से लाभ होगा। राजनीति के क्षेत्र में लाभ सम्भावित है। २८ सितम्बर तक केतु की, ६ सितम्बर से १० फरवरी तक तथा ७ अप्रैल से बृहस्पति की एवं १७ नवम्बर तक शनि की उपासना लाभकर होगी।

## ग्रहाणां तान्त्रिकमन्त्राः

**सूर्यस्य-** ओम् घृणिः सूर्य आदित्य। **चन्द्रस्य-** ओम् सों सोमाय नमः। **कुजस्य-** ओम् अं अङ्गारकाय नमः। **बुधस्य-** ओम् बुं बुधाय नमः। **गुरोः-** ओम् वृं वृहस्पतये नमः। **शुक्रस्य-** ओम् शुं शुक्राय नमः। **शनेः-**ओम् शं शनैश्चराय नमः। **राहोः-** ओम् रॉं राहवे नमः। **केतोः-** ओम् के केतवे नमः।

**ग्रहाणां समिधः-**अर्कः पलाशः खदिरस्त्वपामार्गोऽथ पिप्पलः। औदुम्बरः शमी दूर्वा कुशाश्च समिधः क्रमात्।।

**शाकल्यनिर्माणम्-**तिलार्धं तण्डुलाः प्रोक्ताः तण्डुलार्धं यवाः स्मृताः। यवार्द्धं शर्करा प्रोक्ता सर्वार्द्धन्तु घृतं स्मृतम्।।

**छन्दोगानां देवताप्राणप्रतिष्ठामन्त्रः-** ओम् वाङ्मनः प्राणापानौ व्यानश्चक्षुः श्रोत्रं शर्म्म वर्म भूतिः प्रतिष्ठा।।

**वाजसनेयिनां देवताप्राणप्रतिष्ठामन्त्रः-** ओम् मनोजूतिर्जुषतामाज्यस्य वृहस्पतिर्यज्ञमिमन्तनो त्वरिष्टं यज्ञगुं समिमं दधातु। विश्वेदेवा स इह मादयन्तामोम् प्रतिष्ठ।

**शुभदिनानि-**चन्द्रबुधगुरुशुक्रदिनानि। **शुभतिथयः** - २, ३, ५, ७, १०, ११, १२, १३, १५।

**शुभनक्षत्राणि-**अश्वि. रो. मृ. पुन. पुष्य. ह. चि. स्वा. अनु. श्र. रे.।

**शुभलग्नानि राशयश्च-** वृष, मिथुन, कर्क, कन्या, तुला, धनु, मीन।

### ग्रहकृतारिष्टशमनाय सौषधजलस्नानम्

लज्जाबली, कुष्ठः(कुढ), बला(बरियार), प्रियंगु(काउनी),घन(मोथा), सर्षपः, हरिद्रा, देवदारु, पुंखा (सहरफोका), लोध्रं एतैरौषधैर्युतजले पुष्पाक्षत-दूर्वाश्रीखण्डरक्तचन्दन- धान्यशतावरी तीर्थोदक- सप्तमृत्तिका-तिल-यव-पञ्चगव्य- ताम्बूल- पञ्चपल्लव-पञ्चरत्नादीनि प्रक्षिप्य तैर्जलैः स्नायात्। एवं कृते दुष्टग्रहसूचितारिष्टनाश इष्टसिद्धिश्च।

### अर्धप्रहरबोधकचक्रम्

| दिन | सू. | चं. | मं. | बु. | बृ. | शु. | श. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दिने | ४।५ | २।७ | २।६ | ३।५ | ७।८ | ३।४ | १।६।८ |
| रात्रौ | ४।६ | ४।७ | ०।२ | ५।७ | ५।८ | ०।३ | १।६।८ |

### ग्रहाणामरिष्टहरत्वम्

राहुदोषं बुधो हन्यादुभयोस्तु शनैश्चरः।
त्रयाणां भूमिजो हन्ति चतुर्णां दानवार्चितः।।
पञ्चानां देवमन्त्री च षण्णां दोषन्तु चन्द्रमाः।
सप्तदोषं रविर्हन्ति विशेषादुत्तरायणे। शुक्रो दशसहस्राणि बुधो दशशतानि च। लक्षमेकं तु दोषाणां गुरुर्लग्ने व्यपोहति।

## योगिनीवासो युद्धयात्रायाम्

वामपृष्ठगता योगिनी शुभा, दक्षिणसम्मुखगा चाशुभा

| तिथयः | १।९ | ३।११ | ५।१३ | ४।१२ | ६।१४ | ७।१५ | २।१० | ८।३० |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दिशा | पू. | अं. | द. | नै. | प. | वा. | उ. | ई |

### गर्भाधानमुहूर्त्तः

अश्वि. रो. मृ. उ३. ह. स्वा. अनु. श्र. ध. श. चि. पुन. पु. नक्षत्रेषु। १।२।३।५।७।१०।११।१२।१३ तिथिषु। चं.बु.वृ.शु. वारेषु। रात्रौ, रजोदर्शनानन्तरं चतुर्थरात्रितः १२ रात्रिं यावत्। **शुभैः** केन्द्रत्रिकोणगैः, पापैस्त्र्ययारिगैः, पुंग्रहदृष्टलग्ने, चन्द्रे विषमांशगे युग्मराशौ शुभम्।

### सीमन्तपुंसवनमुहूर्त्तः

पुंसवनं गर्भतस्तृतीये मासि कार्यम्। सीमन्तोन्नयनं च षष्ठेऽष्टमे वा मासि मासाधिपतौ सबले कार्यम्। मृ. पुष्य. श्र. मू. पुन. ह. रो. रे. उ३. (जन्मभं विना) **नक्षत्रेषु** । १।२।३।५।७।१०।११।१३ तिथिषु , शुक्लपक्षे, कृष्णे ५ यावत्। सू. मं. वृ. वारेषु, मतान्तरेण शु. चं. अपि, **पूर्वाह्ने, पुंभस्यांगे** तदंशे शुभम्। पापैः ३।६।११ स्थितैः, शुभैः १।४।५।७।९।१० स्थितैः, चन्द्रे २।३।४।५।९।१०।११ स्थिते, ४।८।१० पापरहितैः शुभम्।

### जातकर्ममुहूर्त्तः

जातकस्य ग्रहदोषनाशाय आयुः श्रीवृद्धये च **जन्मकाल एव जातकर्म** पिता कुर्यात्। तदतिक्रमे एकादशे द्वादशेऽह्नि, चि. अनु. रे. उ३. रो. अश्वि. पुन. पु. स्वा. **श्र. ध. श. नक्षत्रेषु** पूर्णिमां विहाय शुभतिथिदिनलग्नेषु शुभम्।

### शिशोर्दुग्धपानमुहूर्त्तः

अश्वि. रो. मृ. पुष्य. श्र. पुन. ह. रे. उ३. चि. अनु. ध. शत. नक्षत्रेषु। शुभतिथिषु शुभदिनेषु, वृष-सिंह-वृश्चिक-कुम्भ लग्नेषु स्तनपानं शुभम्। अन्नप्राशनोक्त-दिनतिथिनक्षत्रेषु सूतिकापथ्यं शुभम्। भैषज्योक्तनक्षत्रेषु औषधिभक्षणञ्च शुभं स्यात्।

### सूतिकास्नानमुहूर्त्तः

अश्वि.रो. मृ. स्वाती. अनु. उ३. रे. **नक्षत्रेषु** । रविमंगलबृहस्पतिदिनेषु, शुभलग्नेषु शुभदृग्युतेषु १।२।३।५।७।१०।११।१३।१५ तिथिषु सूतिकास्नानं शुभम्। आश्ले. पू३. ज्ये. ध. शत. नक्षत्रेषु मध्यमम्।

### प्रसूतिनखच्छेदनमुहूर्त्तः

अश्वि.रो. मृ. पुन. पु. उ३. ह. चि. स्वा. **वि. अनु. ज्ये.** श्र. ध. शत. नक्षत्रेषु । ३।५।७।१०।११।१३ तिथिषु, ३।५।६।७।८।११ लग्नेषु, शुभदिनेषु **पूर्वाह्ने शुभम्** ।

### स्त्रीणां लाक्षाभरण(लहठी)धारणमुहूर्त्तः

भ.आ.श्ले. म. वि-शत. रहित नक्षत्रेषु। शनिमंगलरहितदिनेषु शुभतिथिषु स्त्रीणां लाक्षाभरणधारणं(लहठीधारणं) शुभम्।

**शिशुनिष्क्रमणमुहूर्त्तः-**जन्मतश्चतुर्थे मासि यात्रोक्तदिनतिथिनक्षत्रेषु द्वादशे दिवसे वा शुभं स्यात्।

#### शिशोर्भूम्युपवेशनमुहूर्त्तः

आदौ पृथ्वीं वराहञ्च सम्पूज्य कुजवले पंचमे मासि उत्तरा३. रो. मृ. ज्ये. अनु. अश्वि. ह. पुष्य. अभिजित् नक्षत्रेषु रिक्तामारहिततिथिषु शुभदिनेषु वृषसिंहवृश्चिककुम्भलग्नेषु शिशोः कटिप्रदेशे कटिसूत्रं बद्ध्वा पृथिव्यामुपवेशयेत्। **तन्मन्त्रः-** रक्षैनं वसुधे देवि सदा सर्वगतं शुभम्। आयुः प्रमाणं सकलं निःक्षिपस्व हरिप्रिये। अत्रैव शिशोरग्रे वस्त्रं, शस्त्रं, लेखिनीं, पुस्तकं, सुवर्णं रौप्यञ्च स्थाप्यम्। तेषु बालो यं गृह्णाति तैस्तस्य वृत्तिः ज्ञातव्येति।

### शिशुविलोकनमुहूर्त्तः

तृतीये मासे शुभ-तिथिदिन-नक्षत्रेषु पुष्प-फल-वस्त्र-द्रव्यादिभिः शिशुदर्शनं शुभम्।

### नामकरणमुहूर्त्तः

विप्राणां ११, क्षत्रियाणां १३, **वैश्यानां** १६, शूद्राणां ३१ तमे दिने नामकरणं शुभम्। अथवा स्वा. पुन. श्र. ध. ह. **अश्वि.** पु. अभि. उ३.रो. मृ. रे. **चि. अनु.** नक्षत्रेषु। १।२।३।५।७।१०।११।१२।१३ तिथिषु। चं. बु. वृ. शु. दिनेषु पूर्वाह्ने शुभम्। मध्याह्ने मध्यमम्। **शुभलग्ने,** शुभैः १।४।५।७।९।१० स्थितैः, पापैः ३।६।११ स्थैः, ८।१२ गृहे शुद्धे, चन्द्रे २।३।५।६।१० स्थिते, लग्ने **शुभांशे** पितृपुत्रयोश्चन्द्रतारानुकूले उत्तरायणे शुद्धसमये शुभं नामकरणम्।

### अन्नप्राशनमुहूर्त्तः

कन्यकानां पञ्चममासतो विषम**मासेषु**, बालकानां षष्ठात्सममासेषु, रो. उत्तरा३. मृ. रे. चि. अनु. स्वा. पुन. श्र. ध. शत. ह. अश्वि. पु. अभि. नक्षत्रेषु, २।३।५।७।१०।१३।१५ तिथिषु, चं.बु. वृ. शु. दिनेषु, शुक्लपक्षे, पूर्वाह्ने, २।३।४।५।६।७।९।१०।११ लग्नेषु, जन्मलग्नराश्योरष्टमलग्नमंशञ्च रहितेषु, शुभैः १।४।५।७।९।१० स्थितैः, पापैः ३।६।११ गतैः, दशमस्थाने ग्रहरहिते शुभदृग्युतलग्ने, ४।६।८।१२ **रहिते** चन्द्रे अन्नप्राशनं शुभम्।

### कर्णवेधमुहूर्त्तः

१।२।३।५।६।७।१०।११।१२।**१३**।१५ तिथिषु, शुक्लपक्षे, कृष्णे ५ यावत्, चं. बु. वृ.शु. दिनेषु, जन्मतारां विहाय, श्र. ध. पुन. ह. उ३. अश्वि. पु. **अभि.**मृ.रे. **चि.** अनु. **नक्षत्रेषु,** ६।७।८ मासे वा विषमवर्षे, चैत्रपौषहरिशयनरिक्ताजन्ममाससमवर्षाणि त्यक्त्वा, २।३।४।६।७।९।१२ लग्नेषु, **शुभैः** १।४।५।७।९।१० गतैः, पापैः३।६।११गतैः,लग्नस्थे गुरौ शुद्धसमये शुभः।

### चूडाकरण(मुण्डन-आद्यकचकर्त्तन)मुहूर्त्तः

सौरक्रमेण चैत्ररहितमाघादिषण्**मासेषु, ज्येष्ठग्रहणयोः** ज्येष्ठसन्तानं विना, विषमवर्षे, अश्वि. मृ. पुन. पु. ह. चि. स्वा. ज्ये. अभि. श्र. ध. शत. रे. नक्षत्रेषु, चं. बु. वृ. शु. **दिनेषु,** २।३।५।७।१०।११।१३ तिथिषु, शुक्लपक्षे, कृष्णे ५ यावत्, २।३।४।७।९।१२ एतद्राशेर्लग्नांशे, शुक्रवर्जिताष्टम**शुद्धे,** पापैः ३।६।११ गतैः, शुभैः १।४।५।७।९।१० गतैः, जन्मराशिलग्नयोरष्टमेतरलग्ने, ४।६।८। १२ रहितचन्द्रे शुभम्।

### अक्षरारम्भमुहूर्त्तः

उत्तरायणे पञ्चमवर्षे (वालो **यदि क्षमस्तदा** तत्पूर्वमपि) गणेशविष्णुसरस्वतीलक्ष्मीनवग्रहकुलग्रामदेवताः विधिवत् सम्पूज्य **प्रथमाक्षरारम्भो** विधेयः। अश्वि. **आर्द्रा. पुन.** पु. ह. चि. स्वा. अनु. अभि. श्र. रे. नक्षत्रेषु, २।३।५।६।१०।११।१२ तिथिषु, शुक्लपक्षे, कृष्णे ५ यावत्, **चं. बु.** वृ. शु. दिनेषु, वृषमिथुनकन्याधनुमीनलग्नेषु तन्वांशे चोत्तमः। कुम्भांशकं विनाऽष्टमशुद्धे, गुरौ दशमे, **बुधे सप्तमे,** शुक्रे लग्ने, ग्रहवलाढ्ये शुभः।

## विद्यारम्भमुहूर्त्तः

उत्तरायणे गणेशविष्णुलक्ष्मीसरस्वतीकुलग्रामदेवताश्च सम्पूज्य अक्षरग्रहणे दृढे संजाते सति सूर्यबुधगुरुशुक्रदिनेषु, २।३।५।६।१०।११।१२ तिथिषु, अश्वि. मृ. आ. पुन. पु. आश्ले. ह. चि. स्वा. मू. पूर्वा३. श्र. ध. शत. नक्षत्रेषु, शुक्लपक्षे, कृष्णे ५ यावत्, लग्नाष्टमशुद्धे, शुभैः १।४।५।७।९।१० गतैः, पापैः ३।६।११ गतैः, वृषमिथुनकन्याधनुमीनलग्नेषु तदंशे वा विद्यारम्भः शुभः।

## उपनयन (व्रतबन्ध) मुहूर्त्तः

शुद्धसमये, उत्तरायणे, माघादिषण्मासेषु, सू. चं. बु. वृ. शु.दिनेषु (सामवेदिनां मंगलदिनेऽपि) जन्ममासनक्षत्रादौ व्रतं शुभम्। २।३।५।१०।११।१२ तिथिषु शुक्लपक्षे पूर्वाह्ने च शुभम्। मकरार्के पौषे ११।१२, मकरार्के माघे १२, चैत्रे वैशाखे च तृतीया, वैशाखभिन्नमासानां द्वितीया, आषाढे १०।११ चोपनयने निषिद्धाः। अश्वि. रो. मृ. आ. पुष्य. आश्ले. पूर्वा३. उत्तरा३. ह. चि. स्वा. अनु. मू. श्र. ध. शत. रे.नक्षत्रेषु (क्षत्रियवैश्ययोः पुनर्वसावपि) शुभम्। ब्राह्मणानां पुनर्वसुनक्षत्रे उपनयनं निषिद्धम्। मन्वादियुगादिषु अपराह्ने सायं, प्रदोषेऽनध्याये, कृष्णपक्षे चोपनयनं निषिद्धम्। त्रिषडस्थाः खलाः सर्वे चन्द्रो द्विद्यूनदिक्त्रिगः। सौम्याः केन्द्रत्रिकोणस्थाः लाभे सर्वे व्रते शुभाः। लग्नेश-चन्द्र-शुक्र-गुरवः षडष्टगाः न शुभाः। चन्द्रशुक्रौ लग्नात् १२ गतौ न शुभौ। १।५।८ स्थाः पापा न शुभाः। ६।८।१२ गताः शुभा न शुभप्रदाः। ३।६।११ गताः पापाः शुभदाः। पूर्णचन्द्रो वृष-कर्क-लग्नगतः शुभो नान्यथा। लग्नेऽर्कः शुभः। **गुरुशुद्धि**-जन्मराशितः उपनयनकाले २।५।७।९।११ स्थानगतः गुरुः शुभः। ४।१०।१२ स्थानगतः शान्त्या शुभः। १।३।६।८ स्थानगतो निषिद्धः। रामाचार्यमतेन १।३।६।१० स्थानगतो गुरुः शान्त्या शुभः। ४।८।१२ स्थानगतो निषिद्धः। ब्राह्मणानां पञ्चवर्षतः षोडशवर्षपर्यन्तं, क्षत्रियाणां षड्वर्षादारभ्य द्वाविंशतिवर्षपर्यन्तं, वैश्यानामष्टवर्षादारभ्य चतुर्विंशतिवर्षपर्यन्तमुपनयनकालः। तत्रोपनयनारम्भकालात्सर्वेषां यथोत्तरं गौणकालोऽतः समये प्राप्ते सति यथापूर्वमुपनयनं कार्यम्।

**प्रदोषनिर्णयः**- यदा तृतीयायां प्रहरात्र्यभ्यन्तरे चतुर्थी, द्वादश्यां मध्यरात्र्यभ्यन्तरे त्रयोदशी, षष्ठ्यां सार्द्धप्रहररात्र्यभ्यन्तरे सप्तमी तिथिर्भवेत्तदा प्रदोषोऽवगन्तव्यस्तत्रोपनयनं निषिद्धम्।

## विवाहमुहूर्त्तः

मार्गमाघफाल्गुनवैशाखज्येष्ठाषाढमासेषु सौरक्रमेण(देवोत्थानात्परं हरिशयनात्प्रागेव) **१।२।३।५।६।७।८। १०।११।१२।१३।१५** तिथिषु, **सू. चं. बु. वृ. श.** वारेषु, **अश्वि. रो. मृ. म. उत्तरा ३, ह. चि. स्वा. अनु. मू. श्र. ध. रे.** नक्षत्रेषु पंचशलाकावेधरहितेषु, वृष, मिथुन, कन्या, तुला, धनु, मीन, लग्नेषु, शुभग्रहेषु १।४।५।७।९।१० स्थितेषु, पापेषु ३।६।११ गतेषु शुभः। विवाहे यदि गुरुर्वा शुक्रो १।४।५।७।९।१० गतो भवेत्तदा सकलदोषं नाशयति। ज्येष्ठा कन्या, ज्येष्ठो वरः ज्येष्ठमासश्च त्रिज्येष्ठसंज्ञकस्तत्र विवाहो न कार्यः। ज्येष्ठवरकन्ययोः ज्येष्ठमासे विवाहो निषिद्धः। ज्येष्ठद्वयं मध्यमं स्यात्,आवश्यके कृत्तिकास्थं सूर्यं त्यक्त्वा ज्येष्ठमासेऽपि ज्येष्ठवरकन्ययोर्विवाहः शुभः।

**वरवरणमुहूर्त्तः** - शुभतिथिदिनलग्नेषु कृत्तिकापूर्वात्रयविवाहोक्तभेषु पुष्पफलवस्त्रादिभिः वरवरणं शुभम्।
**कन्यावरणमुहूर्त्तः** - शुभतिथिदिनलग्नेषु कृत्तिकापूर्वात्रयविवाहभेषु च **पुष्पफलवस्त्रादिभिः** कन्यावरणं शुभम्।
**विवाहोपनयनादौ मण्डपादिनिर्माणमुहूर्त्तः** - विवाहमुहूर्त्ते वैवाह्किमुपनयनादिमुहूर्त्ते चोपनयनादिकं कृत्यं (आवश्यके शुभतिथिदिननक्षत्रेषु) विधेयम्।

**महामृत्युञ्जयमन्त्रजपविधिः** – श्रीगणेशादिस्मरणपूर्वकंशान्तिपाठं कृत्वा कुशत्रयतिलजलान्यादाय **संकल्पः**- ॐ अद्य अमुके मासि अमुके पक्षे अमुकतिथौ अमुक **गोत्रस्यास्य श्री अमुकश**मर्णः उपस्थितशरीराविरोधेनाखिलारिष्टझटितिप्रशमनपूर्वक-दीर्घायुष्ट्वबलपुष्टिनैरुज्यप्राप्तिकाम **अद्यारभ्य** यथाकालं यजुर्वेदान्तर्गत माध्यन्दिनशाखीय **'ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्। उर्व्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् भूर्भुवः स्वरों जूं सः हौं ॐ'** इति **महामृत्युंजय** मन्त्रस्य एतत्सहस्रसंख्यकजपमहं करिष्यामि। **विनियोगः**-ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः त्र्यम्बकं **यजामहे सुगन्धिं** पुष्टिवर्धनम्। उर्व्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् भूर्भुवः स्वरों जूं सः हौं ॐ अस्य श्री **महामृत्युञ्जय**मन्त्रस्य वामदेवकहोलवशिष्ठाः ऋषयः, पंक्तिगायत्र्यनुष्टुप्छन्दांसि सदाशिवमहामृत्युंजयरुद्रा देवता हौं **बीजं जूं शक्तिः** सः कीलकं महामृत्युंजयप्रीतये ममाभीष्टसिद्धयर्थे जपे विनियोगः। **ऋष्यादिन्यासः**-वामदेव-कहोल-वशिष्ठऋषिभ्यो **नमः शिरसि।** पंक्तिगायत्र्यनुष्टुप्छन्दोभ्यो नमः **मुखे।** सदाशिवमहामृत्युञ्जयरुद्रदेवताभ्यो **नमः हृदि।** हौं बीजाय नमः **नाभौ।** जूं शक्तये नमः **पादयोः।** सः कीलकाय नमः **सर्वाङ्गे। हृदयादिन्यासः-ॐ हौं** ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः त्र्यम्बकं ॐ नमो भगवते रुद्राय शूलपाणये स्वाहा **हृदयाय नमः।** ॐ हौं ॐ **जूं सः भूर्भुवः** स्वः यजामहे ॐ नमो भगवते रुद्राय अष्टमूर्त्तये मां जीवय **शिरसि स्वाहा,** ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः **स्वः सुगन्धिं** पुष्टिवर्धनं ॐ नमो भगवते रुद्राय चन्द्रशिरसि जटिने स्वाहा **शिखायै वषट्।** ॐ हौं ॐ जूं सः **भूर्भुवः स्वः उर्व्वारुकमिव** बन्धनात् ॐ नमो भगवते रुद्राय त्रिपुरान्तकाय हाँ हीं हौं **कवचाय हुम्।** ॐ हौं ॐ जूं सः **भूर्भुवः** स्वः मृत्योर्मुक्षीय ॐ नमो भगवते रुद्राय त्रिलोचनाय ऋग्यजुःसाममन्त्रत्रयाय **नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ हौं ॐ** जूं सः भूर्भुवः स्वः मामृतात् ॐ नमो भगवते रुद्राय अग्नित्रयाय उज्ज्वलज्वालाय मां रक्ष रक्ष अघोराय **अस्त्राय** फट्। इति षडङ्गन्यासः। **ततः**-चन्द्रोद्भासितमूर्द्धजं सुरपतिं पीयूषपात्रं वहद्धस्ताब्जेन दधत्सुदीप्तममलं हास्यास्यपंकेरुहम्।
सूर्येन्द्वग्निविलोचनं करतले पाशाक्षसूत्रांकुशाम्भोजं विभ्रतमक्षयं **सुरपतिं मृत्यु**ञ्जयं संस्मरेत्।।
इत्यनेन ध्यात्वा यथोपचारैः सम्पूज्य मन्त्रं जपेत्। जपसमाप्तौ **च** शाकल्यादिभिः दशांशक्रमेण होम-तर्पणमार्जनब्राह्मणभोजनादिकं कारयेत्। **लघुमृत्युंजयमन्त्रः**- ॐ **जूं सः।**



## वधूप्रवेशमुहूर्त्तः

विवाहादिवसात्षोडशदिनमध्ये समदिने पंचम-सप्तम-नवमदिने (अत्र गदन्य**विषमदिनेऽपि**) ततो मासमध्ये विषमदिने ततो वर्षान्ते विषममासे,चैत्रपौषमाद्रक्षयमासमलमासभिन्नसमये वधूप्रवेशः प्रशस्तः। **नात्र** शुक्रविचारः कालविचारो वा। १।२।३।५।६।७।८। १०।११।१२।१३।१५ तिथिषु। चं.वृ.शु.श.वारेषु, बुधेऽप्यावश्यके। **अश्वि.रो.मृ.पुष्य.**मघा.उत्तरा३.ह.चि.स्वा.अनु.मू.श्र.ध.रे. नक्षत्रेषु, २।३।५।६।७।८।९।११।१२ लग्नेषु, शुभैः१।२।५।७।१०।**११ स्थितैः,** पापैः ३।६।११ गतैः, ४।८ शुद्धे शुभः

## नववध्वाः पाकारम्भमुहूर्त्तः

रो. मृ. उत्तरा ३. पुष्य. कृ. वि. ज्ये. श्र. व. शत. रे. नक्षत्रेषु, **बु. वृ. श.दिनेषु,** शुभतिथिषु, शुक्लपक्षे, कृष्णे ५ यावत् २।५।८।११ लग्नेषु, लग्नात् चतुर्थाष्टमगृहे शुद्धे, शुभे वलान्विते सप्तमस्थे शुभः।

## द्विरागमनमुहूर्त्तः

अश्वि. रो. मृ. उत्तरा ३. पुन. पुष्य. ह. चि. स्वा. अनु. मू. श्र. **ध. शत. रे.नक्षत्रेषु,** १।२।३।५।६।७।८।१०।११।१२। १३।१५ तिथिषु, शुक्लपक्षे, कृष्णे ५ यावत्, सू.चं.बु.वृ.शु.दिनेषु मृत्युयोगादिरहितेषु, २।३।६।७।१२ लग्नेषु शुभग्रहेषु शुक्रे १।४।७।१० गते, जीवे ३।६।१०।११ गते, पापैः ३।६।११ **स्थितैः शुभम्।** विषमवर्षे सौरक्रमेण मार्गफाल्गुन वैशाखमासेषु शुक्रबाल्यस्तवृद्धत्वभिन्नकाले वामपृष्ठगते शुक्रे, शुक्रोदिते **द्विरागमनं शुभम्।** प्रथमवर्षे न शुक्रविचारः कार्यः। तृतीयादिविषमवर्षे **शुक्रविचारो विधेयः।** शुक्रान्धविहित(रे.अश्वि. **रो. मृ.**) **नक्षत्रेषु सम्मुखदक्षिणशुक्रेऽपि** द्विरागमनं शुभम्। व्यतीते पञ्चमे वर्षे न शुक्रविचारो विधेयः। तदानीं यस्मिन् कस्मिन्नपि **शुभतिथिदिननक्षत्रयुक्तकाले** द्विरागमनं शुभम्।

## वापीकूपतडागादिखननमुहूर्त्तः

विचैत्रोत्तरायणे शुद्धसमये शुक्लपक्षे, रो. मृ. पुष्य. म. उत्तरा३. ह. अनु. **पूषा. ध. श. रे.नक्षत्रेषु** पृथ्वीशयननक्षत्ररहितेषु, शुभतिथिषु ४।१०।११। १२ लग्नेषु राशिषु च, शुक्रे दशमस्थे, गुरुबुधयोरन्यतरस्य लग्ने, **पापैः निर्बलैः,** शुभैः सुबलिभिः, शुद्धे वापीकूपतडागादि चक्रे शुभम।

## जलाशयवाटिकादेवादिप्रतिष्ठामुहूर्त्तः

विचैत्रोत्तरायणे शुद्धसमये शुक्लपक्षे, सू. चं. बु. बृ. शु.वारेषु, २।३।**५।६।७।८।१०।११।१२।१३।१५** तिथिषु, मृ.रे.चि. अनु. ह. अश्वि. पु. स्वा. पुन. श्र. ध. श. रो. उत्तरा३. नक्षत्रेषु, **अथवा प्रतिष्ठा**प्यदेवताकातिथिदिननक्षत्रेषुदेवादिप्रतिष्ठा शुभा। सिंहे सूर्यं, कुम्भे ब्रह्माणं, मिथुने शंकरं स्थापयेत्। द्विस्वभावे देव्यः चरलग्ने च योगिन्यः स्थापनीयाः। सर्वे स्थिरलग्नेषु स्थाप्याः। चन्द्रपापैः ३।६।११ स्थितैः। शुभैः ८।१२ भिन्न**स्थानगतैः** देवादिप्रतिष्ठा शुभा। ग्रहाः पुष्ये, दुर्गा श्रवणायां, गणेशादयो रेवत्यां स्थाप्याः। भगवतो देवोत्थानैकादश्यां, रामनवम्यां, **कृष्णाष्टम्यां,** देव्याः नवरात्रौ, जानकीनवम्यां, दीपमालिकायां, शंकरस्य शिवरात्रौ (माघफाल्गुनकृष्णचतुर्दश्यां) वा शुभं **प्रतिष्ठापनम्।**

## कूपचक्रं रोहिणीभात्

| स्थान | न | फलानि |
|---|---|---|
| मध्य | ३ | शीघ्रस्वादु |
| पूर्व | ३ | निर्जलम् |
| अग्नि | ३ | शीघ्रजलम् |
| दक्षिण | ३ | निर्जलम् |
| नैर्ऋत्य | ३ | निर्मलजलम् |
| पश्चिम | ३ | शीतलजलम् |
| वायु | ३ | जलहानिः |
| उत्तर | ३ | मधुरजलम् |
| ईशान | ३ | क्षारजलम् |

अथवा सूर्यर्क्षादप्येवमेव गणनीयम्

## सूर्यभात्तडागचक्रम्

| स्थान | न | फलानि |
|---|---|---|
| पूर्व | २ | जलशोषः |
| अग्नि | ३ | बहुजलम् |
| दक्षिण | २ | जलहानिः |
| नैर्ऋत्य | २ | अमृतजलम् |
| पश्चिम | ३ | स्वादुजलम् |
| वायु | २ | निर्जलम् |
| उत्तर | ३ | स्थिरजलम् |
| ईशान | ३ | नष्टजलम् |
| मध्य | ५ | पूर्णजलम् |
| वाह्य | ३ | अमृतजलम् |

## रोहिणी नक्षत्राद्वापी चक्रम्

| स्थान | न | फलानि |
|---|---|---|
| पृष्ठे | ४ | शुभजलं |
| नाभौ | ४ | बुद्धिनाशः |
| हृदि | ४ | स्थिरता |
| मध्ये | ४ | कलहः |
| नेत्रयोः | ४ | धनागमः |
| पादयोः | ८ | दुःखम् |

## हवनचक्रं सूर्यभात्

| न. | ग्रह | फलानि |
|---|---|---|
| ३ | सू. | अशुभम् |
| ३ | बु. | शुभम् |
| ३ | शु. | शुभम् |
| ३ | श. | अशुभम् |
| ३ | चं. | शुभम् |
| ३ | मं. | अशुभम् |
| ३ | वृ. | शुभम् |
| ३ | रा. | अशुभम् |
| ३ | के. | अशुभम् |

### गृहारम्भ(वास्तु)मुहूर्त्तः

वैशाख, आषाढ(पशुगृहं त्यक्त्वा), कार्तिक, अग्रहण, फाल्गुन, श्रावण (सौरक्रमेण) मासेषु। सम्मुखकालवर्जितसमये, २।३।५।७।१०।११।१२।१३।१५ तिथिषु शुक्लपक्षे। कृष्णे ५ यावत्। अ.रो.मृ.पुन.पु.उ३.ह. चि.स्वा.अनु.मूल.श्र.ध.शत.रे.नक्षत्रेषु, पृथ्वीशयननक्षत्ररहितेषु। चं.बु.बृ.शु.श. दिनेषु। दिवा, शुद्धसमये, शुद्धवास्तुचक्रे, २।३।५। ६।८।९।११।१२ लग्नेषु, लग्ने शुभदृग्युते, शुभैः १। ४। ५। ७।९।१० स्थितैः, पापैः ३।६।११ स्थितैः, ८।१२ ग्रहरहिते शुभः। तृणकाष्ठादिगृहनिर्माणमशुद्धसमयेऽपि परञ्च इष्टिकादि गृहनिर्माणं शुद्धसमये एव। देवालयमठादिनिर्माणमप्येष्वेव मुहूर्त्तेषु शुभम्।

### हलचक्रमर्कभुक्तभात्

| नक्षत्रम् | ३ | ८ | ९ | ८ |
|---|---|---|---|---|
| फलम् | अशुभं | शुभं | अशुभं | शुभं |

### बीजवपने फणिचक्रं राहुनक्षत्रात्

| नक्षत्रम् | ८ | ३ | १ | ३ | १ | ३ | १ | ३ | ४ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| फलम् | अशुभं | शुभं | अशुभं | शुभं | अशुभं | शुभं | अशुभं | शुभं | अशुभं |

### तिथीनां नन्दादिसंज्ञा

| संज्ञा | तिथयः |
|---|---|
| नन्दा | १।६।११ |
| भद्रा | २।७।१२ |
| जया | ३।८।१३ |
| रिक्ता | ४।९।१४ |
| पूर्णा | ५।१०।१५ |
| सिनीवाली | दृष्टेन्दुमा |
| कुहूः | नष्टेन्दुमा |

### देवालयजलाशयगृहारम्भे खातदिग्ज्ञानम्

| खातदिक् | नैर्ऋत्याम् | आग्नेयाम् | ऐशान्याम् | वायव्याम् |
|---|---|---|---|---|
| देवालयारम्भे | ध.म.कु. सूर्ये | मी.मे.वृ.सूर्ये | मि.क.सिं.सूर्ये | कं.तु.वृ. सूर्ये |
| जलाशयारम्भे | तु.वृ.ध. सूर्ये | म.कु.मी. सूर्ये | मे.वृ.मि. सूर्ये | क.सिं.कं.सूर्ये |
| गृहारम्भे | वृ.मि.क. सूर्ये | सिं.क.तु.सूर्ये | वृ.ध.म. सूर्ये | कु.मी.मे.सूर्ये |

### गृहप्रवेशमुहूर्त्तः

सौरक्रमेण वैशाख, आषाढ(पशुगृहं त्यक्त्वा), कार्तिक, अग्रहण, फाल्गुन, श्रावणमासेषु।२।३।५।७।१०।११।१२।१३।१५ तिथिषु, शुक्लपक्षे, कृष्णे५ यावत्, अ. रो. मृ. पुन. पु. उ३. ह. चि. स्वा. अनु. मूल. श्र.ध. शत. रे. नक्षत्रेषु, चं. बु. वृ. शु. श. दिनेषु, दिवारात्रौ, शुद्धसमये, सम्मुखकालवर्जितसमये, शुद्धे कुम्भचक्रे, २।५।८।११ लग्नेषूत्तमः, ३।६। ९।१२ लग्नेषु मध्यमः, जन्मराशिलग्नाभ्यामुपचय ३।६।१०।११ राश्यंशयोः स्थिरराशौ, लग्नात् १।३। ५।७।९।१०।११ स्थानेषु शुभाः, ३।६।११ स्थानेषु पापाः, ४।८ भवने ग्रहरहिते, गृहप्रवेशः शुभः। इष्टिकादि गृहप्रवेशः शुद्धसमये एव। तृणकाष्ठादिक- गृहप्रवेशोऽशुद्धसमयेऽपि। अग्निभये राजकोपे दैविककोपे सति यस्मिन् कस्मिन् शुभमुहूर्त्ते गृहारम्भो गृहप्रवेशश्च कार्यः।

चरणिविचारः-स्वामिहस्तप्रमाणेन दीर्घविस्तारसंयुतम्। सप्तभिश्च हरेद् भागं शेषं चरणिरुच्यते। तत्फलम्-पशुहानिः पशो रोगः पशुलाभः पशुक्षयः। पशुनाशः पशोर्वृद्धिः पशुभेदो बहुपशुः।

### गृहप्रवेशे कुम्भचक्रमर्कभात्

| स्थानम् | न. | फलानि |
|---|---|---|
| मु. | १ | अग्निदाहः |
| पू. | ४ | उद्वसनम् |
| द. | ४ | लाभः |
| प. | ४ | धनम् |
| उ. | ४ | कलहः |
| म. | ४ | विनाशः |
| अ. | ३ | स्थिरता |
| क. | ३ | स्थिरता |

### गृहारम्भे वृषचक्रमर्कभात्

| स्थानम् | न. | फलानि |
|---|---|---|
| शीर्षे | ३ | अग्निभयम् |
| अ.पा. | ४ | शून्यम् |
| पृ.पा. | ४ | स्थैर्यम् |
| पृष्ठे | ३ | धनम् |
| द.कु. | ४ | लाभः |
| पृ. | ३ | नाशः |
| वा.कु. | ३ | धननाशः |
| मुखे | ३ | कष्टम् |

पृथ्वीशयननक्षत्राणि-सूर्यनक्षत्रात् ५।७।९।१२।१९।२६ मिते चन्द्रनक्षत्रे पृथ्वी शेते। एषु तडागवापीकूपवास्तुप्रभृति कार्यं, ट्यूब्बेल ,बोरिंगप्रभृति स्थापनञ्च न कर्त्तव्यम्।

**ट्यूब्बेलवोरिंगटंकीस्थापनमुहूर्त्तः**-कृ.आश्ले.म.पू३. भ.वि. मू.नक्षत्रेषु। २।४।५।६।७।९।१३।१५तिथिषु, शुक्लपक्षे, कृष्णपक्षे ५ यावत्। चं.बु.वृ.शु.दिनषु। पूर्वाह्णेऽपराह्णे वा, २।३। ४।६।७।९।१०।११।१२ लग्नेषु, लग्ने शुभयुग्दृष्टे, शुभैः १।४।५।७।९।१०स्थितैः, पापैः ३।६।११ गतैः शुभम्।

**मासस्नानमुहूर्त्तः**-विवाहदिनात्षोडशदिनमध्ये तदभावे मासपर्यन्तं २।३ ।५।७।१०।१३ तिथिषु, चं.बु.वृ.शु. दिनेषु, आर्द्रा. पुन. पु.आश्ले. म. पूफ. उफ. ह. चि. स्वा. नक्षत्रेषु, वृष, मिथुन, कन्या, तुलालग्नेषु शुभम्।

**चुल्हिकास्थापनमुहूर्त्तः**-अ.भ.वि.रो.मृ.उ३.कृ.मू.पूषा.ध.आर्द्रा. नक्षत्रेषु,सू.मं.श.दिनेषु, शुभतिथिषु, शुभलग्नेषु शुभम्।

### चुल्हिकाचक्रम् सूर्यभाद्दिनभावधि

| स्थान | नं० | फलम् | स्थान | नं० | फलम् |
|---|---|---|---|---|---|
| पृष्ठे | ६ | धनम् | गर्भे | ५ | नाशः |
| शीर्षे | ४ | मृत्युभयम् | हस्ते | २ | भोगः |
| बाहौ | ८ | सुखम् | चरणे | २ | स्त्रीमृति |

**मन्त्रग्रहणमुहूर्त्तः**-अश्वि.रो.पुन.पु.उत्तरा३.ह.चि.स्वा.अनु. मू.अभि.श्र.ध.श.रे.नक्षत्रेषु,२।३।५।७।१०।११।१२।१३।१५ तिथिषु,कृष्णे५यावत्,सू.चं.बु.बृ.शु.वारेषु,शुद्धसमये प्रातर्मध्याह्ने वा २।३।५।७।९।१२लग्नेषु, शुभैः१।४।५।७।९।१० गतैः,पापैः३।६।११स्थितैः,सौर-वैशाख श्रावणाश्विनकार्तिकाग्रहणमाघफाल्गुनेषु। संक्रान्तौ पूर्णिमायां नवरात्रमध्ये, सूर्यग्रहणे, सिद्धिक्षेत्रे मन्वादियुगादिषु चाऽपि मन्त्रग्रहणं शुभम्।

**व्रतोद्यापनमुहूर्त्तः**-अश्वि.रो.पुन.मृ.पु.उत्तरा३.ह.चि.स्वा.अनु.मू. श्र.ध.श.रे.नक्षत्रेषु,शुद्धसमये क्रियमाणव्रततिथिदिवसेषु वा, कार्तिकमाघफाल्गुनवैशाखज्येष्ठाषाढमासेषु, शुभलग्नेषु, कार्तिक-तुलस्याकाशदीपदानव्रतोद्यापनं शुद्धसमये वृश्चिकसंक्रान्ति- पूर्वरात्रौ, एवमेव यस्य व्रतस्य मासविशेषेण सह सम्बन्धस्तत्तस्मिन्नेव मासे शुद्धसमये कार्यम्। शुभैः१।४।५।७।९।१०स्थितैः,पापैः३।६।११ स्थितैः, पंचमेशे नवमेशे गुरौ शुक्रे च बलाढ्ये सति शुभम्।

**यात्रामुहूर्त्तः**-वामपृष्ठराहौ, मलमासक्षयमास-सौरक्रमेण चैत्रभाद्रपौषरहितमासेषु, अ.मृ.पुन.पु.ह.ज्ये.अनु. श्र.रे.नक्षत्रेषूत्तमः, रो.पू३.चि.स्वा.मू.पूषा.ध.नक्षत्रेषु मध्यमः, मृत्युयोगदग्धति-थिमासान्तसंक्रान्तिमासादिप्रभृतिदोषरहिते, अमृतसिद्धि-सर्वार्थसिद्धादिशुभयोगेषु, अमाशुक्लप्रतिपच्च विहायान्यतिथिषु योगवशेनान्यथा शुभतिथिषु, दिक्शूलरहितदिने २।४।६।८। ९तारासु, पञ्चमतारायाः प्रथमद्वितीयावृत्तेषु च, १।२।३।५।६।७।९।१०।११ चन्द्रेषु, आवश्यके ४।१२ चन्द्रेऽपि, द्विरागमनानन्तरं पितृगृहगतायाः पुनः पतिगृहगमने दक्षिणसम्मुखकालौ त्याज्यौ, तदनन्तरमावश्यके केवलं सम्मुखकालस्त्याज्यः। दक्षिणकाले च सम्मुख चन्द्रवशेन यात्रा कार्या।

**राहु(काल)वासः**-सौरक्रमेण मार्गपौषमाघमासेषु पूर्वस्याम्, फाल्गुनचैत्रवैशाखेषु दक्षिणस्याम्, ज्येष्ठाषाढश्रावणेषु पश्चिमायाम्, भाद्राश्विनकार्तिकेषु उत्तरस्यां कालवासः।

**दिक्शूलविचारः** -सोमे शनौ च पूर्वस्यां, वृहस्पतिवासरे दक्षिणस्यां, रवि- शुक्रवासरयोः पश्चिमायां, मंगलबुधवासरयोः उत्तरस्यां दिशि दिक्शूलत्वाद् गमनं निषिद्धम्।

**दिक्शूलपरिहारः** -रव्यादिवासरेषु क्रमेण घृतपयोगुडतिलदधि -यव-माषान्नं भुक्त्वा शूलदोषोपशान्तये गच्छेदावश्यके।

**सर्वदिग्गमननक्षत्राणि**-अश्विनीमृगशिरापुष्यश्रवणनक्षत्राणि सर्वदिग्गमने शुभानि।



### विदिक्शूलविचारः

शनौ पूर्वे, चन्द्रेऽग्निकोणे, गुरौ याम्यां, बुधे नैर्ऋत्यां, सूर्ये प्रतीच्यां, शुक्रे वायुकोणे, उत्तरस्यां मंगले बुधे, ऐशान्यां बुधमन्दयोर्न गन्तव्यम्।

**लग्नचन्द्रयोर्वासः**-मेषसिंहधनुराशिषु पूर्वस्यां, वृषकन्या-मकरराशिषु दक्षिणस्यां, मिथुनतुलाकुम्भ- राशिषु पश्चिमायां,कर्कवृश्चिकमीनराशिषु चोत्तरस्यां लग्नचन्द्रयोर्वासः। **सम्मुखदक्षिण-लग्नचन्द्रयोः यात्रा शुभा। परं सर्वदिग्गमननक्षत्रेषु वामपृष्ठचन्द्रेऽपि यात्रा शुभा।**

### चन्द्रविचारः

जन्मनामग्रामादिराशितोऽभीष्टदिनस्य चन्द्रं यावद् गणयेत्। तत्र१।२।३।५।६।७।९।१०।११ संख्याकश्चन्द्रः शुभप्रदः, ४ कलहप्रदः, १२ हानिकरः, ८चन्द्रः मृत्युप्रदः। तत्र दुष्टे चन्द्रे तद्दोषशान्त्यर्थ-मामतण्डुलदधिशंखश्वेतवस्त्र- सितादिदानं कार्यम्।

### द्वादशचन्द्रस्य विशेषः

आधाने सम्प्रदाने च विवादे राजविग्रहे।
पाणिग्रहे प्रयाणे च चन्द्रो द्वादशगः शुभः।।
अभिषेके निषेके च गृहे पुंसवनादिषु।
यात्रायुद्धे विवादे च चन्द्रो द्वादशगः शुभः।।

### जन्मराशि-नामराशिवशेन विचारणीयविषयाः

विवाहे सर्वमांगल्ये यात्रायां ग्रहगोचरे।
जन्मराशि प्रधानत्वं नामराशिं न चिन्तयेत्।।
देशे ग्रामे गृहे युद्धे सेवायां व्यवहारके।
नामराशिप्रधानत्वं जन्मराशिं न चिन्तयेत्।।
काकिण्यां वर्गशुद्धौ च वादे द्यूते स्वरोदये।
मन्त्रे पुनर्भूवरणे नामराशेः प्रधानता।।

### जन्मनक्षत्रे त्याज्याः

जन्मनक्षत्रगश्चन्द्रः प्रशस्तः सर्वकर्मसु।
क्षौर-भैषज्य-वादाध्वकर्त्तनेषु विवर्जयेत्।।

### जन्ममासे त्याज्याः

क्षौरकर्म दीर्घयात्रा कर्णवेधश्च।

## सिद्धादियोगचक्रं तिथिदिननक्षत्रवशेन

| दिनानि | रविः | सोमः | कुजः | बुधः | गुरुः | शुक्रः | शनिः |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| सिद्धियोगाः | ३।८।१३ | १।६।११ | ३।८।१३ | २।७।१२ | ५।१०।१५ | १।६।११ | ४।९।१४ |
| अमृतयोगाः | ५।१०।१५ | ५।१०।१५ | २।७।१२ | १।६।११ | ३।८।१३ | ४।९।१४ | १।६।११ |
| सर्वार्थ-सिद्धियोगाः | अश्वि.मू. पुष्य. हस्त. | रो.मृ.अनु. श्रव.पुष्य | अश्विनी. | रोहिणी.मृ. हस्त. अनु. | अश्वि.पुन पु.अनु.रे. | अश्वि.पुन. अनु.श्र.रे. | रोहिणी स्वा.श्रव. |
| मृत्युयोगाः | १।६।११ | २।७।१२ | १।६।११ | ३।८।१३ | ४।९।१४ | २।७।१२ | ५।१०।१५ |
| राज्यप्रदयोगः | ०० ०० | ०० ०० | ४।९।१४ | ०० ०० | ०० ०० | ०० ०० | ४।९।१४ |
| मध्यमयोगः | १२ | ११ | १० | ३ | ६ | २ | ७ |

## ताराचक्रम्

| तारा | जन्म | सम्पत् | विपत् | क्षेमः | प्रत्यरिः | साधकः | वधः | मित्रम् | अतिमित्रम् |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| नक्षत्राणि | १।१०।१९ | २।११।२० | ३।१२।२१ | ४।१३।२२ | ५।१४।२३ | ६।१५।२४ | ७।१६।२५ | ८।१७।२६ | ९।१८।२७ |
| फलानि | मध्यमम् | शुभम् | अशुभम् | शुभम् | अशुभम् | शुभम् | अशुभम् | शुभम् | शुभम् |
| दानानि | शाकम् | ०० | गुडम् | ०० | लवणम् | ०० | तिलाः | ०० | ०० |

जन्मनामग्रामनक्षत्राद्वाऽभीष्टदिनावधि गणयित्वा नवभिर्हरेत्। शेषं तारा स्यात्। तत्र २।४।६।८। ९ ताराः शुभदाः। १ तारा मध्यमा। ३।७ अशुभदा। **विशेषः** - पञ्चमतारा आवृत्तिवशेन धनदा १ सुखदा २ मृत्युदा च भवेत्तेन प्रत्यरितारायाः केवलं तृतीयावृत्तेस्तारा अशुभा, तत्र दानं कार्यम्।

कालशूलम्- उषःकाले पूर्वस्यां, मध्याह्ने दक्षिणस्यां, सायंकाले (निशायां) पश्चिमायां, निशीथे चोत्तरस्यां न गच्छेत्, कालशूलदोषत्वात्।

### पञ्चक(भदवा)विचारः

धनिष्ठाशतभिषापूर्वभाद्रोत्तरभाद्ररेवतीनक्षत्राणि पचकसंज्ञकानि तत्र दक्षिणदिग्गमनगृहाच्छादनप्रेतदाहतृणकाष्टादिसंग्रहशय्यावितान-निर्माणादिकं च त्यजेत्। **तत्रापवादः**-वस्वादौ शतभिग्मध्ये पूर्वादौ चोत्तरान्तके। पञ्च पञ्च घटी त्याज्या रेवतीं सकलां त्यजेत्।

### दग्धतिथिमासान्तादिविचारः

मीने धनुषि स्थिते सूर्ये द्वितीया तिथिः, वृषे कुम्भे स्थिते सूर्ये चतुर्थी, मेषे कर्के स्थिते सूर्ये षष्ठी, मिथुने कन्यायां स्थिते सूर्ये अष्टमी, सिंहे वृश्चिके स्थिते सूर्ये दशमी, तुले मकरे च स्थिते सूर्ये द्वादशी तिथिर्दग्धा भवति। तत्र शुभकार्यं निषिद्धम्। एवमेव संक्रान्तिदिनं तत्पूर्वापरदिनञ्च (मासान्तमासादिसंज्ञकम्) यात्रादिसकलशुभकार्येषु त्याज्यम्।

### पुराणादिश्रवणमुहूर्त्तः

अश्वि.रो.मृ.पुन.पुष्य.ह.चि.स्वा.अनु.मू.श्र.नक्षत्रेषु, २।३।५।७।८।१०।११।१२।१३।१५ तिथिषु, शुक्लपक्षे, कृष्णपक्षे५ यावत्। सू.चं.बु.बृ.शु.दिनेषु, शुभलग्ने, लग्ने शुभयुग्दृष्टे बलाढ्ये, शुभैः१।४।५।७।९।१० स्थितैः, पापैः ३।६।११ स्थितैः, उत्तरायणे, श्रावणाश्विनकार्तिकमार्गमासेषु, तीर्थक्षेत्रे, देवालये, सिद्धिक्षेत्रे, पर्वविशेषे नवरात्रादौ च मुहूर्त्तं विनाऽपि शुभम्।

### इन्धनस्थापनमुहूर्त्तः

सूर्याक्रान्तनक्षत्रात् ६ नक्षत्रेषु शुभं, ततः ६ अशुभं, ततः ४ शुभं, ततः ८ अशुभं, ततः ४ शुभम्।

### नवान्नपार्वणमुहूर्त्तः

अ. रो. मृ. पुन. पु. उ३. ह. चि. स्वा. अनु. श्र. ध. श. रे. नक्षत्रेषु शुभम्। मूले नवान्नपार्वणं मध्यमम्। सू. चं. बु. बृ. दिनेषु। शुक्लपक्षे २।३। ५।७।८।१०। १२।१५ तिथिषु। वृश्चिकस्य ३।२० अंशानन्तरं १३ अंशं यावदावश्यके २३ अंशं यावदपि। ततः मकरे ७ अंशानन्तरं कुंभस्थे सूर्ये वा कार्यम्। २।३।४।६।७।९।१२ लग्नेषु, लग्ने शुभयुग्दृष्टे स्वस्वामियुते वा शुभम्। नवान्नपार्वणे जन्मतारा-विशाखस्थसूर्य- कृष्णपक्षाष्टमचन्द्र-पूर्वात्रयमघाभरण्याश्लेषाऽऽर्द्रानक्षत्र-सौरक्रमेणकार्तिकपौष-चैत्र-हरिशयन-नन्दात्रयोदशी-रिक्ता-मंगलशनिशुक्रदिनानि निषिद्धानि। अभावे कृष्णपञ्चमीं यावद् ग्राह्यः।

### कल्याणार्थशान्तिमुहूर्त्तः

अ. रो. मृ. पुन. पु. उ३. ह. चि. स्वा. अनु. मू. श्र.ध. शत. रे. नक्षत्रेषु, शुक्लपक्षे, कृष्णे ५ यावत्, २।३।५।६।७। ८।१०। ११।१२।१३।१५ तिथिषु, सू. चं. बु. बृ. शु. दिनेषु, शुद्धसमये, आवश्यकेऽशुद्धेऽपि। चैत्रपौषभाद्र-मलमासक्षयमासरहिते शुभम्। शुभलग्ने, लग्नस्थे गुरौ, चतुर्थस्थे चन्द्रे, दशमस्थे सूर्ये, अष्टमे लग्ने च पापरहिते शान्तिः शुभा।

### खलस्थापनमुहूर्त्तः

ग्रामसमीपे शुभस्थाने शुभतिथिदिननक्षत्रेषु शुभम्।

### धान्यच्छेदनमुहूर्त्तः

मू.ज्ये.आश्ले.आर्द्रा. पूभा.ह.कृ.ध.श्र.मृ.स्वा.म.उत्तरा३.पूषा. भ.चि.पुष्य.नक्षत्रेषु, सू.चं.बु.बृ.शु. दिनेषु, १।२।३।५।७।१०।११।१२। १३।१५ तिथिषु, २।५।८।११ लग्नेषु शुभम्। अन्यान्यपि यवगोधूमादीनि एष्वेव छेद्यानि।

### मेधिरोपणमुहूर्त्तः

अ.रो.मृ.पुन.पु.उत्तरा३.ह. चि. स्वा.अनु.श्र.ध.श.रे.नक्षत्रेषु शुभतिथिदिनलग्नेषु च मेधिरोपणं शुभम्।

### वर्षेशवशेन मेधिविचारः

वर्षेश सूर्य कृशः, चन्द्रे शिम्बरः, मंगले कदम्बकम्, बुधे उदुम्बकम्, गुरौ आम्रम्, शुक्रे पलाशः, शनौ निम्बम् शुभम्।

### कणमर्दनमुहूर्त्तः

मघा.पूफ. उफ. रो. ज्ये. मू. अनु. श्र. रे. नक्षत्रेषु शुभतिथिदिनलग्नेषु शुभम्।

### धान्यस्थापनमुहूर्त्तः

अ.रो.मृ. पुन.पुष्य.उत्तरा३. ह. चि. स्वा. अनु. मू. श्र. ध. श. रे. नक्षत्रेषु, शुभतिथिदिनयोः, २।३।५।८।९।१०।११।१२ लग्नेषु शुभम्।

### धान्यवृद्धिमुहूर्त्तः

अ. रो. पुन. पु. उत्तरा३. स्वा. वि. ज्ये. श्र. ध. श. नक्षत्रेषु शुभतिथिदिनलग्नेषु धान्यवृद्धिः शुभा।

### बीजस्थापनमुहूर्त्तः

रो. मृ. म. ह. स्वा. मू. उषा. पूभा. रे. नक्षत्रेषु चं. बु. बृ. शु. दिनेषु, शुक्लपक्षे, कृष्णे ५ यावत्, २।३।५।७।१०। ११।१२।१३।१५ तिथिषु, २।५।८।११ लग्नेषु शुभम्।

### बीजवपनमुहूर्त्तः

अश्वि. रो. मृ. पुन. पुष्य. चि. ह. उ३. स्वा. अनु. श्र. ध. रे. नक्षत्रेषु, २।३।५।७।१०।११।१२।१३।१५ तिथिषु. चं. बु. बृ. शु.दिनेषु, शुभलग्नेषु, लग्ने शुभदृग्युते, शुभैः केन्द्रत्रिकोणगैः पापैः त्रिषडायगैः शुभम्।

(कृषिकर्म) 

### हलप्रवहणमुहूर्त्तः

अश्वि. रो. मृ. पुन. म. उत्तरा३. ह. चि. स्वा. वि. अनु. मू. श्र. ध. श. रे. नक्षत्रेषु, चं. मं. बु. बृ. शु. वारेषु, शुभतिथिषु, शुभलग्नेषु, पापैः निर्बलैः, शुभैः सुबलिभिः, चन्द्रे जलचरराशिस्थे तन्नवांशे वा, गुरौ लग्नस्थे शुक्रे विधौ च पुष्टे शुभम्।

### धान्यरोपणमुहूर्त्तः

रो. उफ. वि. मू. श. पूभा. नक्षत्रेषु। सू. चं. बु. बृ. शु. दिनेषु। शुभतिथिषु शुभलग्नेषु च शुभम्।

### स्वामिसेवा(नौकरी)मुहूर्त्तः

अश्वि. मृ. पुष्य. ह. चि. अनु. अभि. रे. नक्षत्रेषु, सू. बु. बृ. शु. दिनेषु, शुभतिथिलग्नेषु, लग्ने शुभयुते, सूर्ये कुजे वा १०।११ स्थे, सेव्यसेवकयोर्योनिमैत्र्यां राशीशयोश्चापि मैत्र्यां सत्यां सेवारम्भः शुभः।

### कोषागारादौ द्रव्यस्थापनमुहूर्त्तः

अश्वि. मृ. पुष्य. पु. ह. चि. स्वा. अनु. श्र. ध. श. रे. नक्षत्रेषु, सू.मं. बु. बृ. शु. दिनेषु, शुद्धसमये, ३।५।८।१०।१३।१५ तिथिषु, शुभग्रहयुक्तलग्नेषु शुभम्।

### ऋणप्रदान(द्रव्यप्रयोग)मुहूर्त्तः

स्वा. पुन. मृ. रे. चि. अनु. वि.पुष्य. श्र. ध. श. नक्षत्रेषु, शुभतिथिषु,१।४।७।१० लग्नेषु, लग्ने शुभयुग्दृष्टे,५।८।९ ग्रहरहिते, चं.बृ.शु.श. दिनेषु शुभम्।

**ऋणदाने निषिद्धसमयः**-बुधवासरः,भर. कृ. आर्द्रा. आश्ले. मघा. पूर्वा३. चि. ज्ये. नक्षत्राणि, भद्रा-पातयोगश्च।

**ऋणग्रहणे निषिद्धसमयः**- रविमंगल दिने, संक्रान्तिः, वृद्धियोगः, हस्तनक्षत्रञ्च। एषु ऋणार्पणं शुभम्।

## युद्धयात्रायां कुलाकुलचक्रम्

| संज्ञा | नक्षत्राणि | तिथयः | दिनानि | फलानि |
|---|---|---|---|---|
| कुलः | पू.३,अश्वि.,पुष्य.,म.,मू. श्र.,कृ.,ज्ये.,वि.,चि | ४।८।१२।१४ | मं.,शु. | स्थायिजयदः |
| अकुलः | भर.,स्वा.,आश्ले.,ध.,रे ह. रो.,अनु.,पुन.,उत्तरा.३ | १।३।५।७।९। ११।१३।१५ | सू.,च.,वृ.,श. | यायिजयदः मुदः |
| कुलाकुलः | आर्द्रा.मू.,अभि.,श. | २।६।१० | बुधः | उभयोःसन्धिः |

## नष्टवस्तुज्ञानाय चक्रम्

| संज्ञा | नक्षत्राणि | लाभालाभः | दिक् |
|---|---|---|---|
| अन्धाक्षः | रो.पुष्य.उफ.वि.पूषा.ध.रे. | शीघ्रलाभः | पूर्वे |
| मन्दाक्षः | मृ.श्ले.ह.अनु.उषा.श.अश्वि. | प्रयत्नाल्लाभः | दक्षिण |
| मध्याक्षः | आर्द्रा.म.चि.ज्ये.अभि.पूभा.भ. | दूरश्रवणमलाभश्च | पश्चिम |
| सुलोचनः | पुन.पूफ.स्वा.मू.श्र.उभा.कृ. | अलाभः | उत्तरे |

पञ्चाङ्गस्थसायन तथा स्थितं ... लग्नं च ...

| अंश | ० | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मेष | २ | २ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ |
| ३ | ४७ | ५४ | ०१ | ०८ | १६ | २३ | ३० | ३८ | ४६ | ५४ | ०३ | ११ | १९ | २८ | ३६ | ४४ | ५३ | ०१ | १० | १८ | २६ | ३५ | ४३ | ५१ | ०० | ०८ | १६ | २५ | ३३ | ४२ |
| ३८ | ०८ | २४ | ४० | ५६ | १२ | २८ | ४४ | ०० | २२ | ४४ | ०६ | २८ | ५० | १२ | ३४ | ५६ | १८ | ४० | ०२ | २४ | ४६ | ०८ | ३० | ५२ | १४ | ३६ | ५८ | २० | ४२ | ०४ |
| वृष | ६ | ६ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | १० | १० | १० | १० | १० | १० | ११ | ११ | ११ | ११ |
| ४ | ५० | ५८ | ०७ | १५ | २३ | ३२ | ४० | ४९ | ५९ | ९ | १९ | २९ | ३९ | ४९ | ५९ | ०९ | १९ | ३० | ४० | ५० | ०० | १० | २० | ३० | ४० | ५० | ०० | ११ | २१ | ३१ |
| ११ | २६ | ४८ | १० | ३२ | ५४ | १६ | ३८ | ०० | ०६ | १२ | १८ | २४ | ३० | ३६ | ४२ | ४८ | ५४ | ०० | ०६ | १२ | १८ | २४ | ३० | ३६ | ४२ | ४८ | ५४ | ०० | ०६ | १२ |
| मिथुन | ११ | ११ | १२ | १२ | १२ | १२ | १२ | १२ | १३ | १३ | १३ | १३ | १३ | १४ | १४ | १४ | १४ | १४ | १४ | १५ | १५ | १५ | १५ | १५ | १६ | १६ | १६ | १६ | १६ | १७ |
| ५ | ४१ | ५१ | ०१ | ११ | २१ | ३१ | ४१ | ५२ | ०३ | १४ | २६ | ३७ | ४९ | ०० | १२ | २३ | ३४ | ४६ | ५७ | ०८ | २० | ३३ | ४३ | ५४ | ०६ | १७ | २८ | ४० | ५२ | ०३ |
| ३ | १८ | २४ | ३० | ३६ | ४२ | ४८ | ५४ | ०० | २६ | ५२ | १८ | ४४ | १० | ३६ | ०२ | २८ | ५४ | २० | ४६ | १२ | ३८ | ०४ | ३० | ५६ | २२ | ४८ | १४ | ४० | ०६ | ३२ |
| कर्क | १७ | १७ | १७ | १७ | १८ | १८ | १८ | १८ | १८ | १८ | १९ | १९ | १९ | १९ | १९ | २० | २० | २० | २० | २० | २१ | २१ | २१ | २१ | २१ | २२ | २२ | २२ | २२ | २२ |
| ५ | १४ | २५ | ३७ | ४९ | ०० | १२ | २३ | ३५ | ४६ | ५८ | ०९ | २१ | ३२ | ४४ | ५५ | ०७ | १९ | ३० | ४२ | ५३ | ०५ | १६ | २८ | ४० | ५१ | ०३ | १४ | २६ | ३७ | ४९ |
| ४३ | ५८ | २४ | ५० | १६ | ४२ | ०८ | ३४ | ०० | ३४ | ०८ | ४२ | १६ | ५० | २४ | ५८ | ३२ | ०६ | ४० | १४ | ४८ | २२ | ५६ | ३० | ०४ | ३८ | १२ | ४६ | २० | ५४ | २८ |
| सिंह | २३ | २३ | २३ | २३ | २३ | २३ | २४ | २४ | २४ | २४ | २४ | २५ | २५ | २५ | २५ | २५ | २६ | २६ | २६ | २६ | २६ | २६ | २७ | २७ | २७ | २७ | २७ | २८ | २८ | २८ |
| ५ | १ | १२ | २४ | ३५ | ४७ | ५८ | १० | २२ | ३३ | ४४ | ५५ | ०७ | १८ | २९ | ४० | ५२ | ०३ | १४ | २५ | ३७ | ४७ | ५१ | ११ | २२ | ३३ | ४४ | ५६ | ०७ | १८ | २९ |
| ४७ | २ | ३६ | १० | ४४ | १८ | ५२ | २६ | ०० | १६ | ३२ | ४८ | ०४ | २० | ३६ | ५२ | ०८ | २४ | ४० | ५६ | १२ | २८ | ४४ | ०० | १६ | ३२ | ४८ | ०४ | २० | ३६ | ५२ |
| कन्या | २८ | २८ | २९ | २९ | २९ | २९ | २९ | ३० | ३० | ३० | ३० | ३० | ३० | ३१ | ३१ | ३१ | ३१ | ३१ | ३२ | ३२ | ३२ | ३२ | ३२ | ३३ | ३३ | ३३ | ३३ | ३३ | ३३ | ३४ |
| ५ | ४१ | ५२ | ०३ | १४ | २६ | ३७ | ४८ | ०० | ११ | २२ | ३३ | ४५ | ५६ | ०७ | १८ | ३० | ४१ | ५२ | ०३ | १५ | २६ | ३७ | ४९ | ०० | ११ | २२ | ३४ | ४५ | ५६ | ०७ |
| ३८ | ८ | २४ | ४० | ५६ | १२ | २८ | ४४ | ०० | १६ | ३२ | ४८ | ०४ | २० | ३६ | ५२ | ०८ | २४ | ४० | ५६ | १२ | २८ | ४४ | ०० | १६ | ३२ | ४८ | ०४ | २० | ३६ | ५२ |
| तुला | ३४ | ३४ | ३४ | ३४ | ३५ | ३५ | ३५ | ३५ | ३५ | ३६ | ३६ | ३६ | ३६ | ३६ | ३६ | ३७ | ३७ | ३७ | ३७ | ३७ | ३८ | ३८ | ३८ | ३८ | ३९ | ३९ | ३९ | ३९ | ३९ | ३९ |
| ५ | १९ | ३० | ४१ | ५२ | ०४ | १५ | २६ | ३८ | ४९ | ०१ | १२ | २४ | ३५ | ४७ | ५८ | १० | २२ | ३३ | ४५ | ५६ | ०८ | १९ | ३१ | ४३ | ५४ | ०६ | १७ | २९ | ४० | ५२ |
| ३८ | ८ | २४ | ४० | ५६ | १२ | २८ | ४४ | ०० | ३४ | ०८ | ४२ | १६ | ५० | २४ | ५८ | ३२ | ०६ | ४० | १४ | ४८ | २२ | ५६ | ३० | ०४ | ३८ | १२ | ४६ | २० | ५४ | २८ |
| वृश्चिक | ४० | ४० | ४० | ४० | ४० | ४१ | ४१ | ४१ | ४१ | ४१ | ४१ | ४२ | ४२ | ४२ | ४२ | ४२ | ४३ | ४३ | ४३ | ४३ | ४३ | ४४ | ४४ | ४४ | ४४ | ४४ | ४५ | ४५ | ४५ | ४५ |
| ५ | ०४ | १५ | २७ | ३८ | ५० | ०१ | १३ | २५ | ३६ | ४७ | ५९ | १० | २२ | ३३ | ४५ | ५६ | ०७ | १९ | ३० | ४२ | ५३ | ०५ | १६ | २७ | ३९ | ५० | ०२ | १४ | २५ | ३६ |
| ४७ | ०२ | ३६ | १० | ४४ | १८ | ५२ | २६ | ०० | २६ | ५२ | १८ | ४४ | १० | ३६ | ०२ | २८ | ५४ | २० | ४६ | १२ | ३८ | ०४ | ३० | ५६ | २२ | ४८ | १४ | ४० | ०६ | ३२ |
| धनु | ४५ | ४५ | ४६ | ४६ | ४६ | ४६ | ४६ | ४७ | ४७ | ४७ | ४७ | ४७ | ४७ | ४८ | ४८ | ४८ | ४८ | ४८ | ४८ | ४९ | ४९ | ४९ | ४९ | ४९ | ४९ | ५० | ५० | ५० | ५० | ५० |
| ५ | ४७ | ५९ | १० | २२ | ३३ | ४५ | ५६ | ०८ | १९ | २९ | ३८ | ४८ | ५८ | ०८ | १८ | २८ | ३८ | ४९ | ५९ | ०९ | १९ | २९ | ३९ | ४९ | ५९ | ०९ | १९ | ३० | ४० | ५० |
| ४३ | ५८ | २४ | ५० | १६ | ४२ | ०८ | ३४ | ०० | ०६ | १२ | १८ | २४ | ३० | ३६ | ४२ | ४८ | ५४ | ०० | ०६ | १२ | १८ | २४ | ३० | ३६ | ४२ | ४८ | ५४ | ०० | ०६ | १२ |
| मकर | ५१ | ५१ | ५१ | ५१ | ५१ | ५१ | ५२ | ५२ | ५२ | ५२ | ५२ | ५२ | ५२ | ५३ | ५३ | ५३ | ५३ | ५३ | ५३ | ५३ | ५३ | ५४ | ५४ | ५४ | ५४ | ५४ | ५४ | ५४ | ५५ | ५५ |
| ५ | ०० | १० | २० | ३० | ४० | ५० | ०० | ११ | १९ | २७ | ३६ | ४४ | ५२ | ०१ | ०९ | १७ | २६ | ३४ | ४३ | ५१ | ५९ | ०८ | १६ | २४ | ३३ | ४१ | ४९ | ५८ | ०६ | १५ |
| ३ | १८ | २४ | ३० | ३६ | ४२ | ४८ | ५४ | ०० | २२ | ४४ | ०६ | २८ | ५० | १२ | ३४ | ५६ | १८ | ४० | ०२ | २४ | ४६ | ०८ | ३० | ५२ | १४ | ३६ | ५८ | २० | ४२ | ०४ |
| कुम्भ | ५५ | ५५ | ५५ | ५५ | ५५ | ५६ | ५६ | ५६ | ५६ | ५६ | ५६ | ५६ | ५६ | ५७ | ५७ | ५७ | ५७ | ५७ | ५७ | ५७ | ५७ | ५८ | ५८ | ५८ | ५८ | ५८ | ५८ | ५८ | ५८ | ५९ |
| ४ | २३ | ३१ | ४० | ४८ | ५६ | ०५ | १३ | २२ | २९ | ३६ | ४३ | ५१ | ५८ | ०५ | १२ | २० | २७ | ३४ | ४१ | ४९ | ५६ | ०३ | ११ | १८ | २५ | ३३ | ४० | ४७ | ५४ | ०१ |
| ११ | २६ | ४८ | १० | ३२ | ५४ | १६ | ३८ | ०० | १६ | ३२ | ४८ | ०४ | ४० | ३६ | ५२ | ०८ | २४ | ४० | ५६ | १२ | २८ | ४४ | ०० | १६ | ३२ | ४८ | ०४ | २० | ३६ | ५२ |
| मीन | ५९ | ५९ | ५९ | ५९ | ५९ | ५९ | ५९ | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | २ | ०२ | २ | २ | २ | २ |
| ३ | ०९ | १६ | २३ | ३० | ३८ | ४५ | ५२ | ०० | ०७ | १४ | २१ | २९ | ३६ | ४३ | ५० | ५८ | ०५ | १२ | १९ | २७ | ३४ | ४१ | ४९ | ५६ | ०३ | १० | १८ | २५ | ३२ | ३९ |
| ३८ | ०८ | २४ | ४० | ५६ | १२ | २८ | ४४ | ०० | १६ | ३२ | ४८ | ०४ | २० | ३६ | ५२ | ०८ | २४ | ४० | ५६ | १२ | २८ | ४४ | ०० | १६ | ३२ | ४८ | ०४ | २० | ३६ | ५२ |

उदाहरण-श्रावणशुक्ल ५ शुक्र को इष्टदण्डादि १४।३ है। इस दिन सूर्य के कर्क राशि के ११ अंश के नीचे दण्डादि १९।२१।१६ में इष्टदण्डादि१४।३ जोड़ने से ३३।२४।१६ हुआ। यह दण्डादि कन्या राशि के २५ अंश के आगे २६ अंश के नीचे पड़ा। अतः उक्त समय २६ अंश से कन्या लग्न हुआ। एवमेव सर्वत्र ज्ञातव्य है।

**दशमलग्नसारिणी**-यत्सूर्यराश्यंशसम्बन्धिकोष्ठे घट्यादिकं पूर्वनतेन हीनम्।
प्रत्यग्नतेनाढ्यमिदं विशेषो नभस्स्वदशमलग्नस्य सिद्ध्यै गणकैः प्रदिष्टः॥

| अंश | ० | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मेष | ३ | ३ | ३ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ८ | ८ |
| | ३३ | ४२ | ५१ | ०० | १० | १९ | २८ | ३८ | ४७ | ५७ | ७ | १७ | २७ | ३७ | ४७ | ५७ | ७ | १७ | २७ | ३७ | ४७ | ५७ | ७ | १७ | २७ | ३७ | ४७ | ५७ | ७ | १७ |
| २७८ | ०८ | २४ | ४० | ५६ | १२ | २८ | ४४ | ०० | ५८ | ५६ | ५४ | ५२ | ५० | ४८ | ४६ | ४४ | ४२ | ४० | ३८ | ३६ | ३४ | ३२ | ३० | २८ | २६ | २४ | २२ | २० | १८ | १६ |
| वृष | ८ | ८ | ८ | ८ | ९ | ९ | ९ | ०९ | ९ | ९ | १० | १० | १० | १० | १० | ११ | ११ | ११ | ११ | ११ | ११ | १२ | १२ | १२ | १२ | १२ | १३ | १३ | १३ | १३ |
| | २७ | ३७ | ४७ | ५७ | ०७ | १७ | २७ | ३७ | ४७ | ५८ | ०९ | २० | ३१ | ४१ | ५२ | ०३ | १३ | २४ | ३५ | ४६ | ५६ | ०७ | १८ | २९ | ४० | ५० | ०१ | १२ | २३ | ३३ |
| २९९ | १४ | १२ | १० | ०८ | ०६ | ०४ | ०२ | ०० | ४६ | ३२ | १८ | ०४ | ५० | ३६ | २२ | ०८ | ५४ | ४० | २६ | १२ | ५८ | ४४ | ३० | १६ | ०२ | ४८ | ३४ | २० | ०६ | ५२ |
| मिथुन | १३ | १३ | १४ | १४ | १४ | १४ | १४ | १५ | १५ | १५ | १५ | १५ | १५ | १६ | १६ | १६ | १६ | १६ | १६ | १७ | १७ | १७ | १७ | १७ | १८ | १८ | १८ | १८ | १८ | १८ |
| | ४४ | ५५ | ०६ | १६ | २७ | ३८ | ४९ | ०० | १० | २१ | ३२ | ४३ | ५३ | ०४ | १५ | २६ | ३६ | ४७ | ५८ | ०९ | १९ | ३० | ४१ | ५२ | ०२ | १३ | २४ | ३५ | ४६ | ५६ |
| ३२३ | ३८ | २४ | १० | ५६ | ४२ | २८ | १४ | ०० | ४६ | ३२ | १८ | ०४ | ५० | ३६ | २२ | ०८ | ५४ | ४० | २६ | १२ | ५८ | ४४ | ३० | १६ | ०२ | ४८ | ३४ | २० | ०६ | ५२ |
| कर्क | १९ | १९ | १९ | १९ | १९ | २० | २० | २० | २० | २० | २० | २१ | २१ | २१ | २१ | २१ | २१ | २२ | २२ | २२ | २२ | २२ | २२ | २३ | २३ | २३ | २३ | २३ | २३ | २४ |
| | ७ | १८ | २९ | ३९ | ५० | ०१ | १२ | २३ | ३२ | ४२ | ५२ | ०२ | १२ | २२ | ३२ | ४२ | ५२ | ०२ | १२ | २२ | ३२ | ४२ | ५२ | ०२ | १२ | २२ | ३२ | ४२ | ५२ | ०२ |
| ३२३ | ३८ | २४ | १० | ५६ | ४२ | २८ | १४ | ०० | ५८ | ५६ | ५४ | ५२ | ५० | ४८ | ४६ | ४४ | ४२ | ४० | ३८ | ३६ | ३४ | ३२ | ३० | २८ | २६ | २४ | २२ | २० | १८ | १६ |
| सिंह | २४ | २४ | २४ | २४ | २४ | २५ | २५ | २५ | २५ | २५ | २५ | २५ | २६ | २६ | २६ | २६ | २६ | २६ | २७ | २७ | २७ | २७ | २७ | २७ | २७ | २८ | २८ | २८ | २८ | २८ |
| | १२ | २२ | ३२ | ४२ | ५२ | ०२ | १२ | २२ | ३१ | ४० | ४९ | ५९ | ०८ | १७ | २६ | ३६ | ४५ | ५४ | ०३ | १३ | २२ | ३१ | ४१ | ५० | ५९ | ०८ | १८ | २८ | ३६ | ४५ |
| २९९ | १४ | १२ | १० | ०८ | ०६ | ०४ | ०२ | ०० | १४ | ३२ | ४८ | ०४ | २० | ३६ | ५२ | ०८ | २४ | ४० | ५६ | १२ | २८ | ४४ | ०० | १६ | ३२ | ४८ | ०४ | ३० | ३६ | ५२ |
| कन्या | २८ | २९ | २९ | २९ | २९ | २९ | २९ | ३० | ३० | ३० | ३० | ३० | ३० | ३० | ३१ | ३१ | ३१ | ३१ | ३१ | ३१ | ३२ | ३२ | ३२ | ३२ | ३२ | ३२ | ३२ | ३३ | ३३ | ३३ |
| | ५५ | ०४ | १३ | २२ | ३२ | ४१ | ५० | ०० | ०९ | १८ | २७ | ३७ | ४६ | ५५ | ०४ | १४ | २३ | ३२ | ४१ | ५१ | ०० | ०९ | १८ | २८ | ३७ | ४६ | ५६ | ०५ | १४ | २३ |
| २७८ | ०८ | २४ | ४० | ५६ | १२ | २८ | ४४ | ०० | १६ | ३२ | ४८ | ०४ | २० | ३६ | ५२ | ०८ | २४ | ४० | ५६ | १२ | २८ | ४४ | ०० | १६ | ३२ | ४८ | ०४ | २० | ३६ | ५२ |
| तुला | ३३ | ३३ | ३३ | ३४ | ३४ | ३४ | ३४ | ३४ | ३४ | ३४ | ३५ | ३५ | ३५ | ३५ | ३५ | ३५ | ३६ | ३६ | ३६ | ३६ | ३६ | ३६ | ३७ | ३७ | ३७ | ३७ | ३७ | ३७ | ३८ | ३८ |
| | ३३ | ४२ | ५१ | ०० | १० | १९ | २८ | ३८ | ४७ | ५७ | ०७ | १७ | २७ | ३७ | ४७ | ५७ | ०७ | १७ | २७ | ३७ | ४७ | ५७ | ०७ | १७ | २७ | ३७ | ४७ | ५७ | ०७ | १७ |
| २७८ | ०८ | २४ | ४० | ५६ | १२ | २८ | ४४ | ०० | ५८ | ५६ | ५४ | ५२ | ५० | ४८ | ४६ | ४४ | ४२ | ४० | ३८ | ३६ | ३४ | ३२ | ३० | २८ | २६ | २४ | २२ | २० | १८ | १६ |
| वृश्चिक | ३८ | ३८ | ३८ | ३८ | ३९ | ३९ | ३९ | ३९ | ३९ | ३९ | ४० | ४० | ४० | ४० | ४० | ४१ | ४१ | ४१ | ४१ | ४१ | ४१ | ४२ | ४२ | ४२ | ४२ | ४२ | ४३ | ४३ | ४३ | ४३ |
| | २७ | ३७ | ४७ | ५७ | ०७ | १७ | २७ | ३७ | ४७ | ५८ | ०९ | २० | ३० | ४१ | ५२ | ०३ | १३ | २४ | ३५ | ४६ | ५६ | ०७ | १८ | २९ | ४० | ५० | ०१ | १२ | २३ | ३३ |
| २९९ | १४ | १२ | १० | ०८ | ०६ | ०४ | ०२ | ०० | ४६ | ३२ | १८ | ०४ | ५० | ३६ | २२ | ०८ | ५४ | ४० | २६ | १२ | ५८ | ४४ | ३० | १६ | ०२ | ४८ | ३४ | २० | ०६ | ५२ |
| धनु | ४३ | ४३ | ४४ | ४४ | ४४ | ४४ | ४४ | ४५ | ४५ | ४५ | ४५ | ४५ | ४५ | ४६ | ४६ | ४६ | ४६ | ४६ | ४६ | ४७ | ४७ | ४७ | ४७ | ४७ | ४८ | ४८ | ४८ | ४८ | ४८ | ४८ |
| | ४४ | ५५ | ०६ | १६ | २७ | ३८ | ४९ | ०० | १० | २१ | ३२ | ४३ | ५३ | ०४ | १५ | २६ | ३६ | ४७ | ५८ | ०९ | १९ | ३० | ४१ | ५२ | ०३ | १३ | २४ | ३५ | ४६ | ५६ |
| ३२३ | ३८ | २४ | १० | ५६ | ४२ | २८ | १४ | ०० | ४६ | ३२ | १८ | ०४ | ५० | ३६ | २२ | ०८ | ५४ | ४० | २६ | १२ | ५८ | ४४ | ३० | १६ | ०२ | ४८ | ३४ | २० | ०६ | ५२ |
| मकर | ४९ | ४९ | ४९ | ४९ | ४९ | ५० | ५० | ५० | ५० | ५० | ५० | ५१ | ५१ | ५१ | ५१ | ५१ | ५१ | ५२ | ५२ | ५२ | ५२ | ५२ | ५२ | ५३ | ५३ | ५३ | ५३ | ५३ | ५३ | ५४ |
| | ०७ | १८ | २९ | ३९ | ५० | ०१ | १२ | २३ | ३२ | ४२ | ५२ | ०२ | १२ | २२ | ३२ | ४२ | ५२ | ०२ | १२ | २२ | ३२ | ४२ | ५२ | ०२ | १२ | २२ | ३२ | ४२ | ५२ | ०२ |
| ३२३ | ३८ | २४ | १० | ५६ | ४२ | २८ | १४ | ०० | ५८ | ५६ | ५४ | ५२ | ५० | ४८ | ४६ | ४४ | ४२ | ४० | ३८ | ३६ | ३४ | ३२ | ३० | २८ | २६ | २४ | २२ | २० | १८ | १६ |
| कुम्भ | ५४ | ५४ | ५४ | ५४ | ५४ | ५५ | ५५ | ५५ | ५५ | ५५ | ५५ | ५५ | ५६ | ५६ | ५६ | ५६ | ५६ | ५६ | ५७ | ५७ | ५७ | ५७ | ५७ | ५७ | ५७ | ५८ | ५८ | ५८ | ५८ | ५८ |
| | १२ | २२ | ३२ | ४२ | ५२ | ०२ | १२ | २२ | ३१ | ४० | ४९ | ५९ | ०८ | १७ | २६ | ३६ | ४५ | ५४ | ०४ | १३ | २२ | ३१ | ४१ | ५० | ५९ | ०८ | १८ | २७ | ३६ | ४५ |
| २९९ | १४ | १२ | १० | ०८ | ०६ | ०४ | ०२ | ०० | १६ | ३२ | ४८ | ०४ | २० | ३६ | ५२ | ०८ | २४ | ४० | ५६ | १२ | २८ | ४४ | ०० | १६ | ३२ | ४८ | ०४ | २० | ३६ | ५२ |
| मीन | ५८ | ५९ | ५९ | ५९ | ५९ | ५९ | ५९ | ०० | ०० | ०० | ०० | ० | ०० | ०० | १ | १ | १ | १ | १ | १ | ०२ | २ | २ | २ | २ | ०२ | २ | ३ | ३ | ३ |
| | ५५ | ०४ | १३ | २२ | ३२ | ४१ | ५० | ०० | ०९ | १८ | २७ | ३७ | ४६ | ५५ | ०४ | १४ | २३ | ३२ | ४१ | ५१ | ०० | ०९ | १८ | २८ | ३७ | ४६ | ५६ | ५ | १४ | २३ |
| २७८ | ०८ | २४ | ४० | ५६ | १२ | २८ | ४४ | ०० | १६ | ३२ | ४८ | ०४ | २० | ३६ | ५२ | ०८ | २४ | ४० | ५६ | १२ | २८ | ४४ | ०० | १६ | ३२ | ४८ | ०४ | २० | ३६ | ५२ |

**नतकालसाधनम्**-रात्रेः शेषमितं युतं दिनदलेनाह्नो गतं शेषकं विश्लेष्य खलु पूर्वपश्चिमनतं विंशत्च्युतं चोन्नतम्।
यथा-श्रावणशुक्ल ५ शुक्र को इष्टघट्यादि १४।३ के समय दिनार्द्ध-इष्टकाल=१६।४२-१४।३=२।३९= पूर्वनतघटी

**दशमलग्नोदाहरणम्**-श्रावणशुक्ल ५ शुक्र को इष्टघट्यादि १४।३ है। नतकालसाधनविधि से इस काल का पूर्वनत २।३९ हुआ। इसे सूर्य के कर्कराशि के ११ अंश के नीचे दण्डादि २१।०२।५२ में घटाया तो २१।०२।५२-२।३९=१८।२३।५२ दण्डादि हुआ। यह फल मिथुन राशि के २५ अंश के आगे और २६ अंश के नीचे पड़ा। अतः उक्तसमय २६ अंश से मिथुन दशमलग्न हुआ।

**अग्निवासचक्रम्**

| शुक्लपक्षे | | | | कृष्णपक्षे | | | | र. | च. | मं. | बु. | वृ. | शु. | श. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | ५ | ९ | १३ | २ | ६ | १० | १४ | भू | भू | दि | भू | भू | भू | दि |
| २ | ६ | १० | १४ | ३ | ७ | ११ | ३० | भू | दि | भू | भू | भू | दि | भू |
| ३ | ७ | ११ | १५ | ० | ४ | ८ | १२ | दि | भू | भू | भू | दि | भू | भू |
| ० | ४ | ८ | १२ | १ | ५ | ९ | १३ | भू | भू | भू | दि | भू | भू | भू |

फलम्- भुवि सौख्यम्, दिवि प्राणनाशः भूतले च धननाशः इति ज्ञेयम्।
विधिः - (शुक्लादितिथिसं + सूर्यादिदिनसं + १)÷४=३, ० शेषे शुभः। १, २ अशुभः।

**पार्थिवशिवपूजायां विहिततिथयः**

शुक्लपक्षे -२,३,५,६,१२,१३ कृष्णपक्षे- १,४,५,८,११,१२,३०
विधिः-(शुक्लादितिथिसं $\times$ २+५)÷७=१।२।३ शेषे शुभम्। अन्यदशुभम्।
१ शेषे कैलासे, २ शेषे गौरीसन्निधौ, ३ शेषे वृषारूढः शिवः ...

**इष्टिकारम्भमुहूर्तः** - अश्वि. रो. मृग. पुष्य उत्तरा३. ह. ज्ये. श्र. रे. नक्षत्रेषु, वृषसिंहवृश्चिककुम्भलग्नेषु, रविवृहस्पतिशनिदिनेषु, शुभतिथिषु, चैत्रमाघपौषमलमास-क्षयमासभिन्नसमये शुभः।

**वृक्षादिरोपणमुहूर्तः**- अश्वि. रो. मृ. पुष्य. उ३. चि. वि. अनु. मू. अभि. श. रे. नक्षत्रेषु चं. वृ. शु. दिनेषु शुभतिथिषु च शुभम्।

**कदलीरोपणमुहूर्तः**- पञ्चक (ध. श. पूभा. उभा. रे.) रहितनक्षत्रेषु, १।२।३।४।६ तिथिषु, शुभदिनेषु शुभम्।

**त्रिविधप्रवेशः** – दिवा नृपप्रवेशः, निशि वधूप्रवेशः, दिवा च रात्रौ च गृहप्रवेशः शुभः।

**विपणिमुहूर्त्तः**– मृग.रेवती. चित्रा. अनुराधा. उत्तरा३. रोहिणी. हस्त. अश्विनी. पुष्य. नक्षत्रेषु, १।२।३।५।६।७।१०।११।१२। १३।१५ तिथिषु, सू. चं. बु. वृ. शु. श. दिनेषु, शुक्लपक्षे, कृष्णे १० यावत्, १।२।३। ४।५।६।७।८।९।१०।१२ लग्नेषु, लग्ने चन्द्रशुक्रे, पापैः ८।१२रहितैः, शुभैः२।१०।११स्थितैः शुभा।

**मीलचालनमुहूर्त्तः** – भर. कृति. आश्ले. वि. पूर्वा३. नक्षत्रेषु, २।३।५।७।१० ११।१३।१५ तिथिषु, चं. बु. वृ. शु. दिनेषु, शुभैः १।२।४।५।७।१० स्थितैः, पापैः ३।६।११ स्थितैः, कुम्भं विना लग्नेषु शुभम्।

**वस्तूनां क्रयमुहूर्त्तः**– शुभतिथिदिनलग्नेषु, अ.चि.स्वा.श्र.शत.रे.नक्षत्रेषु शुभः।

**भैषज्यभक्षणमुहूर्त्तः** –अ. मृ. पुन. पु. ह. चि. स्वा. अनु. मू. अभि. श्र. ध. शत. रे. नक्षत्रेषु, शुभतिथिषु, सू. चं. बु. वृ.शु. दिनेषु, ३।६।९।१२ लग्नेषु, शुभैः ३।६।९।१२ राशिस्थितैः, लग्नात् ७।८।१२ ग्रहरहितेषु औषधिभक्षणं शुभम्। जन्मनक्षत्रे भैषज्यभक्षणं शुभम्।

**रक्तमोक्षण(आपरेशन)मुहूर्त्तः** – अ. रो. मृ. पु. ह. चि. स्वा. अनु. ज्ये. अभि. श्र. शत.नक्षत्रेषु, सू. मं. वृ. दिनेषु, शुभतिथिलग्नेषु, चन्द्रतारानुकूले सति शुभम्।

**चिकित्सामुहूर्त्तः**– अ. रो. मृ. पु. ह. चि. स्वा. अनु. ज्ये. अभि. श्र. शत. नक्षत्रेषु, सू. चं. मं. वृ. शु. दिनेषु, शुभतिथिलग्नेषु शुभा।

**उग्रकर्ममुहूर्त्तः**– पूर्वा३. भ. मघा. मू. ज्ये. आश्ले. आर्द्रा.नक्षत्रेषु, मं. श. दिनेषु, १।८।१०।११ लग्नेषु, १।३।४।५।९।१०।११।१४ तिथिषु शुभम्।

मोटरबससाइकिलयानादिचालनमुहूर्त्तः –अश्वि. मृ. पुन. ह. चि. स्वा. अनु. ज्ये. रे. नक्षत्रेषु, चं. मं. बृ. शु. श. दिनेषु, १।२।३।५।६।७।८।१०।११।१३।१५ तिथिषु, चतुर्थेशे बलयुक्ते १।४।५।७।९।१० स्थिते, लग्नेशदशमेशसप्तमेशनवमेशै रपि १।४।५।७।९।१० गतैर्बलयुक्तैः, पापैः ३।६।११ स्थानस्थितैः यानादिचालनं शुभम्।

**राशीनां स्वामिचरादिसंज्ञाघातादिचक्रम्**

| राशि | मे | वृ | मि | क | सिं | क | तु | वृ | ध | म | कु | मी |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| पति | म | शु | बु. | च | सू | बु | शु | मं. | वृ | श | श | वृ |
| संज्ञा | चर | स्थि | द्वि | चर | स्थि | द्वि | चर | स्थि | द्वि | चर | स्थि | द्वि |
| प्रकृ | पित्त | वात | सम | कफ | पित्त | वा | स | क | पि | वा | सम | क |
| आकृ | ह्रस्व | ह्र | सम | सम | दीर्घ | दी | दी | दी | स | स | ह्र | स |
| जाति | क्ष | वै | शू | वि | क्ष | वै | शू | वि | क्ष | वै | शू | वि |
| घामा | का | मार्ग | आषा | पौ | ज्ये | भा. | मा | आ | श्रा | वै | चै. | फा |
| घाति | नन्दा | पूर्णा | भद्रा | भद्रा | जया | पूर्णा | रिक्ता | नन्दा | जया | रिक्ता | जया | पूर्णा |
| दिन | र. | श. | चं. | बु. | श | श | बृ. | शु. | शु | मं | वृ | शु |
| नक्षत्र | म. | ह. | स्वा. | अनु | मू. | श्र | श | रे. | म. | रो. | आ | श्ले |
| योग | वि. | सु. | प. | व्या | धृ | शु. | शुक्ल | व्य | वज्र | वै | गं | वज्र |
| करण | बव | श. | च | ना | बव | कौ | तै | ग | तै | श. | वणि | वि |
| प्रहर | १ | ४ | ३ | १ | १ | १ | ४ | १ | १ | ४ | ३ | ४ |
| पु.चं. | १ | ५ | ६ | २ | ६ | १० | ३ | ७ | ४ | ८ | ११ | १२ |
| स्त्रीचं. | १ | ८ | ७ | ९ | ४ | ३ | ६ | २ | १० | ११ | ५ | १२ |

**ग्रहाणामुच्चादिबोधकचक्रम्**

| ग्रह | सू. | चं. | मं. | बु. | वृ. | शु. | श. | रा | के |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उच्च | मे १० | वृ ३ | म२८ | कं१५ | क५ | मी२७ | तु२० | मि | ध |
| नीच | तु १० | वृश्चि३ | क२८ | मी१५ | म५ | कं२७ | मे२० | ध | मि |
| मूत्रि | सि | वृष | मे | कं | ध | तु. | कु | कु | सि |
| जातिः | क्ष | वै | क्ष | शू | ब्रा | ब्रा | चा | चा | चा |
| दिक् | पू | वा | द | उ | ई | अ | प | नै | नै |
| भाग्य | २२वर्ष | २४व | २८व | २२व | १६व | २५व | ३६व | ४२व | ४८व |
| प्रकृतिः | पित्त | कफ | पित्त | सम | सम | वात | वात | वात | वात |
| पुसंज्ञा | पु | स्त्री | पु | नपुं | पु | स्त्री | नपुं | नपुं | पु |
| आकृति | ह्र | ह्र | ह्र | ह्र | दीर्घ | ह्र | दी | दी | दी |

**होराचक्रम्**

| राशि | मे | वृ | मि | क | सिं. | क. | तु | वृ | ध. | म | कु | मी |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १५अं | सू | चं. | सू | चं. | सू | चं. | सू | चं. | सू | चं. | सू | चं. |
| ३०अं | चं | सू. | च | सू. | च | सू. | च | सू. | च | सू. | च | सू. |

**द्रेष्काणचक्रम्**

| राशि | मे | वृ | मि | क | सिं. | क. | तु | वृ | ध. | म | कु | मी |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १०अं | मं | शु | बु | च | सू | बु | शु | मं | वृ | श | श | वृ |
| २०अं | सू | बु | शु | मं | वृ | श | श | वृ | मं | शु | बु | च |
| ३०अं | वृ | श | श | वृ | मं | शु | बु | च | सू | बु | शु | मं |

**वर्षाज्ञानाय सप्तनाडीचक्रम्**

| शनिः | रविः | भौमः | गुरुः | शुक्रः | बुधः | चन्द्रः | स्वामी |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| कृ | रो. | मृ. | आ. | पुन. | पु. | आश्ले | नक्षत्र |
| वि. | स्वा. | चि. | ह. | उफ | पूफ | म. | नक्षत्र |
| अनु | ज्ये. | मू. | पूषा | उषा | अभि. | श्र. | नक्षत्र |
| भ. | अ. | रे. | उभा | पूभा. | श. | ध. | नक्षत्र |
| चण्ड | वाता | वह्नि | सौम्या | नीरा | जला | अमृता | संज्ञा |

**होरालग्नानयनम्** – द्विघ्नेष्टनाड्यः पञ्चाप्ता यच्छेषञ्च पलीकृतम्। दशाप्तमंशास्ते योज्या रवौ होरोदयो भवेत्।

**त्रिविधायुर्बोधकचक्रम्**

| दीर्घायुः | मध्यमायुः | अल्पायुः |
|---|---|---|
| चरभे लग्नेशः<br>चरभेऽष्टमेशः | चरभे लग्नेशः<br>स्थिरभेऽष्टमेशः | चरभे लग्नेशः<br>द्विस्वभेऽष्टमेशः |
| स्थिरभे लग्नेशः<br>द्विस्वभेऽष्टमेशः | स्थिरभे लग्नेशः<br>चरभेऽष्टमेशः | स्थिरभे लग्नेशः<br>स्थिरभेऽष्टमेशः |
| द्विस्वभे लग्नेशः<br>स्थिरभेऽष्टमेशः | द्विस्वभे लग्नेशः<br>द्विस्वभेऽष्टमेशः | द्विस्वभे लग्नेशः<br>चरभेऽष्टमेशः |

लग्नेशाष्टमेशयोरिव लग्नचन्द्राभ्यां(शनिचन्द्राभ्याम्) लग्नहोरालग्नाभ्याञ्चायुर्निर्णयम्

**ग्रहाणां धारणाय मणयः**

| सूर्यः | माणिक्य | गारनेट | विद्रुम |
|---|---|---|---|
| चन्द्रः | मुक्ता | मूनस्टोन | चांदी |
| कुजः | विद्रुम | मूंगा | मूंगा |
| बुधः | पन्ना | लीली | सोना |
| गुरुः | पोखराज | सुनहला | मोती |
| शुक्रः | हीरा | स्फटिक | चांदी |
| शनिः | नीलमणि | यमुनिया | लौह |
| राहुः | गोमेद | लाजावर्त्त | लाजावर्त्त |
| केतुः | लहसुनिया | लाजावर्त्त | लाजावर्त्त |

**नवमांशचक्रम्**

| राशि | मे.सि.ध. | वृष कं.म. | मि.तु.कु. | क.वृ.मी. |
|---|---|---|---|---|
| ३/२० | म. | श. | शु. | चं. |
| ६/४० | शु. | श. | मं. | सू. |
| १०/०० | बु. | वृ. | वृ. | बु. |
| १३/२० | च | मं. | श. | शु. |
| १६/४० | सू. | शु. | श. | मं. |
| २०/०० | बु. | बु. | वृ. | वृ. |
| २३/२० | शु. | चं. | मं. | श. |
| २६/४० | मं. | सू. | शु. | श. |
| ३०/०० | वृ. | बु. | बु. | वृ. |

**विषमराशौ त्रिंशांशचक्रम्**

| अंशाः | मे.तु.मि.ध.सिं.कु. |
|---|---|
| ५अं. | म. |
| १०अं. | श. |
| १८अं. | वृ. |
| २५अं. | बु. |
| ३०अं. | शु. |

**समराशौ त्रिंशांशचक्रम्**

| अंशाः | वृ.कं.क.वृ.म.मी. |
|---|---|
| ५अं. | शु. |
| १२अं. | बु. |
| २०अं. | वृ. |
| २५अं. | श. |
| ३०अं. | मं. |

## आयुर्विचारः

लग्नसप्तमयोरन्यतरस्थिते चन्द्रे लग्नचन्द्राभ्यामन्यथा शनिचन्द्राभ्यां, लग्नेशाष्टमेशाभ्यां, लग्नहोरालग्नाभ्याञ्चेति प्रकारत्रयेणायुर्निर्णयम्। प्रकारत्रयेष्येकरूपायुष्यागतं तदेव ग्राह्यम्। विभेदे प्रकारद्वयागतायुर्ग्राह्यम्। त्रयाणां विसंवादे लग्नहोरालग्नायुर्ग्राह्यम्। विषमे जन्मलग्ने द्वितीयेशाष्टमेशयोर्यो बली, समे जन्मलग्ने द्वादशेशषष्ठेशयोर्यो बली तस्य केन्द्रे स्थित्या दीर्घायुः, पणफरे मध्यायुः, आपोक्लिमे चाल्पायुः। इत्थमेवात्मकारकवशेनापि। १,८ ईशयोः कारकेण सहैक्ये योगे वा मध्यायुरेव। विषमे जन्मलग्ने कारकस्तृतीये, समे जन्मलग्ने कारको यदि चैकादशे भवेत्तर्हि कारकायुषि केन्द्रे दीर्घायुः, पणफरे मध्यमायुरापोक्लिमे चाल्पायुः। यदि लग्नेशाष्टमेशदशमेशाः केन्द्रत्रिकोणलाभगास्तदा दीर्घायुर्योगः। यदि लग्नेशः सूर्यस्य मित्रन्तदा दीर्घायुर्योगः समश्चेन्मध्यमायुर्योगः, शत्रुस्तदाऽल्पायुर्योगः। पूर्वोक्तचक्रद्वारा प्रकारत्रयेण दीर्घायुर्योगे प्राप्ते १२० वर्षाणि, प्रकारद्वयेन१०८ वर्षाणि, प्रकारेणैकेन९६ वर्षाणि आयुः। एवमेव मध्यायुष्वपि प्रकारत्रयादिवशेन क्रमशः ८०, ७२, ६४ वर्षाण्यायुः। अल्पायुष्वपि ४०, ३६, ३२ वर्षाण्यायुरिति।

### आयुःस्थानमारकादिस्थानञ्च

अष्टमञ्च तृतीयञ्च लग्नादायुरुदाहृतम्। द्वितीयं सप्तमञ्चैव मारकस्थानमुच्यते। क्वचित् षष्ठाष्टमव्ययेशदशास्वपि मारकसम्भवः। मारके मारकान्तरमशुभम्, परस्परं षष्ठाष्टमेशयोर्दशान्तर्दशा न शुभा। लग्नेशपञ्चमेशनवमेशानां दशा शुभा, त्रिषडायेशानां च पापाख्या। व्ययद्वितीयेशयोर्दशा स्थानानन्तरानुगुण्येन साहचर्याद्वा फलदा। चतुर्थेशसप्तमेशदशमेशानां दशा मध्यफलदा स्थानान्तरवशेन शुभाशुभफलप्रदा च। अष्टमेशदशा पापफलदा, परं स्थानान्तर-शुभाशुभवशेन शुभपरमाशुभफलदेति।।

### द्वादशांशज्ञानम्

प्रत्येकस्मिन् राशौ १२ द्वादशांशेशास्तत्र प्रतिद्वादशांशमानं २।३० अंशात्मकं भवति। द्वादशांशेशाः स्वराशित एव भवन्ति।

**कारकग्रहाः** – ग्रहेषु सर्वाधिकांशवानात्मकारकस्तन्न्यूनांशक्रमेणामात्य- भ्रातृमातृपितृपुत्रज्ञातिकारकाः ज्ञेयाः। अंशसाम्ये कलाधिक्यं, कलादिसाम्ये बलाधिक्यं ग्राह्यम्। **स्थिरकारकाः**- तन्वादिभावानां क्रमेण सूर्य-गुरु-कुज-चन्द्रबुध-गुरु-भौम-शुक्र-शनि-सूर्यगुरु-रविबुधगुरुशनि-गुरु-शनयः स्थिरकारकाः भवन्ति।

**स्वर्णादिचरणकजन्मज्ञानम्**-जन्मकाले जन्मलग्नाच्चन्द्रे १।६।११ स्थिते स्वर्णपादे, २।५।९ स्थिते रजतपादे, ३।७।१० स्थिते ताम्रपादे,४।८।१२ स्थिते च लौहपादे जन्म ज्ञेयम्।

# श्रावणकृष्णपक्षः

शकाब्दः १९३९, संवत् २०७४, सन् १४२५ साल, दि.१०।७।१७ ई तः दि. २३।७।१७ ई. या., पश्चिमे कालः।
मार्गी पूर्वोदितो गुरुः, मार्गी पूर्वोदितः शुक्रः, शुद्धः, ग्रीष्मर्तुः ७ तो वर्षर्तुः, सौम्यगोलायने, ७ तः याम्यायनम्।

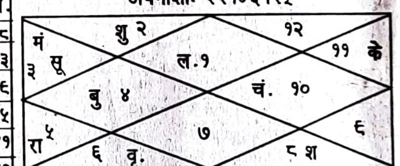
| तिथयः दिनानि | तिथयः द. प. | घं. मि. | नक्षत्राणि द. प. | घं. मि. | योगाः द. प. | करणानि द. प. | चन्द्रराशयः द. प. | घं. मि. | स्पष्टसूर्यः राश्यादिः | दिनमानं द. प. | सूर्योदयः घं. मि. | सूर्यास्तः घं. मि. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ चं. | १३।१२ | दि. १०।३० | उषा. ३४।४६ | रा.०७।०७ | वै. १६।४२ | कौ. १३।१२ | मकर | अहोरात्रं | २।२४।०८।५५ | ३३।५४ | ५।१३ | ६।४७ |
| २ मं | १५।४८ | दि. ११।३३ | श्र. ३८।३६ | रा.०८।४२ | वि. १६।२३ | ग. १५।४८ | मकर | अहोरात्रं | २।२५।०५।४९ | ३३।५२ | ५।१४ | ६।४६ |
| ३ बु. | १७।२० | दि. १२।१० | ध. ४१।२३ | रा.०९।४७ | प्री. १५।१२ | वि. १७।२० | म.१०।०१ | दि.०९।१४ | २।२६।०२।४३ | ३३।५० | ५।१४ | ६।४६ |
| ४ वृ. | १७।३० | दि. १२।१४ | शत. ४२।५० | रा.१०।२२ | आ. १२।५७ | बा. १७।३० | कुम्भ | अहोरात्रं | २।२६।५९।३७ | ३३।४८ | ५।१४ | ६।४६ |
| ५ शु. | १६।२५ | दि. ११।४६ | पूभा. ४३।०३ | रा.१०।२८ | सौ. ०९।४३ | तै. १६।२५ | कुं.२८।०० | दि.०४।२७ | २।२७।५६।३१ | ३३।४७ | ५।१५ | ६।४५ |
| ६ श. | १४।०६ | दि. १०।५३ | उभा. ४२।०६ | रा.१०।०५ | शो. ०५।२९ | व. १४।०६ | मीन | अहोरात्रं | २।२८।५३।२५ | ३३।४६ | ५।१५ | ६।४५ |
| ७ र. | १०।४४ | दि. ०९।३३ | रे. ४०।१४ | रा.०९।२१ | अगं. ००।२४ | ब. १०।४४ | 'मी.४०।१४ | रा.०९।२१ | २।२९।५०।१८ | ३३।४५ | ५।१५ | ६।४५ |
| ८ चं. | ०६।३० | दि. ०७।५१ | अ. ३७।३१ | रा.०८।१५ | धृ. ४८।०३ | कौ. ०६।३० | मेष | अहोरात्रं | ३।००।४७।११ | ३३।४४ | ५।१५ | ६।४५ |
| ९ मं. | ०१।२५ | प्रा. ०५।५० | भ. ३४।०८ | सं.०६।५५ | शू. ४१।०१ | ग. ०१।२५ | मे.४८।१० | रा.१२।३२ | ३।०१।४४।१० | ३३।४२ | ५।१६ | ६।४४ |
| ११ बु. | ४६।४७ | रा. ०१।११ | कृ. ३०।१६ | सं.०५।२२ | गं. ३३।३६ | ब. २२।४८ | वृष | अहोरात्रं | ३।०२।४१।०९ | ३३।४१ | ५।१६ | ६।४४ |
| १२ वृ. | ४३।३५ | रा. १०।४२ | रो. २६।०९ | दि.०३।४४ | वृ. २६।०३ | कौ. १६।४१ | वृ.५४।०३ | रा.०२।५३ | ३।०३।३८।०८ | ३३।४० | ५।१६ | ६।४४ |
| १३ शु. | ३७।२४ | रा. ०८।१४ | मृ. २१।५७ | दि.०२।०३ | ध्रु. १८।२४ | ग. १०।२९ | मिथुन | अहोरात्रं | ३।०४।३५।०६ | ३३।३९ | ५।१६ | ६।४४ |
| १४ श. | ३१।२६ | सं. ०५।५० | आ. १७।५५ | दि.१२।२६ | व्या. १०।५२ | वि. ०४।२५ | मिथुन | अहोरात्रं | ३।०५।३२।०४ | ३३।३८ | ५।१६ | ६।४४ |
| ३० र. | २५।५१ | दि. ०३।३७ | पुन. १४।१५ | दि.१०।५९ | ह. ०३।५८ | ना. २५।५१ | मि.००।१० | प्रा.०५।२१ | ३।०६।२९।०२ | ३३।३७ | ५।१७ | ६।४३ |

| दिनांकाः रा. | सौ. | अं. | |
|---|---|---|---|
| १९ | २६ | १० | अशून्यशयनव्रतं, सोमवासरव्रतं, **गृहारम्भः** द्वितीयायां, श्रावणे वर्जयेच्छाकम्। |
| २० | २७ | ११ | उत्तरां विना यात्रा श्रवणायां ततः पूर्वयात्रा, **पंचकारम्भो** रात्रौ घं. ८ मि. ४२ उ., भ. ४६।३४ उ. (३ एको.)। |
| २१ | २८ | १२ | **गणाधिप** ४ व्रतं, गृहारम्भस्तृतीयायां, **कर्के कुजः** ४४।२५, भ. १७।२० या., (४एको.)। |
| २२ | २९ | १३ | **गृहारंभः** पञ्चम्यां, पश्चिमयात्रा पूर्वभाद्रे, (५ एको.)। |
| २३ | ३० | १४ | **मौना ५**, नाग ५, मनसादेवीपूजनमुत्थापनञ्च, **मधुश्रावणीपूजारम्भः**, उत्तरयात्रा **मीनगे** चन्द्रे पूर्वभाद्रे, (६ एको.)। |
| २४ | ३१ | १५ | पश्चिमोत्तरयात्रा रेवत्याम्, भ.१४।०६ उ. ४२।२५ यावत्। |
| २५ | ३२ | १६ | **कर्के रविः** ५७।६ मु. ३० फलं साम्यं, याम्यायनारंभः ५७।०६ उ., **मासान्तः**, सुकर्मामानं ५४।८, द.ति. १०।४४ उ. ५७।६ या., गं. २८।१४ उ. ४३।१४ या., ← |
| २६ | १ | १७ | **याम्यायनसंक्रान्तिपुण्यकालो** घं. १२ मि. ० यावद्दिने, **पुण्याहः**, **सोमवासरव्रतम्**, **इन्द्रसावर्णिमन्वादिः**। ← **पञ्चकान्तो** रात्रौ घं. ९ मि. २१ उपरि। |
| २७ | २ | १८ | मासादिः, **दशमीमानम्** ५४।२४, भ. २८।३७ उ. ५५।४९ यावत्। |
| २८ | ३ | १९ | **कामदा** ११ व्रतं स्मार्त्तानां, पूर्वदक्षिणयात्रा रोहिण्याम् । |
| २९ | ४ | २० | दूर्वादलेन पारणं, कामदा ११ व्रतं वैष्णवानां, **पुष्ये रविः** २७।४३ पुंस्त्रीसूचंयोगः वृश्चिकलग्नं महिषवाहनं वह्निनाडीपतिः कुजस्तेन वातखण्डवृष्टियोगः, ◆ |
| ३० | ५ | २१ | **प्रदोष१३–१४व्रतम्**, पश्चिमां विना यात्रा मृगशिरसि, मघायां सिंहे बुधः **४१।०८**, भ. ३७।२४ उपरि। ◆पूर्वयात्रा रोहिण्यां ततो दक्षिणां विना यात्रा। |
| ३१ | ६ | २२ | पश्चिमदक्षिणयात्रा चतुर्दश्यां पुनर्वसौ, भ. ०४।२५ यावत्। |
| १ | ७ | २३ | वज्रमानम् ५३।१२, **श्रावणी ३०** स्नानदानादिः, **देवसावर्णिमन्वादिः**। |

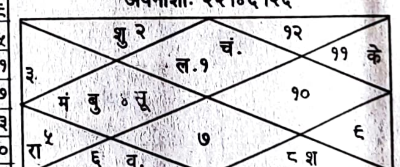
**मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च** — **दैनिकलग्नसारिणीचक्रम्**

| ति.दि. | मंगलः | बुधः | गुरुः | शुक्रः | शनिः | केतुः | मिश्रमानं | मे.अं. | वृ.अं. | मि.अं. | क.अं. | सिं.अं | कं.अं. | तु.अं. | वृ.अं. | ध.अं. | म.अं. | कुं. अं. | मी.अं. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ चं. | २।२८।४३।१० | ३।१४।१३।२४ | ५।२१।२८।४३ | १।१३।०१।५३ | ७।२६।०६।४८ | १०।०४।१४।५४ | ४६।५७ | १।३५ | ३।३१ | ५।४४ | ८।०२ | १०।१८ | १२।३३ | १४।५० | १७।०७ | १९।१२ | २०।५८ | २२।२९ | २३।५८ |
| २ मं | २।२९।२२।२४ | ३।१५।४६।०८ | ५।२१।३३।५९ | १।१४।१०।०१ | ७।२६।०२।५८ | १०।०४।११।४३ | ४६।५६ | १।३० | ३।२६ | ५।३९ | ७।५७ | १०।१३ | १२।२८ | १४।४५ | १७।०२ | १९।०७ | २०।५३ | २२।२४ | २३।५३ |
| ३ बु. | ३।००।०१।३८ | ३।१७।१८।५२ | ५।२१।३९।१५ | १।१५।१८।०९ | ७।२५।५९।०८ | १०।०४।०८।३२ | ४६।५५ | १।२६ | ३।२२ | ५।३५ | ७।५३ | १०।०९ | १२।२४ | १४।४१ | १६।५८ | १९।०३ | २०।४९ | २२।२० | २३।४९ |
| ४ वृ. | ३।००।४०।५२ | ३।१८।५१।३६ | ५।२१।४४।३१ | १।१६।२६।१७ | ७।२५।५५।१९ | १०।०४।०५।२१ | ४६।५४ | १।२२ | ३।१८ | ५।३१ | ७।४९ | १०।०५ | १२।२० | १४।३७ | १६।५४ | १८।५९ | २०।४५ | २२।१६ | २३।४५ |
| ५ शु. | ३।०१।२०।०६ | ३।२०।२४।२० | ५।२१।४९।४७ | १।१७।३४।२५ | ७।२५।५१।३० | १०।०४।०२।१० | ४६।५३ | १।१८ | ३।१४ | ५।२७ | ७।४५ | १०।०१ | १२।१६ | १४।३३ | १६।५० | १८।५५ | २०।४१ | २२।१२ | २३।४१ |
| ६ श. | ३।०१।५९।१९ | ३।२१।५७।०४ | ५।२१।५५।०३ | १।१८।४२।३३ | ७।२५।४७।४१ | १०।०३।५८।५९ | ४६।५२ | १।१४ | ३।१० | ५।२३ | ७।४१ | ९।५७ | १२।१२ | १४।२९ | १६।४६ | १८।५१ | २०।३७ | २२।०८ | २३।३७ |
| ७ र. | ३।०२।३८।३२ | ३।२३।२९।४७ | ५।२२।००।१९ | १।१९।५०।४१ | ७।२५।४३।५२ | १०।०३।५५।४८ | ४६।५२ | १।१० | ३।०६ | ५।१९ | ७।३७ | ९।५३ | १२।०८ | १४।२५ | १६।४२ | १८।४७ | २०।३३ | २२।०४ | २३।३३ |
| ८ चं. | ३।०३।१७।४५ | ३।२५।०२।३० | ५।२२।०५।३४ | १।२०।५८।४८ | ७।२५।४०।०३ | १०।०३।५२।३६ | ४६।५२ | १।०६ | ३।०२ | ५।१५ | ७।३३ | ९।४९ | १२।०४ | १४।२१ | १६।३८ | १८।४३ | २०।२९ | २२।०० | २३।२९ |
| ९ मं. | ३।०३।५६।५९ | ३।२६।१८।४१ | ५।२२।१२।३७ | १।२२।०७।३८ | ७।२५।३६।४४ | १०।०३।४९।२८ | ४६।५१ | १।०२ | २।५८ | ५।११ | ७।२९ | ९।४५ | १२।०० | १४।१७ | १६।३४ | १८।३९ | २०।२५ | २१।५६ | २३।२५ |
| ११ बु. | ३।०४।३५।५३ | ३।२७।३४।५१ | ५।२२।१९।३९ | १।२३।१६।२८ | ७।२५।३३।२५ | १०।०३।४६।१७ | ४६।५० | ०।५८ | २।५४ | ५।०७ | ७।२५ | ९।४१ | ११।५६ | १४।१३ | १६।३० | १८।३५ | २०।२१ | २१।५२ | २३।२१ |
| १२ वृ. | ३।०५।१४।५६ | ३।२८।५१।०१ | ५।२२।२६।४१ | १।२४।२५।१८ | ७।२५।३०।०६ | १०।०३।४३।०६ | ४६।४९ | ०।५४ | २।५० | ५।०३ | ७।२१ | ९।३७ | ११।५२ | १४।०९ | १६।२६ | १८।३१ | २०।१७ | २१।४८ | २३।१७ |
| १३ शु. | ३।०५।५३।५९ | ४।००।०७।११ | ५।२२।३३।४३ | १।२५।३४।०७ | ७।२५।२६।४७ | १०।०३।३९।५५ | ४६।४८ | ०।५० | २।४६ | ४।५९ | ७।१७ | ९।३३ | ११।४८ | १४।०५ | १६।२२ | १८।२७ | २०।१३ | २१।४४ | २३।१३ |
| १४ श. | ३।०६।३३।०२ | ४।०१।२३।२१ | ५।२२।४०।४५ | १।२६।४२।५६ | ७।२५।२३।२८ | १०।०३।३६।४४ | ४६।४८ | ०।४७ | २।४३ | ४।५६ | ७।१४ | ९।३० | ११।४५ | १४।०२ | १६।१९ | १८।२४ | २०।१० | २१।४१ | २३।१० |
| ३० र. | ३।०७।१२।०५ | ४।०२।३९।३१ | ५।२२।४७।४७ | १।२७।५१।४५ | ७।२५।२०।०६ | १०।०३।३३।३४ | ४६।४८ | ००।४३ | २।३९ | ४।५२ | ७।१० | ९।२६ | ११।४१ | १३।५८ | १६।१५ | १८।२० | २०।०६ | २१।३७ | २३।०६ |

१ चन्द्रे वल्ली ८।३९।१८।००
अयनांशाः २२।४६।२५




८ चन्द्रे वल्ली ८।३९।१८।०७
अयनांशाः २२।४६।२६




**विविधविषयाः–** श्रावणकृष्णपञ्चम्यां मनसादेव्याः उत्थापनं पूजनञ्च कार्यम्। **सोमवासरव्रतं**–सोमवारे व्रतं कार्यं श्रावणे वै यथाविधि। शक्तावुपोषणं कार्यमथवा निशिभोजनम्।। **प्रदक्षिणविधिः** – एकं चण्ड्या रवौ सप्त त्रिर्दद्याच्च विनायके। चत्वारि केशवे दद्यात् शिवस्यार्द्धप्रदक्षिणम्।। आसन्नप्रसवा नारी जलपूर्णघटं यथा। उद्वहन्ती शनैर्याति तथा कुर्यात्प्रदक्षिणाम्।। **मांसाभक्षणफलं महाभारते–** मासि मास्यश्वमेधेन यो यजेत्तु शतं समाः। न खादति च यो मांसं सममेतद्युधिष्ठिर।। यस्तु वर्षशतं पूर्णं तपस्तप्येत् सुदारुणम्। यश्च वै वर्जयेन्मांसं समौ तौ न च संशयः।। कस्यापि कृतव्रतस्योद्यापनावश्यकता, **नन्दिपुराणे**–कुर्यादुद्यापनं तस्य समाप्तौ यदुदीरितम्। उद्यापनं विना यत्तु तद्व्रतं निष्फलं भवेत्।। **श्रेष्ठव्रतानि**–ब्रह्मचर्यं तथा शौचं सत्यमामिषवर्जनम्। व्रतेष्वेतानि चत्वारि वरीयानीति निश्चयः।। **वृक्षारोपणमन्त्रः**- वसुधेति च शीतेति पुण्यदेति धरेति च। नमस्ते सुभगे देवि द्रुमोऽयं वर्धतामिति।।

**ग्रहस्थितिः– मार्गी** पश्चिमास्तः कुजः, मार्गी पश्चिमोदितो बुधः, मार्गिणौ पूर्वोदितौ गुरुशुक्रौ, **वक्री** पूर्वोदितः शनिः।

**वातावरणम्–** पक्षादितः षष्ठीं यावद्वातखण्डवृष्टितापमेघच्छायादयस्ततो द्वादशीं यावन्मेघचारवाततापादयस्ततः पक्षान्तं यावद्वातखण्डवृष्टियोगः।

## श्रावणशुक्लपक्षः

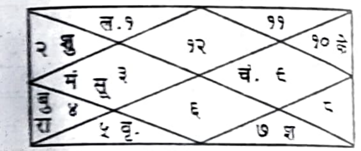
शकाब्दः १९३९, संवत् २०७४, सन् १४२५ साल, दि. २४।७।१७ इ. तः दि. ७।८।१७ ई. या., पश्चिमे कालः। मार्गी पूर्वोदितो गुरुः, मार्गी पूर्वोदितः शुक्रः, शुद्धः, वर्षर्तुः, सौम्यगोलः, याम्यायनम्।

| तिथयः दिनानि | तिथयः द. प. | घं. मि. | नक्षत्राणि द. प. | घं. मि. | योगाः द. प. | करणानि द. प. | चन्द्रराशयः द. प. | घं. मि. | स्पष्टसूर्यः राश्यादिः | दिनमान द. प. | सूर्योदयः घं. मि. | सूर्यास्तः घं. मि. | दिनांकाः रा. | सौ. | अं. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ चं. | २०।४८ | दि. ०१।३६ | पु. ११।०५ | दि. ०६।४३ | सि. ५०।३५ | ब. २०।४८ | कर्क | अहोरात्रं | ३।०७।२६।०० | ३३।३६ | ५।१७ | ६।४३ | २ | ८ | २४ |
| २ मं. | १६।३७ | दि. ११।५६ | श्ले. ०८।४५ | दि. ०८।४७ | व्य. ४४।५६ | कौ. १६।३७ | क.०८।४५ | दि.०८।४७ | ३।०८।२३।०६ | ३३।३३ | ५।१७ | ६।४३ | ३ | ९ | २५ |
| ३ बु. | १३।२१ | दि. १०।३८ | म. ०७।१४ | दि. ०८।१२ | व. ४०।१३ | ग. १३।२१ | सिंह | अहोरात्रं | ३।०९।२०।१२ | ३३।३० | ५।१८ | ६।४२ | ४ | १० | २६ |
| ४ बृ. | ११।०८ | दि. ०९।४६ | पूफ. ०६।४७ | दि. ०८।०२ | प. ३६।१९ | वि. ११।०८ | सिं.२१।५८ | दि.०२।०६ | ३।१०।१७।१७ | ३३।२७ | ५।१९ | ६।४१ | ५ | ११ | २७ |
| ५ शु. | १०।०८ | दि. ०९।२२ | उफ. ०७।३१ | दि. ०८।१९ | शि. ३३।२६ | बा. १०।०८ | कन्या | अहोरात्रं | ३।११।१४।२२ | ३३।२४ | ५।१९ | ६।४१ | ६ | १२ | २८ |
| ६ श. | १०।२४ | दि. ०९।३० | ह. ०९।३१ | दि. ०९।०८ | सि. ३१।३३ | तै. १०।२४ | क.४१।१० | रा.०६।४८ | ३।१२।११।२७ | ३३।२१ | ५।२० | ६।४० | ७ | १३ | २९ |
| ७ र. | १२।०३ | दि. १०।०९ | चि. १२।४९ | दि. १०।२८ | सा. ३०।४३ | व. १२।०३ | तुला | अहोरात्रं | ३।१३।०८।३२ | ३३।१८ | ५।२० | ६।४० | ८ | १४ | ३० |
| ८ चं. | १४।४४ | दि. ११।१५ | स्वा. १७।१३ | दि. १२।१४ | शु. ३०।४५ | ब. १४।४४ | तुला | अहोरात्रं | ३।१४।०५।३७ | ३३।१४ | ५।२१ | ६।३९ | ९ | १५ | ३१ |
| ९ मं. | १८।३३ | दि. १२।४७ | वि. २२।३८ | दि. ०२।२९ | शु. ३१।३४ | कौ. १८।३३ | तु.०६।१७ | दि.०७।५३ | ३।१५।०२।५० | ३३।१० | ५।२२ | ६।३८ | १० | १६ | १ |
| १० बु. | २३।१० | दि. ०२।३९ | अनु. २८।४४ | दि. ०४।५३ | ब्र. ३२।५२ | ग. २३।१० | वृश्चिक | अहोरात्रं | ३।१६।००।०३ | ३३।०७ | ५।२३ | ६।३७ | ११ | १७ | २ |
| ११ बृ. | २८।११ | दि. ०४।३९ | ज्ये. ३५।१४ | रा. ०७।२९ | ऐं. ३४।२९ | वि. २८।११ | वृ.३५।१४ | रा.०७।२९ | ३।१६।५७।१६ | ३३।०४ | ५।२३ | ६।३७ | १२ | १८ | ३ |
| १२ शु. | ३३।१२ | सं. ०६।४१ | मू. ४१।४१ | रा. १०।०४ | वै. ३६।०३ | ब. ००।४१ | धनु | अहोरात्रं | ३।१७।५४।२९ | ३३।०१ | ५।२४ | ६।३६ | १३ | १९ | ४ |
| १३ श. | ३७।४७ | रा. ०८।३१ | पूषा. ४७।४२ | रा. १२।२९ | वि. ३७।१८ | कौ. ०५।२९ | धनु | अहोरात्रं | ३।१८।५१।४२ | ३२।५८ | ५।२४ | ६।३६ | १४ | २० | ५ |
| १४ र. | ४१।३९ | रा. १०।०५ | उषा. ५२।५७ | रा. ०२।३६ | प्री. ३७।५८ | ग. ०६।४३ | ध.०४।०१ | दि.०७।०१ | ३।१९।४८।५५ | ३२।५५ | ५।२५ | ६।३५ | १५ | २१ | ६ |
| १५ चं. | ४४।२१ | रा. ११।१० | श्र. ५७।०४ | रा. ०४।१६ | आ. ३७।४६ | वि. १३।०० | मकर | अहोरात्रं | ३।२०।४६।०७ | ३२।५२ | ५।२६ | ६।३४ | १६ | २२ | ७ |

चन्द्रदर्शनं मु. १५ सौम्यशृंगकं महार्घ, दोलोत्सवारम्भः, सोमवासरव्रतं, पूर्वां विना यात्रा पुष्ये, म. २७।४५ उपरि।
मिथुने शुक्रः ३७।५५, गं. १२।४५ या., (२–३ एको.)।
मधुश्रावणीव्रतं पूजनञ्च, श्रीगणेश ४ व्रतं, म. ४२।१४ उपरि।
म. ११।०८ यावत्। ← पूर्ण्याः, गृहप्रवेशः पूर्वदक्षिणयात्रा च पञ्चम्यां हस्ते, द.ति. १०।०८ उपरि।
नाग ५, नागपूजनं, कर्कोटकनामानागराजः पीतवर्णः द्वारनुभयतो गोमयनिर्मिता नागाः सिन्दूरदूर्वादुग्धलाजादिभिः ←
गृहप्रवेशः सप्तम्यां, दक्षिणयात्रा सप्तम्यां कन्यास्थे चन्द्रे ततो दक्षिणपश्चिमयात्रा, द.ति. १०।२४ यावत्।
शीतला ७, श्रीशीतलापूजनं, तुलसीदासजयन्ती, दक्षिणयात्रा, म. १२।०३ उ. ४३।२३ यावत्।
सोमवासरव्रतं, पश्चिमदक्षिणयात्राष्टम्याम्, (६ एको.)।
अगस्त ८, पश्चिमयात्रानुराधायाम् । ◆ पश्चिमोत्तरयात्रा ज्येष्ठायां ततः पूर्वोत्तरयात्रा, मं. २९।१४ उ. ३१।१४ या., म. २८।११ यावत्।
गृहारंभप्रवेशौ अनुराधायाम्, पश्चिमयात्रा, म. ५५।४० उ., (१० एको.)।
पुत्रदा ११ व्रतं सर्वेषां, गृहप्रवेशो मूले, पञ्चदिनात्मकदोलोत्सवारंभः, आश्लेषायां रविः २८।२५ स्वोनुदुर्योगः वर्तुर्लम्मस्त्ववाहनं वातानाडीफलितेदुर्घटेन वायुखण्डवृष्टियोगः, ◆
श्रीधर १२, दूर्वादलेन पारणं, प्रदोष १३ व्रतं, गृहारम्भः, गृहप्रवेशो मूले, पूर्वोत्तरयात्रा त्रयोदश्याम्।
उत्तरयात्रा पूर्वाषाढे, वक्री बुधः १८।३०।
प्रदोष १४ व्रतं, पश्चिमां विना यात्रा श्रवणायां, म. ४१।३६ उपरि। पूर्वां विना यात्रा श्रवणायां, पंचकारंभो रात्रौ घं. ४ मि. १६ उ., म. १३।०० यावत्।
श्रावणी १५ स्नानदानादिः, उपाकर्म, हयग्रीवावतारः, संस्कृतदिवसः, दोलोत्सवान्तः, रक्षाबन्धनं घं. १० मि. ३८ उपरि दिने, गृहारम्भः, सोमवासरव्रतं।

१५ चन्द्रे वल्ली ८।३६।१८।२८

अयनांशाः २२।४६।२९

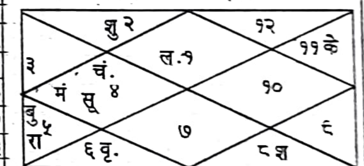



### मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च / दैनिकलग्नसारिणीचक्रम्

| ति.दि. | मंगलः | बुधः | गुरुः | शुक्रः | शनिः | केतुः | मिश्रमान | मे.अं. | वृ.अं. | मि.अं. | क.अं. | सिं.अं. | कं.अं. | तु.अं. | वृ.अं. | ध.अं. | म.अं. | कु.अं. | मी.अं. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ च. | ३।०७।५१।०८ | ४।०३।२५।४१ | ५।२२।५४।४६ | १।२९।००।३४ | ७।२५।१६।५० | १०।०३।३०।२४ | ४६।४८ | ०।३९ | २।३५ | ४।४८ | ७।०६ | ९।२२ | ११।३७ | १३।५४ | १६।११ | १८।१६ | २०।०२ | २१।३३ | २३।०२ |
| २ मं. | ३।०८।३०।०२ | ४।०४।१५।१२ | ५।२३।०२।३१ | २।००।१०।१९ | ७।२५।१४।०७ | १०।०३।२७।१३ | ४६।४७ | ०।३५ | २।३१ | ४।४४ | ७।०२ | ९।१८ | ११।३३ | १३।५० | १६।०७ | १८।१२ | १९।५८ | २१।२९ | २२।५८ |
| ३ बु. | ३।०९।०८।५६ | ४।०५।३४।४३ | ५।२३।१०।१२ | २।०१।२०।०४ | ७।२५।११।२४ | १०।०३।२४।०२ | ४६।४६ | ०।३१ | २।२७ | ४।४० | ६।५८ | ९।१४ | ११।२९ | १३।४६ | १६।०३ | १८।०८ | १९।५४ | २१।२५ | २२।५४ |
| ४ बृ. | ३।०९।४७।५० | ४।०६।२४।१४ | ५।२३।१७।५३ | २।०२।२९।४९ | ७।२५।०८।४२ | १०।०३।२०।५१ | ४६।४५ | ०।२७ | २।२३ | ४।३६ | ६।५४ | ९।१० | ११।२५ | १३।४२ | १५।५९ | १८।०४ | १९।५० | २१।२१ | २२।५० |
| ५ शु. | ३।१०।२६।४४ | ४।०७।१३।४५ | ५।२३।२५।३४ | २।०३।३९।३४ | ७।२५।०६।०० | १०।०३।१७।४० | ४६।४३ | ०।२४ | २।२० | ४।३३ | ६।५१ | ९।०७ | ११।२२ | १३।३९ | १५।५६ | १८।०१ | १९।४७ | २१।१८ | २२।४७ |
| ६ श. | ३।११।०५।३८ | ४।०८।०३।१५ | ५।२३।३३।१५ | २।०४।४९।१८ | ७।२५।०३।१८ | १०।०३।१४।२९ | ४६।४१ | ०।२० | २।१६ | ४।२९ | ६।४७ | ९।०३ | ११।१८ | १३।३५ | १५।५२ | १७।५७ | १९।४३ | २१।१४ | २२।४३ |
| ७ र. | ३।११।४४।३२ | ४।०८।५२।४५ | ५।२३।४०।५६ | २।०५।५९।०२ | ७।२५।००।३६ | १०।०३।११।१८ | ४६।३९ | ०।१६ | २।१२ | ४।२५ | ६।४३ | ८।५९ | ११।१४ | १३।३१ | १५।४८ | १७।५३ | १९।३९ | २१।१० | २२।३९ |
| ८ चं. | ३।१२।२३।२५ | ४।०९।४२।१५ | ५।२३।४८।३७ | २।०७।०८।४६ | ७।२४।५७।५४ | १०।०३।०८।०८ | ४६।३७ | ०।१२ | २।०८ | ४।२१ | ६।३९ | ८।५५ | ११।१० | १३।२७ | १५।४४ | १७।४९ | १९।३५ | २१।०६ | २२।३५ |
| ९ मं. | ३।१३।०२।०६ | ४।१०।०२।१४ | ५।२३।५७।१५ | २।०८।१८।३६ | ७।२४।५५।४९ | १०।०३।०४।५७ | ४६।३५ | ०।०८ | २।०४ | ४।१७ | ६।३५ | ८।५१ | ११।०६ | १३।२३ | १५।४० | १७।४५ | १९।३१ | २१।०२ | २२।३१ |
| १० बु. | ३।१३।४०।५३ | ४।१०।२२।१३ | ५।२४।०५।५२ | २।०९।२८।२६ | ७।२४।५३।४४ | १०।०३।०१।४६ | ४६।३३ | ०।०४ | २।०० | ४।१३ | ६।३१ | ८।४७ | ११।०२ | १३।१९ | १५।३६ | १७।४१ | १९।२७ | २०।५८ | २२।२७ |
| ११ बृ. | ३।१४।१९।३७ | ४।१०।४२।१२ | ५।२४।१४।२६ | २।१०।३८।१६ | ७।२४।५१।३९ | १०।०२।५८।३५ | ४६।३१ | ०।०१ | १।५७ | ४।१० | ६।२८ | ८।४४ | १०।५९ | १३।१६ | १५।३३ | १७।३८ | १९।२४ | २०।५५ | २२।२४ |
| १२ शु. | ३।१४।५८।२१ | ४।११।०२।१० | ५।२४।२३।०६ | २।११।४८।०६ | ७।२४।४९।३४ | १०।०२।५५।२४ | ४६।२९ | २३।५७ | १।५३ | ४।०६ | ६।२४ | ८।४० | १०।५५ | १३।१२ | १५।२९ | १७।३४ | १९।२० | २०।५१ | २२।२० |
| १३ श. | ३।१५।३७।०४ | ४।११।०६।१४ | ५।२४।३१।४३ | २।१२।५७।५५ | ७।२४।४७।२९ | १०।०२।५२।१३ | ४६।२८ | २३।५३ | १।४९ | ४।०२ | ६।२० | ८।३६ | १०।५१ | १३।०८ | १५।२५ | १७।३० | १९।१६ | २०।४७ | २२।१६ |
| १४ र. | ३।१६।१५।४७ | ४।११।०१।०७ | ५।२४।४०।२० | २।१४।०७।४४ | ७।२४।४५।२४ | १०।०२।४९।०३ | ४६।२७ | २३।४९ | १।४५ | ३।५८ | ६।१६ | ८।३२ | १०।४७ | १३।०४ | १५।२१ | १७।२६ | १९।१२ | २०।४३ | २२।१२ |
| १५ चं. | ३।१६।५४।३० | ४।१०।५४।५६ | ५।२४।४८।५७ | २।१५।१७।३३ | ७।२४।४३।२० | १०।०२।४५।५३ | ४६।२६ | २३।४५ | १।४१ | ३।५४ | ६।१२ | ८।२८ | १०।४३ | १३।०० | १५।१७ | १७।२२ | १९।०८ | २०।३९ | २२।०८ |

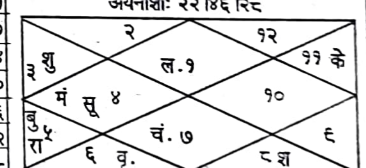
१ चन्द्रे वल्ली ८।३६।१८।१४

अयनांशाः २२।४६।२७




८ चन्द्रे वल्ली ८।३६।१८।२१

अयनांशाः २२।४६।२८




**विविधविषयाः** – **पञ्चम्यां नागपूजनं** – श्रावणे मासि पञ्चम्यां कृष्णपक्षेऽथवा सिते। द्वारस्योभयतो लेख्या गोमयेन विषोल्बणाः।। पूजयेद्विविधैर्वीर दधिदूर्वांकुरैः कुशैः। गन्धपुष्पोपहारैश्च ब्राह्मणानां च तर्पणैः।। ये तस्यां पूजयन्तीह नागान् भक्तिपुरस्सराः। न तेषां सर्पतो वीर भयं भवति कुत्रचित्।। **पञ्चम्यां** निम्बपत्ररससेवनं **पुष्टिकरम्। शकुनम्** – श्रावणशुक्लपञ्चम्यां दक्षिणपश्चिमवायौ दुर्भिक्षमन्यथा सुभिक्षम्। नभसि शुक्लदलेऽवलसंज्ञके रवितिथावुदये रविचन्द्रयोः। भवति चेन्मलयैरिह सूचना वसुमती जलदा बहुतोयदाः।। **रक्षाबन्धनमन्त्रः** – येन बद्धो बली राजा दानवेन्द्रो महाबलः। तेन त्वां प्रतिबध्नामि रक्षे माचल माचल।। ग्रहयोगेन **वृष्टिविचारः** – बुधशुक्रमहीसूनुगुरवश्चैकराशिगाः। निःसंशयः तदा काले जायते वृष्टिकारणम्।। समागमे ज्ञसितयोस्तथा च गुरुशुक्रयोः। तथैव जीवबुधयोर्वृष्टिः स्यान्नात्र संशयः।। यदा भवन्ति सूर्यस्य ग्रहाः पृष्ठावलम्बिनः। पुरतो वा यदा यान्ति तदा त्वेकार्णवा मही।।

**ग्रहस्थितिः** – मार्गी पश्चिमास्तः कुजः, मार्गी पश्चिमोदितो बुधः १३ तो वक्री, मार्गिणौ पूर्वोदितौ गुरुशुक्रौ, वक्री पूर्वोदितः शनिः।

**वातावरणम्** – पक्षादितः षष्ठीं यावद् वातखण्डवृष्टियोगस्ततो द्वादशीं यावन्मेघच्छायातापच्छिन्नवृष्टयस्ततः पक्षान्तं यावद्वृष्टियोगः।

## भाद्रकृष्णपक्षः

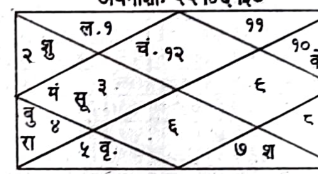
शकाब्दः१९३९, संवत्२०७४,सन्१४२४साल, दि.८।०८।२०१७ ईतः दि.२१।०८।२०१७ ई. यावत्, पश्चिमे कालः, १० तः उत्तरे कालः।
मार्गी पूर्वोदितो गुरुः, मार्गी पूर्वोदितः शुक्रः, शुक्लः, १० तो शुक्लः, वर्षर्तुः, याम्यायनम्, सौम्यगोलः।

| तिथयः दिनानि | तिथयः द.प. | घं. मि. | नक्षत्राणि द.प. | घं. मि. | योगाः द.प. | करणानि द.प. | चन्द्रराशयः द.प. | घं. मि. | स्पष्टसूर्यः राश्यादिः | दिनमानं द.प. | सूर्योदयः घं.मि. | सूर्यास्तः घं.मि. | दिनांकाः रा. | सौ. | अं. | भाद्रकृष्णपक्षः |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ मं. | ४६।०२ | रा. ११।५१ | ध. ६०।०० | अहो | सौ. ३६।४४ | बा. १५।११ | म.२८।३५ | दि.०४।५२ | ३।२१।४३।३० | ३२।४६ | ५।२६ | ६।३४ | १७ | २३ | ८ | पश्चिमास्तो बुधः ५२।०५, दोषे भाद्रपदे त्यजेत्। |
| २ बु. | ४६।१८ | रा. ११।५८ | ध. ००।०६ | प्रा. ०५।२९ | शो. ३४।४० | तै. १६।१० | कुम्भ | अहो. | ३।२२।४०।५३ | ३२।४६ | ५।२७ | ६।३३ | १८ | २४ | ९ | गृहारम्भः। |
| ३ बृ. | ४५।१९ | रा. ११।३५ | शत. ०१।४७ | दि. ०६।१० | अग. ३१।३५ | व. १५।४८ | कुं.४७।११ | रा.१२।१९ | ३।२३।३८।१६ | ३२।४३ | ५।२७ | ६।३३ | १९ | २५ | १० | कज्जली ३, विशालाक्षीपूजनं, गृहारंभः तृतीयायां, पश्चिमयात्रा तृतीयायां पूर्वभाद्रे, भ. १५।४८ उ. ४५।१९ यावत्। |
| ४ शु. | ४३।०७ | रा. १०।४३ | पूभा. ०२।१९ | दि. ०६।२४ | सु. २७।३१ | ब. १४।१३ | मीन | अहो. | ३।२४।३५।३८ | ३२।४० | ५।२८ | ६।३२ | २० | २६ | ११ | विनायक ४ व्रतं, बहुलापूजा, उत्तरयात्रा पूर्वभाद्रे। |
| ५ श. | ३९।५४ | रा. ०९।२७ | उभा. ०१।३६ | दि. ०६।०७ | धृ. २२।३४ | कौ. ११।३० | मी.५९।५४ | रा.०५।२७ | ३।२५।३३।०० | ३२।३७ | ५।२९ | ६।३१ | २१ | २७ | १२ | रेवतीमानम् ५८।१८, द.ति. ३९।५४ उ., पञ्चकान्तो रात्रौ घं. ५ मि. २७ उ., गं. ४७।५४ उपरि। |
| ६ र. | ३५।४४ | रा. ०७।४७ | अ. ५७।२१ | रा. ०४।२५ | शू. १६।४९ | ग. ०७।४९ | मेष | अहो. | ३।२६।३०।२२ | ३२।३४ | ५।२९ | ६।३१ | २२ | २८ | १३ | हलधर ६, पश्चिमां विना यात्रा सप्तम्यामश्विन्यां, द.ति. ३५।४४ या., गं. ०२।५४ या., भ. ३५।४४ उपरि। |
| ७ चं. | ३०।४३ | सं. ०५।४७ | भ. ५४।०५ | रा. ०३।०८ | गं. १०।२४ | वि. ०३।१३ | मेष | अहो. | ३।२७।२७।४४ | ३२।३२ | ५।३० | ६।३० | २३ | २९ | १४ | मोहरात्रिर्निशीथे शक्तिपूजनं, जयन्तीव्रतं, भ. ०३।१३ यावत्। |
| ८ मं. | २५।१० | दि. ०३।३४ | कृ. ५०।२० | रा. ०१।३८ | वृ. ०३।२५ | कौ. २५।१० | मे.०८।०९ | दि.०८।४६ | ३।२८।२५।१९ | ३२।२८ | ५।३० | ६।३० | २४ | ३० | १५ | ध्रुवमानं ५२।४०, कृष्णाष्टमीव्रतं, श्रीकृष्णपूजनोत्सवः, एकसप्ततितमः स्वतन्त्रतादिवसः, राष्ट्रियध्वजोत्तोलनपूर्वकराष्ट्रगानं, पूर्वदक्षिणयात्रा रोहिण्याम्। |
| ९ बु. | १९।१४ | दि. ०१।१३ | रो. ४६।१५ | रा. १२।०१ | व्या. ४८।३१ | ग. १९।१४ | वृष | अहो. | ३।२९।२२।५४ | ३२।२५ | ५।३१ | ६।२९ | २५ | ३१ | १६ | कृष्णाष्टमीव्रतपारणं, मासान्तः, भ. ४६।०८ उ., (९-१० एको.)। |
| १० बृ. | १३।०३ | दि. १०।४५ | मृ. ४१।५९ | रा. १०।२० | ह. ४०।४९ | वि. १३।०३ | वृ.१४।०७ | दि.११।११ | ४।००।२०।२९ | ३२।२२ | ५।३२ | ६।२८ | २६ | १ | १७ | अशुद्धारंभः २४।४९ उ., भ. १३।०३ या., मघायां सिंहे रविः २४।४९ मु. ३० फलं साम्यं पुंस्त्रीसूर्ययोगःधनुर्लग्नं शिखिवाहनमग्निनाडीपतिः कुजस्तेन वातातपवृष्टियोगः,🡐 |
| ११ शु. | ०६।५४ | दि. ०८।१८ | आ. ३७।५४ | रा. ०८।४२ | व. ३३।१३ | बा. ०६।५४ | मिथुन | अहो. | ४।०१।१८।०४ | ३२।१९ | ५।३२ | ६।२८ | २७ | २ | १८ | जया११व्रतं सर्वेषां, मासादिः। 🡐विष्णुपदीसंक्रान्तिपुण्यकालो घं. १२ मि. १६ उ. सूर्यास्तं यावत्, पुण्याहः। |
| १२ श. | ००।५५ | प्रा. ०५।५५ | पुन. ३४।०५ | रा. ०७।११ | सि. २५।५२ | तै. ००।५५ | मि.२०।०३ | दि.०१।३४ | ४।०२।१५।३९ | ३२।१९ | ५।३३ | ६।२७ | २८ | ३ | १९ | त्रयोदशीमानं ५४।२६, कुष्माण्डेन पारणं, प्रदोष १३ व्रतं, बाबागणिनाथजयन्त्युत्सवः, द्वापरयुगादिः, पश्चिमदक्षिणयात्रा मिथुनस्थे चन्द्रे ततः पश्चिमोत्तरयात्रा पुनर्वसौ◆ |
| १४ र. | ५०।१७ | रा. ०१।४० | पुष्य. ३०।५० | सं. ०५।५३ | व्य. १८।४८ | वि. २२।४९ | कर्क | अहो. | ४।०३।१३।१४ | ३२।१३ | ५।३३ | ६।२७ | २९ | ४ | २० | कर्के शुक्रः१२।५४, दुर्धर १४, भैरवपूजनं, प्रदोष १४ व्रतं, रविव्रतं, भ. २२।४९ यावत्। ◆ ततः पूर्वां विना यात्रा, भ. ५५।२१ उपरि |
| ३० चं. | ४६।०५ | रा. १२।०० | आश्ले. २८।१४ | दि. ०४।५२ | व. १२।२१ | च. १८।११ | क.२८।१४ | दि.०४।५२ | ४।०४।१०।४८ | ३२।१० | ५।३४ | ६।२६ | ३० | ५ | २१ | भाद्री ३० स्नानदानादिः, कुशोत्पाटनं, सोमवारीव्रतं दिनं यावत्, गं. १७।१४ उ. ३२।१४ यावत्। |

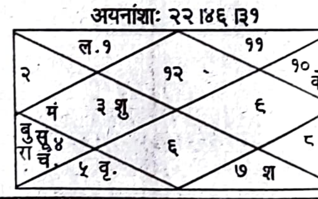
### मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च — दैनिकलग्नसारिणीचक्रम्

| ति.दि. | मंगलः | बुधः | गुरुः | शुक्रः | शनिः | केतुः | मिश्रमानं | मे.अं. | वृ.अं. | मि.अं. | क.अं. | सिं.अं | कं.अं. | तु.अं. | वृ.अं. | ध.अं. | म.अं. | कुं.अं. | मी.अं. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ मं. | ३।१७।३३।०३ | ४।१०।२२।५३ | ५।२४।५८।३० | २।१६।२८।१३ | ७।२४।४१।५२ | १०।०२।४२।४२ | ४६।२४ | २३।४१ | १।३७ | ३।५० | ६।०८ | ८।२४ | १०।३९ | १२।५६ | १५।१३ | १७।१८ | १९।०४ | २०।३५ | २२।०४ |
| २ बु. | ३।१८।११।३६ | ४।०९।५०।५० | ५।२५।०८।०३ | २।१७।३८।५३ | ७।२४।४०।२४ | १०।०२।३९।३१ | ४६।२२ | २३।३८ | १।३४ | ३।४७ | ६।०५ | ८।२१ | १०।३६ | १२।५३ | १५।१० | १७।१५ | १९।०१ | २०।३२ | २२।०१ |
| ३ बृ. | ३।१८।५०।०६ | ४।०९।१८।४७ | ५।२५।१७।३६ | २।१८।४९।३३ | ७।२४।३८।५६ | १०।०२।३६।२० | ४६।२० | २३।३४ | १।३० | ३।४३ | ६।०१ | ८।१७ | १०।३२ | १२।४९ | १५।०६ | १७।११ | १८।५७ | २०।२८ | २१।५७ |
| ४ शु. | ३।१९।२८।४२ | ४।०८।४६।४४ | ५।२५।२७।०९ | २।२०।००।१३ | ७।२४।३७।२८ | १०।०२।३३।०९ | ४६।१९ | २३।३० | १।२६ | ३।३९ | ५।५७ | ८।१३ | १०।२८ | १२।४५ | १५।०२ | १७।०७ | १८।५३ | २०।२४ | २१।५३ |
| ५ श. | ३।२०।०७।१५ | ४।०८।१४।४२ | ५।२५।३६।४२ | २।२१।१०।५३ | ७।२४।३६।०० | १०।०२।२९।५८ | ४६।१८ | २३।२६ | १।२२ | ३।३५ | ५।५३ | ८।०९ | १०।२४ | १२।४१ | १४।५८ | १७।०३ | १८।४९ | २०।२० | २१।४९ |
| ६ र. | ३।२०।४५।४८ | ४।०७।४२।४० | ५।२५।४६।१५ | २।२२।२१।३३ | ७।२४।३४।३२ | १०।०२।२६।४८ | ४६।१७ | २३।२२ | १।१८ | ३।३१ | ५।४९ | ८।०५ | १०।२० | १२।३७ | १४।५४ | १६।५९ | १८।४५ | २०।१६ | २१।४५ |
| ७ चं. | ३।२१।२४।२१ | ४।०७।१०।३८ | ५।२५।५५।४७ | २।२३।३२।१३ | ७।२४।३३।०४ | १०।०२।२३।३८ | ४६।१६ | २३।१८ | १।१४ | ३।२७ | ५।४५ | ८।०१ | १०।१६ | १२।३३ | १४।५० | १६।५५ | १८।४१ | २०।१२ | २१।४१ |
| ८ मं. | ३।२२।०२।५० | ४।०६।२४।०६ | ५।२६।०५।०२ | २।२४।४३।२५ | ७।२४।३२।२६ | १०।०२।२०।२७ | ४६।१४ | २३।१५ | १।११ | ३।२४ | ५।४२ | ७।५८ | १०।१३ | १२।३० | १४।४७ | १६।५२ | १८।३८ | २०।०९ | २१।३८ |
| ९ बु. | ३।२२।४१।१८ | ४।०५।३७।४० | ५।२६।१६।१७ | २।२५।५४।३७ | ७।२४।३१।४८ | १०।०२।१७।१६ | ४६।१२ | २३।११ | १।०७ | ३।२० | ५।३८ | ७।५४ | १०।०९ | १२।२६ | १४।४३ | १६।४८ | १८।३४ | २०।०५ | २१।३४ |
| १० बृ. | ३।२३।१९।४६ | ४।०४।५१।११ | ५।२६।२६।३१ | २।२७।०५।४९ | ७।२४।३१।११ | १०।०२।१४।०५ | ४६।१० | २३।०७ | १।०३ | ३।१६ | ५।३४ | ७।५० | १०।०५ | १२।२२ | १४।३९ | १६।४४ | १८।३० | २०।०१ | २१।३० |
| ११ शु. | ३।२३।५८।१४ | ४।०४।०४।४२ | ५।२६।३६।४५ | २।२८।१७।०१ | ७।२४।३०।३४ | १०।०२।१०।५४ | ४६।०८ | २३।०३ | ०।५९ | ३।१२ | ५।३० | ७।४६ | १०।०१ | १२।१८ | १४।३५ | १६।४० | १८।२६ | १९।५७ | २१।२६ |
| १२ श. | ३।२४।३६।४२ | ४।०३।१८।१३ | ५।२६।४६।५९ | २।२९।२८।१३ | ७।२४।२९।५७ | १०।०२।०७।४३ | ४६।०७ | २२।५९ | ०।५५ | ३।०८ | ५।२६ | ७।४२ | ९।५७ | १२।१४ | १४।३१ | १६।३६ | १८।२२ | १९।५३ | २१।२२ |
| १४ र. | ३।२५।१५।१० | ४।०२।३१।४४ | ५।२६।५७।१३ | ३।००।३९।२४ | ७।२४।२९।२० | १०।०२।०४।३३ | ४६।०६ | २२।५६ | ०।५२ | ३।०५ | ५।२३ | ७।३९ | ९।५४ | १२।११ | १४।२८ | १६।३३ | १८।१९ | १९।५० | २१।१९ |
| ३० चं. | ३।२५।५३।३८ | ४।०१।४५।१५ | ५।२७।०७।२७ | ३।०१।५०।३५ | ७।२४।२८।४३ | १०।०२।०१।२३ | ४६।०५ | २२।५२ | ०।४८ | ३।०१ | ५।१९ | ७।३५ | ९।५० | १२।०७ | १४।२४ | १६।२९ | १८।१५ | १९।४६ | २१।१५ |

७ चन्द्रे वल्ली ८।३९।१८।३५
अयनांशाः २२।४६।३०




३० चन्द्रे वल्ली ८।३९।१८।४२
अयनांशाः २२।४६।३१




**विविधविषयाः** – भाद्रकृष्णाष्टम्यां **कृष्णजन्माष्टमीव्रतम्** – तत्र निशीथव्यापिन्यां जयन्तीव्रतं उदयव्यापिन्यां कृष्णाष्टमीव्रतम्। व्रतमिदं त्रिजन्मपापनाशनम्। तस्मादिदं व्रतं सर्वैरवश्यमेव कार्यमिति। भाद्रामायां **कुशोत्पाटनमन्त्रः** – कुशाग्रे वसते रुद्रः कुशमध्ये तु केशवः। कुशमूले वसेद् ब्रह्मा कुशान्मे देहि मेदिनि।। कुशोऽसि कुशपुत्रोऽसि ब्रह्मणा निर्मितः पुरा। देवपितृहितार्थाय कुशमुत्पाटयाम्यहम्।। **वर्ज्यकुशाः** – चितिदर्भाः पथिदर्भा ये दर्भा यज्ञभूमिषु। स्तरणासनपिण्डेषु षट्कुशान् परिवर्जयेत्।। **श्राद्धे निषिद्धवस्तूनि** मात्स्ये – कुष्माण्डं महिषीक्षीरं बिल्वपत्रमगद्विजाः। श्राद्धकाले समुत्पन्ने पितरो यान्त्यनाश्रिताः।। **श्राद्धे प्रशस्तानि** – उच्छिष्टं शिवनिर्माल्यं वान्तं च मृतकर्पटम्। श्राद्धे सप्तपवित्राणि दौहित्रः कुतुपस्तिलाः।। **महिष्यादिप्रसवदोषः**–माघे बुधे च महिषी श्रावणे वडवा दिवा। सिंहे गावः प्रसूयन्ते स्वामिनो मृत्युदायकाः।। अतस्तच्छान्तिर्विधेयेति।

**ग्रहस्थितिः** – मार्गी **पश्चिमास्तः** कुजः, वक्री पश्चिमोदितो बुधः १ तः पश्चिमास्तः, मार्गिणौ **पूर्वोदितौ** गुरुशुक्रौ, **वक्री पूर्वोदितः** शनिः।

**वातावरणम्**– पक्षाद्यन्तभागयोः मेघचारवृष्टियोगस्तन्मध्यभागे वातातपखण्डवृष्टियोगः।

## भाद्रशुक्लपक्षः

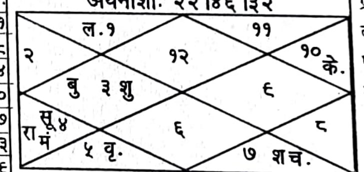
शकाब्दः १९३९, संवत् २०७४, सन् १४२५ साल, दि. २२।०८।२०१७ ई. तः दि.०६।०९।२०१७ ई. यावत्, उत्तरे कालः। मार्गी पूर्वोदितो गुरुः मार्गी पूर्वोदितः शुक्रः, अशुद्धः, वर्षर्तुः, सौम्यगोलः, याम्यायनम् ।

| तिथयः दिनानि | तिथयः द. प. | घं. मि. | नक्षत्राणि द. प. | घं. मि. | योगाः द. प. | करणानि द. प. | चन्द्रराशयः द. प. | घं. मि. | स्पष्टसूर्यः राश्यादिः | दिनमानं द. प. | सूर्योदयः घं. मि. | सूर्यास्तः घं. मि. | दिनांकाः रा. | सौ. | अं. | भाद्रशुक्लपक्षः |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ मं. | ४२।४६ | रा. १०।४१ | म. २६।३० | दि. ०४।११ | प. ०६।३२ | किं. १४।२५ | सिंह. | अहो. | ४।०५।०८।३६ | ३२।०६ | ५।३५ | ६।२५ | ३१ | ६ | २२ | पूर्वयात्रा द्वितीयायाम्। |
| २ बु. | ४०।३१ | रा. ०९।४८ | पूफ. २५।४५ | दि. ०३।५४ | शि. ०१।३२ | बा. ११।३८ | सिं.४०।५२ | रा.०९।५७ | ४।०६।०६।२४ | ३२।०२ | ५।३६ | ६।२४ | १ | ७ | २३ | **सिद्धमानं** ५५।५१, चन्द्रदर्शनं मु. ४५ सौम्यशृंगफलं समर्घं, पूर्वयात्रा पूर्वफल्गुन्याम। |
| ३ वृ. | ३९।२८ | रा. ०९।२३ | उफ. २६।१३ | दि. ०४।०५ | सा. ५४।१४ | तै. ०९।५९ | कन्या | अहो. | ४।०७।०४।११ | ३१।५८ | ५।३६ | ६।२४ | २ | ८ | २४ | पूर्वोदितो बुधः ५८।२४, **हरितालिका**(तीज)व्रतं, पूर्वयात्रा तृतीयायां हस्ते, **रुद्रसावर्णिमन्वादिः**, वराहावतारः। |
| ४ शु. | ३९।४३ | रा. ०९।३० | ह. २७।५४ | दि. ०४।४७ | शु. ५२।०५ | व. ०९।३५ | कं.५९।२३ | रा.०५।२२ | ४।०८।०१।५८ | ३१।५५ | ५।३७ | ६।२३ | ३ | ९ | २५ | **श्रीगणेश** ४ व्रतं, **गणेशपूजारंभः**, **चतुर्थीचन्द्र(चौठचन्द्र)पूजनं**, पूर्वदक्षिणयात्रा कन्यास्थ चन्द्र **ततो दक्षिणयात्रा**, म.०६।३५ उ. ३६।४३ यावत्। |
| ५ श. | ४१।१८ | रा. १०।०९ | चि. ३०।५२ | सं. ०५।५९ | शु. ५०।५९ | ब. १०।३० | तुला | अहो. | ४।०८।५९।४५ | ३१।५२ | ५।३८ | ६।२२ | ४ | १० | २६ | **मार्गी शनिः** ४०।४६, **ऋषिपू**, सप्तर्षि (मरीचिवशिष्ठांगिराऽत्रिक्रतुपुलहपुलस्त्य)पूजन, पञ्चगव्य**प्राशनं, पश्चिमदक्षिणयात्रा** षष्ठ्याम्। |
| ६ र. | ४४।०० | रा. ११।१४ | स्वा. ३४।५७ | रा. ०७।३७ | ब्र. ५०।४३ | कौ. १२।३९ | तुला | अहो. | ४।०९।५७।३२ | ३१।४९ | ५।३८ | ६।२२ | ५ | ११ | २७ | वक्रात् कर्के बुधः ६।४६, **रविव्रतं**, लोलार्क ६, **सूर्यव्रतं** पूजनञ्च। |
| ७ चं. | ४७।५० | रा. १२।४७ | वि. ४०।०८ | रा. ०९।४२ | ऐ. ५१।१८ | ग. १५।५५ | तु.२३।५१ | दि.०३।११ | ४।१०।५५।१९ | ३१।४६ | ५।३९ | ६।२१ | ६ | १२ | २८ | **मघायां सिंहे कुजः** १२।४६, **मार्गी बुधः** ३०।११, म. ४७।५० उ., पश्चिमोत्तरयात्राष्टम्याम्। |
| ८ मं | ५२।२६ | रा. ०२।३८ | अनु. ४६।०५ | रा. १२।०६ | वै. ५२।२८ | वि. २०।०८ | वृश्चिक | अहो. | ४।११।५३।१८ | ३१।४२ | ५।४० | ६।२० | ७ | १३ | २९ | मघायां सिंहे बुधः ६।३५, म. २०।०८ या., **राधाष्टमी**, **दूर्वाष्टमी**, महालक्ष्मी**व्रतारंभः**, पश्चिम**यात्रा**। |
| ९ बु. | ५७।२८ | रा. ०४।३९ | ज्ये. ५२।३३ | रा. ०२।४१ | वि. ५३।५८ | बा. २४।५७ | वृ.५२।३३ | रा.०२।४१ | ४।१२।५१।१७ | ३१।३८ | ५।४० | ६।२० | ८ | १४ | ३० | द.ति. ५७।२८ उ. गं. ४६।३३ उपरि। |
| १० वृ. | ६०।०० | अहो. | मू. ५९।०३ | रा. ०५।१८ | प्री. ५५।३० | तै. ३०।०० | धनु | अहो. | ४।१३।४९।१६ | ३१।३४ | ५।४१ | ६।१९ | ९ | १५ | ३१ | दग्धतिथिः, त्र्यहोजन्मदिनकृत्यं, गं. १।३३ या., **पूर्वफल्गुन्यां रविः**१५।३२ पुंस्त्रीनृसूयोगः वृश्चिकलग्नं गजवाहनमग्निनाडीपतिः **कुजस्तेन** वातातपखण्डवृष्टियोगः। |
| १० शु. | ०२।३२ | दि. ०६।४३ | पूषा. ६०।०० | अहो. | आ. ५६।४६ | ग. ०२।३२ | धनु | अहो. | ४।१४।४७।१५ | ३१।३० | ५।४२ | ६।१८ | १० | १६ | १ | सितम्बर ६, द.ति. ०२।३२ या., म. ३४।५३ उ., पूर्वोत्तरयात्रैकादश्याम्। |
| ११ श. | ०७।१४ | दि. ०८।३७ | पूषा. ०५।०९ | दि. ०७।४७ | सौ. ५७।३० | वि. ०७।१४ | ध.२१।३० | दि.०२।१९ | ४।१५।४५।१४ | ३१।२६ | ५।४३ | ६।१७ | ११ | १७ | २ | **याम्यामगस्त्योदयः**, **कर्माधर्मा** ११ व्रतं सर्वेषां, हरेः पार्श्वपरिवर्तनं, उत्तरयात्रा पूर्वाषाढे, म ०७।१४ **यावत्**। |
| १२ र. | ११।११ | दि. १०।१२ | उषा. १०।३५ | दि. ०९।५८ | शो. ५७।२९ | बा. ११।११ | मकर | अहो. | ४।१६।४३।१३ | ३१।२२ | ५।४४ | ६।१६ | १२ | १८ | ३ | कुष्माण्डेन पारणं, **रविव्रतं**, वामन१२, **वामनावतारः**, **इन्द्रपूजारंभः**, प्रदोष १३ व्रतं, पश्चिमा विना **यात्रा श्रवणायाम्**। |
| १३ चं. | १४।०० | दि. ११।२० | श्र. १४।५९ | दि. ११।४४ | अगं. ५६।३६ | तै. १४।०० | म.४६।३८ | रा.१२।२३ | ४।१७।४१।११ | ३१।१८ | ५।४४ | ६।१६ | १३ | १९ | ४ | प्रदोष १४ व्रतं, **पञ्चकारंभो** दिवा घं. ११ मि. ४४ उ., पूर्वां विना यात्रा श्रवणायां, (१४ एको.)। |
| १४ मं. | १५।५० | दि. १२।०५ | ध. १८।१७ | दि. ०१।०४ | सु. ५४।४२ | व. १५।५० | कुम्भ | अहो. | ४।१८।३९।२५ | ३१।१४ | ५।४५ | ६।१५ | १४ | २० | ५ | अनन्त १४, अनन्तपूजनं तड्डोरकधारणञ्च, **गणेशविसर्जनं**, पश्चिमयात्रा धनिष्ठायां, म. १५।५० उ., **(१५ एको.)**। ←पूर्वभाद्रे, (१ एको.)। |
| १५ बु. | १६।१४ | दि. १२।१६ | शत. २०।१७ | दि. ०१।५३ | धृ. ५१।४८ | ब. १६।१४ | कुम्भ | अहो. | ४।१९।३७।३९ | ३१।१० | ५।४६ | ६।१४ | १५ | २१ | ६ | तुलायां गुरुः ०८।२७, म.४६।२या., **भाद्री१५स्नानदानादिः**, **अगस्त्यार्घदानं**, शिवपूजनं, पितृपक्षीयपार्वणतर्पणारंभः, महालयारंभः, पश्चिमयात्रा← |

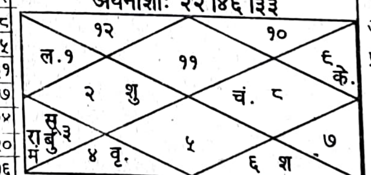
### मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च / दैनिकलग्नसारिणीचक्रम्

| ति.दि. | मंगलः | बुधः | गुरुः | शुक्रः | शनिः | केतुः | मिश्रमानं | मे.अं. | वृ.अं. | मि.अं. | क.अं. | सिं.अं. | कं.अं. | तु.अं. | वृ.अं. | ध.अं. | म.अं. | कुं.अं. | मी.अं. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ म. | ३।२६।३१।५१ | ४।०१।२५।३४ | ५।२७।१८।१७ | ३।०३।०२।०७ | ७।२४।२८।३७ | १०।०१।५८।१२ | ४६।०३ | २२।४८ | ०।४४ | २।५७ | ५।१५ | ७।३१ | ६।४६ | १२।०३ | १४।२० | १६।२५ | १८।११ | १९।४२ | २१।११ |
| २ बु. | ३।२७।१०।०४ | ४।०१।०५।५३ | ५।२७।२९।०७ | ३।०४।१३।३९ | ७।२४।२८।३२ | १०।०१।५५।०१ | ४६।०१ | २२।४५ | ०।४१ | २।५४ | ५।१२ | ७।२८ | ६।४३ | १२।०० | १४।१७ | १६।२२ | १८।०८ | १९।३९ | २१।०८ |
| ३ वृ. | ३।२७।४८।१६ | ४।००।४६।१२ | ५।२७।३९।५७ | ३।०५।२५।११ | ७।२४।२८।२७ | १०।०१।५१।५० | ४५।५९ | २२।४१ | ०।३७ | २।५० | ५।०८ | ७।२४ | ६।३९ | ११।५६ | १४।१३ | १६।१८ | १८।०४ | १९।३५ | २१।०४ |
| ४ शु. | ३।२८।२६।२८ | ४।००।२६।३१ | ५।२७।५०।४७ | ३।०६।३६।४३ | ७।२४।२७।३९ | १०।०१।४८।३९ | ४५।५७ | २२।३७ | ०।३३ | २।४६ | ५।०४ | ७।२० | ६।३५ | ११।५२ | १४।०९ | १६।१४ | १८।०० | १९।३१ | २१।०० |
| ५ श. | ३।२९।०४।४० | ४।००।०६।५० | ५।२८।०१।३७ | ३।०७।४८।१५ | ७।२४।२७।४० | १०।०१।४५।२८ | ४५।५५ | २२।३४ | ०।३० | २।४३ | ५।०१ | ७।१७ | ६।३२ | ११।४९ | १४।०६ | १६।११ | १७।५७ | १९।२८ | २०।५७ |
| ६ र. | ३।२९।४२।५२ | ३।२९।४७।१० | ५।२८।१२।२७ | ३।०८।५९।४७ | ७।२४।२७।४१ | १०।०१।४२।१७ | ४५।५४ | २२।३० | ०।२६ | २।३९ | ४।५७ | ७।१३ | ६।२८ | ११।४५ | १४।०२ | १६।०७ | १७।५३ | १९।२४ | २०।५३ |
| ७ चं. | ४।००।२१।०४ | ३।२९।४९।३४ | ५।२८।२३।१७ | ३।१०।११।१९ | ७।२४।२८।३२ | १०।०१।३९।०७ | ४५।५३ | २२।२६ | ०।२२ | २।३५ | ४।५३ | ७।०९ | ६।२४ | ११।४१ | १३।५८ | १६।०३ | १७।४९ | १९।२० | २०।४९ |
| ८ म | ४।००।५९।१८ | ४।००।१५।५९ | ५।२८।३४।४४ | ३।११।२३।२३ | ७।२४।२९।३३ | १०।०१।३५।५६ | ४५।५१ | २२।२३ | ०।१९ | २।३२ | ४।५० | ७।०६ | ६।२१ | ११।३८ | १३।५५ | १६।०० | १७।४६ | १९।१७ | २०।४६ |
| ९ बु. | ४।०१।३७।३१ | ४।००।४२।२४ | ५।२८।४६।११ | ३।१२।३५।२६ | ७।२४।३०।३४ | १०।०१।३२।४५ | ४५।४९ | २२।१९ | ०।१५ | २।२८ | ४।४६ | ७।०२ | ६।१७ | ११।३४ | १३।५१ | १५।५६ | १७।४२ | १९।१३ | २०।४२ |
| १० वृ. | ४।०२।१५।४४ | ४।०१।०८।४९ | ५।२८।५७।३८ | ३।१३।४७।२९ | ७।२४।३१।३५ | १०।०१।२९।३४ | ४५।४७ | २२।१५ | ०।११ | २।२४ | ४।४२ | ६।५८ | ६।१३ | ११।३० | १३।४७ | १५।५२ | १७।३८ | १९।०९ | २०।३८ |
| १० शु. | ४।०२।५३।५७ | ४।०१।३५।१४ | ५।२९।०९।०५ | ३।१४।५९।३२ | ७।२४।३२।३५ | १०।०१।२६।२३ | ४५।४५ | २२।१२ | ०।०८ | २।२१ | ४।३९ | ६।५५ | ६।१० | ११।२७ | १३।४४ | १५।४९ | १७।३५ | १९।०६ | २०।३५ |
| ११ श. | ४।०३।३२।१० | ४।०२।०१।३९ | ५।२९।२०।३२ | ३।१६।११।३५ | ७।२४।३३।३५ | १०।०१।२३।१२ | ४५।४३ | २२।०८ | ०।०४ | २।१७ | ४।३५ | ६।५१ | ६।०६ | ११।२३ | १३।४० | १५।४५ | १७।३१ | १९।०२ | २०।३१ |
| १२ र. | ४।०४।१०।२३ | ४।०२।२८।०४ | ५।२९।३१।५९ | ३।१७।२३।३८ | ७।२४।३४।३५ | १०।०१।२०।०२ | ४५।४१ | २२।०४ | ००।०० | २।१३ | ४।३१ | ६।४७ | ६।०२ | ११।१९ | १३।३६ | १५।४१ | १७।२७ | १८।५८ | २०।२७ |
| १३ चं. | ४।०४।४८।३६ | ४।०२।५४।२८ | ५।२९।४३।२६ | ३।१८।३५।४१ | ७।२४।३५।३५ | १०।०१।१६।५२ | ४५।३९ | २२।०१ | २३।५७ | २।१० | ४।२८ | ६।४४ | ८।५९ | ११।१६ | १३।३३ | १५।३८ | १७।२४ | १८।५५ | २०।२४ |
| १४ म. | ४।०५।२६।३९ | ४।०३।५४।११ | ५।२९।५५।२६ | ३।१९।४८।०४ | ७।२४।३७।११ | १०।०१।१३।४१ | ४५।३७ | २१।५७ | २३।५३ | २।०६ | ४।२४ | ६।४० | ८।५५ | ११।१२ | १३।२९ | १५।३४ | १७।२० | १८।५१ | २०।२० |
| १५ बु. | ४।०६।०४।४२ | ४।०४।५३।५३। | ६।००।०७।२६ | ३।२१।००।२७ | ७।२४।३८।४७ | १०।०१।१०।३० | ४५।३५ | २१।५३ | २३।४९ | २।०२ | ४।२० | ६।३६ | ८।५१ | ११।०८ | १३।२५ | १५।३० | १७।१६ | १८।४७ | २०।१६ |

**७ चन्द्रे वल्ली ८।३९।१८।४९**
**अयनांशाः २२।४६।३२**




**१३ चन्द्रे वल्ली ८।३९।१८।५६**
**अयनांशाः २२।४६।३३**




**विविधविषयाः**- चतुर्थ्यां सरोहिणीकचन्द्रपूजनं **कुर्यात्फलादिकं** गृहीत्वा चन्द्रं च **पश्येत्तन्मन्त्रः** - सिंहः प्रसेनमवधीत् सिंहो जाम्बवता हतः। सुकुमारक मा रोदीस्तव ह्येष स्यमन्तकः।। **प्रार्थनामन्त्रश्च** - दधिशंखतुषाराभं क्षीरोदार्णवसंभवम्। नमामि शशिनं भक्त्या शम्भोर्मुकुटभूषणम्।। एकादश्यां विष्णोः **पार्श्वपरिवर्तनमन्त्रः** - प्राप्ते भाद्रपदे मासि एकादश्यां सितेऽहनि। कटिदानं भवेद्विष्णोर्महापूजा प्रवर्त्तते।। वासुदेव जगन्नाथ प्राप्तेयं द्वादशी तव। पार्श्वं संपरिवर्तस्व सुखं स्वपिहि माधव।। त्वयि सुप्ते जगन्नाथ जगत्सुप्तं भवेदिदम्। विबुद्धे त्वयि बुध्येत जगदेतच्चराचरम्।। देवदेव जगन्नाथ योगिगम्य निरंजन। कटिदानं कुरुष्वाद्य मासि भाद्रपदे शुभे।। **अनन्तधारणमन्त्रः** - अनन्तसंसार महासमुद्रे मग्नं समभ्युद्धर वासुदेव । अनन्तरूपे विनियोजयस्व ह्यनन्तरूपाय नमो नमस्ते।। **अगस्त्यार्घ्यदानमन्त्रः** - कुम्भयोनिसमुत्पन्न मुनीनां मुनिसत्तम। उदयन्ते लंकाद्वारे अर्घोऽयं प्रतिगृह्यताम्।। शंखं पुष्पं फलं तोयं रत्नानि विविधानि च। उदयन्ते लंकाद्वारे अर्घोऽयं प्रतिगृह्यताम्।। काशपुष्पप्रतीकाश वह्निमारुतसंभव। उदयन्ते लंकाद्वारे अर्घोऽयं प्रतिगृह्यताम्।। **प्रार्थनामन्त्रः**-आतापी भक्षितो येन वातापी च महाबलः। समुद्रः शोषितो येन स मेऽगस्त्यः प्रसीदतु।।

**ग्रहस्थितिः** - मार्गी पश्चिमास्तः कुजः, वक्री पश्चिमास्तो बुधः ३ तः पूर्वोदितः ७ तो मार्गी, मार्गिणौ पूर्वोदितौ गुरुशुक्रौ, वक्री पूर्वोदितः शनिः ५ तो मार्गी।

**वातावरणम्** - पक्षादिभागे वातवृष्टिमेघच्छायादयस्तदुत्तरार्द्धभागे खण्डवृष्टितापमेघचारादयः।

# आश्विनकृष्णपक्षः

शकाब्दः१९३९, संवत् २०७४, सन् १४२५ साल, दि.७।९।२०१७ ई. तः दि.२०।०९।२०१७ ई.या. उत्तरे कालः।
मार्गी पूर्वोदितो गुरुः, मार्गी पूर्वोदितः शुक्रः, अशुद्धः, १२ तः शुद्धः, वर्षर्तुः, १२ तः शरदृतुः, सौम्यगोलः, याम्यायनम्।

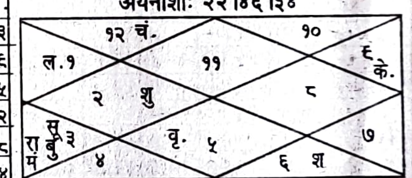
| तिथयः दिनानि | तिथयः द. प. | घं. मि. | नक्षत्राणि द. प. | घं. मि. | योगाः द. प. | करणानि द. प. | चन्द्रराशयः द. प. | घं. मि. | स्पष्टसूर्यः राश्यादिः | दिनमान द. प. | सूर्योदयः घं. मि. | सूर्यास्तः घं. मि. | दिनांकाः रा. | सौ. | अं. | आश्विनकृष्णपक्षः |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ वृ. | १५ ।२२ | दि. ११ ।५६ | पूभा. २१ ।०३ | दि. ०२ ।१२ | शू. ४७ ।५४ | कौ.१५ ।२२ | कुं. ०५ ।५२ | दि.०८ ।०८ | ४ ।२० ।३५ ।५३ | ३१ ।०६ | ५ ।४७ | ६ ।१३ | १६ | २२ | ७ | पश्चिमयात्रा कुम्भस्थे चन्द्रे ततः पश्चिमोत्तरयात्रा पूर्वभाद्रे। |
| २ शु. | १३ ।१७ | दि. ११ ।०७ | उभा. २० ।३६ | दि. ०२ ।०२ | गं. ४३ ।०५ | ग. १३ ।१७ | मीन | अहोरात्रं | ४ ।२१ ।३४ ।०७ | ३१ ।०२ | ५ ।४८ | ६ ।१२ | १७ | २३ | ८ | उत्तरयात्रा रेवत्यां, भ. ४१ ।४३ उपरि। |
| ३ श. | १० ।१० | दि. ०९ ।५२ | रे. १९ ।०५ | दि. ०१ ।२६ | वृ. ३७ ।२८ | वि. १० ।१० | मी. १९ ।०५ | दि.०१ ।२६ | ४ ।२२ ।३२ ।२१ | ३० ।५८ | ५ ।४८ | ६ ।१२ | १८ | २४ | ९ | **एकदन्त** ४ व्रतं, पश्चिमोत्तरयात्रा रेवत्यां ततः पूर्वां विना यात्रा, **पञ्चकान्तो** दिवा घं. १ मि. २६ उ., गं. ०७ ।०५ उ. २२ ।०५ या., भ. १० ।१० यावत्। |
| ४ र. | ०६ ।०५ | दि. ०८ ।१५ | अ. १६ ।४७ | दि. १२ ।३२ | ध्रु. ३१ ।१० | बा. ०६ ।०५ | मेष | अहोरात्रं | ४ ।२३ ।३० ।३५ | ३० ।५४ | ५ ।४९ | ६ ।११ | १९ | २५ | १० | **रविव्रतं**, पश्चिमां विना यात्रा पञ्चम्यामश्विन्याम्। |
| ५ चं. | ०१ ।१२ | दि. ०६ ।१९ | भ. १३ ।३७ | दि. ११ ।१७ | व्या. २४ ।१६ | तै. ०१ ।१२ | मे. २७ ।४२ | दि.०४ ।५५ | ४ ।२४ ।२८ ।४८ | ३० ।५० | ५ ।५० | ६ ।१० | २० | २६ | ११ | **षष्ठीमानं** ५४ ।३१, पूर्वोदितः कुजः ०४ ।१८, भ. ५५ ।४३ उ., **इन्द्रविसर्जनम्।** |
| ७ मं. | ४९ ।५१ | रा. ०१ ।४७ | कृ. ०९ ।५६ | दि. ०९ ।४९ | ह. १६ ।५७ | वि. २२ ।४७ | वृष | अहोरात्रं | ४ ।२५ ।२७ ।१७ | ३० ।४६ | ५ ।५१ | ६ ।०९ | २१ | २७ | १२ | स्त्रीणां **विशिष्टभोजनं** रात्रौ घं. १ मि. ४७ या., भ. २२ ।४७ **या.**, पूर्वदक्षिणयात्रा रोहिण्याम्। |
| ८ बु. | ४३ ।४७ | रा. ११ ।२३ | रो. ०५ ।५३ | दि. ०८ ।१३ | व. ०९ ।१८ | बा. १६ ।४९ | वृ. ३३ ।४६ | रा.०७ ।२२ | ४ ।२६ ।२५ ।४६ | ३० ।४२ | ५ ।५२ | ६ ।०८ | २२ | २८ | १३ | **जीमूतवाहन (जितिया)** व्रतं, **महालक्ष्मीव्रतं, उत्तरफल्गुन्यां रविः** ५६ ।५७ पुंस्त्रीसूसूयोगः सिंहलग्नं मण्डूकवाहनमग्निनाडीपतिः कुजस्तेन वातातपखण्डवृष्टियोगः। |
| ९ वृ. | ३७ ।३९ | रा. ०८ ।५६ | मृ. ०१ ।३९ | दि. ०६ ।३२ | सि. ०१ ।३५ | तै. १० ।४३ | मिथुन | अहोरात्रं | ४ ।२७ ।२४ ।१५ | ३० ।३८ | ५ ।५२ | ६ ।०८ | २३ | २९ | १४ | महालक्ष्मीजीमूतवाहनव्रतपारणं, **मातृनवमी**, अन्वष्टकाश्राद्धं, **आर्द्रामानं** ५५ ।५२, व्यतीपातमानं ५२ ।१६, **मघायां सिंहे शुक्रः** १२ ।०२, द.ति. ३७ ।३९ उपरि। |
| १० शु. | ३१ ।४३ | सं. ०६ ।३४ | पुन. ५३ ।३७ | रा. ०३ ।२० | व. ४६ ।१७ | व. ०४ ।४१ | मि. ३९ ।३६ | रा.०९ ।४३ | ४ ।२८ ।२२ ।४४ | ३० ।३४ | ५ ।५३ | ६ ।०७ | २४ | ३० | १५ | द.ति. ३१ ।४३ या., भ. ०४ ।४१ उ. ३१ ।४३ या., दक्षिणयात्रैकादश्यां **मिथुनस्थे** चन्द्रे तत उत्तरयात्रा पुनर्वसौ ततः पश्चिमां विना यात्रा। |
| ११ श. | २६ ।१० | दि. ०४ ।२२ | पु. ५० ।११ | रा. ०१ ।५८ | प. ३६ ।०५ | ब. ०३ ।५६ | कर्क | अहोरात्रं | ४ ।२९ ।२१ ।१३ | ३० ।३० | ५ ।५४ | ६ ।०६ | २५ | ३१ | १६ | **इन्दिरा**११व्रतं सर्वेषां, मासान्तः। ← सूर्यास्तं यावत्, **पुण्याहः**, गं. ३६ ।२१ उ. ५१ ।२१ यावत्। |
| १२ र. | २१ ।१० | दि. ०२ ।२३ | श्ले. ४७ ।२१ | रा. १२ ।५१ | शि. ३२ ।२४ | तै. २१ ।१० | क. ४७ ।२१ | रा.१२ ।५१ | ५ ।०० ।१९ ।४२ | ३० ।२७ | ५ ।५५ | ६ ।०५ | २६ | १ | १७ | गुडेन पारणं, प्रदोष १३ व्रतं, **शुद्धारंभः** २५ ।०० उ., **रविव्रतं, विश्वकर्मार्चा, कन्यायां रविः** २५ ।०० मु.१५ फलं महार्घं, षडशीतिसंक्रान्तिपुण्यकालो घं. ३मि.५५उ. ← |
| १३ चं. | १६ ।५८ | दि. १२ ।४२ | म. ४५ ।२५ | रा. १२ ।०५ | सि. २६ ।२३ | व. १६ ।५८ | सिंह | अहोरात्रं | ५ ।०१ ।१८ ।१० | ३० ।२४ | ५ ।५५ | ६ ।०५ | २७ | २ | १८ | मासादिः, **प्रदोष** १४ व्रतं, शस्त्रादिहतश्राद्धं, भ. १६ ।५८ उ. ४५ ।१९ या., (१३–१४एको.)। |
| १४ मं. | १३ ।४० | दि. ११ ।२४ | पूफ. ४४ ।२४ | रा. ११ ।४२ | सा. २१ ।०६ | श. १३ ।४० | सिं. ५९ ।२६ | रा.०५ ।४२ | ५ ।०२ ।१६ ।५५ | ३० ।२० | ५ ।५६ | ६ ।०४ | २८ | ३ | १९ | पूर्वयात्रा चतुर्दश्यां, (३० एको.)। **पञ्चग्रहयोगफलम्**–एकराशौ **यदा** यान्ति चत्वारः पञ्च वा ग्रहाः। प्लावयन्ति महीं कृत्स्नां रुधिरेण जलेन वा।। |
| ३० बु. | ११ ।२६ | दि. १० ।३१ | उफ. ४४ ।३२ | रा. ११ ।४६ | शु. १६ ।४० | ना. ११ ।२६ | कन्या | अहोरात्रं | ५ ।०३ ।१५ ।४० | ३० ।१६ | ५ ।५७ | ६ ।०३ | २९ | ४ | २० | **महालया ३०; पितृपक्षान्तः; आश्विनी ३० स्नानदानादिः।** |

## मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च — दैनिकलग्नसारिणीचक्रम्

| ति.दि. | मंगलः | बुधः | गुरुः | शुक्रः | शनिः | केतुः | मिश्रमानं | मे.अं. | वृ.अं. | मि.अं. | क.अं. | सिं.अं. | कं.अं. | तु.अं. | वृ.अं. | ध.अं. | म.अं. | कुं.अं. | मी.अं. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ वृ. | ४ ।०६ ।४२ ।४५ | ४ ।०५ ।५३ ।३५ | ६ ।०० ।१९ ।२६ | ३ ।२२ ।१२ ।५० | ७ ।२४ ।४० ।२३ | १० ।०१ ।०७ ।१९ | ४५ ।३३ | २१ ।५० | २३ ।४६ | १ ।५९ | ४ ।१७ | ६ ।३३ | ८ ।४८ | ११ ।०५ | १३ ।२२ | १५ ।२७ | १७ ।१३ | १८ ।४४ | २० ।१३ |
| २ शु. | ४ ।०७ ।२० ।४७ | ४ ।०६ ।५३ ।१७ | ६ ।०० ।३१ ।२६ | ३ ।२३ ।२५ ।१३ | ७ ।२४ ।४१ ।५९ | १० ।०१ ।०४ ।०८ | ४५ ।३१ | २१ ।४६ | २३ ।४२ | १ ।५५ | ४ ।१३ | ६ ।२९ | ८ ।४४ | ११ ।०१ | १३ ।१८ | १५ ।२३ | १७ ।०९ | १८ ।४० | २० ।०९ |
| ३ श. | ४ ।०७ ।५८ ।४९ | ४ ।०७ ।५२ ।५९ | ६ ।०० ।४३ ।२६ | ३ ।२४ ।३७ ।३६ | ७ ।२४ ।४३ ।३५ | १० ।०१ ।०० ।५७ | ४५ ।२९ | २१ ।४२ | २३ ।३८ | १ ।५१ | ४ ।०९ | ६ ।२५ | ८ ।४० | १० ।५७ | १३ ।१४ | १५ ।१९ | १७ ।०५ | १८ ।३६ | २० ।०५ |
| ४ र. | ४ ।०८ ।३६ ।५१ | ४ ।०८ ।५२ ।४१ | ६ ।०० ।५५ ।२६ | ३ ।२५ ।४९ ।५९ | ७ ।२४ ।४५ ।११ | १० ।०० ।५७ ।४७ | ४५ ।२७ | २१ ।३९ | २३ ।३५ | १ ।४८ | ४ ।०६ | ६ ।२२ | ८ ।३७ | १० ।५४ | १३ ।११ | १५ ।१६ | १७ ।०२ | १८ ।३३ | २० ।०२ |
| ५ चं. | ४ ।०९ ।१४ ।५३ | ४ ।०९ ।५२ ।२३ | ६ ।०१ ।०७ ।२५ | ३ ।२७ ।०२ ।२१ | ७ ।२४ ।४६ ।४६ | १० ।०० ।५४ ।३७ | ४५ ।२५ | २१ ।३५ | २३ ।३१ | १ ।४४ | ४ ।०२ | ६ ।१८ | ८ ।३३ | १० ।५० | १३ ।०७ | १५ ।१२ | १६ ।५८ | १८ ।२९ | १९ ।५८ |
| ७ मं. | ४ ।०९ ।५२ ।४८ | ४ ।११ ।१३ ।१९ | ६ ।०१ ।१९ ।३७ | ३ ।२८ ।१५ ।०१ | ७ ।२४ ।४९ ।०६ | १० ।०० ।५१ ।२६ | ४५ ।२३ | २१ ।३१ | २३ ।२७ | १ ।४० | ३ ।५८ | ६ ।१४ | ८ ।२९ | १० ।४६ | १३ ।०३ | १५ ।०८ | १६ ।५४ | १८ ।२५ | १९ ।५४ |
| ८ बु. | ४ ।१० ।३० ।४३ | ४ ।१२ ।३४ ।१५ | ६ ।०१ ।३१ ।४९ | ३ ।२९ ।२७ ।४१ | ७ ।२४ ।५१ ।२६ | १० ।०० ।४८ ।१५ | ४५ ।२१ | २१ ।२८ | २३ ।२४ | १ ।३७ | ३ ।५५ | ६ ।११ | ८ ।२६ | १० ।४३ | १३ ।०० | १५ ।०५ | १६ ।५१ | १८ ।२२ | १९ ।५१ |
| ९ वृ. | ४ ।११ ।०८ ।३७ | ४ ।१३ ।५५ ।११ | ६ ।०१ ।४४ ।०१ | ४ ।०० ।४० ।२१ | ७ ।२४ ।५३ ।४५ | १० ।०० ।४५ ।०४ | ४५ ।१९ | २१ ।२४ | २३ ।२० | १ ।३३ | ३ ।५१ | ६ ।०७ | ८ ।२२ | १० ।३९ | १२ ।५६ | १५ ।०१ | १६ ।४७ | १८ ।१८ | १९ ।४७ |
| १० शु. | ४ ।११ ।४६ ।३१ | ४ ।१५ ।१६ ।०७ | ६ ।०१ ।५६ ।१३ | ४ ।०१ ।५३ ।०१ | ७ ।२४ ।५६ ।०४ | १० ।०० ।४१ ।५३ | ४५ ।१७ | २१ ।२१ | २३ ।१७ | १ ।३० | ३ ।४८ | ६ ।०४ | ८ ।१९ | १० ।३६ | १२ ।५३ | १४ ।५८ | १६ ।४४ | १८ ।१५ | १९ ।४४ |
| ११ श. | ४ ।१२ ।२४ ।२५ | ४ ।१६ ।३७ ।०३ | ६ ।०२ ।०८ ।२४ | ४ ।०३ ।०५ ।४० | ७ ।२४ ।५८ ।२३ | १० ।०० ।३८ ।४२ | ४५ ।१५ | २१ ।१७ | २३ ।१३ | १ ।२६ | ३ ।४४ | ६ ।०० | ८ ।१५ | १० ।३२ | १२ ।४९ | १४ ।५४ | १६ ।४० | १८ ।११ | १९ ।४० |
| १२ र. | ४ ।१३ ।०२ ।१९ | ४ ।१७ ।५७ ।५९ | ६ ।०२ ।२० ।३५ | ४ ।०४ ।१८ ।१९ | ७ ।२५ ।०० ।४२ | १० ।०० ।३५ ।३२ | ४५ ।१३ | २१ ।१४ | २३ ।१० | १ ।२३ | ३ ।४१ | ५ ।५७ | ८ ।१२ | १० ।२९ | १२ ।४६ | १४ ।५१ | १६ ।३७ | १८ ।०८ | १९ ।३७ |
| १३ चं. | ४ ।१३ ।४० ।१३ | ४ ।१९ ।१८ ।५३ | ६ ।०२ ।३२ ।४६ | ४ ।०५ ।३० ।५८ | ७ ।२५ ।०३ ।०१ | १० ।०० ।३२ ।२२ | ४५ ।१२ | २१ ।१० | २३ ।०६ | १ ।१९ | ३ ।३७ | ५ ।५३ | ८ ।०८ | १० ।२५ | १२ ।४२ | १४ ।४७ | १६ ।३३ | १८ ।०४ | १९ ।३३ |
| १४ मं. | ४ ।१४ ।१८ ।०२ | ४ ।२० ।५२ ।३७ | ६ ।०२ ।४५ ।२३ | ४ ।०६ ।४३ ।५८ | ७ ।२५ ।०५ ।५५ | १० ।०० ।२९ ।११ | ४५ ।१० | २१ ।०६ | २३ ।०२ | १ ।१५ | ३ ।३३ | ५ ।४९ | ८ ।०४ | १० ।२१ | १२ ।३८ | १४ ।४३ | १६ ।२९ | १८ ।०० | १९ ।२९ |
| ३० बु. | ४ ।१४ ।५५ ।५१ | ४ ।२२ ।२६ ।२१ | ६ ।०२ ।५८ ।०० | ४ ।०७ ।५६ ।५७ | ७ ।२५ ।०८ ।४९ | १० ।०० ।२६ ।०० | ४५ ।०८ | २१ ।०३ | २२ ।५९ | १ ।१२ | ३ ।३० | ५ ।४६ | ८ ।०१ | १० ।१८ | १२ ।३५ | १४ ।४० | १६ ।२६ | १७ ।५७ | १९ ।२६ |

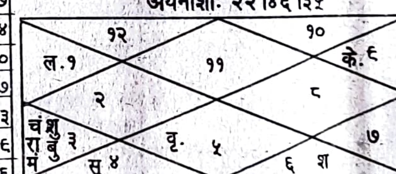
५ चन्द्रे वल्ली ८ ।३९ ।१९ ।०३

अयनांशाः २२ ।४६ ।३४




१३ चन्द्रे वल्ली ८ ।३९ ।१९ ।१०

अयनांशाः २२ ।४६ ।३५




**विविधविषयाः**–आश्विनकृष्णपक्षे प्रतिदिनं श्राद्धं कुर्यादिति प्रथमकल्पः। पंचमीमारभ्यामां यावदिति द्वितीयकल्पः। अष्टमीमारभ्यामां यावदिति तृतीयकल्पः। दशमीमारभ्यामां यावदिति **चतुर्थः** कल्पस्तदभावे एकस्मिन्नपि दिने श्राद्धं कर्त्तव्यमेव। **हेमाद्रौ**–आषाढ्याः **पंचमे** पक्षे कन्यासंस्थे दिवाकरे। यो वै श्राद्धं नरः कुर्यादेकस्मिन्नपि वासरे।। तस्य संवत्सरं यावत् सन्तृप्ताः पितरो ध्रुवम्। **श्राद्धकालः**–पूर्वाह्णे मातृकं श्राद्धमपराह्णे तु पैतृकम्। **एकोद्दिष्टन्तु** मध्याह्ने प्रातर्वृद्धिनिमित्तकम्।। हस्तार्के **खञ्जनदर्शनमन्त्रः** – नीलग्रीवस्वरूपेण सर्वकामफलप्रद। पृथिव्यामवतीर्णोऽसि खञ्जरीट नमोऽस्तु ते।। तद्दर्शनमाकाशपूर्वपश्चिमोत्तरवायव्यादिक्षु शुभमन्यदिक्ष्वशुभम्। **पुनश्च** – अब्जेषु गोषु **गजवाजिमहोरगेषु** राज्यप्रदः कुशलदः शुचिशाड्वलेषु। भस्मास्थिकेशतुषलोमनखेषु दृष्टो **दुःखं** ददाति बहुशः खलु खञ्जरीटः।।

**ग्रहस्थितिः**– मार्गी पश्चिमास्तः कुजः ५ तः पूर्वोदितः, मार्गिणः पूर्वोदिताः बुधगुरुशुक्रशनयः।

**वातावरणम** – पक्षादिभागे खण्डवृष्टितापमेघच्छायादयस्तदन्तभागे वातवृष्टियोगः।

# आश्विनशुक्लपक्षः

शकाब्दः १९३९, सवत् २०७४, सन् १४२५ साल, दि. २१।०९।२०१७ ई. तः दि. ०५।१०।२०१७ ई. या., उत्तरे काल।
मार्गी पूर्वोदितो गुरुः, मार्गी पूर्वोदितः शुक्रः, शुद्धः, शरदृतुः, सौम्यगोलः, याम्यायनम्।

| तिथयः दिनानि | तिथयः द. प. | घं. मि. | नक्षत्राणि द. प. | घं. मि. | योगाः द. प. | करणानि द. प. | चन्द्रराशयः द. प. | घं. मि. | स्पष्टसूर्यः राश्यादिः | दिनमान द. प. | सूर्योदयः घं. मि. | सूर्यास्तः घं. मि. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ बृ. | १०।२४ | दि.१०।०८ | ह.४५।५३ | रा.१२।१९ | शु.१३।११ | ब.१०।२४ | कन्या | अहो. | ५।०४।१४।२५ | ३०।१२ | ५।५८ | ६।०२ |
| २ शु. | १०।४१ | दि.१०।१४ | चि.४८।३२ | रा.०१।२३ | ब्र.१०।४४ | कौ.१०।४१ | क.१७।१३ | दि.१२।५१ | ५।०५।१३।०६ | ३०।०८ | ५।५८ | ६।०२ |
| ३ श. | १२।२० | दि.१०।५५ | स्वा.५२।२२ | रा.०२।५६ | ऐ.०९।२० | ग.१२।२० | तुला | अहो. | ५।०६।११।५३ | ३०।०४ | ५।५९ | ६।०१ |
| ४ र. | १५।०४ | दि.१२।०२ | वि.५७।१८ | रा.०४।५५ | वै.०८।४५ | वि.१५।०४ | तु.४१।०४ | रा.१०।२६ | ५।०७।१०।३७ | ३०।०० | ६।०० | ६।०० |
| ५ चं. | १८।५७ | दि.०१।३६ | अनु.६०।०० | अहो. | वि.०९।०५ | बा.१८।५७ | वृश्चिक | अहो. | ५।०८।०९।२१ | २९।५६ | ६।०१ | ५।५९ |
| ६ मं. | २३।३६ | दि.०३।२८ | अनु.०३।०५ | दि.०७।१६ | प्री.१०।०२ | तै.२३।३६ | वृश्चिक | अहो. | ५।०९।०८।२२ | २९।५२ | ६।०२ | ५।५८ |
| ७ बु. | २८।४३ | सं.०५।३१ | ज्ये.०९।३० | दि.०९।५० | आ.११।२५ | व.२८।४३ | वृ.०९।३० | दि.०९।५० | ५।१०।०७।२२ | २९।४८ | ६।०२ | ५।५८ |
| ८ बृ. | ३३।५५ | रा.०७।३७ | मू.१६।०२ | दि.१२।२८ | सौ.१२।५५ | वि.०१।१९ | धनु | अहो. | ५।११।०६।२२ | २९।४४ | ६।०३ | ५।५७ |
| ९ शु. | ३८।४० | रा.०९।३२ | पूषा.२२।१८ | दि.०२।५९ | शो.१४।१३ | बा.०६।१७ | ध.३८।४२ | रा.०९।३३ | ५।१२।०५।२२ | २९।४० | ६।०४ | ५।५६ |
| १० श. | ४२।४३ | रा.११।१० | उषा.२७।५५ | सं.०५।१५ | अगं.१५।०४ | तै.१०।४१ | मकर | अहो. | ५।१३।०४।२२ | २९।३६ | ६।०५ | ५।५५ |
| ११ र. | ४५।३९ | रा.१२।२२ | श्र.३२।३६ | रा.०७।०८ | सु.१५।१२ | व.१४।११ | मकर | अहो. | ५।१४।०३।२२ | २९।३२ | ६।०६ | ५।५४ |
| १२ च. | ४७।३४ | रा.०१।०८ | ध.३६।१३ | रा.०८।३५ | धृ.१४।२८ | ब.१६।३६ | म.०४।२५ | दि.०७।५२ | ५।१५।०२।२२ | २९।२८ | ६।०६ | ५।५४ |
| १३ मं. | ४८।०५ | रा.०१।२१ | शत.३८।३३ | रा.०९।३२ | शू.१२।४७ | कौ.१७।४९ | कुम्भ | अहो. | ५।१६।०१।३८ | २९।२४ | ६।०७ | ५।५३ |
| १४ बु. | ४७।१९ | रा.०१।०४ | पूभा.३९।३३ | रा.०९।५७ | गं.१०।०५ | ग.१७।४२ | कुं.२४।१८ | दि.०३।५१ | ५।१७।००।५४ | २९।२० | ६।०८ | ५।५२ |
| १५ बृ. | ४५।२० | रा.१२।१७ | उभा.३९।२४ | रा.०९।५५ | वृ.०६।२२ | वि.१६।१९ | मीन | अहो. | ५।१८।००।१० | २९।१६ | ६।०९ | ५।५१ |

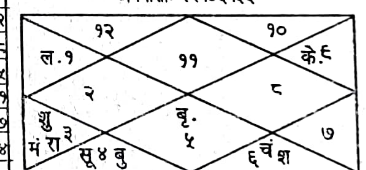
| रा. | सौ. | अं. | |
|---|---|---|---|
| ३० | ५ | २१ | चन्द्रदर्शनं मु. ३० सौम्यशृंगफलं साम्यं, शारदीयनवरात्रारंभः, **कलशस्थापनं**, नवरात्रव्रतारम्भः, श्रीदुर्गापूजनोत्सवः, दोलारुढाया दुर्गाऽगमनफलं महामारीकरं, ← |
| ३१ | ६ | २२ | रेमन्तपूजनं, नवरात्रमध्ये प्रतिदिनं कुमारीपूजनं (भोजनं) तदभावेऽष्टम्यामवश्यमेव कार्यं, पूर्वदक्षिणयात्रा तृतीयायां **कन्यास्थे चन्द्रे** ततो दक्षिणयात्रा। |
| १ | ७ | २३ | गणेश ४ व्रतं, पश्चिमदक्षिणयात्रा स्वात्यां, भ. ४३।४२ उ., (४ एको.)। ←पूर्वयात्रा द्वितीयायाम्। |
| २ | ८ | २४ | उत्तरयात्रानुराधायां, भ. १५।०४ या., (५ एको.)। |
| ३ | ९ | २५ | पश्चिमोत्तरयात्रा, **कन्यायां बुधः** ३५।२४। ◆ पूजनञ्च, **महारात्रिर्निशापूजा** (रात्रिजागरणं), पश्चिमयात्रा **ज्येष्ठायां ततः पूर्वयात्रा** सप्तम्यां, द.ति. २८।४३ उ., ♍ |
| ४ | १० | २६ | गजपूजा **बिल्वाभिमन्त्रणञ्च,** पश्चिमयात्रा सप्तम्याम्, (६ एको.)। ♍ गं. ०३।३० उ.१८।३० या., **म. २८।४३ उपरि।** |
| ५ | ११ | २७ | हस्ते रविः ३७।२५ पुंस्त्रीसूसूयोगः वृषलग्नं महिषवाहनमग्निनाडीपतिः कुजस्तेन वाताऽतपखण्डवृष्टियोगः, पूर्वास्तो **बुधः ३६।०४, पत्रिकाप्रवेशः,** सरस्वत्या आवाहनं ◆ |
| ६ | १२ | २८ | महाष्टमीव्रतं, दीक्षाग्रहणं, **सन्धिपूजा, मकरे केतुः कर्के राहुश्च** ५५।१४, द.ति. ३३।५५ या., म. ०१।१६ **यावत्।** |
| ७ | १३ | २९ | महानवमीव्रतं, **त्रिशूलिनीपूजा,** प्रभूततरबलिदानं, **दक्षसावर्णिमन्वादिः,** पूर्वोत्तरयात्रा पूर्वाषाढे। |
| ८ | १४ | ३० | अपराजितापूजा, **विजया१०,** देवीविसर्जनं, **जयन्तीधारणं,** नीलकण्ठादिदर्शनं, **नवरात्रव्रतपारणं, यात्रा,** चरणायुधयानफलं **विकल्पदं,** पूर्वां विना यात्रैकादश्याम्। |
| ९ | १५ | १ | अक्टूबर१०, **पाशांकुशा** ११ व्रतं **सर्वेषां, पञ्चकारंभो** रात्री घं. ७ मि. ८ उ., पूर्वयात्रा द्वादश्यां, भ. १४।११ **उ. ४५।३९** यावत्। |
| १० | १६ | २ | गुडेन पारणं, पद्मनाभ१२, **गान्धीशास्त्रीजयन्ती।** |
| ११ | १७ | ३ | प्रदोष १३ व्रतं, पश्चिमयात्रा पूर्वभाद्रे। |
| १२ | १८ | ४ | प्रदोष १४ व्रतं, भ. ४७।१९ उपरि। |
| १३ | १९ | ५ | आश्विनी १५ स्नानदानादिः, कौमुदी (कोजागरा) महोत्सवः, प्रदोषे घं. ७ मि. २७ यावद्रात्रौ लक्ष्मीपूजनं, दीक्षाग्रहणं, पश्चिमोत्तरयात्रा रेवत्यां, भ.१६।१९ यावत्। |

## मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहाः दिनक्षयग्रहान्तरं गतिश्च — दैनिकलग्नसारिणीचक्रम्

| ति.दि. | मंगलः | बुधः | गुरुः | शुक्रः | शनिः | केतुः | मिश्रमान | मे.अं. | वृ.अं. | मि.अं. | क.अं. | सिं.अं. | कं.अं. | तु.अं. | वृ.अं. | ध.अं. | म.अं. | कुं.अं. | मी.अं. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ बृ. | ४।१५।३३।४० | ४।२४।००।०५ | ६।०३।१०।३७ | ४।०९।०९।५६ | ७।२५।११।४३ | १०।००।२२।४९ | ४५।०६ | २०।५९ | २२।५५ | १।०८ | ३।२६ | ५।४२ | ७।५७ | १०।१४ | १२।३१ | १४।३६ | १६।२२ | १७।५३ | १९।२२ |
| २ शु. | ४।१६।११।२८ | ४।२५।३३।४७ | ६।०३।२३।१३ | ४।१०।२२।५५ | ७।२५।१४।३७ | १०।००।१९।३८ | ४५।०४ | २०।५५ | २२।५१ | १।०४ | ३।२२ | ५।३८ | ७।५३ | १०।१० | १२।२७ | १४।३२ | १६।१८ | १७।४९ | १९।१८ |
| ३ श. | ४।१६।४९।१६ | ४।२७।०७।३० | ६।०३।३५।४९ | ४।११।३५।५४ | ७।२५।१७।३१ | १०।००।१६।२७ | ४५।०२ | २०।५२ | २२।४८ | १।०१ | ३।१९ | ५।३५ | ७।५० | १०।०७ | १२।२४ | १४।२९ | १६।१५ | १७।४६ | १९।१५ |
| ४ र. | ४।१७।२७।०४ | ४।२८।४१।१३ | ६।०३।४८।२५ | ४।१२।४८।५३ | ७।२५।२०।२५ | १०।००।१३।१६ | ४५।०० | २०।४८ | २२।४४ | ०।५७ | ३।१५ | ५।३१ | ७।४६ | १०।०३ | १२।२० | १४।२५ | १६।११ | १७।४२ | १९।११ |
| ५ चं. | ४।१८।०४।५२ | ५।००।१४।५६ | ६।०४।०१।०१ | ४।१४।०१।५२ | ७।२५।२३।१९ | १०।००।१०।०६ | ४४।५८ | २०।४४ | २२।४० | ०।५३ | ३।११ | ५।२७ | ७।४२ | ९।५९ | १२।१६ | १४।२१ | १६।०७ | १७।३८ | १९।०७ |
| ६ मं. | ४।१८।४२।३४ | ५।०१।५६।०३ | ६।०४।१३।५४ | ४।१५।१५।२२ | ७।२५।२६।५५ | १०।००।०६।५५ | ४४।५६ | २०।४१ | २२।३७ | ०।५० | ३।०८ | ५।२४ | ७।३९ | ९।५६ | १२।१३ | १४।१८ | १६।०४ | १७।३५ | १९।०४ |
| ७ बु. | ४।१९।२०।१६ | ५।०३।३७।०९ | ६।०४।२६।४७ | ४।१६।२८।५२ | ७।२५।३०।३१ | १०।००।०३।४४ | ४४।५४ | २०।३७ | २२।३३ | ०।४६ | ३।०४ | ५।२० | ७।३५ | ९।५२ | १२।०९ | १४।१४ | १६।०० | १७।३१ | १९।०० |
| ८ बृ. | ४।१९।५७।५७ | ५।०५।१८।१५ | ६।०४।३९।४० | ४।१७।४२।२२ | ७।२५।३४।०७ | १०।००।००।३३ | ४४।५२ | २०।३३ | २२।२९ | ०।४२ | ३।०० | ५।१६ | ७।३१ | ९।४८ | १२।०५ | १४।१० | १५।५६ | १७।२७ | १८।५६ |
| ९ शु. | ४।२०।३५।३८ | ५।०६।५९।२१ | ६।०४।५२।३३ | ४।१८।५५।५२ | ७।२५।३७।४३ | ९।२९।५७।२२ | ४४।५० | २०।३० | २२।२६ | ०।३९ | २।५७ | ५।१३ | ७।२८ | ९।४५ | १२।०२ | १४।०७ | १५।५३ | १७।२४ | १८।५३ |
| १० श. | ४।२१।१३।१९ | ५।०८।४०।२७ | ६।०५।०५।२६ | ४।२०।०९।२१ | ७।२५।४१।१९ | ९।२९।५४।११ | ४४।४८ | २०।२६ | २२।२२ | ०।३५ | २।५३ | ५।०९ | ७।२४ | ९।४१ | ११।५८ | १४।०३ | १५।४९ | १७।२० | १८।४९ |
| ११ र. | ४।२१।५१।०० | ५।१०।२१।३३ | ६।०५।१८।१९ | ४।२१।२२।५० | ७।२५।४४।५५ | ९।२९।५१।०१ | ४४।४६ | २०।२२ | २२।१८ | ०।३१ | २।४९ | ५।०५ | ७।२० | ९।३७ | ११।५४ | १३।५९ | १५।४५ | १७।१६ | १८।४५ |
| १२ चं. | ४।२२।२८।४१ | ५।१२।०२।३९ | ६।०५।३१।११ | ४।२२।३६।१९ | ७।२५।४८।३० | ९।२९।४७।५१ | ४४।४४ | २०।१९ | २२।१५ | ०।२८ | २।४६ | ५।०२ | ७।१७ | ९।३४ | ११।५१ | १३।५६ | १५।४२ | १७।१३ | १८।४२ |
| १३ मं. | ४।२३।०६।१९ | ५।१३।४७।२५ | ६।०५।४४।०९ | ४।२३।५०।०१ | ७।२५।५२।४० | ९।२९।४४।४० | ४४।४२ | २०।१५ | २२।११ | ०।२४ | २।४२ | ४।५८ | ७।१३ | ९।३० | ११।४७ | १३।५२ | १५।३८ | १७।०९ | १८।३८ |
| १४ बु. | ४।२३।४३।५७ | ५।१५।३२।११ | ६।०५।५७।०७ | ४।२५।०३।४३ | ७।२५।५६।५० | ९।२९।४१।२९ | ४४।४० | २०।११ | २२।०७ | ०।२० | २।३८ | ४।५४ | ७।०९ | ९।२६ | ११।४३ | १३।४८ | १५।३४ | १७।०५ | १८।३४ |
| १५ बृ. | ४।२४।२१।३५ | ५।१७।१९।५७ | ६।०६।१०।०५ | ४।२६।१७।२५ | ७।२६।०१।०० | ९।२९।३८।१८ | ४४।३८ | २०।०७ | २२।०३ | ०।१६ | २।३४ | ४।५० | ७।०५ | ९।२२ | ११।३९ | १३।४४ | १५।३० | १७।०१ | १८।३० |

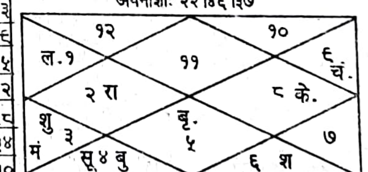
५ चन्द्रे वल्ली ८।३६।१९।१७

अयनांशाः २२।४६।३६




१२ चन्द्रे वल्ली ८।३६।१९।२४

अयनांशाः २२।४६।३७




**विविधविषयाः** – प्रतिपदि कलशस्थापनं ततो देवीपूजनपूर्वकनवदिनं यावच्छप्तशतीस्तोत्रवेदपुराणादि-धर्मग्रन्थपाठः मन्त्रजपश्च कर्त्तव्यः। दुर्गाऽगमनयानविचारः – शशिसूर्ये गजारूढा शनिभौमे तुरंगमे। गुरौ शुक्रे च दोलायां बुधे नौका प्रकीर्त्तिता।। **तत्फलं – गजे च जलदा** देवी क्षत्रभंगस्तुरंगमे। नौकायां सर्वसिद्धिः स्याद्दोलायां मरणं ध्रुवम्।। **विजयदशम्यां देव्या गमनयानफलं** – शशिसूर्यदिने यदि सा विजया महिषागमने रुजशोककरा, शनिभौमदिने **यदि** सा विजया चरणायुधयानकरी विकला। बुधशुक्रदिने यदि सा विजया गजवाहनगा **शुभवृष्टिकरा, सुरराजगुरौ** यदि सा विजया नरवाहनगा शुभसौख्यकरा।। **दुर्गापाठमहत्त्वम्** – यथाश्वमेधः क्रतुराड् देवानां च यथा हरिः। स्तवानामपि सर्वेषां तथा सप्तशतीस्तवः।। चण्ड्याः शतावृत्तिपाठात् **सर्वाः सिध्यन्ति सिद्धयः।। विल्वपत्रत्रोटनमन्त्रः** – अमृतोद्भव श्रीवृक्ष शंकरस्य सदा **प्रिय। क्षमस्व शिवपूजार्थं** तव पत्रं चिनोम्यहम्।। **तुलसीपत्रत्रोटनमन्त्रः**–तुलस्यमृतजन्मा त्वं केशवस्य **सदा प्रिया।** क्षमस्व हरिपूजार्थं तव पत्रं चिनोम्यहम्।। **नीलकण्ठदर्शनमन्त्रः**–नीलकण्ठाय भद्राय **भद्ररूपाय ते नमः।** भद्रत्वं देहि मे भद्रमाशां पूरय पूरय।। **खञ्जनदर्शनमन्त्रः**– नारायणशरीरोत्थ संवत्**सरशुभप्रद।** शालग्रामशिलाकण्ठ खञ्जरीट नमोऽस्तुते।।

**ग्रहस्थितिः** – मार्गिणः पूर्वोदिताः कुजगुरुशुक्रशनयः, **मार्गी पूर्वोदितो** बुधः ७ तः पूर्वास्तः।

**वातावरणम्** – पक्षादिभागे वाततापच्छिन्नवृष्टयस्तदन्तभागे खण्डवृष्टियोगः।

# कार्त्तिककृष्णपक्षः

शकाब्दः १९३९, सवत् २०७४, सन् १४२५ साल, दि.६।१०।२०१७ ई.तः दि.१९।१०।२०१७ ई.या., उत्तरे कालः।
मार्गी पूर्वोदितो गुरुः६तःक्षीणः,मार्गी पूर्वोदितः शुक्रः, गुद्धः, ६तोऽशुद्धः, रास्तुः, सौम्यगोलः, १३तो याम्यगोलः, याम्यायनम्।

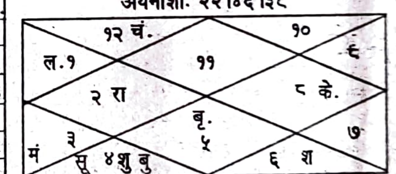
| तिथयः दिनानि | तिथयः द. प. | घं. मि. | नक्षत्राणि द. प. | घं. मि. | योगाः द. प. | करणानि द. प. | चन्द्रराशयः द. प. | घं. मि. | स्पष्टसूर्यः राश्यादिः | दिनमान द. प. | सूर्योदयः घं. मि. | सूर्यास्तः घं. मि. | दिनांकाः रा. | सौ. | अं. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ शु. | ४२।१७ | रा.११।०५ | रे. ३८।०७ | रा.०६।२५ | ध्रु. ०१।४४ | बा. १३।४८ | मीन ३८।०७ | रा.०६।२५ | ५।१८।५६।२६ | २६।१२ | ६।१० | ५।५० | १४ | २० | ६ |
| २ श. | ३८।२० | रा.०६।३० | अ. ३६।०२ | रा.०८।३५ | ह. ५०।०६ | तै. १०।१८ | मेष | अहोरात्रं | ५।१९।५८।४२ | २६।०८ | ६।१० | ५।५० | १५ | २१ | ७ |
| ३ र. | ३१।३१ | रा.०६।४७ | भ. ३३।०३ | रा.०७।२४ | व. ४३।१७ | व. ०४।५५ | मेष ४७।०६ | रा.०१।०३ | ५।२०।५७।५७ | २६।०५ | ६।११ | ५।४९ | १६ | २२ | ८ |
| ४ चं. | २८।०७ | सं.०५।२७ | कृ. २६।२८ | सं.०५।५६ | सि.३५।५८ | बा. २८।०७ | वृष | अहोरात्रं | ५।२१।५७।१२ | २६।०२ | ६।१२ | ५।४८ | १७ | २३ | ९ |
| ५ मं. | २२।२१ | दि.०३।०८ | रो. २५।२६ | दि.०४।२४ | व्य.२८।१८ | तै. २२।२१ | वृष ५३।२३ | रा.०३।३३ | ५।२२।५६।४४ | २८।५८ | ६।१२ | ५।४८ | १८ | २४ | १० |
| ६ बु. | १६।१९ | दि.१२।४५ | मृ. २१।१७ | दि.०२।४४ | व. २०।२७ | व. १६।१९ | मिथुन | अहोरात्रं | ५।२३।५६।१६ | २८।५४ | ६।१३ | ५।४७ | १९ | २५ | ११ |
| ७ बृ. | १०।१८ | दि.१०।२१ | आ. १७।०६ | दि.०१।०४ | प. १२।३७ | ब. १०।१८ | मिथुन५६।०६ | रा.०५।५२ | ५।२४।५५।४८ | २८।५० | ६।१४ | ५।४६ | २० | २६ | १२ |
| ८ शु. | ०४।२५ | दि.०८।०१ | पुन. १३।०६ | दि.११।२९ | शि.०४।५५ | कौ. ०४।२५ | कर्क | अहोरात्रं | ५।२५।५५।२० | २८।४६ | ६।१५ | ५।४५ | २१ | २७ | १३ |
| १० श. | ५४।०२ | रा.०३।४३ | पु. ०६।३३ | दि.१०।०५ | सा.५०।३८ | व. २६।२६ | कर्क | अहोरात्रं | ५।२६।५४।५२ | २८।४२ | ६।१६ | ५।४४ | २२ | २८ | १४ |
| ११ र. | ४९।५५ | रा.०२।१४ | श्ले. ०६।३४ | दि.०८।५४ | शु. ४४।२१ | ब. २१।५८ | कर्क ०६।३४ | दि.०८।५४ | ५।२७।५४।२३ | २८।३८ | ६।१६ | ५।४४ | २३ | २९ | १५ |
| १२ चं. | ४६।४० | रा.१२।५७ | म. ०४।३० | दि.०८।०५ | शु. ३८।४५ | कौ. १८।१७ | सिंह | अहोरात्रं | ५।२८।५३।५४ | २८।३४ | ६।१७ | ५।४३ | २४ | ३० | १६ |
| १३ मं. | ४४।३१ | रा.१२।०६ | पूफ. ०३।१३ | दि.०७।३५ | ब्र. ३४।०० | ग. १५।३५ | सिंह १८।१० | दि.०१।३४ | ५।२९।५३।४१ | २८।३० | ६।१८ | ५।४२ | २५ | ३१ | १७ |
| १४ बु. | ४३।३४ | रा.११।४५ | उफ. ०३।०४ | दि.०७।३३ | ऐं. ३०।१० | वि. १४।०२ | कन्या | अहोरात्रं | ६।००।५३।२८ | २८।२६ | ६।१९ | ५।४१ | २६ | १ | १८ |
| ३० बृ. | ४३।५४ | रा.११।५४ | ह. ०४।०५ | दि.०७।५८ | वै. २७।२२ | च. १३।४४ | कन्या ३५।१६ | रा.०८।२६ | ६।०१।५३।१५ | २८।२२ | ६।२० | ५।४० | २७ | २ | १९ |

पञ्चकान्तो रात्रौ घं.९मि.२५उ., गं.२६।७ उ.४१।०७ या., व्याघातमान५४।३१, कार्त्तिके द्विदल त्यजेत्, उत्तरयात्रा रेवत्यां ततः पश्चिमां विना यात्रा प्रतिपदि। पूर्वां विना यात्राशिवन्याम्। ◆हनुमज्जन्मोत्सवः, वायुपुराणे–कार्त्तिकस्यासिते पक्षे स्वात्यां भौमे चतुर्दशी। मेषलग्नेऽञ्जनीगर्भात् स्वयं जातो हरःशिवः॥,🡐
कृष्णपिंगाक्ष ४ व्रतं, करक ४, कन्यायां शुक्रः ४५।४५, म. ४।५५ उ. ३१।३१ यावत्।
दक्षिणयात्रा रोहिण्याम्। ❋कार्त्तिकशुक्लप्रतिपद्द्वितीयाप्रतिहारषष्ठीसप्तमी–अक्षयनवम्येकादशीविशेषपुण्यप्रदम्।
पूर्वदक्षिणयात्रा पञ्चम्याम्। ❖कुजस्तेन वातातपच्छिन्नवृष्टियोगः, उत्तरां विना यात्रा मृगशिरसि, (६–७एको.)।
क्षीणो गुरुरशुद्धारंभश्च २७।१८ उ., म. १६।१९ उ.४ ३।१८ या., चित्रायां रविः ७।५६ पुस्त्रीसूसूयोगः वृश्चिकलग्नमश्ववाहनमग्निनाडीपतिः ❖
तुलायां बुधः ५९।१०, द.ति. १०।१८ उपरि। ♍यावत्स्नानदानजपहोमतर्पणपूजनादिकमक्षयफलदं तत्रापि चतुर्दश्यष्टमीपूर्णिमाऽमावास्यासंक्रान्ति–❋
नवमीमानं ५४।३२, सिद्धमानं ५२।३८, द.ति.४।२५या., उत्तरयात्रा नवम्यां पुनर्वसौ ततः पश्चिमां विना यात्रा।
पश्चिमास्तो गुरुः २७।१८, कन्यायां कुजः ४४।३२, गं.५५।३४ उ., म.२६।२९ उ. ५४।०२ यावत्। ⇔महाकुम्भध्वजस्थापनम्।
तं सर्वेषां, गं.१०।३४यावत् । 🡐 सिमरियाधाम्नि कल्पवासारम्भः,कार्त्तिकस्नानारम्भः,म.१४।०२या.,महाकुम्भयोगः, सिमरियाधाम्नि अद्यारभ्य वृश्चिकसंक्रान्तिं♍
बिल्वदलेन तुलसीदलेन वा पारणं, गोवत्स१२, उत्तरयात्रा त्रयोदश्याम्। ✠ स्वयं धन्वन्तरिर्महान्। पुरा समुद्रमथने समुत्तस्थौ महोदधेः॥, म.४४।३१ उपरि। ⇔
प्रदोष १३व्रतं, मासान्तः, तुलायां रविः ५०।३५ मु.४५ फलं समर्घ, याम्यगोलारम्भः५०।३५उ., धन्वन्तरि (धनतेरस) जयन्ती, ब्रह्मवैवर्ते–नारायणांशो भगवान्✠
प्रदोष १४व्रतं, कालीपूजा, निशीथे श्रीकालीताराभुवनेश्वरीप्रादुर्भावः, धान्यविषुवसंक्रांतिपुण्यकालो दिवा घं.१२ मि.०-या., पुण्याहः, हनुमद्ध्वजदानं, ◆
मासादिः,कार्त्तिकी३०, स्नानदानादिः,दीपावली, [illegible] पितृविसर्जनञ्च [illegible] अकृतपितृपक्षेपार्वणैरद्यावश्यमेव विधेयम्।

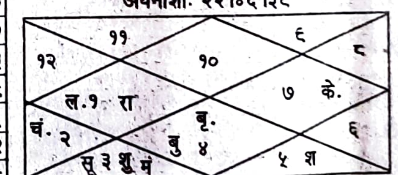
## मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च — दैनिकलग्नसारिणीचक्रम्

| ति.दि. | मंगलः | बुधः | गुरुः | शुक्रः | शनिः | केतुः | मिश्रमानं | मे.अं. | वृ.अं. | मि.अं. | क.अं. | सिं.अं. | कं.अं. | तु.अं. | वृ.अं. | ध.अं. | म.अं. | कुं.अं. | मी.अं. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ शु. | ४।२४।५६।१२ | ५।१६।०१।४३ | ६।०६।२३।०३ | ४।२७।३१।०७ | ७।२६।०५।१० | ६।२६।३५।०७ | ४४।३६ | २०।०४ | २२।०० | ००।१३ | २।३१ | ४।४७ | ७।०२ | ६।१६ | ११।३६ | १३।४१ | १५।२७ | १६।५८ | १८।२७ |
| २ श. | ४।२५।३६।४६ | ५।२०।४६।२६ | ६।०६।३६।०१ | ४।२८।४४।४६ | ७।२६।०६।१६ | ६।२६।३१।५६ | ४४।३४ | २०।०० | २१।५६ | ००।०६ | २।२७ | ४।४३ | ६।५८ | ६।१५ | ११।३२ | १३।३७ | १५।२३ | १६।५४ | १८।२३ |
| ३ र. | ४।२६।१४।२६ | ५।२२।३१।१५ | ६।०६।४८।५६ | ४।२६।५८।३० | ७।२६।१३।२८ | ६।२६।२८।४६ | ४४।३२ | १६।५६ | २१।५२ | ००।०५ | २।२३ | ४।३६ | ६।५४ | ६।११ | ११।२८ | १३।३३ | १५।१६ | १६।५० | १८।१६ |
| ४ चं. | ४।२६।५२।०३ | ५।२४।१६।०० | ६।०७।०१।५७ | ५।०१।१२।११ | ७।२६।१७।३७ | ६।२६।२५।३६ | ४४।३१ | १६।५२ | २१।४८ | ००।०१ | २।१६ | ४।३५ | ६।५० | ६।०७ | ११।२४ | १३।२६ | १५।१५ | १६।४६ | १८।१५ |
| ५ मं. | ४।२७।२६।३७ | ५।२६।०१।५६ | ६।०७।१५।१० | ५।०२।२६।०६ | ७।२६।२२।२१ | ६।२६।२२।२५ | ४४।२६ | १६।४६ | २१।४५ | २३।५८ | २।१६ | ४।३२ | ६।४७ | ६।०४ | ११।२१ | १३।२६ | १५।१२ | १६।४३ | १८।१२ |
| ६ बु. | ४।२८।०७।११ | ५।२७।४७।५८ | ६।०७।२८।२३ | ५।०३।४०।०१ | ७।२६।२७।०५ | ६।२६।१६।१४ | ४४।२७ | १६।४५ | २१।४१ | २३।५४ | २।१२ | ४।२८ | ६।४३ | ६।०० | ११।१७ | १३।२२ | १५।०८ | १६।३६ | १८।०८ |
| ७ बृ. | ४।२८।४४।४५ | ५।२६।३३।५७ | ६।०७।४१।३६ | ५।०४।५३।५५ | ७।२६।३१।४६ | ६।२६।१६।०३ | ४४।२५ | १६।४१ | २१।३७ | २३।५० | २।०८ | ४।२४ | ६।३६ | ८।५६ | ११।१३ | १३।१८ | १५।०४ | १६।३५ | १८।०४ |
| ८ शु. | ४।२६।२२।१६ | ६।०१।१६।५६ | ६।०७।५४।४६ | ५।०६।०७।४६ | ७।२६।३६।३३ | ६।२६।१२।५२ | ४४।२३ | १६।३७ | २१।३३ | २३।४६ | २।०४ | ४।२० | ६।३५ | ८।५२ | ११।०६ | १३।१४ | १५।०० | १६।३१ | १८।०० |
| १० श. | ४।२६।५६।५३ | ६।०३।०५।५४ | ६।०८।०८।०२ | ५।०७।२१।४३ | ७।२६।४१।१७ | ६।२६।०६।४१ | ४४।२१ | १६।३४ | २१।३० | २३।४३ | २।०१ | ४।१७ | ६।३२ | ८।४६ | ११।०६ | १३।११ | १४।५७ | १६।२८ | १७।५७ |
| ११ र. | ५।००।३७।२६ | ६।०४।५१।५२ | ६।०८।२१।१४ | ५।०८।३५।३७ | ७।२६।४६।०० | ६।२६।०६।३१ | ४४।१६ | १६।३० | २१।२६ | २३।३६ | १।५७ | ४।१३ | ६।२८ | ८।४५ | ११।०२ | १३।०७ | १४।५३ | १६।२४ | १७।५३ |
| १२ चं. | ५।०१।१४।५६ | ६।०६।३७।५० | ६।०८।३४।२६ | ५।०६।४६।३१ | ७।२६।५०।४३ | ६।२६।०३।२१ | ४४।१७ | १६।२६ | २१।२२ | २३।३५ | १।५३ | ४।०६ | ६।२४ | ८।४१ | १०।५८ | १३।०३ | १४।४६ | १६।२० | १७।४६ |
| १३ मं. | ५।०१।५२।३१ | ६।०८।२१।४० | ६।०८।४७।३१ | ५।११।०३।४३ | ७।२६।५५।४७ | ६।२६।००।१० | ४४।१५ | १६।२३ | २१।१६ | २३।३२ | १।५० | ४।०६ | ६।२१ | ८।३८ | १०।५५ | १३।०० | १४।४६ | १६।१७ | १७।४६ |
| १४ बु. | ५।०२।३०।०३ | ६।१०।०५।२६ | ६।०६।००।३६ | ५।१२।१७।५४ | ७।२७।००।५१ | ६।२८।५६।५६ | ४४।१३ | १६।१६ | २१।१५ | २३।२८ | १।४६ | ४।०२ | ६।१७ | ८।३४ | १०।५१ | १२।५६ | १४।४२ | १६।१३ | १७।४२ |
| ३० बृ. | ५।०३।०७।३५ | ६।११।४६।१८ | ६।०६।१३।४१ | ५।१३।३२।०५ | ७।२७।०५।५५ | ६।२८।५३।४८ | ४४।११ | १६।१५ | २१।११ | २३।२४ | १।४२ | ३।५८ | ६।१३ | ८।३० | १०।४७ | १२।५२ | १४।३८ | १६।०६ | १७।३८ |

४ चन्द्रे वल्ली ८।३६।१६।३१
अयनांशाः २२।४६।३८




१२ चन्द्रे वल्ली ८।३६।१६।३८
अयनांशाः २२।४६।३९




**विविधविषयाः**–कार्तिके सकलं मासं प्रातःस्नायी जितेन्द्रियः। जपन् हविष्यभुक् शान्तः सर्वपापैः प्रमुच्यते॥ **प्रातः स्नानमन्त्रः**–कार्त्तिकेऽहं करिष्यामि प्रातः स्नानं जनार्दन। प्रीत्यर्थं तव देवेश दामोदर रमा सह॥ **धात्रीमाहात्म्यम्**–धात्रीच्छायां समाश्रित्य भुङ्क्ते योऽत्र हि मानवः। ब्राह्मणान् भोजयित्वा तु वार्षिकं किल्विषं हरेत्॥ धात्रीफलविलिप्तांगो धात्रीफलविभूषितः। धात्रीफलकृताहारो नरो नारायणो भवेत्॥ **उल्काभ्रमणमन्त्रः**– शस्त्राशस्त्रहतानां च भूतानां भूतदर्शयोः। उज्ज्वलज्ज्योतिषा देहं निर्दहे व्योमवह्निना॥ अग्निदग्धाश्च ये जीवा येऽप्यदग्धाः कुले मम। उज्ज्वलज्ज्योतिषा दग्धास्ते यान्तु परमां गतिम्॥ यमलोकं परित्यज्य आगता ये महालये। उज्ज्वलज्ज्योतिषा वर्त्म प्रपश्यन्तो व्रजन्तु ते॥ **तुलासंक्रमणे आकाशदीपदानफलम्**– तुलायां तिलतैलेन सायंकाले समागते। आकाशदीपं यो दद्यात् मासमेकं हरिं प्रति। महतीं श्रियमवाप्नोति रूपसौभाग्यसंपदः॥ **दीपदानमन्त्रः**–दामोदराय नभसि तुलायां लोलया सह। प्रदीपं ते प्रयच्छामि नमोऽनन्ताय वेधसे॥

**ग्रहस्थितिः**–मार्गिणः पूर्वोदिताः कुजशुक्रशनयः, मार्गी पूर्वास्तो बुधः, मार्गी पूर्वोदितो गुरुः१० तः पश्चिमास्तः।

**वातावरणम्**– पक्षाद्यन्तभागयोः वाताभ्रचारादयस्तन्मध्यभागे वातमेघचारच्छिन्नवृष्टयः।

# कार्त्तिकशुक्लपक्षः

शकाब्दः १९३९, संवत् २०७४, सन् १४२५ साल, दि.२०।१०।१७ ई. तः दि.४।११।१७ ई. या., उत्तरे कालः।
मार्गी पश्चिमास्तो गुरुः, मार्गी पूर्वोदितः शुक्रः, अगुद्धः, शरदृतुः, याम्यगोलः, याम्यायनम्।

| तिथयः | तिथयः | | नक्षत्राणि | | योगाः | करणानि | चन्द्रराशयः | | स्पष्टसूर्यः | दिनमान | सूर्योदयः | सूर्यास्तः | दिनांकाः | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दिनानि | द. प. | घं. मि. | द. प. | घं. मि. | द. प. | द. प. | द. प. | घं. मि. | राश्यादिः | द. प. | घं. मि. | घं. मि. | रा. | सौ. | अं. |
| १ शु. | ४५।३६ | रा.१२।३४ | चि.०६।२७ | दि.०८।५५ | वि.२५।३३ | किं.१४।४५ | तुला | अहो. | ६।०२।५३।०२ | २८।१८ | ६।२० | ५।४० | २८ | ३ | २० |
| २ श. | ४८।२५ | रा.०१।४३ | स्वा.१०।०२ | दि.१०।२२ | प्री.२४।४१ | बा.१७।०० | तु.५८।३३ | रा.०५।४६ | ६।०३।५२।४९ | २८।१४ | ६।२१ | ५।३९ | २९ | ४ | २१ |
| ३ र. | ५२।२३ | रा.०३।१६ | वि.१४।४४ | दि.१२।१६ | आ.२४।४४ | तै.२०।२४ | वृश्चिक | अहो. | ६।०४।५२।३९ | २८।१० | ६।२२ | ५।३८ | ३० | ५ | २२ |
| ४ चं. | ५७।०७ | रा.०५।१४ | अनु.२०।२० | दि.०२।३१ | सौ.२५।३० | व.२४।४५ | वृश्चिक | अहो. | ६।०५।५२।२३ | २८।०६ | ६।२३ | ५।३७ | १ | ६ | २३ |
| ५ मं. | ६०।०० | अहोरात्रं | ज्ये.२६।३४ | सं.०५।०२ | शो.२६।४२ | ब.२९।४४ | वृ.२६।३४ | सं.०५।०२ | ६।०६।५२।२६ | २८।०२ | ६।२४ | ५।३६ | २ | ७ | २४ |
| ५ बु. | ०२।२२ | दि.०७।२१ | मू.३३।०७ | रा.०७।३९ | अगं.२८।०९ | बा.०२।२२ | धनु | अहो. | ६।०७।५२।२९ | २७।५८ | ६।२४ | ५।३६ | ३ | ८ | २५ |
| ६ वृ. | ०७।३६ | दि.०९।२७ | पूषा.३९।२७ | रा.१०।१२ | सु.२९।२६ | तै.०७।३६ | ध.५५।५४ | रा.०४।४७ | ६।०८।५२।३१ | २७।५४ | ६।२५ | ५।३५ | ४ | ९ | २६ |
| ७ शु. | १२।२८ | दि.११।२५ | उषा.४५।१५ | रा.१२।३२ | धृ.३०।२२ | व.१२।२८ | मकर | अहो. | ६।०९।५२।३३ | २७।५१ | ६।२६ | ५।३४ | ५ | १० | २७ |
| ८ श. | १६।३६ | दि.०१।०४ | श्र.५०।१३ | रा.०२।३१ | शू.३०।४१ | ब.१६।३६ | मकर | अहो. | ६।१०।५२।३५ | २७।४८ | ६।२६ | ५।३४ | ६ | ११ | २८ |
| ९ र. | १९।३९ | दि.०२।१७ | ध.५४।०२ | रा.०४।०४ | गं.३०।०९ | कौ.१९।३९ | म.२२।०७ | दि.०३।१८ | ६।११।५२।३७ | २७।४५ | ६।२७ | ५।३३ | ७ | १२ | २९ |
| १० चं. | २१।३८ | दि.०३।०७ | शत.५६।४१ | रा.०५।०८ | वृ.२८।४२ | ग.२१।३८ | कुम्भ | अहो. | ६।१२।५२।३९ | २७।४२ | ६।२८ | ५।३२ | ८ | १३ | ३० |
| ११ मं. | २२।१४ | दि.०३।२२ | पूभा.५८।०३ | रा.०५।४१ | ध्रु.२६।१३ | वि.२२।१४ | कुं.४२।४४ | रा.११।३४ | ६।१३।५२।५७ | २७।३८ | ६।२८ | ५।३२ | ९ | १४ | ३१ |
| १२ बु. | २१।३२ | दि.०३।०६ | उभा.५८।१२ | रा.०५।४६ | व्या.२२।४६ | बा.२१।३२ | मीन | अहो. | ६।१४।५३।१५ | २७।३५ | ६।२९ | ५।३१ | १० | १५ | १ |
| १३ वृ. | १९।३६ | दि.०२।२० | रे.५७।११ | रा.०५।२२ | ह.१८।२० | तै.१९।३६ | मी.५७।११ | रा.०५।२२ | ६।१५।५३।३२ | २७।३२ | ६।३० | ५।३० | ११ | १६ | २ |
| १४ शु. | १६।३८ | दि.०१।०९ | अ.५५।१६ | रा.०४।३६ | व.१३।०२ | व.१६।३८ | मेष | अहो. | ६।१६।५३।४९ | २७।२९ | ६।३० | ५।३० | १२ | १७ | ३ |
| १५ श. | १२।४२ | दि.११।३६ | भ.५२।२९ | रा.०३।३१ | सि.०६।५६ | ब.१२।४२ | मेष | अहो. | ६।१७।५४।०६ | २७।२६ | ६।३१ | ५।२९ | १३ | १८ | ४ |

**अं. २०** गोवर्द्धनपूजा, गोपूजा, गोक्रीडा, वृषभे औषधिदानं, **अन्नकूटः**, बलिपूजा, अग्न्यादिदेवोत्थापनं,दक्षिणयात्रा प्रतिपदि,**महाकविकालिदासजयन्त्युत्सवः** उच्चैठग्रामे ←

**अं. २१** चन्द्रदर्शन मु.४५ सौम्यशृंगफलं समर्घ, **भ्रातृद्वितीया,** भगिनीगृहे भोजनं, यमुनास्नानं, **श्रीचित्रगुप्तपूजा,** पश्चिमदक्षिणयात्रा **स्वात्याम्। ←**तज्जन्मस्थले उज्जयिन्यां कर्मस्थले च।

**अं. २२** कटुम्हुली ३, उत्तरयात्रा तृतीयानुराधयोः।

**अं. २३** **श्रीगणेश** ४ व्रतं, प्रतिहारषष्ठीव्रतीनां **निरामिषभोजनं,** पश्चिमोत्तरयात्रा पञ्चम्यां, भ. २४।४५ उ. ५७।०७ यावत्।

**अं. २४** प्रतिहारषष्ठीव्रतीनां संयमः(**नहा–खाय**), पश्चिमयात्रा ज्येष्ठायां ततः पूर्वयात्रा, गं. २०।३४ उ. ३५।३४ या., **स्वात्यां रविः ३१।२६** पुंस्त्रीसूसूयोगः वृषलग्नं ♍

**अं. २५** प्रतिहारषष्ठीव्रतस्यैकभुक्तादिकं (**खरना**), पूर्वयात्रा। ⇔कमलायां **जीवछघट्टे** जीववत्सायां **ढेङ्मनियारीघट्टे** वाङ्मत्यां च स्नानदानार्चनादिकम्, **सोनपुरमेलापकम्।**

**अं. २६** **प्रतिहारषष्ठीव्रतं सायंकालिकार्घदानं,** पूर्वोत्तरयात्रा पूर्वाषाढे।

**अं. २७** **प्रातःकालिकार्घदानं पारणञ्च, सामापूजारंभः, जगद्धात्रीपूजारंभः,** पश्चिमां विना यात्रा श्रवणायां, भ. १२।२८ **उ. ४४।३२ या.,** (८ एको.)।

**अं. २८** पश्चिमोदितो बुधः ५९।१६, **गोपाष्टमी,** गोपूजनं, **पञ्चकारंभो** रात्रौ घं. २ मि. ३१ उ., पूर्वां विना यात्रा श्रवणायाम्। ☾रात्रौ **घं.५मि.२२उ.,** गं.४५।११ उपरि।

**अं. २९** **अक्षयनवमी,** सत्ययुगादिः, **गंगास्नानदानादिः,** दीक्षाग्रहणं, धात्रीच्छायायां **भोजनं,** पूर्वयात्रा दशम्यां मकरगते चन्द्रे, (९ एको.)।

**अं. ३०** वृश्चिके बुधः ३२।४४, भ. ५१।५६ उ., **जगद्धात्रीविसर्जनं,** पश्चिमयात्रा पूर्वभाद्रे। ♍शिखिवाहनमग्निनाडीपतिः कुजस्तेन वातातपच्छिन्नवृष्टियोगः।

**अं. ३१** देवोत्थान ११ व्रतं सर्वेषां, **भीष्मपञ्चकव्रतारंभः,** द.ति. २२।१४ उ., भ. २२।१४ यावत्।

**अं. १** नवम्बर ११, बिल्वदलेन तुलसीदलेन वा पारणं, दामोदर१२, **प्रदोष**१३व्रतं, **तुलसीविवाहः,** चातुर्मास्यव्रतपारणं, तुलायां **शुक्रः**५९।२४, **तामसमन्वादिः,** द.ति.२१।३२यावत्।

**अं. २** प्रदोष१४व्रतं, वैकुण्ठ१४, काशीविश्वनाथप्रतिष्ठादिनं, **विद्यापतिस्मृतिदिवसः,** बाबासाहेबरामपरमहंसस्य २२८ **स्मृतिदिवसः, पश्चिमोत्तरयात्रा** त्रयोदश्यां, **पञ्चकान्तो**☾

**अं. ३** **कार्त्तिकेयपूजनं,** कार्त्तिकेयावतारः, **सामाविसर्जनं,** पश्चिमां विना यात्राश्विन्यां, गं. ००।११ या., भ.१६।३८ उ. ४४।४० **या., (१४–१५ एको.)।**

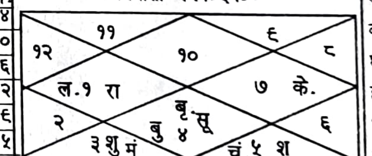
**अं. ४** **कार्त्तिकी१५** स्नानदानादिः, **औत्तममन्वादिः,** सर्वदेवदेव्युत्थापनं, **भीष्मपञ्चकव्रतसमाप्तिः, गुरुनानक–निम्बार्कजयन्ती,** हरिहरप्रभासपुष्करवराहक्षेत्रस्नानदानादिकं, **गोशालाघट्टे** ⇔

## मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च — दैनिकलग्नसारिणीचक्रम्

| ति.दि. | मंगलः | बुधः | गुरुः | शुक्रः | शनिः | केतुः | मिश्रमानं | मे.अं. | वृ.अं. | मि.अं. | क.अं. | सिं.अं. | कं.अं. | तु.अं. | वृ.अं. | ध.अं. | म.अं. | कुं.अं. | मी.अं. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ शु. | ५।०३।४५।०७ | ६।१३।३३।०७ | ६।०९।२६।४६ | ५।१४।४६।१६ | ७।२७।१०।५९ | ९।२८।५०।३७ | ४४।०९ | १९।११ | २१।०७ | २३।२० | १।३८ | ३।५४ | ६।०९ | ८।२६ | १०।४३ | १२।४८ | १४।३४ | १६।०५ | १७।३४ |
| २ श. | ५।०४।२२।३९ | ६।१५।१६।५६ | ६।०९।३९।५० | ५।१६।००।२७ | ७।२७।१६।०३ | ९।२८।४७।२६ | ४४।०७ | १९।०७ | २१।०३ | २३।१६ | १।३४ | ३।५० | ६।०५ | ८।२२ | १०।३९ | १२।४४ | १४।३० | १६।०१ | १७।३० |
| ३ र. | ५।०५।००।१० | ६।१७।००।४५ | ६।०९।५२।५४ | ५।१७।१४।३८ | ७।२७।२१।०७ | ९।२८।४४।१६ | ४४।०५ | १९।०३ | २०।५९ | २३।१२ | १।३० | ३।४६ | ६।०१ | ८।१८ | १०।३५ | १२।४० | १४।२६ | १५।५७ | १७।२६ |
| ४ चं. | ५।०५।३७।४१ | ६।१८।४४।३४ | ६।१०।०५।५८ | ५।१८।२८।४९ | ७।२७।२६।११ | ९।२८।४१।०६ | ४४।०३ | १८।५९ | २०।५५ | २३।०८ | १।२६ | ३।४२ | ५।५७ | ८।१४ | १०।३१ | १२।३६ | १४।२२ | १५।५३ | १७।२२ |
| ५ मं. | ५।०६।१५।१० | ६।२०।२३।४१ | ६।१०।१९।०३ | ५।१९।४३।२८ | ७।२७।३२।१७ | ९।२८।३७।५५ | ४४।०१ | १८।५६ | २०।५२ | २३।०५ | १।२३ | ३।३९ | ५।५४ | ८।११ | १०।२८ | १२।३३ | १४।१९ | १५।५० | १७।१९ |
| ५ बु. | ५।०६।५२।३९ | ६।२२।०२।४८ | ६।१०।३२।०८ | ५।२०।५८।०७ | ७।२७।३८।२२ | ९।२८।३४।४४ | ४३।५९ | १८।५२ | २०।४८ | २३।०१ | १।१९ | ३।३५ | ५।५० | ८।०७ | १०।२४ | १२।२९ | १४।१५ | १५।४६ | १७।१५ |
| ६ वृ. | ५।०७।३०।०७ | ६।२३।४१।५५ | ६।१०।४५।१३ | ५।२२।१२।४६ | ७।२७।४४।२७ | ९।२८।३१।३३ | ४३।५७ | १८।४८ | २०।४४ | २२।५७ | १।१५ | ३।३१ | ५।४६ | ८।०३ | १०।२० | १२।२५ | १४।११ | १५।४२ | १७।११ |
| ७ शु. | ५।०८।०७।३५ | ६।२५।२१।०२ | ६।१०।५८।१७ | ५।२३।२७।२५ | ७।२७।५०।३२ | ९।२८।२८।२२ | ४३।५५ | १८।४४ | २०।४० | २२।५३ | १।११ | ३।२७ | ५।४२ | ७।५९ | १०।१६ | १२।२१ | १४।०७ | १५।३८ | १७।०७ |
| ८ श. | ५।०८।४५।०३ | ६।२७।००।०९ | ६।११।११।२१ | ५।२४।४२।०३ | ७।२७।५६।३७ | ९।२८।२५।११ | ४३।५३ | १८।४० | २०।३६ | २२।४९ | १।०७ | ३।२३ | ५।३८ | ७।५५ | १०।१२ | १२।१७ | १४।०३ | १५।३४ | १७।०३ |
| ९ र. | ५।०९।२२।३१ | ६।२८।३९।१५ | ६।११।२४।२५ | ५।२५।५६।४१ | ७।२८।०२।४२ | ९।२८।२२।०० | ४३।५२ | १८।३६ | २०।३२ | २२।४५ | १।०३ | ३।१९ | ५।३४ | ७।५१ | १०।०८ | १२।१३ | १३।५९ | १५।३० | १६।५९ |
| १० चं. | ५।०९।५९।५९ | ७।००।१८।२१ | ६।११।३७।२९ | ५।२७।११।१९ | ७।२८।०८।४७ | ९।२८।१८।५० | ४३।५१ | १८।३२ | २०।२८ | २२।४१ | ०।५९ | ३।१५ | ५।३० | ७।४७ | १०।०४ | १२।०९ | १३।५५ | १५।२६ | १६।५५ |
| ११ मं. | ५।१०।३७।१२ | ७।०१।४९।०५ | ६।११।५०।३४ | ५।२८।२५।५७ | ७।२८।१४।४० | ९।२८।१५।३६ | ४३।४९ | १८।२८ | २०।२४ | २२।३७ | ०।५५ | ३।११ | ५।२६ | ७।४३ | १०।०० | १२।०५ | १३।५१ | १५।२२ | १६।५१ |
| १२ बु. | ५।११।१४।२५ | ७।०३।१९।४९ | ६।१२।०३।३९ | ५।२९।४०।३५ | ७।२८।२०।३३ | ९।२८।१२।२८ | ४३।४७ | १८।२५ | २०।२१ | २२।३४ | ०।५२ | ३।०८ | ५।२३ | ७।४० | ९।५७ | १२।०२ | १३।४८ | १५।१९ | १६।४८ |
| १३ वृ. | ५।११।५१।३७ | ७।०४।५०।३२ | ६।१२।१६।४४ | ६।००।५५।१३ | ७।२८।२६।२६ | ९।२८।०९।१७ | ४३।४५ | १८।२१ | २०।१७ | २२।३० | ०।४८ | ३।०४ | ५।१९ | ७।३६ | ९।५३ | ११।५८ | १३।४४ | १५।१५ | १६।४४ |
| १४ शु. | ५।१२।२८।४९ | ७।०६।२१।१५ | ६।१२।२९।४८ | ६।०२।०९।५१ | ७।२८।३२।१९ | ९।२८।०६।०६ | ४३।४३ | १८।१७ | २०।१३ | २२।२६ | ०।४४ | ३।०० | ५।१५ | ७।३२ | ९।४९ | ११।५४ | १३।४० | १५।११ | १६।४० |
| १५ श. | ५।१३।०६।०१ | ७।०७।५१।५८ | ६।१२।४२।५२ | ६।०३।२४।२९ | ७।२८।३८।१२ | ९।२८।०२।५५ | ४३।४२ | १८।१३ | २०।०९ | २२।२२ | ०।४० | २।५६ | ५।११ | ७।२८ | ९।४५ | ११।५० | १३।३६ | १५।०७ | १६।३६ |

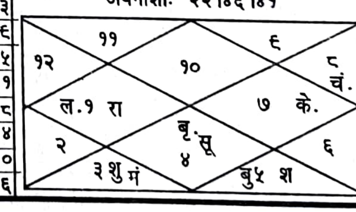
४ चन्द्रे वल्ली ८।३९।१९।४५

अयनांशाः २२।४६।४०




१० चन्द्रे वल्ली ८।३९।१९।५२।

अयनांशाः २२।४६।४१




**विविधविषयाः**–कार्त्तिकशुक्लप्रतिपदि प्रातर्गोवर्द्धनपूजा कार्या। तत्र गोमयेन गोवर्द्धनमूर्तिं निर्माय पीतपुष्पाक्षतादिभिः पूजयेत् गाश्च पूजयेत्। **गोवर्द्धनपूजनमन्त्रः**–गोवर्द्धनधराधार गोकुलत्राणकारक। कृष्णबाहुकृतच्छाय गवां कोटिप्रदो भव।। **गोपूजनमन्त्रः**–लक्ष्मीर्या लोकपालानां धेनुरूपेण संस्थिता। घृतं वहति यज्ञार्थं सा मे पापं व्यपोहतु।। **अग्रतः सन्तु मे गावो गावो मे सन्तु पृष्ठतः।** गावो मे हृदये सन्तु गवां मध्ये वसाम्यहम्।। **भ्रातृद्वितीयायां भगिनीपठनीयमन्त्रः**– भ्रातस्तवानुजाताहं भुंक्ष्व भक्तमिदं शुभं। प्रीतये यमराजस्य यमुनाया **विशेषतः।। कनिष्ठभ्रातरि सति** – भ्रातस्तवाग्रजाताहं भुंक्ष्व भक्तमिदं शुभम्। प्रीतये यमराजस्य **यमुनाया** विशेषतः।। **एकादश्या विष्णूत्थापनमन्त्रः** - ब्रह्मेन्द्ररुद्रैरभिवन्द्यमानो भवानृषिर्वन्दितवन्दनीयः। **प्राप्ता तवेयं किल कौमुदाख्या** जागृष्व जागृष्व च लोकनाथ।। मेघागता निर्मलपूर्णचन्द्रशारद्यपुष्पाणि मनोहराणि। अहं ददानीति च पुण्यहेतोर्जागृष्व जागृष्व च लोकनाथ।। उत्तिष्ठोत्तिष्ठ गोविन्द त्यज निद्रां जगत्पते। त्वया चोत्थीयमानेन प्रोत्थितं भुवनत्रयम्।।

**ग्रहस्थितिः**–मार्गिणः पूर्वोदिताः कुजशुक्रशनयः,मार्गी पूर्वास्तो बुधः ८ तः पश्चिमोदितः, मार्गी पश्चिमास्तो गुरुः।

**वातावरणम्**- पक्षाद्यन्तभागयोः वातातपमेघचारादयस्तन्मध्यभागे वातच्छिन्नवृष्टयः।

## अग्रहायणकृष्णपक्षः

शकाब्दः१९३९,संवत्२०७४,सन्१४२५साल,दि.०५।११।१७ई.तः दि.१८।११।१७ ई.या., उत्तरे कालः,१३ तः पूर्वे कालः। मार्गी पश्चिमास्तो गुरुः ६ तः पूर्वोदितः, मार्गी पूर्वोदितः शुक्रः, अशुद्धः, १२ तः शुद्धः, शरदृतुः १३ तो हेमन्तर्तुः, याम्यगोलायने।

| तिथयः दिनानि | तिथयः द. प. | घं. मि. | नक्षत्राणि द. प. | घं. मि. | योगाः द. प. | करणानि द. प. | चन्द्रराशयः द. प. | घ. मि. | स्पष्टसूर्यः राश्यादिः | दिनमानं द. प. | सूर्योदयः घं. मि. | सूर्यास्तः घं. मि. | दिनांकाः रा. | सौ. | अं. | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ र. | ०७।५७ | दि.०६।४२ | कृ. ४६।०२ | रा. ०२।०८ | व्य. ००।१३ | कौ. ०७।५७ | मेष ०६।३७ | दि.०९।२० | ६।१८।५४।२३ | २७।२३ | ६।३१ | ५।२९ | १४ | १९ | ५ | वरीयानमानं ५२।४३, पूर्वदक्षिणयात्रा रोहिण्याम्। |
| २ चं. | ०२।३७ | दि.०७।३५ | रो. ४५।०८ | रा. १२।३५ | प. ४५।१७ | ग. ०२।३७ | वृष | अहोरात्रं | ६।१९।५४।४० | २७।२० | ६।३२ | ५।२८ | १५ | २० | ६ | तृतीयामानं ५४।१५, **विशाखायां रविः** ४८।५७, म. ३१।०३ उ. ५६।५२ या., दक्षिणयात्रा तृतीयायां रोहिण्यां ततः पूर्वा विना यात्रा तृतीयायाम्। |
| ४ मं. | ५०।५५ | रा.०२।५५ | मृ. ४०।५९ | रा. १०।५७ | शि. ३७।२७ | ब. २३।५३ | वृष १३।०३ | दि.११।४६ | ६।२०।५५।०९ | २७।१६ | ६।३३ | ५।२७ | १६ | २१ | ७ | **गजानन** ४ व्रतं, उत्तरां विना यात्रा मृगशिरसि। |
| ५ बु. | ४४।५६ | रा.१२।३२ | आ. ३६।४४ | रा. ०९।१६ | सि. २९।३० | कौ. १७।५५ | मिथुन | अहोरात्रं | ६।२१।५५।३८ | २७।१२ | ६।३४ | ५।२६ | १७ | २२ | ८ | वीडपंचमी, मनसादेवीशयनं, **विषहरापूजनं**, पश्चिमयात्रा पुनर्वसौ। |
| ६ वृ. | ३९।१० | रा.१०।१४ | पुन. ३२।४१ | रा. ०७।३८ | सा. २१।४४ | ग. १२।०३ | मिथुन१८।४२ | दि.०२।०३ | ६।२२।५६।०७ | २७।०८ | ६।३४ | ५।२६ | १८ | २३ | ९ | म. ३६।१० उ., पश्चिमयात्रा मिथुनस्थे चन्द्रे ततः पश्चिमोत्तरयात्रा पुनर्वसौ ततो दक्षिणां विना यात्रा। |
| ७ शु. | ३३।४८ | रा.०८।०६ | पु. २९।०० | सं. ०६।११ | शु. १४।११ | वि. ०६।२९ | कर्क | अहोरात्रं | ६।२३।५६।३६ | २७।०५ | ६।३५ | ५।२५ | १९ | २४ | १० | **कालभैरवाष्टमी**, निशीथे कालभैरवावतारः, कालभैरवव्रतं पूजनञ्च, म. ०६।२९ यावत्। |
| ८ श. | २८।५७ | सं.०६।११ | श्ले. २५।५२ | दि. ०४।५७ | शु. ०७।०३ | बा. ०१।२२ | कर्क २५।५२ | दि.०४।५७ | ६।२४।५७।०४ | २७।०२ | ६।३६ | ५।२४ | २० | २५ | ११ | **महाराजाधिराजकामेश्वरसिंहजयन्ती**, अष्टकाश्राद्धं, गं. १४।५२ उपरि २९।५२ यावत्। |
| ९ र. | २४।५६ | दि.०४।३४ | म. २३।३३ | दि. ०४।०१ | ब्र. ००।३० | ग. २४।५६ | सिंह | अहोरात्रं | ६।२५।५७।३२ | २६।५९ | ६।३६ | ५।२४ | २१ | २६ | १२ | ऐन्द्रमानं ५४।०८, **पूर्वोदितो गुरुः** ०७।०३, अन्वष्टका ६, म. ५३।२२ उ., पूर्वोत्तरयात्रा दशम्याम्। |
| १० चं. | २१।४९ | दि.०३।२१ | पूफ. २२।०२ | दि. ०३।२६ | वै. ४९।३५ | वि. २१।४९ | सिंह ३६।५५ | रा.६।२३ | ६।२६।५८।०० | २६।५६ | ६।३७ | ५।२३ | २२ | २७ | १३ | म. २१।४९ या., उत्तरयात्रा पूर्वफल्गुन्याम्। |
| ११ मं. | १९।४७ | दि.०२।२३ | उफ. २१।३५ | दि. ०३।१६ | वि. ४५।२५ | बा. १९।४७ | कन्या | अहोरात्रं | ६।२७।५८।४२ | २६।५२ | ६।३८ | ५।२२ | २३ | २८ | १४ | **उत्पन्ना** ११ व्रतं सर्वेषां, द.ति. १९।४७ उपरि। |
| १२ बु. | १८।५७ | दि.०२।१३ | ह. २२।२१ | दि. ०३।३४ | प्री. ४२।१३ | तै. १८।५७ | कन्या ५३।२० | रा.०३।५८ | ६।२८।५९।२४ | २६।४९ | ६।३८ | ५।२२ | २४ | २९ | १५ | मासान्तः, **पुष्टो गुरुः शुद्धारंभश्च** ०७।०३ उ., गोमूत्रेण पारणं, **प्रदोष** १३ व्रतं, द.ति. १८।५७ या., **कार्त्तिकाकाशदीपदानतुलसीव्रतोद्यापनानि।** |
| १३ वृ. | १९।२५ | दि.०२।२५ | चि. २४।१९ | दि. ०४।२३ | आ. ४०।०२ | व. १९।२५ | तुला | अहोरात्रं | ७।००।००।०५ | २६।४६ | ६।३९ | ५।२१ | २५ | १ | १६ | **वृश्चिके रविः** ४३।१७ मु. १५ फलं महार्घ, **विष्णुपदीसंक्रान्तिपुण्यकालो** घं. १२ मि. ०० उपरि दिनं यावत्, **पुण्याहः**, कार्तिकस्नानसमाप्तिः, ❖ |
| १४ शु. | २१।१५ | दि.०३।०६ | स्वा. २७।३५ | सं. ०५।४१ | सौ. ३८।५३ | श. २१।१५ | तुला | अहोरात्रं | ७।०१।००।४६ | २६।४३ | ६।३९ | ५।२१ | २६ | २ | १७ | मासादिः, **मूले धनुषि शनिः** ५२।२७। |
| ३० श. | २४।११ | दि.०४।२० | वि. ३२।०० | रा. ०७।२८ | शो. ३८।३७ | ना. २४।११ | तुला १५।५४ | दि.०१।०२ | ७।०२।०१।२७ | २६।४० | ६।४० | ५।२० | २७ | ३ | १८ | मार्गी ३० स्नानदानादिः। **❖सिमरियाधाम्निकल्पवाससमाप्तिः**, महाकुम्भध्वजोत्थापनम्, **प्रदोष** १४ व्रतं, म. १६।२५ उ. ५०।२० यावत्। |

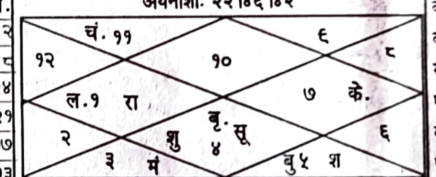
### मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च

### दैनिकलग्नसारिणीचक्रम्

| ति.दि. | मंगलः | बुधः | गुरुः | शुक्रः | शनिः | केतुः | मिश्रमानं | मे.अं. | वृ.अं. | मि.अं. | क.अं. | सिं.अं | कं.अं. | तु.अं. | वृ.अं. | ध.अं. | म.अं. | कुं.अं. | मी.अं. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ र. | ५।१३।४३।१३ | ७।०९।२२।४१ | ६।१२।५५।५६ | ६।०४।३९।०७ | ७।२८।४४।०५ | ९।२७।५९।४५ | ४३।४१ | १८।०९ | २०।०५ | २२।१८ | ००।३६ | २।५२ | ५।०७ | ७।२४ | ९।४१ | ११।४६ | १३।३२ | १५।०३ | १६।३२ |
| २ चं. | ५।१४।२०।२५ | ७।१०।५३।२४ | ६।१३।०९।०० | ६।०५।५३।४४ | ७।२८।४९।५७ | ९।२७।५६।३५ | ४३।४० | १८।०५ | २०।०१ | २२।१४ | ००।३२ | २।४८ | ५।०३ | ७।२० | ९।३७ | ११।४२ | १३।२८ | १४।५९ | १६।२८ |
| ४ मं. | ५।१४।५७।५८ | ७।१२।१०।०४ | ६।१३।२२।१९ | ६।०७।०८।४६ | ७।२८।५६।११ | ९।२७।५३।२४ | ४३।३८ | १८।०१ | १९।५७ | २२।१० | ००।२८ | २।४४ | ४।५९ | ७।१६ | ९।३३ | ११।३८ | १३।२४ | १४।५५ | १६।२४ |
| ५ बु. | ५।१५।३५।३१ | ७।१३।२६।४४ | ६।१३।३५।३८ | ६।०८।२३।४८ | ७।२९।०२।२५ | ९।२७।५०।१३ | ४३।३६ | १७।५८ | १९।५४ | २२।०७ | ००।२५ | २।४१ | ४।५६ | ७।१३ | ९।३० | ११।३५ | १३।२१ | १४।५२ | १६।२१ |
| ६ वृ. | ५।१६।१३।०४ | ७।१४।४३।२३ | ६।१३।४८।५७ | ६।०९।३८।५० | ७।२९।०८।३९ | ९।२७।४७।०२ | ४३।३४ | १७।५४ | १९।५० | २२।०३ | ००।२१ | २।३७ | ४।५२ | ७।०९ | ९।२६ | ११।३१ | १३।१७ | १४।४८ | १६।१७ |
| ७ शु. | ५।१६।५०।३७ | ७।१६।००।०२ | ६।१४।०२।१६ | ६।१०।५३।५२ | ७।२९।१४।५३ | ९।२७।४३।५१ | ४३।३२ | १७।५० | १९।४६ | २१।५९ | ००।१४ | २।३३ | ४।४८ | ७।०५ | ९।२२ | ११।२७ | १३।१३ | १४।४४ | १६।१३ |
| ८ श. | ५।१७।२८।१० | ७।१७।१६।४२ | ६।१४।१५।३५ | ६।१२।०८।५४ | ७।२९।२१।०७ | ९।२७।४०।४० | ४३।३० | १७।४६ | १९।४२ | २१।५५ | ००।१३ | २।२९ | ४।४४ | ७।०१ | ९।१८ | ११।२३ | १३।०९ | १४।४० | १६।०९ |
| ९ र. | ५।१८।०५।४२ | ७।१८।३३।२० | ६।१४।२८।५३ | ६।१३।२३।५६ | ७।२९।२७।२१ | ९।२७।३७।३० | ४३।२९ | १७।४२ | १९।३८ | २१।५१ | ००।०९ | २।२५ | ४।४० | ६।५७ | ९।१४ | ११।१९ | १३।०५ | १४।३६ | १६।०५ |
| १० चं. | ५।१८।४३।१४ | ७।१९।४९।५९ | ६।१४।४२।११ | ६।१४।३८।५७ | ७।२९।३३।३४ | ९।२७।३४।२० | ४३।२८ | १७।३८ | १९।३४ | २१।४७ | ००।०५ | २।२१ | ४।३६ | ६।५३ | ९।१० | ११।१५ | १३।०१ | १४।३२ | १६।०१ |
| ११ मं. | ५।१९।२०।२४ | ७।२०।४४।०७ | ६।१४।५५।०० | ६।१५।५४।०३ | ७।२९।३९।५६ | ९।२७।३१।०९ | ४३।२६ | १७।३४ | १९।३० | २१।४३ | ००।०१ | २।१७ | ४।३२ | ६।४९ | ९।०६ | ११।११ | १२।५७ | १४।२८ | १५।५७ |
| १२ बु. | ५।१९।५७।३४ | ७।२१।३८।१५ | ६।१५।०७।४९ | ६।१७।०९।०९ | ७।२९।४६।१८ | ९।२७।२७।५८ | ४३।२४ | १७।३० | १९।२६ | २१।३९ | २३।५७ | २।१३ | ४।२८ | ६।४५ | ९।०२ | ११।०७ | १२।५३ | १४।२४ | १५।५३ |
| १३ वृ. | ५।२०।३४।४४ | ७।२२।३२।२३ | ६।१५।२०।३८ | ६।१८।२४।१५ | ७।२९।५२।४० | ९।२७।२४।४७ | ४३।२२ | १७।२७ | १९।२३ | २१।३६ | २३।५४ | २।१० | ४।२५ | ६।४२ | ८।५९ | ११।०४ | १२।५० | १४।२१ | १५।५० |
| १४ शु. | ५।२१।११।५४ | ७।२३।२६।३१ | ६।१५।३३।२७ | ६।१९।३९।२० | ७।२९।५९।०२ | ९।२७।२१।३६ | ४३।२० | १७।२३ | १९।१९ | २१।३२ | २३।५० | २।०६ | ४।२१ | ६।३८ | ८।५५ | ११।०० | १२।४६ | १४।१७ | १५।४६ |
| ३० श. | ५।२१।४९।०४ | ७।२४।२०।३९ | ६।१५।४६।१६ | ६।२०।५४।२५ | ८।००।०५।२४ | ९।२७।१८।२५ | ४३।१९ | १७।१८ | १९।१४ | २१।२७ | २३।४५ | २।०१ | ४।१६ | ६।३३ | ८।५० | १०।५५ | १२।४१ | १४।१२ | १५।४१ |

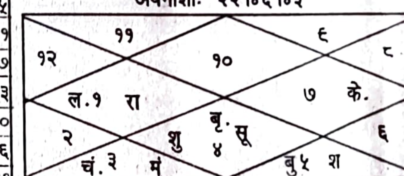
२ चन्द्रे वल्ली ८।३९।१९।५९

अयनांशाः २२।४६।४२




१० चन्द्रे वल्ली ८।३९।२०।०६

अयनांशाः २२।४६।४३




**विविधविषयाः**—मार्गकृष्णाष्टम्यां श्रीकालभैरवोत्पत्तिदिनमतस्तद् दिने तत्पूजनमुपवासश्च कार्यः। **षोडशोपचारपूजा**—आसनं स्वागतं चार्घ्यं पाद्यमाचमनं तथा। मधुपर्काचमनस्नान-वसनाभरणानि च।। गन्धपुष्पधूपदीपनैवेद्यं चन्दनं तथा। **पंचगव्यम्**-गोमूत्रं गोमयं क्षीरं दधि सर्पिः कुशोदकम्। पञ्चगव्यमिदं प्रोक्तं महापातकनाशनम्।। **पंचामृतम्**-शर्करा मधु दुग्धं च घृतं दधि समांशकम्। पञ्चामृतमिदं प्रोक्तं देहशुद्धौ विधीयते।। **पञ्चरत्नानि**-वज्रमौक्तिकवैदूर्यपुष्परागेन्द्रनीलकम्। पञ्चरत्नमिदं प्रोक्तं मन्त्रैः कुम्भेषु निःक्षिपेत्।। **पञ्चपल्लवाः**-अश्वत्थोदुम्बरप्लक्षचूतन्यग्रोधपल्लवाः। पञ्चपल्लव इत्युक्तः सर्वकर्मसु शोभनः।। **सप्तधान्यम्**-यवगोधूमधान्यानि तिलाः कंकुस्तथैव च। श्यामकं चणकं चैव सप्तधान्यमुदाहृतम्।। **सर्वौषधिः**-मुरा मांसी वचा कुष्ठं शैलेयं रजनीद्वयम्। शुण्ठी चम्पकमुस्तं च सर्वौषधिगणः स्मृतः।। सर्वौषधीनामभावे तु दद्यादेकां शतावरीम्। **सप्तमृत्तिका** - अश्वस्थानाद्गजस्थानाद्-वल्मीकात्संगमाद्ध्रदात्। राजद्वाराच्च गोष्ठाच्च मृदमानीय निःक्षिपेत्।।

**ग्रहस्थितिः**-मार्गिणः पूर्वोदिताः कुजशुक्रशनयः, मार्गी पश्चिमोदितो बुधः, मार्गी पश्चिमास्तो गुरुः ६ तः पूर्वोदितः।

**वातावरणम्**— पक्षादिभागे वातातपाभ्रचारादयस्तदन्तभागे वातहिमपातादयः।

# अग्रहायणशुक्लपक्षः

शकाब्दः १९३९, संवत् २०७४, सन् १४२५ साल, दि.१९।११।१७ ई. तः दि. ०३।१२।१७ ई. या., पूर्वे कालः। मार्गी पूर्वोदितो गुरुः, मार्गी पूर्वोदितः शुक्रः, शुद्धः, हेमन्तर्तुः, याम्यगोलः, याम्यायनम्।

| दिनानि | तिथयः द. प. | तिथयः घं. मि. | नक्षत्राणि द. प. | नक्षत्राणि घं. मि. | योगाः द. प. | करणानि द. प. | चन्द्रराशयः द. प. | चन्द्रराशयः घं. मि. | स्पष्टसूर्यः राश्यादिः | दिनमानं द. प. | सूर्योदयः घं. मि. | सूर्यास्तः घं. मि. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ र. | २८।१४ | सं.०५।५९ | अनु. ३७।२७ | रा.०९।४० | अगं. ३९।०५ | व. २८।१४ | वृश्चिक | अहो. | ७।०३।०२।०८ | २६।३७ | ६।४१ | ५।१९ |
| २ चं. | ३३।०४ | रा.०७।५५ | ज्ये. ४३।३५ | रा.१२।०७ | सु. ४०।०६ | बा. ००।३९ | वृश्चिक४३।३५ | रा.१२।०७ | ७।०४।०२।४९ | २६।३४ | ६।४१ | ५।१९ |
| ३ मं. | ३८।२४ | रा.१०।०४ | मू. ५०।०५ | रा.०२।४४ | धृ. ४१।२७ | तै. ०५।४४ | धनु | अहो. | ७।०५।०३।४३ | २६।३१ | ६।४२ | ५।१८ |
| ४ बु. | ४३।४६ | रा.१२।१२ | पूषा. ५६।३० | रा.०५।१८ | शू. ४२।४९ | व. ११।०५ | धनु | अहो. | ७।०६।०४।३७ | २६।२८ | ६।४२ | ५।१८ |
| ५ बृ. | ४८।४१ | रा.०२।११ | उषा. ६०।०० | अहोरात्रं | गं. ४३।४८ | ब. १६।१३ | ध.१२।५९ | दि.११।५५ | ७।०७।०५।३१ | २६।२६ | ६।४३ | ५।१७ |
| ६ शु. | ५२।५२ | रा.०३।५२ | उषा. ०२।२८ | दि.०७।४२ | वृ. ४४।१८ | कौ. २०।४६ | मकर | अहो. | ७।०८।०६।२५ | २६।२४ | ६।४३ | ५।१७ |
| ७ श. | ५५।५७ | रा.०५।०७ | श्र. ०७।३९ | दि.०९।४८ | ध्रु. ४३।५९ | ग. २४।२४ | मकर३९।४१ | रा.१०।३६ | ७।०९।०७।१८ | २६।२२ | ६।४४ | ५।१६ |
| ८ र. | ५७।५६ | रा.०५।५४ | ध. ११।४४ | दि.११।२६ | व्या. ४२।५० | वि. २६।५६ | कुम्भ | अहो. | ७।१०।०८।११ | २६।२० | ६।४४ | ५।१६ |
| ९ चं. | ५८।३१ | रा.०६।०८ | शत. १४।४३ | दि.१२।३७ | ह. ४०।३८ | बा. २८।१३ | कुम्भ | अहो. | ७।११।०९।०४ | २६।१८ | ६।४४ | ५।१६ |
| १० मं. | ५७।४९ | रा.०५।५३ | पूभा. १६।२३ | दि.०१।१८ | व. ३७।२५ | तै. २८।१० | कुम्भ००।५८ | प्रा.०७।०८ | ७।१२।१०।०८ | २६।१६ | ६।४५ | ५।१५ |
| ११ बु. | ५५।५५ | रा.०५।०७ | उभा. १६।५१ | दि.०१।२९ | सि. ३३।१४ | व. २६।५२ | मीन | अहो. | ७।१३।११।१२ | २६।१५ | ६।४५ | ५।१५ |
| १२ बृ. | ५२।५७ | रा.०३।५६ | रेव. १६।०७ | दि.०१।१२ | व्य. २८।१० | ब. २४।२६ | मीन१६।०७ | दि.०१।२२ | ७।१४।१२।१५ | २६।१४ | ६।४५ | ५।१५ |
| १३ शु. | ४९।०२ | रा.०२।२२ | अ. १४।२२ | दि.१२।३० | व. २२।१६ | कौ. २०।५९ | मेष | अहो | ७।१५।१३।१८ | २६।१३ | ६।४५ | ५।१५ |
| १४ श. | ४४।१६ | रा.१२।२८ | भ. ११।४६ | दि.११।२८ | प. १५।४० | ग. १६।३९ | मेष २५।५६ | सं.०५।०८ | ७।१६।१४।२१ | २६।१२ | ६।४६ | ५।१४ |
| १५ र. | ३८।५७ | रा.१०।२१ | कृ. ०८।२९ | दि.१०।१० | शि. ०८।३२ | वि. ११।३६ | वृष | अहो. | ७।१७।१५।२४ | २६।११ | ६।४६ | ५।१४ |

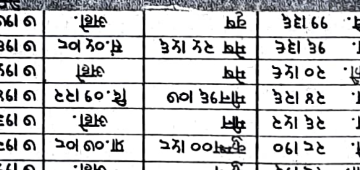
| दिनांकाः रा. | सौ. | अं. | |
|---|---|---|---|
| २८ | ४ | १९ | हरिशोव्रतं, षाण्मासिकरविव्रतारंभः, **द्विरागमनं** द्वितीयायामनुराधायां, विवाहोऽनुराधायां, उत्तरयात्रा द्वितीयायान्। 卐ज्येष्ठायां तत उत्तरयात्रा। |
| २९ | ५ | २० | अनुराधायां रविः००।५८, चन्द्रदर्शनं मु.१५ सौम्यशृंगफलं महार्घ, **मुण्डनं, विवाहो द्विरागमनं** च मूले, गं. ३७।३५ उ. ५२।३५ या., पश्चिमोत्तरयात्रा तृतीयायां 卐 |
| ३० | ६ | २१ | पूर्वयात्रा। कर्णविधः, **द्विरागमनं, विवाहो** दिवारात्रौ। |
| १ | ७ | २२ | गणेश ४ व्रतं, **द्विरागमनमुत्तराषाढे,** म. ११।०५ उ. ४३।४६ या., पूर्वयात्रा पंचम्यां पूर्वाषाढे। |
| २ | ८ | २३ | **विवाहपंचमी, श्रीसीतारामविवाहोत्सवः,** जनकपुरे श्रीसीतारामदर्शनं, **गोस्वामिलक्ष्मीनाथ (बाबाजी)** परमहंसस्य २२४ **जयन्त्युत्सवः** १४५ स्मृतिदिवसश्च, **नवान्नपार्वणं** |
| ३ | ९ | २४ | स्कन्दषष्ठीव्रतं, चम्पकषष्ठीव्रतं, कर्णविधः, द्विरागमनं षष्ठ्यां, **विवाहो** दिवारात्रौ, **गृहप्रवेशः** सप्तम्यां, पश्चिमां विना यात्रा **षष्ठ्यां श्रवणायाम्।** |
| ४ | १० | २५ | वृश्चिके शुक्रः ५७।५९, **गृहप्रवेशः** सप्तम्यां, **पंचकारंभो** दिवा घं. ९ मि. ४८ उ., म. ५५।५७ उ., पूर्वां विना **यात्रा श्रवणायाम्।** |
| ५ | ११ | २६ | **नवान्नपार्वणं, द्विरागमनमष्टम्यां,** राहुवेधाद्विवाहो मध्यमो धनिष्ठायां, म. २६।५६ यावत्। |
| ६ | १२ | २७ | **वक्री बुधः** २८।१३, द.ति. ५८।३१ उपरि। |
| ७ | १३ | २८ | **पश्चिमास्तः शनिः** २६।४१, द.ति. ५७।४९ यावत्। ❖दिवा घं.१ मि.१२ उ., गं.४।५७उ.१९।१७या., पश्चिमोत्तर**यात्रा रेवत्यां** ततो दक्षिणां विना यात्रा, **नवान्नपार्वणम्।** |
| ८ | १४ | २९ | **मोक्षदा** ११ व्रतं स्मार्त्तानां, **गीताजयन्ती,** मुण्डनं रेवत्यां, कर्णविधः, द्विरागमनं, **विवाहो** दिवारात्रौ, गृहारंभः, गृहप्रवेशः, **म.**२६।५२उ.५५।५५या., पश्चिमयात्रा रेवत्याम्। |
| ९ | १५ | ३० | पश्चिमास्तो बुधः५५।११, मोक्षदा११व्रतं वैष्णवानां, केशव१२, गोमूत्रेण पारणं, कर्णविधः, द्विरागमनं, विवाहो दिवारात्रौ, **गृहारम्भः** रेवत्यां, गृहप्रवेशः, पंचकान्तो ❖ |
| १० | १६ | १ | दिसम्बर१२, तुलायां कुजः ५४।४०, प्रदोष १३ व्रतं, **मुण्डनं** कर्णविधो **द्विरागमनं विवाहो** गृहप्रवेशः पश्चिमां विना यात्रा चाश्विन्याम्। |
| ११ | १७ | २ | **प्रदोष** १४ व्रतं, भ. ४४।१६ उपरि। ◆ रोहिण्यां, भ. ११।३६ यावत्। |
| १२ | १८ | ३ | ज्येष्ठायां रविः ८।१८, **मार्गी १५** स्नानदानादिः, क्षेत्रस्नानं, हरिहरनाथपूजनदर्शनादिकं, दत्तात्रेयावतारः, द्विरागमनं पूर्वदक्षिणयात्रा च रोहिण्यां पूर्णिमायाम, **विवाहो** ◆ |

## मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च / दैनिकलग्नसारिणीचक्रम्

| ति.दि. | मंगलः | बुधः | गुरुः | शुक्रः | शनिः | केतुः | मिश्रमानं | मे.अं. | वृ.अं. | मि.अं. | क.अं. | सिं.अं. | कं.अं. | तु.अं. | वृ.अं. | ध.अं. | म.अं. | कुं.अं. | मी.अं. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ र. | ५।२२।२६।१३ | ७।२५।१४।४६ | ६।१५।५९।०५ | ६।२२।०९।३० | ८।००।११।४६ | ९।२७।१५।१५ | ४३।१८ | १७।१४ | १९।१० | २१।२३ | २३।४१ | १।५७ | ४।१२ | ६।२९ | ८।४६ | १०।५१ | १२।३७ | १४।०८ | १५।३७ |
| २ चं. | ५।२३।०३।२२ | ७।२६।०८।५३ | ६।१६।११।५३ | ६।२३।२४।३५ | ८।००।१८।०८ | ९।२७।१२।०५ | ४३।१७ | १७।१० | १९।०६ | २१।१९ | २३।३७ | १।५३ | ४।०८ | ६।२५ | ८।४२ | १०।४७ | १२।३३ | १४।०४ | १५।३३ |
| ३ मं. | ५।२३।४०।४० | ७।२६।३१।४१ | ६।१६।२४।५० | ६।२४।३९।५७ | ८।००।२४।४३ | ९।२७।०८।५४ | ४३।१५ | १७।०६ | १९।०२ | २१।१५ | २३।३३ | १।४९ | ४।०४ | ६।२१ | ८।३८ | १०।४३ | १२।२९ | १४।०० | १५।२९ |
| ४ बु. | ५।२४।१७।५७ | ७।२६।५४।२९ | ६।१६।३७।४७ | ६।२५।५५।१९ | ८।००।३१।१८ | ९।२७।०५।४३ | ४३।१४ | १७।०१ | १८।५७ | २१।१० | २३।२८ | १।४४ | ३।५९ | ६।१६ | ८।३३ | १०।३८ | १२।२४ | १३।५५ | १५।२४ |
| ५ बृ. | ५।२४।५५।१४ | ७।२७।१७।१७ | ६।१६।५०।४४ | ६।२७।१०।४१ | ८।००।३७।५२ | ९।२७।०२।३२ | ४३।१३ | १६।५७ | १८।५३ | २१।०६ | २३।२४ | १।४० | ३।५५ | ६।१२ | ८।२९ | १०।३४ | १२।२० | १३।५१ | १५।२० |
| ६ शु. | ५।२५।३२।३१ | ७।२७।४०।०५ | ६।१७।०३।४० | ६।२८।२६।०३ | ८।००।४४।२६ | ९।२६।५९।२१ | ४३।१२ | १६।५३ | १८।४९ | २१।०२ | २३।२० | १।३६ | ३।५१ | ६।०८ | ८।२५ | १०।३० | १२।१६ | १३।४७ | १५।१६ |
| ७ श. | ५।२६।०९।४८ | ७।२८।०२।५३ | ६।१७।१६।३६ | ६।२९।४१।२५ | ८।००।५१।०० | ९।२६।५६।१० | ४३।११ | १६।४९ | १८।४५ | २०।५८ | २३।१६ | १।३२ | ३।४७ | ६।०४ | ८।२१ | १०।२६ | १२।१२ | १३।४३ | १५।१२ |
| ८ र. | ५।२६।४७।०५ | ७।२८।२५।४० | ६।१७।२९।३२ | ७।००।५६।४७ | ८।००।५७।३४ | ९।२६।५२।५९ | ४३।१० | १६।४४ | १८।४० | २०।५३ | २३।११ | १।२७ | ३।४२ | ५।५९ | ८।१६ | १०।२१ | १२।०७ | १३।३८ | १५।०७ |
| ९ चं. | ५।२७।२४।२२ | ७।२८।२६।४८ | ६।१७।४२।२८ | ७।०२।१२।०९ | ८।०१।०४।०८ | ९।२६।४९।४९ | ४३।०९ | १६।४० | १८।३६ | २०।४९ | २३।०७ | १।२३ | ३।३८ | ५।५५ | ८।१२ | १०।१७ | १२।०३ | १३।३४ | १५।०३ |
| १० मं. | ५।२८।०१।२९ | ७।२८।०४।२४ | ६।१७।५५।०८ | ७।०३।२७।४५ | ८।०१।११।२१ | ९।२६।४६।३८ | ४३।०८ | १६।३६ | १८।३२ | २०।४५ | २३।०३ | १।१९ | ३।३४ | ५।५१ | ८।०८ | १०।१३ | ११।५९ | १३।३० | १४।५९ |
| ११ बु. | ५।२८।३८।३६ | ७।२७।४२।०० | ६।१८।०७।४८ | ७।०४।४३।२१ | ८।०१।१८।३४ | ९।२६।४३।२७ | ४३।०७ | १६।३२ | १८।२८ | २०।४१ | २२।५९ | १।१५ | ३।३० | ५।४७ | ८।०४ | १०।०९ | ११।५५ | १३।२६ | १४।५५ |
| १२ बृ. | ५।२९।१५।४३ | ७।२७।१९।३६ | ६।१८।२०।२८ | ७।०५।५८।५७ | ८।०१।२५।४७ | ९।२६।४०।१६ | ४३।०६ | १६।२७ | १८।२३ | २०।३६ | २२।५४ | १।१० | ३।२५ | ५।४२ | ७।५९ | १०।०४ | ११।५० | १३।२१ | १४।५० |
| १३ शु. | ५।२९।५२।५० | ७।२६।५७।१२ | ६।१८।३३।०८ | ७।०७।१४।३३ | ८।०१।३३।०० | ९।२६।३७।०५ | ४३।०५ | १६।२३ | १८।१९ | २०।३२ | २२।५० | १।०६ | ३।२१ | ५।३८ | ७।५५ | १०।०० | ११।४६ | १३।१७ | १४।४६ |
| १४ श. | ६।००।२९।५७ | ७।२६।३४।४९ | ६।१८।४५।४८ | ७।०८।३०।०८ | ८।०१।४०।१२ | ९।२६।३३।५४ | ४३।०५ | १६।१९ | १८।१५ | २०।२८ | २२।४६ | १।०२ | ३।१७ | ५।३४ | ७।५१ | ९।५६ | ११।४२ | १३।१३ | १४।४२ |
| १५ र. | ६।०१।०७।०४ | ७।२६।१२।२६ | ६।१८।५८।२८ | ७।०९।४५।४३ | ८।०१।४७।२४ | ९।२६।३०।४४ | ४३।०५ | १६।१५ | १८।११ | २०।२४ | २२।४२ | ०।५८ | ३।१३ | ५।३० | ७।४७ | ९।५२ | ११।३८ | १३।०९ | १४।३८ |

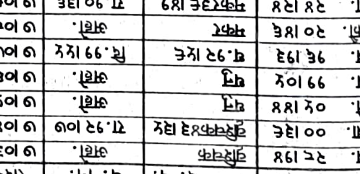
२ चन्द्रे वल्ली ८।३९।२०।१३

अयनांशाः २२।४६।४४




९ चन्द्रे वल्ली ८।३९।२०।२०

अयनांशाः २२।४६।४५




**विविधविषयाः—रवौ त्याज्यवस्तूनि–क्षारं तैलं जलं चोष्णमामिषं निशिभोजनम्।** रतिः स्नानं च मध्याह्ने रवौ सप्त विवर्जयेत्।। मार्गादिमासे **रविव्रतभक्ष्याणि** – पत्रत्रित्वं तुलस्यास्त्रिपलमथ घृतं मार्गशीर्षादिभक्ष्यं मुष्टीनां त्रिस्तिलानां त्रिपलदधि तथा दुग्धकं गोमयं च। त्रित्वं तोयांजलीनां त्रिमरीचकमथो त्रिःपलाः शक्तवः स्युर्गोमूत्रं शर्करा सद्धविरिति विधिना भानुवारे क्रमेण।। **रात्रौ लग्नज्ञानम्–** ध्रुवं परितो रक्तवर्णा शूलिनी श्वेतवर्णा चैकान्या तारा मेषान्मीनं यावद्भ्रमति। तत्र ध्रुवात्पश्चिमे मेषवृषौ, वायुकोणे मिथुनं, उत्तरस्यां कर्कसिंहौ, ईशाने कन्या, पूर्वस्यां तुलवृश्चिकौ, अग्निकोणे धनुः, दक्षिणस्यां मकरकुम्भौ नैर्ऋत्यां च मीनराशिर्वर्तते। यदा यत्र रक्तवर्णा शूलिनी तारका तदेव लग्नं तदानीमिति। **चन्द्रोदयास्तसाधनम्–** तिथिगुणितं रजनीपरिमाणं यमरहितं सहितं सितपक्षे। बाणशशाङ्कविभाजितलब्धं भवति विधूदयमस्तमयं च।। **यथा**–मार्गशुक्लपञ्चम्यां गुरौ रात्रिमानं ३३।३४, तदोक्तरीत्या(३३।३४)५= १६७।५०, १६७।५०+२।००=१६९।५०, १६९।५०÷१५=११।१९ दण्डादि। सूर्यास्त(५।१७) माने यथोक्तफलस्य घण्टामिण्टात्मकमान(४।३२)योजनेन घं. ९ मि. ४९ चन्द्रास्तमानमेवं कृष्णपक्षे चन्द्रोदयमानमिति।

**ग्रहस्थितिः–मार्गिणः** पूर्वोदिताः कुजगुरुशुक्राः, मार्गी पश्चिमोदितो बुधः ९ तो वक्री १२ तः पश्चिमास्तः, मार्गी पूर्वोदितः शनिः १० तः पश्चिमास्तः।

**वातावरणम्–** पक्षादिभागे वातशीतच्छिन्नवृष्टयस्तदन्तभागे वातहिमपातादयः।

# पौषकृष्णपक्षः

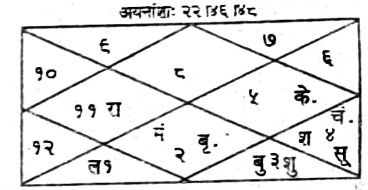
शकाब्दः १६३६, संवत् २०७४, सन् १४२५ साल, दि. ४।१२।२०१७ इ. तः दि. १८।१२।२०१७ इ. या., पूर्वे कालः। मार्गी पूर्वोदितो गुरुः, मार्गी पूर्वोदितः शुक्रः ३ तः क्षीणः, शुद्धः, ३ तोऽशुद्धः, हेमन्तर्तुः, याम्यगोलः, याम्यायनम्।

| तिथयः दिनानि | तिथयः द. प. | तिथयः घं. मि. | नक्षत्राणि द. प. | नक्षत्राणि घं. मि. | योगाः द. प. | करणानि द. प. | चन्द्रराशयः द. प. | चन्द्रराशयः घं. मि. | स्पष्टसूर्यः राश्यादिः | दिनमानं द. प. | सूर्योदयः घं. मि. | सूर्यास्तः घं. मि. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ च. | ३३।१६ | रा.०८।०४ | रो.०४।४२ | दि.०८।३६ | सि.००।५६ | बा.०६।०६ | वृ.३२।३७ | रा.०७।४६ | ७।१८।१६।२७ | २६।१० | ६।४६ | ५।१४ |
| २ मं. | २७।२६ | सं.०५।४४ | मृ.००।३३ | प्रा.०६।५६ | शु.४५।१४ | तै.०५।२१ | मिथुन | अहो. | ७।१९।१७।३८ | २६।०८ | ६।४६ | ५।१४ |
| ३ बु. | २१।२६ | दि.०३।२३ | पुन.५२।५२ | रा.०३।४० | शु.३७।२४ | वि.२१।२६ | मि.३८।१४ | रा.१०।०५ | ७।२०।१८।४६ | २६।०६ | ६।४७ | ५।१३ |
| ४ बृ. | १५।४७ | दि.०१।०६ | पु.४८।२६ | रा.०२।०६ | ब्र.२६।४३ | बा.१५।४७ | कर्क | अहो. | ७।२१।२०।०० | २६।०४ | ६।४७ | ५।१३ |
| ५ शु. | १०।३० | दि.१०।५६ | श्ले.४५।१० | रा.१२।५१ | ऐं.२२।२५ | तै.१०।३० | क.४५।१० | रा.१२।५१ | ७।२२।२१।११ | २६।०३ | ६।४७ | ५।१३ |
| ६ श. | ०५।४७ | दि.०९।०७ | म.४२।३६ | रा.११।५० | वै.१५।३८ | व.०५।४७ | सिंह | अहो. | ७।२३।२२।२२ | २६।०२ | ६।४८ | ५।१२ |
| ७ र. | ०१।५६ | दि.०७।३४ | पूफ.४०।५२ | रा.११।०९ | वि.०९।३१ | ब.०१।५६ | सिं.५५।४० | रा.०५।०४ | ७।२४।२३।३३ | २६।०१ | ६।४८ | ५।१२ |
| ९ चं. | ५७।०५ | रा.०५।३८ | उफ.४०।०९ | रा.१०।५२ | प्री.०४।१० | तै.२८।०१ | कन्या | अहो. | ७।२५।२४।४४ | २६।०० | ६।४८ | ५।१२ |
| १० मं. | ५६।२५ | रा.०५।२२ | ह.४०।३८ | रा.११।०३ | सौ.५६।०६ | व.२६।४५ | कन्या | अहो. | ७।२६।२६।०२ | २५।५८ | ६।४८ | ५।१२ |
| ११ बु. | ५७।०३ | रा.०५।३८ | चि.४२।२२ | रा.११।४६ | शो.५३।३२ | ब.२६।४४ | कं.११।३० | दि.११।२५ | ७।२७।२७।२० | २५।५६ | ६।४९ | ५।११ |
| १२ बृ. | ५९।०४ | रा.०६।२७ | स्वा.४५।२१ | रा.१२।५७ | अगं.५२।०३ | कौ.२८।०३ | तुला | अहो. | ७।२८।२८।३८ | २५।५४ | ६।४९ | ५।११ |
| १३ शु. | ६०।०० | अहो. | वि.४९।२८ | रा.०२।३६ | सु.५१।२३ | ग.३०।३६ | तुला३३।२७ | रा.०८।१२ | ७।२९।२९।५६ | २५।५३ | ६।४९ | ५।११ |
| १३ श. | ०२।०९ | दि.०७।४२ | अनु.५४।४३ | रा.०४।४३ | धृ.५१।३५ | व.०२।०९ | वृश्चिक | अहो. | ८।००।३१।१४ | २५।५२ | ६।५० | ५।१० |
| १४ र. | ०६।२३ | दि.०९।२३ | ज्ये.६०।०० | अहो. | शू.५२।२६ | श.०६।२३ | वृश्चिक | अहो. | ८।०१।३२।३१ | २५।५१ | ६।५० | ५।१० |
| ३० चं. | ११।२१ | दि.११।२२ | ज्ये.००।४१ | प्रा.०७।०६ | गं.५३।४० | ना.११।२१ | वृ.००।४१ | प्रा.०७।०६ | ८।०२।३३।४८ | २५।५० | ६।५० | ५।१० |

| दिनांकाः रा. | सौ. | अं. | |
|---|---|---|---|
| १३ | १९ | ४ | साध्यमानं ५२।११, कर्णवेधो मृगशिरसि, द्विरागमनं प्रतिपदि, विवाहो दिवारात्रौ, दक्षिणयात्रा रोहिण्यां ततः पूर्वां विना यात्रा प्रतिपदि। |
| १४ | २० | ५ | आर्द्रामानं ५५।४५, म. ५४।२७ उ., उत्तरां विना यात्रा मृगशिरसि, दक्षिणपश्चिमयात्रा पुनर्वसौ। |
| १५ | २१ | ६ | क्षीणः शुक्रः अशुद्धारंभश्च २९।३१ उ., लम्बोदर ४ व्रतं, मुण्डनं कर्णवेधश्च तृतीयायां, म. २१।२६ यावत्। |
| १६ | २२ | ७ | मुण्डनं पञ्चम्यां, द्विरागमनं दक्षिणां विना यात्रा च पञ्चम्यां पुष्ये। |
| १७ | २३ | ८ | .गं.३४।१० उ. ४९।१० या., (५-६ एको.), शकुनम्-पौषादितो मासचतुष्टयेषु यस्यां तिथौ तोयधरो हि दृश्यः। |
| १८ | २४ | ९ | पूर्वास्तः शुक्रः २९।३१, सप्तम्यां मेघदर्शने सत्यार्द्रायां श्रावण्याञ्च सुवृष्टिः, म. ५।४७ उ. ३३।५१ या., उत्तरयात्रा पूर्वफल्गुन्याम् |
| १९ | २५ | १० | अष्टमीमानं ५७।०२, अपूपाष्टका, पूर्वोत्तरयात्रा पूर्वफल्गुन्याम्। |
| २० | २६ | ११ | आयुष्मानमानं ५५।२८, अन्वष्टका, द.ति. ५७।०५ उपरि। |
| २१ | २७ | १२ | द.ति. ५६।२५ या., म. २६।४५ उ. ५६।२५ यावत्। तत्सप्तमे मासि तिथौ च तस्यां वृष्टिः प्रवाच्या नियमेन विज्ञैः।। |
| २२ | २८ | १३ | सफला ११ व्रतं स्मार्तानां, पूर्वदक्षिणयात्रा कन्यास्थे चन्द्रे ततः पश्चिमदक्षिणयात्रा। |
| २३ | २९ | १४ | सफला ११ व्रतं वैष्णवानां, गोमयेन पारणं, पश्चिमयात्रा स्वात्याम्। |
| २४ | ३० | १५ | मासान्तः, प्रदोष १३ व्रतं, त्र्यहोजन्मदिनकृत्यम्। |
| २५ | १ | १६ | मूले धनुषि रविः १२।२२ मु. ३० फलं साम्यं, षडशीतिसंक्रान्तिपुण्यकालो घं. ११ मि. ४७ उ. सूर्यास्तं यावत्, पुण्याहः, प्रदोष १४ व्रतं, म. ०२।०६ उ. ३४।२६ यावत्। |
| २६ | २ | १७ | मासादिः, पूर्वोदितो बुधः ००।५६, गं. ५४।४१ उपरि। |
| २७ | ३ | १८ | पौषी ३० स्नानदानादिः, सोमवारीव्रतं घं.११ मि.२२ दिनं या., दशतारकारंभो ००।४९उ., तत्र वाताभ्रगर्जनतडिदुदकशीतादिभिरभ्रिमवर्षस्य वृष्टिविचारो विधेयः, गं. ०९।४१ या., (१ एको.)। |

३० चन्द्रे वल्ली ८।३६।२०।४१

अयनांशाः २२।३६।४८




## मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तर गतिश्च

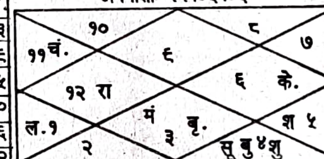
| ति.दि. | मंगलः | बुधः | गुरुः | शुक्रः | शनिः | केतुः |
|---|---|---|---|---|---|---|
| १ च. | ६।०१।४४।११ | ७।२५।५०।०३ | ६।१९।११।०७ | ७।११।०१।१८ | ८।०१।५४।३६ | ९।२६।२७।३४ |
| २ मं. | ६।०२।२१।१८ | ७।२५।०१।५८ | ६।१९।२३।१७ | ७।१२।१६।५२ | ८।०२।०१।४६ | ९।२६।२४।२३ |
| ३ बु. | ६।०२।५८।२५ | ७।२४।१३।५३ | ६।१९।३५।२७ | ७।१३।३२।२६ | ८।०२।०८।५६ | ९।२६।२१।१२ |
| ४ बृ. | ६।०३।३५।३२ | ७।२३।२५।४९ | ६।१९।४७।३७ | ७।१४।४८।०० | ८।०२।१६।०६ | ९।२६।१८।०१ |
| ५ शु. | ६।०४।१२।३८ | ७।२२।३७।४५ | ६।१९।५९।४७ | ७।१६।०३।३४ | ८।०२।२३।१६ | ९।२६।१४।५० |
| ६ श. | ६।०४।४९।४४ | ७।२१।४९।४१ | ६।२०।११।५७ | ७।१७।१९।०८ | ८।०२।३०।२६ | ९।२६।११।३९ |
| ७ र. | ६।०५।२६।५० | ७।२१।०१।३७ | ६।२०।२४।०७ | ७।१८।३४।४२ | ८।०२।३७।३५ | ९।२६।०८।२९ |
| ९ चं. | ६।०६।०३।५६ | ७।२०।१३।३३ | ६।२०।३६।१७ | ७।१९।५०।१६ | ८।०२।४४।४४ | ९।२६।०५।१९ |
| १० मं. | ६।०६।४०।५३ | ७।१९।४३।०९ | ६।२०।४८।१५ | ७।२१।०६।०५ | ८।०२।५२।११ | ९।२६।०२।०८ |
| ११ बु. | ६।०७।१७।४९ | ७।१९।१२।४६ | ६।२१।००।१३ | ७।२२।२१।५४ | ८।०२।५९।३७ | ९।२५।५८।५७ |
| १२ बृ. | ६।०७।५४।४५ | ७।१८।४२।२३ | ६।२१।१२।११ | ७।२३।३७।४३ | ८।०३।०७।०३ | ९।२५।५५।४६ |
| १३ शु. | ६।०८।३१।४१ | ७।१८।१२।०० | ६।२१।२४।०९ | ७।२४।५३।३२ | ८।०३।१४।२९ | ९।२५।५२।३५ |
| १३ श. | ६।०९।०८।३७ | ७।१७।४१।३७ | ६।२१।३६।०७ | ७।२६।०९।२१ | ८।०३।२१।५५ | ९।२५।४९।२४ |
| १४ र. | ६।०९।४५।३३ | ७।१७।११।१४ | ६।२१।४८।०५ | ७।२७।२५।१० | ८।०३।२९।२१ | ९।२५।४६।१४ |
| ३० चं. | ६।१०।२२।२९ | ७।१६।४०।५१ | ६।२२।००।०३ | ७।२८।४०।५९ | ८।०३।३६।४७ | ९।२५।४३।०४ |

## दैनिकलग्नसारिणीचक्रम्

| ति.दि. | मिश्रमानं | मे.अं. | वृ.अं. | मि.अं. | क.अं. | सिं.अं. | कं.अं. | तु.अं. | वृ.अं. | ध.अं. | म.अं. | कुं.अं. | मी.अं. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ च. | ४३।०५ | १६।१० | १८।०६ | २०।१९ | २२।३७ | ०।५३ | ३।०८ | ५।२५ | ७।४२ | ९।४७ | ११।३३ | १३।०४ | १४।३३ |
| २ मं. | ४३।०४ | १६।०६ | १८।०२ | २०।१५ | २२।३३ | ०।४९ | ३।०४ | ५।२१ | ७।३८ | ९।४३ | ११।२९ | १३।०० | १४।२९ |
| ३ बु. | ४३।०३ | १६।०२ | १७।५८ | २०।११ | २२।२९ | ०।४५ | ३।०० | ५।१७ | ७।३४ | ९।३९ | ११।२५ | १२।५६ | १४।२५ |
| ४ बृ. | ४३।०२ | १५।५७ | १७।५३ | २०।०६ | २२।२४ | ०।४० | २।५५ | ५।१२ | ७।२९ | ९।३४ | ११।२० | १२।५१ | १४।२० |
| ५ शु. | ४३।०१ | १५।५३ | १७।४९ | २०।०२ | २२।२० | ०।३६ | २।५१ | ५।०८ | ७।२५ | ९।३० | ११।१६ | १२।४७ | १४।१६ |
| ६ श. | ४३।०० | १५।४९ | १७।४५ | १९।५८ | २२।१६ | ०।३२ | २।४७ | ५।०४ | ७।२१ | ९।२६ | ११।१२ | १२।४३ | १४।१२ |
| ७ र. | ४३।०० | १५।४५ | १७।४१ | १९।५४ | २२।१२ | ०।२८ | २।४३ | ५।०० | ७।१७ | ९।२२ | ११।०८ | १२।३९ | १४।०८ |
| ९ चं. | ४३।०० | १५।४० | १७।३६ | १९।४९ | २२।०७ | ०।२३ | २।३८ | ४।५५ | ७।१२ | ९।१७ | ११।०३ | १२।३४ | १४।०३ |
| १० मं. | ४२।५९ | १५।३६ | १७।३२ | १९।४५ | २२।०३ | ०।१९ | २।३४ | ४।५१ | ७।८ | ९।१३ | १०।५९ | १२।३० | १३।५९ |
| ११ बु. | ४२।५८ | १५।३२ | १७।२८ | १९।४१ | २१।५९ | ०।१५ | २।३० | ४।४७ | ७।४ | ९।०९ | १०।५५ | १२।२६ | १३।५५ |
| १२ बृ. | ४२।५७ | १५।२८ | १७।२४ | १९।३७ | २१।५५ | ०।११ | २।२६ | ४।४३ | ७।०० | ९।०५ | १०।५१ | १२।२२ | १३।५१ |
| १३ शु. | ४२।५६ | १५।२३ | १७।१९ | १९।३२ | २१।५० | ०।०६ | २।२१ | ४।३८ | ६।५५ | ९।०० | १०।४६ | १२।१७ | १३।४६ |
| १३ श. | ४२।५५ | १५।१९ | १७।१५ | १९।२८ | २१।४६ | ०।०२ | २।१७ | ४।३४ | ६।५१ | ८।५६ | १०।४२ | १२।१३ | १३।४२ |
| १४ र. | ४२।५५ | १५।१४ | १७।१० | १९।२३ | २१।४१ | २३।५७ | २।१२ | ४।२९ | ६।४६ | ८।५१ | १०।३७ | १२।०८ | १३।३७ |
| ३० चं. | ४२।५५ | १५।१० | १७।०६ | १९।१९ | २१।३७ | २३।५३ | २।०८ | ४।२५ | ६।४२ | ८।४७ | १०।३३ | १२।०४ | १३।३३ |

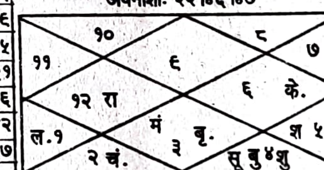
१ चन्द्रे वल्ली ८।३६।२०।२७

अयनांशाः २२।४६।४६




९ चन्द्रे वल्ली ८।३६।२०।३४

अयनांशाः २२।४६।४७




**विविधविषयाः-दशतारकविचारः**-पौषे मूलभरण्यन्तं चन्द्रचारेण गर्भति। आर्द्रादितो विशाखान्तं सूर्यचारेण वर्षति।। एवं चैत्रे तथा ज्येष्ठे शुक्लपक्षे प्रयत्नतः। आर्द्रादिदशताराणां ज्ञात्वा गर्भं वदेत्फलम्।

**गर्भपुष्टिविचारः**- वाताभ्रगर्जत्तडितोदकानि हिमप्रपातः करकावघातः। अकालसन्ध्यापरिवेषणञ्च नवप्रकारैः प्रभवन्ति गर्भाः।। तत्र पुष्टे गर्भे सुवृष्टिः समे मध्यमा वृष्टिर्हीने चाल्पा वृष्टिरिति। **गोचरशन्यादिविचारः**- द्विजन्मनि पंचमसप्तमगाश्चतुराष्टकद्वादशधर्मयुताः। धनधान्यहिरण्यविनाशकरा रविराहुशनैश्चरभूमिसुताः।।

**शनेर्विशेषः-यदि** स्वजन्मराशितः शनिराशिसंचारकाले चन्द्रो निम्नलिखितस्थानेषु भवेत्तदा तस्य निम्नलिखितानि पदानि भवेयुः-जन्मांगरुद्रेषु सुवर्णपादं द्विपञ्चनन्दैः रजतस्य पादम्। त्रिसप्तदिक् ताम्रपदं वदन्ति वेदाष्टसूर्येष्विह लौहपादम्।। तत्फलम्-लौहे वित्तविनाशः स्यात्सर्वसौख्यञ्च काञ्चने। ताम्रे च समता ज्ञेया सौभाग्यं राजते भवेत्।। अनिष्टफलदायकशनेर्जपः कार्यः लौहञ्च धार्यम्। शनावश्वत्थमूले जलादिभिः पूजनं शनिस्तवश्च पठितव्यः। शनिस्तोत्रं - पिप्पलाद उवाच - नमस्ते कोणसंस्थाय पिंगलाक्षाय ते नमः। नमस्ते बभ्रुरूपाय कृष्णाय च नमोस्तुते।। नमस्ते रौद्रदेहाय नमस्ते चान्तकाय च। नमस्ते यमसंज्ञाय नमस्ते सौरये विभो।। ननस्ते मन्दसंज्ञाय शनैश्चर नमोऽस्तुते। प्रसादं कुरु देवेश दीनस्य प्रणतस्य मे।।

**ग्रहस्थितिः**- मार्गिणौ पूर्वोदितौ कुजगुरू, वक्री पश्चिमास्तो बुधः १४ तः पूर्वोदितः, मार्गी पूर्वोदितः शुक्रः ६ तः पूर्वास्तः, मार्गी पश्चिमास्तः शनिः।

**वातावरणम्** - पक्षादिभागे मेघचारहिमपातवातादयस्तदन्तभागे शीतवृद्धिच्छिन्नवृष्टिमेघचारादयः।

## पौषशुक्लपक्षः

शकाब्दः १९३९, संवत् २०७४, सन् १४२५ साल, दि. १९।१२।१७ ई. तः दि. ०२।०१।१८ ई. या., पूर्वे कालः।
मार्गी पूर्वोदितो गुरुः, मार्गी पूर्वास्तः शुक्रः, अशुद्धः, हेमन्तर्तुः, याम्यगोलः, याम्यायनम्।

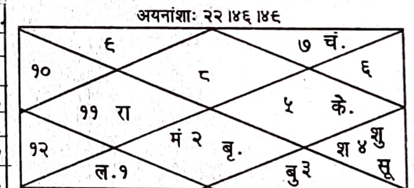
| तिथयः दिनानि | तिथयः द. प. | घं. मि. | नक्षत्राणि द. प. | घं. मि. | योगाः द. प. | करणानि द. प. | चन्द्रराशयः द. प. | घं. मि. | स्पष्टसूर्यः राश्यादिः | दिनमानं द. प. | सूर्योदयः घं. मि. | सूर्यास्तः घं. मि. | दिनांकाः रा. | सौ. | अं. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ म. | १६।४५ | दि.०१।३२ | मू.०७।१३ | दि.०९।४३ | वृ.५४।५६ | ब.१६।४५ | धनु | अहो. | ८।०३।३५।११ | २५।४६ | ६।५० | ५।१० | २८ | ४ | १९ |
| २ बु. | २२।०७ | दि.०३।४१ | पूषा.१३।४४ | दि.१२।२० | ध्रु.५६।०७ | कौ.२२।०७ | ध.३०।१९ | सं.०६।५६ | ८।०४।३६।३४ | २५।४८ | ६।५० | ५।१० | २९ | ५ | २० |
| ३ वृ. | २७।०१ | सं.०५।३८ | उषा.१९।५१ | दि.०२।४६ | व्या.५६।४८ | ग.२७।०१ | मकर | अहो. | ८।०५।३७।५७ | २५।४८ | ६।५० | ५।१० | ३० | ६ | २१ |
| ४ शु. | ३१।१० | रा.०७।१८ | श्र.२५।१७ | दि.०४।५७ | ह.५६।४४ | वि.३१।१० | म.५७।३० | रा.०५।५० | ८।०६।३९।१९ | २५।४८ | ६।५० | ५।१० | १ | ७ | २२ |
| ५ श. | ३४।१० | रा.०८।३० | ध.२९।४४ | सं.०६।४४ | व.५५।४९ | ब.०२।४० | कुम्भ | अहो. | ८।०७।४०।४१ | २५।४८ | ६।५० | ५।१० | २ | ८ | २३ |
| ६ र. | ३६।०५ | रा.०९।१६ | शत.३३।०१ | रा.०८।०२ | सि.५३।५७ | कौ.०५।०७ | कुम्भ | अहो. | ८।०८।४२।०३ | २५।४८ | ६।५० | ५।१० | ३ | ९ | २४ |
| ७ चं. | ३६।३७ | रा.०९।२९ | पूभा.३५।०१ | रा.०८।५० | व्य.५१।०५ | ग.०६।२१ | कु.१९।३१ | दि.०२।३८ | ८।०९।४३।२५ | २५।४८ | ६।५० | ५।१० | ४ | १० | २५ |
| ८ मं. | ३५।५३ | रा.०९।११ | उभा.३५।३७ | रा.०९।०९ | व.४७।१३ | वि.०६।१५ | मीन | अहो. | ८।१०।४४।५१ | २५।४९ | ६।५० | ५।१० | ५ | ११ | २६ |
| ९ बु. | ३३।५३ | रा.०८।२३ | रे.३५।२० | रा.०८।५८ | प.४२।२४ | बा.०४।५३ | मी.३५।२० | रा.०८।५८ | ८।११।४६।१७ | २५।५० | ६।५० | ५।१० | ६ | १२ | २७ |
| १० वृ. | ३०।५१ | रा.०७।१० | अ.३३।४९ | रा.०८।२२ | शि.३६।४४ | तै.०२।२२ | मेष | अहो. | ८।१२।४७।४२ | २५।५१ | ६।५० | ५।१० | ७ | १३ | २८ |
| ११ शु. | २६।५४ | सं.०५।३६ | भ.३१।३१ | रा.०७।२६ | सि.३०।२७ | वि.२६।५४ | मे.४५।४४ | रा.०१।०८ | ८।१३।४९।०७ | २५।५२ | ६।५० | ५।१० | ८ | १४ | २९ |
| १२ श. | २२।०८ | दि.०३।४० | कृ.२८।२३ | सं.०६।१० | सा.२३।२८ | बा.२२।०८ | वृष | अहो. | ८।१४।५०।३२ | २५।५३ | ६।४९ | ५।११ | ९ | १५ | ३० |
| १३ र. | १६।५० | दि.०१।३३ | रो.२४।४४ | दि.०४।५३ | शु.१६।०१ | तै.१६।५० | वृ.५२।४४ | रा.०३।५५ | ८।१५।५१।५७ | २५।५४ | ६।४९ | ५।११ | १० | १६ | ३१ |
| १४ चं. | ११।०८ | दि.११।१९ | मृ.२०।४३ | दि.०३।०६ | शु.०८।१७ | व.११।०८ | मिथुन | अहो. | ८।१६।५३।२२ | २५।५६ | ६।४९ | ५।११ | ११ | १७ | १ |
| १५ मं. | ०५।१५ | दि.०८।५४ | आ.१६।२९ | दि.०१।२४ | ब्र.००।२३ | ब.०५।१५ | मि.५८।२६ | रा.०६।१० | ८।१७।५४।४८ | २५।५८ | ६।४८ | ५।१२ | १२ | १८ | २ |

मूले **धनुषि शुक्रः** ४५।२०, पौषे **कौशिकीस्नानं** महापुण्यप्रदं, द.ति. १६।४५ उपरि।
चन्द्रदर्शनं मु. ४५ **सौम्यशृंगफलं समर्घं, मार्गी बुधः** २८।५८, द.ति. २२।०७ या., (२ एको.)।
गणेश ४ व्रतं, भ. ५९।०५ उ., दक्षिणां विना यात्रा तृतीयाश्रवणयोः।
**पंचकारंभो** दिवा घं. ४ मि. ५७ उ., भ. ३१।१० या., पश्चिमां विना यात्रा श्रवणायां ततः पूर्वयात्रा मकरस्थे **चन्द्रे**।
शकुनम् - पौषस्य यदि पंचम्यां शुक्लायां हिमवर्षणम्। तदा स्यान्महती वृष्टिः प्रावृट्काले न संशयः।।
शकुनम् - पौषे मेघः शुक्लषष्ठ्यां श्रावणे तर्हि वर्षणम्। यदि वृष्टिः पौषषष्ठ्यां भाद्रकृष्णे घनोदयः।।
**गुरुगोविन्दसिंहजयन्ती,** भ. ३६।३७ उपरि।
भ. ०९।१५ या., पश्चिमयात्रा रेवत्याम्।
**पंचकान्तो** रात्रौ घं. ८ मि. ५८ उ., गं. २३।२० उ. ३८।२० या., पश्चिमयात्रा दशम्यां रेवत्यां तत उत्तरां **विना यात्रा**।
कर्म १०, **विश्वकर्मार्चा, दशतारकान्तो** ३३।४९ उ., भ. ५८।५२ उ., दक्षिणां विना यात्राश्विन्याम्।
पूर्वाषाढे **रविः** १४।२८, **पुत्रदा** ११ व्रतं सर्वेषां, **धर्मसावर्णिमन्वादिः,** भ. २६।५४ यावत्।
गोमयेन पारणं, नारायण १२, **प्रदोष** १३ व्रतं, दक्षिणयात्रा रोहिण्याम्।
प्रदोष १४ व्रतं, पूर्वदक्षिणयात्रा त्रयोदश्याम्। 卐 **शाकम्भरीजयन्ती, लक्ष्मणसंवत्९०९** प्रारंभः प्रतिपत्तः, द.ति. ५९।२४ उ., पश्चिमयात्रा द्वितीयायाम्।।
जनवरी **२०१८,** भ. ११।०८ उ. ३८।११ या., पूर्वां विना यात्रा पूर्णिमायां मृगशिरसि, (१४-१५ एको.)।
प्रतिपन्मानं५४।९,ऐन्द्रमानं ५२।०६,**पौषी**१५स्नानदानादिः,**कौशिकीस्नानं तन्मन्त्रश्च**-गाधिराजसुते देवि विश्वामित्रमुनेः **स्वसः**। ऋचीकभार्ये सत्यार्ये पापं मे हर कौशिकि।।卐

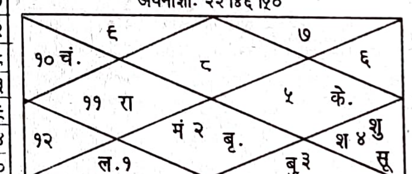
### मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च — दैनिकलग्नसारिणीचक्रम्

| ति.दि. | मंगलः | बुधः | गुरुः | शुक्रः | शनिः | केतुः | मिश्रमानं | मे.अं. | वृ.अं. | मि.अं. | क.अं. | सिं.अं | कं.अं. | तु.अं. | वृ.अं. | ध.अं. | म.अं. | कुं.अं. | मी.अं. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ म. | ६।१०।५९।२४ | ७।१६।३३।२१ | ६।२२।११।२३ | ७।२९।५६।५५ | ८।०३।४३।२५ | ६।२५।३९।५३ | ४२।५४ | १५।०५ | १७।०१ | १९।१४ | २१।३२ | २३।४८ | २।०३ | ४।२० | ६।३७ | ८।४२ | १०।२८ | ११।५९ | १३।२८ |
| २ बु. | ६।११।३६।१९ | ७।१६।३१।५६ | ६।२२।२२।४२ | ८।०१।१२।५० | ८।०३।५०।०३ | ६।२५।३६।४२ | ४२।५४ | १५।०१ | १६।५७ | १९।१० | २१।२८ | २३।४४ | १।५९ | ४।१६ | ६।३३ | ८।३८ | १०।२४ | ११।५५ | १३।२४ |
| ३ वृ. | ६।१२।१३।१४ | ७।१६।३६।०८ | ६।२२।३४।०१ | ८।०२।२८।४५ | ८।०३।५६।४१ | ६।२५।३३।३१ | ४२।५४ | १४।५६ | १६।५२ | १९।०५ | २१।२३ | २३।३९ | १।५४ | ४।११ | ६।२८ | ८।३३ | १०।१९ | ११।५० | १३।१९ |
| ४ शु. | ६।१२।५०।०९ | ७।१६।५६।४८ | ६।२२।४५।२० | ८।०३।४४।४० | ८।०४।०३।१९ | ६।२५।३०।२० | ४२।५४ | १४।५२ | १६।४८ | १९।०१ | २१।१९ | २३।३५ | १।५० | ४।०७ | ६।२४ | ८।२९ | १०।१५ | ११।४६ | १३।१५ |
| ५ श. | ६।१३।२७।०४ | ७।१७।१७।२८ | ६।२२।५६।३९ | ८।०५।००।३५ | ८।०४।०९।५७ | ६।२५।२७।०९ | ४२।५४ | १४।४७ | १६।४३ | १८।५६ | २१।१४ | २३।३० | १।४५ | ४।०२ | ६।१९ | ८।२४ | १०।१० | ११।४१ | १३।१० |
| ६ र. | ६।१४।०३।५८ | ७।१७।३८।०८ | ६।२३।०७।५८ | ८।०६।१६।३० | ८।०४।१६।३४ | ६।२५।२३।५८ | ४२।५४ | १४।४३ | १६।३९ | १८।५२ | २१।१० | २३।२६ | १।४१ | ३।५८ | ६।१५ | ८।२० | १०।०६ | ११।३७ | १३।०६ |
| ७ च. | ६।१४।४०।५२ | ७।१७।५८।४८ | ६।२३।१९।१७ | ८।०७।३२।२५ | ८।०४।२३।११ | ६।२५।२०।४८ | ४२।५४ | १४।३८ | १६।३४ | १८।४७ | २१।०५ | २३।२१ | १।३६ | ३।५३ | ६।१० | ८।१५ | १०।०१ | ११।३२ | १३।०१ |
| ८ म. | ६।१५।१७।५० | ७।१८।४६।४० | ६।२३।३०।०६ | ८।०८।४८।२५ | ८।०४।३०।२४ | ६।२५।१७।३७ | ४२।५४ | १४।३४ | १६।३० | १८।४३ | २१।०१ | २३।१७ | १।३२ | ३।४९ | ६।०६ | ८।११ | ९।५७ | ११।२८ | १२।५७ |
| ९ बु. | ६।१५।५४।४८ | ७।१९।३४।३२ | ६।२३।४०।५४ | ८।१०।०४।२५ | ८।०४।३७।३६ | ६।२५।१४।२६ | ४२।५४ | १४।२९ | १६।२५ | १८।३८ | २०।५६ | २३।१२ | १।२७ | ३।४४ | ६।०१ | ८।६ | ९।५२ | ११।२३ | १२।५२ |
| १० वृ. | ६।१६।३१।४६ | ७।२०।२२।२३ | ६।२३।५१।४२ | ८।११।२०।२५ | ८।०४।४४।४८ | ६।२५।११।१५ | ४२।५४ | १४।२५ | १६।२१ | १८।३४ | २०।५२ | २३।०८ | १।२३ | ३।४० | ५।५७ | ८।२ | ९।४८ | ११।१९ | १२।४८ |
| ११ शु. | ६।१७।०८।४४ | ७।२१।१०।१४ | ६।२४।०२।३० | ८।१२।३६।२५ | ८।०४।५२।०० | ६।२५।०८।०४ | ४२।५५ | १४।२० | १६।१६ | १८।२९ | २०।४७ | २३।०३ | १।१८ | ३।३५ | ५।५२ | ७।५७ | ९।४३ | ११।१४ | १२।४३ |
| १२ श. | ६।१७।४५।४२ | ७।२१।५८।०५ | ६।२४।१३।१८ | ८।१३।५२।२४ | ८।०४।५९।१२ | ६।२५।०४।५३ | ४२।५६ | १४।१६ | १६।१२ | १८।२५ | २०।४३ | २२।५९ | १।१४ | ३।३१ | ५।४८ | ७।५३ | ९।३९ | ११।१० | १२।३९ |
| १३ र. | ६।१८।२२।४० | ७।२२।४५।५६ | ६।२४।२४।०६ | ८।१५।०८।२३ | ८।०५।०६।२४ | ६।२५।०१।४३ | ४२।५७ | १४।११ | १६।०७ | १८।२० | २०।३८ | २२।५४ | १।०९ | ३।२६ | ५।४३ | ७।४८ | ९।३४ | ११।०५ | १२।३४ |
| १४ च. | ६।१८।५९।३८ | ७।२३।३३।४७ | ६।२४।३४।५४ | ८।१६।२४।२२ | ८।०५।१३।३६ | ६।२४।५८।३३ | ४२।५८ | १४।०७ | १६।०३ | १८।१६ | २०।३४ | २२।५० | १।०५ | ३।२२ | ५।३९ | ७।४४ | ९।३० | ११।०१ | १२।३० |
| १५ म. | ६।१९।३६।१४ | ७।२४।४७।२५ | ६।२४।४५।०५ | ८।१७।४०।२२ | ८।०५।२०।४५ | ६।२४।५५।२२ | ४२।५९ | १४।०२ | १५।५८ | १८।११ | २०।२९ | २२।४५ | १।०० | ३।१७ | ५।३४ | ७।३९ | ९।२५ | १०।५६ | १२।२५ |

७ चन्द्रे वल्ली ८।३९।२०।४८
अयनांशाः २२।४६।४९




१४ चन्द्रे वल्ली ८।३९।२०।५५
अयनांशाः २२।४६।५०




**विविधविषयाः**-वैष्णवानामेकादशीव्रत**निर्णयः**-दशमी पञ्चपञ्चाशत् घटिका चेत् प्रदृश्यते। तर्हि चैकादशी त्याज्या द्वादशीं समुपोषयेत्।। दशमीपलमात्रेण त्याज्या चैकादशी तिथिः। मदिराविन्दुपातेन त्याज्यो गंगाघटो यथा।। **नारदपुराणे**-क्षये वाप्यथवा वृद्धौ संप्राप्ते वा दिनत्रये। उपोष्या द्वादशी तत्र त्रयोदश्यां तु पारणम्।। **कौर्मे** - तिथिक्षये तु संप्राप्ते उपोष्या द्वादशी भवेत्। दशमीशेषसंयुक्तां न कुर्वीत कदाचन।। **भविष्ये** - दशमीशेषसंयुक्तो यदि स्याद् अरुणोदयः। वैष्णवेन न कर्त्तव्यं तद्दिनैकादशीव्रतम्।। अरुणोदयवेधस्तु वैष्णवेषु प्रकीर्तितः।। **अरुणोदयकालो** ब्रह्मवैवर्त्ते-**चतस्रो** घटिकाः प्रातररुणोदय उच्यते। यतीनां स्नानकालोऽयं गंगाम्भः सदृशं फलम्।। एकादश्यां **त्याज्यवस्तूनि**- कांस्यं मांसं मसूरान्नं चणकं कोद्रवं तथा। शाकं मधु परान्नञ्च पुनर्भोजनमैथुने।। **केषामन्नं परान्नं नेत्याह** - गुर्वन्नं मातुलान्नं च श्वसुरान्नं तथैव च। पितुः पौत्रस्य चैवान्नं न परान्नमिति स्मृतिः।। **स्वपवित्रवस्तूनि**- आसनं वसनं शय्या जायाऽपत्यं कमण्डलुः। आत्मनः शुचिरेतानि न परेषां कदाचन।। **अशक्तादिषु विशेषमाह कात्यायनः**-अशक्तौ निर्जने देशे मृते जाते च सूतके। जपेच्च मानसीं सन्ध्यां कुशवारिविवर्जिताम्।।

**ग्रहस्थितिः**- मार्गिणौ पूर्वोदितौ कुजगुरू, वक्री पूर्वोदितो बुधः २ तो मार्गी, मार्गी पूर्वास्तः शुक्रः, मार्गी पश्चिमास्तः शनिः।

**वातावरणम्** - पक्षादिभागे हिमपातच्छिन्नवृष्टिवातयोगस्तदन्तभागे वातशीतवृद्धियोगः।

# माघकृष्णपक्षः

शकाब्दः १९३९, संवत् २०७४, सन् १४२५ साल, दि. ३।१।१८ ई. तः दि. १७।१।१८ ई. या., पूर्वे कालः।
मार्गी पूर्वोदितो गुरुः, मार्गी पूर्वास्तः शुक्रः, अशुद्धः, हेमन्तर्तुः, याम्यगोलायने, १३ तः शिशिरर्तुस्सौम्यायनञ्च।

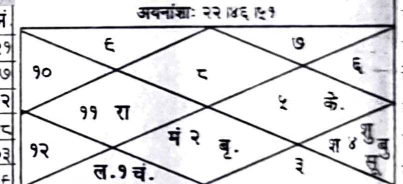
| रा. | सौ. | अं. | |
|---|---|---|---|
| १३ | १९ | ३ | माघे कमलास्नानं पुण्यप्रदम्, द.ति. ५३।४४ यावत्। |
| १४ | २० | ४ | दक्षिणां विना यात्रा पुष्ये, गं. ५४।०८ उ., म. २१।०७ उ. ४८।३१ यावत्। |
| १५ | २१ | ५ | भालचन्द्र ४ व्रतम्, गं.६।०८ यावत्। मकरसंक्रान्तिपुण्यकालः-सूर्यसिद्धान्ताद्यार्षग्रन्थमतानुसारं मध्यरात्रि एव बाग्बृहित्यन्तर्गतविस्क्रमे तन्निशीथद्वयान्तर्गतदिनमेव ❖ |
| १६ | २२ | ६ | मूले धनुषि बुधः ५७।४६, उत्तरयात्रा षष्ठ्याम्। ❖ पुण्याहः पुण्यकालश्च दिनपूर्वापरविभागेनेति त्रयोदश्यां रवौ मकरसंक्रमणपुण्याहः। |
| १७ | २३ | ७ | उत्तरफल्गुनीमानम् ५९।०३, म. ३७।१५ उ., पूर्वदक्षिणयात्रा हस्ते। |
| १८ | २४ | ८ | रामानन्दाचार्यजयन्ती, दक्षिणयात्राष्टम्याम्, म. ०६।२२ यावत्। |
| १९ | २५ | ९ | पूर्वोदितः शनिः ०१।२८, अष्टका, पूर्वदक्षिणयात्रा कन्यास्थे चन्द्रे ततो दक्षिणपश्चिमयात्रा। |
| २० | २६ | १० | अन्वष्टका, पश्चिमदक्षिणयात्रा दशम्याम्। |
| २१ | २७ | ११ | उत्तराषाढे रविः १६।१३, म. ०६।४७ उ. ३७।५३ या., पश्चिमयात्रा स्वात्याम्। |
| २२ | २८ | १२ | षट्तिला ११ व्रतं सर्वेषां, मकरे शुक्रः २९।०४, उत्तरयात्रानुराधैकादश्योः। 🔔शिवलिंगोद्भवदिनं, म. २३।१० यावत्। |
| २३ | २९ | १३ | गोदुग्धेन पारणम्, मासान्तः। 🪔 प्रयागे कल्पवासारंभः, सौम्यायनारंभः गुद्धारंभश्च ३१।४५ उ., प्रदोष १३ व्रतं, गं. १२।४७ उ. २७।४७ या.,म.५०।२७ उपरि। |
| २४ | १ | १४ | मकरे रविः ३१।४५ मु. ३० फलं साम्यं, सौम्यायनसंक्रान्तिपुण्यकालो घं.१२ मि.० उ. सूर्यास्तं यावत्, पुण्याहः, तिलसंक्रान्तिः, माघस्नानारंभः🪔 |
| २५ | २ | १५ | मासादिः, प्रदोष १४ व्रतं, नक्तव्रतं, नरकनिवारण १४ व्रतं, प्रदोषः घं.६ मि.५१ यावद्रात्रौ शिवार्चनं सहस्राश्वमेधसमफलदं, श्रीकुरेश्वरकपिलेश्वरप्रतिष्ठादिनं🔔 |
| २६ | ३ | १६ | माघी३०, मौनी३०, भौमवती३० गंगास्नानदानादावतीव पुण्यदा-अमावास्या यदा वारो भवेद्भूमिसुतस्य च। गंगायां यदि लभ्येत कोटिसूर्यग्रहैः समा।। कलियुगादिः● |
| २७ | ४ | १७ | ।।००।। ●कलिगताब्दाः ५११८, भोग्याब्दाः ४२६८८२, त्र्यहो जन्मदिनकृत्यम्। |

| तिथयः दिनानि | तिथयः द. प. | घं. मि. | नक्षत्राणि द. प. | घं. मि. | योगाः द. प. | करणानि द. प. | चन्द्रराशयः द. प. | घं. मि. | स्पष्टसूर्यः राश्यादिः | दिनमान द. प. | सूर्योदयः घं. मि. | सूर्यास्तः घं. मि. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २ बु. | ५३।४४ | रा.०४।१८ | पुन.१२।२४ | दि.११।४६ | वै.४४।४५ | तै.२६।३४ | कर्क | अहो. | ८।१८।५६।१४ | २६।०० | ६।४८ | ५।१२ |
| ३ वृ. | ४८।३१ | रा.०२।१२ | पु.०८।३२ | दि.१०।१३ | वि.३७।१७ | व.२१।०७ | कर्क | अहो. | ८।१९।५७।४० | २६।०२ | ६।४८ | ५।१२ |
| ४ शु. | ४३।५३ | रा.१२।२० | श्ले.०५।०८ | दि.०८।५० | प्री.३०।१८ | ब.१६।१२ | क.०५।०८ | दि.०८।५० | ८।२०।५९।०६ | २६।०३ | ६।४७ | ५।१३ |
| ५ श. | ४०।०४ | रा.१०।४९ | म.०२।२५ | दि.०७।४५ | आ.२३।५९ | कौ.११।५८ | सिंह | अहो. | ८।२२।००।३१ | २६।०४ | ६।४७ | ५।१३ |
| ६ र. | ३७।१५ | रा.०९।४१ | पूफ.००।३३ | प्रा.०७।०० | सौ.१८।१९ | ग.०८।३९ | सिं.१५।२७ | दि.१२।५८ | ८।२३।०१।५६ | २६।०५ | ६।४७ | ५।१३ |
| ७ चं. | ३५।३० | रा.०८।५९ | ह.५९।४९ | रा.०६।४३ | शो.१३।३० | वि.०६।२२ | कन्या | अहो. | ८।२४।०३।२१ | २६।०६ | ६।४७ | ५।१३ |
| ८ मं. | ३४।५७ | रा.०८।४५ | चि.६०।०० | अहो. | अगं.०९।३६ | बा.०५।१३ | कं.३०।३२ | सं.०६।५९ | ८।२५।०४।४४ | २६।०८ | ६।४६ | ५।१४ |
| ९ बु. | ३५।४१ | रा.०९।०२ | चि.०१।१६ | प्रा.०७।१६ | सु.०६।४३ | तै.०५।१९ | तुला | अहो. | ८।२६।०६।०७ | २६।१० | ६।४६ | ५।१४ |
| १० वृ. | ३७।५३ | रा.०९।५५ | स्वा.०३।५७ | दि.०८।२१ | धृ.०४।५१ | व.०६।४७ | तु.५१।५४ | रा.०३।३२ | ८।२७।०७।३० | २६।१२ | ६।४६ | ५।१४ |
| ११ शु. | ४१।०६ | रा.११।११ | वि.०७।५३ | दि.०९।५४ | शू.०३।५४ | ब.०९।२९ | वृश्चिक | अहो. | ८।२८।०८।५३ | २६।१३ | ६।४५ | ५।१५ |
| १२ श. | ४५।२६ | रा.१२।५५ | अनु.१२।५३ | दि.११।५४ | गं.०३।५२ | कौ.१३।१६ | वृश्चिक | अहो. | ८।२९।१०।१६ | २६।१४ | ६।४५ | ५।१५ |
| १३ र. | ५०।२७ | रा.०२।५६ | ज्ये.१८।४७ | दि.०२।१६ | वृ.०४।३३ | ग.१७।५६ | वृ.१८।४७ | दि.०२।१६ | ९।००।११।३९ | २६।१५ | ६।४५ | ५।१५ |
| १४ चं. | ५५।५४ | रा.०५।०७ | मू.२५।१२ | दि.०४।५० | ध्रु.०५।४१ | वि.२३।१० | धनु | अहो. | ९।०१।१३।०१ | २६।१६ | ६।४५ | ५।१५ |
| ३० मं. | ६०।०० | अहोरात्रं | पूषा.३१।५० | रा.०७।२८ | व्या.०७।०२ | च.२८।३५ | ध.४८।२४ | रा.०२।०६ | ९।०२।१४।२० | २६।१८ | ६।४४ | ५।१६ |
| ३० बु. | ०१।१६ | प्रा.०७।१४ | उषा.३८।०५ | रा.०९।५८ | ह.०८।१८ | ना.०१।१६ | मकर | अहो. | ९।०३।१५।३९ | २६।२० | ६।४४ | ५।१६ |

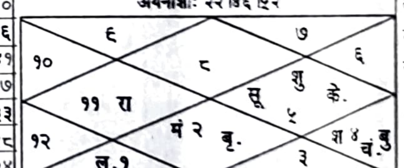
## मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च — दैनिकलग्नसारिणीचक्रम्

| ति.दि. | मंगलः | बुधः | गुरुः | शुक्रः | शनिः | केतुः | मिश्रमानं | मे.अं. | वृ.अं. | मि.अं. | क.अं. | सिं.अं. | कं.अं. | तु.अं. | वृ.अं. | ध.अं. | म.अं. | कुं.अं. | मी.अं. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २ बु. | ६।२०।१२।५० | ७।२६।०१।०३ | ६।२४।५५।१६ | ८।१८।५६।२२ | ८।०५।२७।५४ | ६।२४।५२।११ | ४३।०० | १३।५८ | १५।५४ | १८।०७ | २०।२५ | २२।४१ | ०।५६ | ३।१३ | ५।३० | ७।३५ | ६।२१ | १०।५२ | १२।२१ |
| ३ वृ. | ६।२०।४९।२६ | ७।२७।१४।४१ | ६।२५।०५।२७ | ८।२०।१२।२२ | ८।०५।३५।०२ | ६।२४।४६।०० | ४३।०१ | १३।५४ | १५।५० | १८।०३ | २०।२१ | २२।३७ | ०।५२ | ३।०९ | ५।२६ | ७।३१ | ६।१७ | १०।४८ | १२।१७ |
| ४ शु. | ६।२१।२६।०२ | ७।२८।२८।१९ | ६।२५।१५।३८ | ८।२१।२८।२२ | ८।०५।४२।१० | ६।२४।४५।४९ | ४३।०२ | १३।४९ | १५।४५ | १७।५८ | २०।१६ | २२।३२ | ०।४७ | ३।०४ | ५।२१ | ७।२६ | ६।१२ | १०।४३ | १२।१२ |
| ५ श. | ६।२२।०२।३७ | ७।२९।४१।५७ | ६।२५।२५।४९ | ८।२२।४४।२२ | ८।०५।४९।१८ | ६।२४।४२।३८ | ४३।०३ | १३।४५ | १५।४१ | १७।५४ | २०।१२ | २२।२८ | ०।४३ | ३।०० | ५।१७ | ७।२२ | ६।०८ | १०।३९ | १२।०८ |
| ६ र. | ६।२२।३९।१२ | ८।००।५५।३४ | ६।२५।३५।५९ | ८।२४।००।२१ | ८।०५।५६।२६ | ६।२४।३९।२८ | ४३।०३ | १३।४० | १५।३६ | १७।४९ | २०।०७ | २२।२३ | ०।३८ | २।५५ | ५।१२ | ७।१७ | ६।०३ | १०।३४ | १२।०३ |
| ७ चं. | ६।२३।१५।४७ | ८।०२।०९।११ | ६।२५।४६।०९ | ८।२५।१६।२० | ८।०६।०३।३४ | ६।२४।३६।१८ | ४३।०३ | १३।३६ | १५।३२ | १७।४५ | २०।०३ | २२।१९ | ०।३४ | २।५१ | ५।०८ | ७।१३ | ८।५९ | १०।३० | ११।५९ |
| ८ मं. | ६।२३।५२।२८ | ८।०३।३८।०५ | ६।२५।५५।३९ | ८।२६।३२।२० | ८।०६।१०।१५ | ६।२४।३३।०७ | ४३।०४ | १३।३१ | १५।२७ | १७।४० | १९।५८ | २२।१४ | ०।२९ | २।४६ | ५।०३ | ७।०८ | ८।५४ | १०।२५ | ११।५४ |
| ९ बु. | ६।२४।२९।०९ | ८।०५।०९।५९ | ६।२६।०५।०९ | ८।२७।४८।२० | ८।०६।१६।५६ | ६।२४।२९।५६ | ४३।०५ | १३।२७ | १५।२३ | १७।३६ | १९।५४ | २२।१० | ०।२५ | २।४२ | ४।५९ | ७।०४ | ८।५० | १०।२१ | ११।५० |
| १० वृ. | ६।२५।०५।५० | ८।०६।३५।५२ | ६।२६।१४।३९ | ८।२९।०४।२० | ८।०६।२३।३७ | ६।२४।२६।४५ | ४३।०६ | १३।२३ | १५।१९ | १७।३२ | १९।५० | २२।०६ | ०।२१ | २।३८ | ४।५५ | ७।०० | ८।४६ | १०।१७ | ११।४६ |
| ११ शु. | ६।२५।४२।३१ | ८।०८।०४।४५ | ६।२६।२४।०९ | ९।००।२०।२० | ८।०६।३०।१८ | ६।२४।२३।३४ | ४३।०७ | १३।१८ | १५।१४ | १७।२७ | १९।४५ | २२।०१ | ०।१६ | २।३३ | ४।५० | ६।५५ | ८।४१ | १०।१२ | ११।४१ |
| १२ श. | ६।२६।१९।१२ | ८।०९।३३।३८ | ६।२६।३३।३८ | ९।०१।३६।१९ | ८।०६।३६।५९ | ६।२४।२०।२३ | ४३।०८ | १३।१४ | १५।१० | १७।२३ | १९।४१ | २१।५७ | ०।१२ | २।२९ | ४।४६ | ६।५१ | ८।३७ | १०।०८ | ११।३७ |
| १३ र. | ६।२६।५५।५३ | ८।११।०२।३१ | ६।२६।४३।०७ | ९।०२।५२।१८ | ८।०६।४३।४० | ६।२४।१७।१३ | ४३।०८ | १३।१० | १५।०६ | १७।१९ | १९।३७ | २१।५३ | ०।०८ | २।२५ | ४।४२ | ६।४७ | ८।३३ | १०।०४ | ११।३३ |
| १४ चं. | ६।२७।३२।३३ | ८।१२।३१।२४ | ६।२६।५२।३६ | ९।०४।०८।१७ | ८।०६।५०।२१ | ६।२४।१४।०३ | ४३।०८ | १३।०५ | १५।०१ | १७।१४ | १९।३२ | २१।४८ | ०।०३ | २।२० | ४।३७ | ६।४२ | ८।२८ | ९।५९ | ११।२८ |
| ३० मं. | ६।२८।०८।५८ | ८।१४।१०।०७ | ६।२७।०१।०४ | ९।०५।२४।११ | ८।०६।५६।४८ | ६।२४।१०।५२ | ४३।०९ | १३।०१ | १४।५७ | १७।१० | १९।२८ | २१।४४ | २३।५९ | २।१६ | ४।३३ | ६।३८ | ८।२४ | ९।५५ | ११।२४ |
| ३० बु. | ६।२८।४५।२३ | ८।१५।४८।५० | ६।२७।०९।३२ | ९।०६।४०।०५ | ८।०७।०३।१५ | ६।२४।०७।४१ | ४३।१० | १२।५७ | १४।५३ | १७।०६ | १९।२४ | २१।४० | २३।५५ | २।१२ | ४।२९ | ६।३४ | ८।२० | ९।५१ | ११।२० |

७ चन्द्रे वल्ली ८।३९।२१।०२
अयनांशाः २२।४६।५१




१४ चन्द्रे वल्ली ८।३९।२१।०६
अयनांशाः २२।४६।५२




विविधविषयाः-माघे प्रातःस्नानफलं-यो माघमास्युषसि सूर्यकरान्विताग्रे स्नानं समाचरति चारुनदीप्रवाहे। उद्धृत्य सप्तपुरुषान् पितृमातृवंश्यान् स्वर्गं प्रयात्यमरदेहधरो नरोऽसौ।। मकरार्के प्रातःस्नानमन्त्रः- मकरस्थे रवौ माघे गोविन्दाच्युत माधव। प्रातः स्नानेन मे देव यथोक्तफलदो भव।। दुःखदारिद्र्यनाशाय श्रीविष्णोस्तोषणाय च। प्रातःस्नानं करोम्यद्य माघे पापविनाशनम्।। माघे कुत्रापि स्नानफलम्-स्वर्गलोके चिरं वासो येषां मनसि वर्त्तते। यत्र क्वापि जले तैस्तु स्नातव्यं मृगभास्करे।। चतुर्थ्यां गणेशोत्पत्तिः- सर्वदेवमयः साक्षात्सर्वमंगलकारकः। माघकृष्णचतुर्थ्यान्तु प्रादुर्भूतो गणाधिपः।। तत्र गणेशं यथोपचारैः संपूज्य रात्रौ व्रतपूर्वकं जागरणं कृत्वा प्रातर्ब्राह्मणान् भोजयेत्, मोदकादिकं च दद्यात्। चतुर्दश्यां नरकनिवारणचतुर्दशीव्रतं-चतुर्दशीसमं नास्ति व्रतं पापक्षयापहम्। यत्कृत्वा सर्वपापेभ्यो मुच्यते नात्र संशयः।। अश्वमेधसहस्राणि वाजपेयशतानि च ।प्राप्नोति तत्फलं सव नात्र कार्या विचारणा।।

ग्रहस्थितिः- मार्गिणः पूर्वोदिताः कुजबुधगुरवः, मार्गी पूर्वास्तः शुक्रः, मार्गी पश्चिमास्तः शनिः ८ तः पूर्वोदितः।

वातावरणम्- पक्षादिभागे वातशीतादयस्तदन्तभागे वातमेघचारशीतवृद्धयः।

# माघशुक्लपक्षः

शकाब्दः १९३९, संवत् २०७४, सन् १४२५ साल, दि.१८।१।१८ ई. तः दि.३१।१।१८ ई. या., पूर्व कालः।
मार्गी पूर्वोदितो गुरुः, मार्गी पूर्वास्तः शुक्रः, १२ तः पश्चिमोदितः, अशुद्धः, १५ तः शुद्धः, शिशिरर्तुः, याम्यगोलः, सौम्यायनम्।

| तिथयः दिनानि | तिथयः द. प. | घं. मि. | नक्षत्राणि द. प. | घं. मि. | योगाः द. प. | करणानि द. प. | चन्द्रराशयः द. प. | घं. मि. | स्पष्टसूर्यः राश्यादिः | दिनमानं द. प. | सूर्योदयः घं. मि. | सूर्यास्तः घं. मि. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ वृ. | ०६।०६ | दि.०६।१२ | श्र. ४३।४३ | रा.१२।१३ | व. ०६।१० | ब. ०६।०६ | मकर | अहो. | ६।०४।१६।५८ | २६।२२ | ६।४४ | ५।१६ |
| २ शु. | १०।१४ | दि.१०।४६ | ध. ४८।२४ | रा.०२।०५ | सि.०६।२३ | कौ.१०।१४ | म.१६।०३ | दि.०१।०८ | ६।०५।१८।१७ | २६।२४ | ६।४३ | ५।१७ |
| ३ श. | १३।०८ | दि.११।५८ | शत. ५१।५६ | रा.०३।३१ | व्य.०८।४७ | ग. १३।०८ | कुम्भ | अहो. | ६।०६।१६।३५ | २६।२६ | ६।४३ | ५।१७ |
| ४ र. | १४।५६ | दि.१२।४१ | पूभा. ५४।२० | रा.०४।२७ | व. ०७।२० | वि. १४।५६ | कु.३८।४४ | रा.१०।१३ | ६।०७।२०।५३ | २६।२७ | ६।४३ | ५।१७ |
| ५ चं. | १५।२३ | दि.१२।५१ | उभा. ५५।२१ | रा.०४।५० | प. ०४।५० | बा. १५।२३ | मीन | अहो. | ६।०८।२२।११ | २६।२८ | ६।४२ | ५।१८ |
| ६ मं. | १४।३३ | दि.१२।३१ | रे. ५५।१२ | रा.०४।४७ | शि.०१।२० | तै. १४।३३ | मी.५५।१२ | रा.०४।४७ | ६।०६।२३।२३ | २६।३१ | ६।४२ | ५।१८ |
| ७ बु. | १२।२७ | दि.११।४० | अ. ५३।५६ | रा.०४।१५ | सा.५१।३१ | व. १२।२७ | मेष | अहो. | ६।१०।२४।३५ | २६।३४ | ६।४१ | ५।१६ |
| ८ वृ. | ०६।२० | दि.१०।२५ | भ. ५१।५० | रा.०३।२५ | शु. ४५।२७ | ब. ०६।२० | मेष | अहो. | ६।११।२५।४७ | २६।३७ | ६।४१ | ५।१६ |
| ६ शु. | ०५।१६ | दि.०८।४८ | कृ. ४८।५२ | रा.०२।१३ | शु. ३८।४५ | कौ.०५।१६ | मे.०६।०५ | दि.०६।०६ | ६।१२।२६।५६ | २६।४० | ६।४० | ५।२० |
| १० श. | ००।२६ | प्रा.०६।५१ | रो. ४५।२० | रा.१२।४७ | ब्र. ३१।२७ | ग. ००।२६ | वृष | अहो. | ६।१३।२८।११ | २६।४३ | ६।३६ | ५।२१ |
| १२ र. | ४६।२६ | रा.०२।२५ | मृ. ४१।२३ | रा.११।१२ | ऐं. २३।४६ | ब. २२।१७ | वृ.१३।२१ | दि.११।५६ | ६।१४।२६।२२ | २६।४६ | ६।३६ | ५।२१ |
| १३ चं. | ४३।३४ | रा.१२।०४ | आ. ३७।११ | रा.०६।३० | वै. १६।०० | कौ.१६।३० | मिथुन | अहो. | ६।१५।३०।३३ | २६।५० | ६।३८ | ५।२२ |
| १४ मं. | ३७।४३ | रा.०६।४२ | पुन. ३३।०३ | रा.०७।५० | वि. ०८।०६ | ग. १०।३८ | मि.१६।०५ | दि.०२।१५ | ६।१६।३१।३८ | २६।५४ | ६।३७ | ५।२३ |
| १५ बु. | ३२।०७ | रा.०७।२७ | पु. २६।०७ | सं.०६।१५ | प्री. ००।१६ | वि. ०४।५५ | कर्क | अहो. | ६।१७।३२।४२ | २६।५८ | ६।३६ | ५।२४ |

| दिनांकाः रा. | सौ. | अं. | |
|---|---|---|---|
| २८ | ५ | १८ | चन्द्रदर्शनं मु. ३० सौम्यशृंगफलं साम्यं, शिशिरनवरात्रारंभः, **कलशस्थापनं**, श्रीदुर्गापूजनोत्सवः, कर्णविधः,पञ्चकारंभो रात्रौ घं. १२ मि. १३ उ., दक्षिणां विना |
| २६ | ६ | १६ | वृश्चिके कुजः ४६।०८, पूर्वास्तो बुधः ०८।४६, **मुण्डनम्, कर्णविधः**, पूर्वयात्रा तृतीयायां मकरस्थे चन्द्रे। पूर्वदक्षिणयात्रा रोहिण्याम्। |
| ३० | ७ | २० | वदरी ३ कुन्दकुसुमैः पार्वतीपूजनं, पश्चिमयात्रा पूर्वभाद्रे, **गणेश** ४ व्रतं, भ. ४४।०२ उ., (४ एको.)। यात्रा श्रवणायां द्वितीयायां ततः पूर्वयात्रा। |
| १ | ८ | २१ | भ.१४।५६ यावत्। 卐 स्नानदानशिवार्चनादिकं, **रविदासजयन्ती, कर्णविधः**, उत्तरां विना यात्रा पुष्ये। |
| २ | ६ | २२ | **वसन्तपञ्चमी**, सरस्वत्यवतारः, **सरस्वतीपूजनं**, पश्चिमोत्तराभिमुखहलप्रवाहः, **हलपञ्चमी, कर्णवियः**, पश्चिमोत्तरयात्रा रेवत्यां, (५ एको.)। |
| ३ | १० | २३ | सिद्धमानं ५५।३१, **पंचकान्तो** रात्रौ घं. ४ मि. ४७ उ., गं. ४३।१२ उ. ५८।१२ या., पश्चिमयात्रा सप्तम्यां रेवत्यां तत उत्तरां विना यात्रा, (६-७ एको.)। |
| ४ | ११ | २४ | **कर्णविधो मुण्डन**मुत्तरां विना यात्रा च सप्तम्यां, **श्रवणायां रविः** १६।१२, **अचला ७**, अरुणोदये स्नानं सूर्यग्रहणसमं गंगायां शतसूर्यग्रहणसमं प्रयागे। |
| ५ | १२ | २५ | **महाष्टमीनवमीव्रतं**, दीक्षाग्रहणं, **भीष्माष्टमी**, भीष्मतर्पणम्। च कोटिसूर्यग्रहणसमफलदं, **ब्रह्मसावर्णिमन्वादिः**, भ. १२।२७ उ. ४०।५३ यावत्। |
| ६ | १३ | २६ | **विजया १०, नवरात्रव्रतपारणं, नवषष्टिगणतन्त्रदिवसः**, राष्ट्रियध्वजोत्तोलनपूर्वकराष्ट्रगानं, मकरे बुधः ०६।०१, **कामेश्वरसिंहदरभंगासंस्कृतविश्वविद्यालयप्रतिष्ठादिनं**, |
| ७ | १४ | २७ | **एकादशीमानं** ५४।४०, **भैमी ११ व्रतं** स्मार्त्तानां, दक्षिणयात्रैकादश्यां रोहिण्यां ततः पूर्वां विना यात्रा मृगशिरस्यैकादश्याम्, |
| ८ | १५ | २८ | **पश्चिमोदितः शुक्रः** २५।२१, गोदुग्धेन प्रारणं, भैमी ११ व्रतं वैष्णवानां, माधव १२, द.ति. ४६।२६ यावत्। |
| ६ | १६ | २६ | **प्रदोष** १३ व्रतं, पश्चिमदक्षिणयात्रा त्रयोदश्यां पुनर्वसौ। द.ति. ५५।०६ उ., भ. २८।०३ उ. ५५।०६ यावत्। |
| १० | १७ | ३० | **प्रदोश** १४ व्रतं, भ. ३७।४३ उ., पश्चिमदक्षिणयात्रा मिथुनस्थे चन्द्रे ततः पश्चिमयात्रा पुनर्वसौ तत उत्तरां विना यात्रा। |
| ११ | १८ | ३१ | **पुष्टः शुक्रः** शुद्धारंभश्च २५।२१उ., आयुष्मानमानं ५२।२८, भ. ०४।५५ या., **माघी** १५ स्नानदानादिः, **गोशालाघट्टे** कमलायां **जीवछघट्टे** जीववत्सायां 卐 |

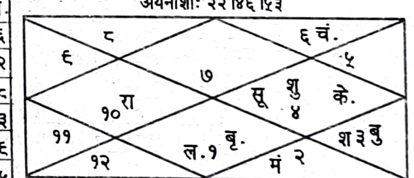
## मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च

| ति.दि. | मंगलः | बुधः | गुरुः | शुक्रः | शनिः | केतुः |
|---|---|---|---|---|---|---|
| १ वृ. | ६।२६।२१।४८ | ८।१७।२७।३३ | ६।२७।१७।५६ | ६।०७।५५।५६ | ८।०७।०६।४२ | ६।२४।०४।३० |
| २ शु. | ६।२६।५८।१३ | ८।१६।०६।१६ | ६।२७।२६।२६ | ६।०६।११।५३ | ८।०७।१६।०८ | ६।२४।०१।१६ |
| ३ श. | ७।००।३४।३८ | ८।२०।४४।५६ | ६।२७।३४।५३ | ६।१०।२७।४६ | ८।०७।२२।३४ | ६।२३।५८।०८ |
| ४ र. | ७।०१।११।०३ | ८।२२।२३।४१ | ६।२७।४३।२० | ६।११।४३।३६ | ८।०७।२६।०० | ६।२३।५४।५७ |
| ५ चं. | ७।०१।४७।२८ | ८।२४।०२।२३ | ६।२७।५१।४७ | ६।१२।५६।३२ | ८।०७।३५।२६ | ६।२३।५१।४७ |
| ६ मं. | ७।०२।२३।४० | ८।२५।४६।४२ | ६।२७।५६।२२ | ६।१४।१५।१४ | ८।०७।४१।४२ | ६।२३।४८।३६ |
| ७ बु. | ७।०२।५६।५२ | ८।२७।३१।०१ | ६।२८।०६।५७ | ६।१५।३०।५६ | ८।०७।४७।५८ | ६।२३।४५।२५ |
| ८ वृ. | ७।०३।३६।०४ | ८।२६।१५।२० | ६।२८।१४।३२ | ६।१६।४६।३८ | ८।०७।५४।१४ | ६।२३।४२।१४ |
| ६ शु. | ७।०४।१२।१६ | ६।००।५६।३६ | ६।२८।२२।०७ | ६।१८।०२।२० | ८।०८।००।३० | ६।२३।३६।०३ |
| १० श. | ७।०४।४८।२८ | ६।०२।४३।५८ | ६।२८।२६।४२ | ६।१६।१८।०२ | ८।०८।०६।४६ | ६।२३।३५।५२ |
| १२ र. | ७।०५।२४।४० | ६।०४।२८।१७ | ६।२८।३७।१६ | ६।२०।३३।४४ | ८।०८।१३।०२ | ६।२३।३२।४२ |
| १३ चं. | ७।०६।००।५१ | ६।०६।१२।३६ | ६।२८।४४।५० | ६।२१।४६।२५ | ८।०८।१६।१८ | ६।२३।२६।३२ |
| १४ मं. | ७।०६।३६।५७ | ६।०७।५६।५६ | ६।२८।५१।४६ | ६।२३।०५।०५ | ८।०८।२५।१६ | ६।२३।२६।२१ |
| १५ बु. | ७।०७।१३।०३ | ६।०६।४७।१६ | ६।२८।५८।४२ | ६।२४।२०।४५ | ८।०८।३१।१४ | ६।२३।२३।१० |

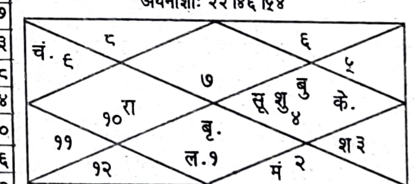
## दैनिकलग्नसारिणीचक्रम्

| ति.दि. | मिश्रमानं | मे.अं. | वृ.अं. | मि.अं. | क.अं. | सिं.अं. | कं.अं. | तु.अं. | वृ.अं. | ध.अं. | म.अं. | कुं.अं. | मी.अं. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ वृ. | ४३।११ | १२।५३ | १४।४६ | १७।०२ | १६।२० | २१।३६ | २३।५१ | २।०८ | ४।२५ | ६।३० | ८।१६ | ६।४७ | ११।१६ |
| २ शु. | ४३।१२ | १२।४६ | १४।४५ | १६।५८ | १६।१६ | २१।३२ | २३।४७ | २।०४ | ४।२१ | ६।२६ | ८।१२ | ६।४३ | ११।१२ |
| ३ श. | ४३।१३ | १२।४५ | १४।४१ | १६।५४ | १६।१२ | २१।२८ | २३।४३ | २।०० | ४।१७ | ६।२२ | ८।०८ | ६।३६ | ११।०८ |
| ४ र. | ४३।१४ | १२।४० | १४।३६ | १६।४६ | १६।०७ | २१।२३ | २३।३८ | १।५५ | ४।१२ | ६।१७ | ८।०३ | ६।३४ | ११।०३ |
| ५ चं. | ४३।१४ | १२।३६ | १४।३२ | १६।४५ | १६।०३ | २१।१६ | २३।३४ | १।५१ | ४।०८ | ६।१३ | ७।५६ | ६।३० | १०।५६ |
| ६ मं. | ४३।१६ | १२।३२ | १४।२८ | १६।४१ | १८।५६ | २१।१५ | २३।३० | १।४७ | ४।०४ | ६।०६ | ७।५५ | ६।२६ | १०।५५ |
| ७ बु. | ४३।१८ | १२।२८ | १४।२४ | १६।३७ | १८।५५ | २१।११ | २३।२६ | १।४३ | ४।०० | ६।०५ | ७।५१ | ६।२२ | १०।५१ |
| ८ वृ. | ४३।२० | १२।२४ | १४।२० | १६।३३ | १८।५१ | २१।०७ | २३।२२ | १।३६ | ३।५६ | ६।०१ | ७।४७ | ६।१८ | १०।४७ |
| ६ शु. | ४३।२२ | १२।२० | १४।१६ | १६।२६ | १८।४७ | २१।०३ | २३।१८ | १।३५ | ३।५२ | ५।५७ | ७।४३ | ६।१४ | १०।४३ |
| १० श. | ४३।२३ | १२।१५ | १४।११ | १६।२४ | १८।४२ | २०।५८ | २३।१३ | १।३० | ३।४७ | ५।५२ | ७।३८ | ६।०६ | १०।३८ |
| १२ र. | ४३।२४ | १२।११ | १४।०७ | १६।२० | १८।३८ | २०।५४ | २३।०६ | १।२६ | ३।४३ | ५।४८ | ७।३४ | ६।०५ | १०।३४ |
| १३ चं. | ४३।२५ | १२।०७ | १४।०३ | १६।१६ | १८।३४ | २०।५० | २३।०५ | १।२२ | ३।३६ | ५।४४ | ७।३० | ६।०१ | १०।३० |
| १४ मं. | ४३।२७ | १२।०३ | १३।५६ | १६।१२ | १८।३० | २०।४६ | २३।०१ | १।१८ | ३।३५ | ५।४० | ७।२६ | ८।५७ | १०।२६ |
| १५ बु. | ४३।२६ | ११।५६ | १३।५५ | १६।०८ | १८।२६ | २०।४२ | २२।५७ | १।१४ | ३।३१ | ५।३६ | ७।२२ | ८।५३ | १०।२२ |

५ चन्द्रे वल्ली ८।३६।२१।१६
अयनांशाः २२।४६।५३




१३ चन्द्रे वल्ली ८।३६।२१।२३
अयनांशाः २२।४६।५४




**विविधविषयाः-अचलासप्तम्या-सप्तार्कवदरीपत्राणि शिरसि निधाय मौनी सन् स्नायात्तत्र स्नानमन्त्रः** - यद्यज्जन्मकृतं पापं मया सप्तसु जन्मसु। तन्मे रोगञ्च शोकञ्च माकरी हन्तु सप्तमी।। एतज्जन्मकृतं पापं यच्च जन्मान्तरार्जितम्। मनोवाक्कायजं यच्च ज्ञाताज्ञातञ्च यत्पुनः।। इति सप्तविधं पापं स्नानान्मे सप्तसप्तिके। सप्तव्याहृतिके देवि हर माकरि सप्तमी।। ततः **सूर्यार्घ्यं दद्यात्तन्मन्त्रः** - सप्तसप्तेरहः प्रीते सप्तलोकप्रदीपन। सप्तमीसहितो देव गृहाणार्घ्यं दिवाकर।। ततः प्रणमेच्च **तन्मन्त्रः** - जननी सर्वलोकानां सप्तमी सप्तसप्तिके। सप्तव्याहृतिके देवि नमस्ते सूर्यमूर्त्तये।। ततो दानादिकं कुर्यात्। **अष्टम्यां भीष्मतर्पणमन्त्रः**-वैयाघ्रपादगोत्राय सांकृतिप्रवराय च। अपुत्राय ददाम्येतत्सलिलं भीष्मवर्मणे।। वसुनामवताराय शन्तनोरात्मजाय च। अर्घ्यं ददामि भीष्माय आवालब्रह्मचारिणे।। भीष्मः शान्तनवो वीरः सत्यवादी जितेन्द्रियः। आभिरद्भिरवाप्नोतु पुत्रपौत्रोचितां क्रियाम्।। अनेन **सन्ततिलाभः संवत्सरकृतपापक्षयश्च**। इदं जीवत्पित्रापि कर्त्तव्यम्।

**ग्रहस्थितिः** - मार्गिणः पूर्वोदिताः कुजगुरुशनयः, मार्गी पूर्वोदितो बुधः २ तः पूर्वास्तः, मार्गी पूर्वास्तः शुक्रः १२ तः पश्चिमोदितः।

**वातावरणम्** - पक्षाद्यन्तभागयोः शीताभ्रचारच्छिन्नवृष्टयस्तन्मध्यभागे वातातपशीतयोगः।

# फाल्गुनकृष्णपक्षः

शकाब्दः १९३९, संवत् २०७४, सन् १४२५ साल, दि.१।२।१८ई.तः १५।२।१८ई.या.,पूर्वे कालः, १२ तो दक्षिणे कालः।
मार्गी पूर्वोदितो गुरुः, मार्गी पश्चिमोदितः शुक्रः, शिशिरर्तुः, याम्यगोलः, सौम्यायनम्।

| तिथयः दिनानि | तिथयः द. प. | घं. मि. | नक्षत्राणि द. प. | घं. मि. | योगाः द. प. | करणानि द. प. | चन्द्रराशयः द. प. | घं. मि. | स्पष्टसूर्यः राश्यादिः | दिनमानं द. प. | सूर्योदयः घं. मि. | सूर्यास्तः घं. मि. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ बृ. | २६।५६ | सं.०५।२२ | श्ले.२५।३६ | दि.०४।५० | सौ.४५।४० | कौ.२६।५६ | क.२५।३६ | दि.०४।५० | ९।१८।३३।४६ | २७।०२ | ६।३६ | ५।२४ |
| २ शु. | २२।२२ | दि.०३।३२ | म.२२।३९ | दि.०३।३९ | शो.३९।०९ | ग.२२।२२ | सिंह | अहो. | ९।१९।३४।५० | २७।०५ | ६।३५ | ५।२५ |
| ३ श. | १८।३७ | दि.०२।०१ | पूफ.२०।४० | दि.०२।५० | अगं.३३।१७ | वि.१८।३७ | सिं.३५।२२ | रा.०८।४३ | ९।२०।३५।५४ | २७।०८ | ६।३४ | ५।२६ |
| ४ र. | १५।५१ | दि.१२।५४ | उफ.१९।२९ | दि.०२।२२ | सु.२८।१५ | बा.१५।५१ | कन्या | अहो. | ९।२१।३६।५८ | २७।११ | ६।३४ | ५।२६ |
| ५ चं. | १४।१० | दि.१२।१३ | ह.१९।२६ | दि.०२।१९ | धृ.२४।०५ | तै.१४।१० | कं.५०।०० | रा.०२।३३ | ९।२२।३८।०२ | २७।१४ | ६।३३ | ५।२७ |
| ६ मं. | १३।४१ | दि.१२।०० | चि.२०।३४ | दि.०२।४६ | शू.२०।५३ | व.१३।४१ | तुला | अहो. | ९।२३।३८।५७ | २७।१८ | ६।३२ | ५।२८ |
| ७ बु. | १४।३२ | दि.१२।२१ | स्वा.२२।५९ | दि.०३।४४ | गं.१८।४३ | ब.१४।३२ | तुला | अहो. | ९।२४।३९।५२ | २७।२१ | ६।३२ | ५।२८ |
| ८ बृ. | १६।४५ | दि.०१।१३ | वि.२६।४१ | सं.०५।११ | वृ.१७।३४ | कौ.१६।४५ | तु.१०।४५ | दि.१०।४९ | ९।२५।४०।४७ | २७।२४ | ६।३१ | ५।२९ |
| ९ शु. | २०।०३ | दि.०२।३२ | अनु.३१।२९ | रा.०७।०७ | धु.१७।१७ | ग.२०।०३ | वृश्चिक | अहो. | ९।२६।४१।४२ | २७।२७ | ६।३१ | ५।२९ |
| १० श. | २४।२४ | दि.०४।१६ | ज्ये.३७।१३ | रा.०९।२३ | व्या.१७।४५ | वि.२४।२४ | वृ.३७।१३ | रा.०९।२३ | ९।२७।४२।३७ | २७।३० | ६।३० | ५।३० |
| ११ र. | २९।२९ | सं.०६।१७ | मू.४३।३६ | रा.११।५५ | ह.१८।४७ | बा.२९।२९ | धनु | अहो. | ९।२८।४३।३२ | २७।३३ | ६।२९ | ५।३१ |
| १२ चं. | ३४।५५ | रा.०८।२७ | पूषा.५०।११ | रा.०२।३३ | व.२०।१० | कौ.०२।१२ | धनु | अहो. | ९।२९।४४।२६ | २७।३६ | ६।२९ | ५।३१ |
| १३ मं. | ४०।१५ | रा.१०।३४ | उषा.५६।३५ | रा.०५।०६ | सि.२१।३१ | ग.०७।३५ | घ.०६।४७ | दि.०६।११ | १०।००।४५।०९ | २७।४० | ६।२८ | ५।३२ |
| १४ बु. | ४५।०२ | रा.१२।२८ | श्र.६०।०० | अहो. | व्य.२२।३७ | वि.१२।३८ | मकर | अहो. | १०।०१।४५।५२ | २७।४३ | ६।२७ | ५।३३ |
| ३० बृ. | ४९।०३ | रा.०२।०४ | श्र.०२।२४ | प्रा.०७।२५ | व.२३।०८ | च.१७।०३ | म.३४।५३ | रा.०८।२४ | १०।०२।४६।३५ | २७।४६ | ६।२७ | ५।३३ |

| दिनाङ्काः रा. | सौ. | अ. | |
|---|---|---|---|
| १२ | १९ | १ | फरवरी २, फाल्गुने वाङ्मतीस्नानं महापुण्यप्रदं, सूर्यवेधाद्विवाहो नैव, ग. १४।३६ उ. २९।३६ यावत्। |
| १३ | २० | २ | सूर्यवेधाद्विवाहो नैव, पूर्वोत्तरयात्रा पूर्वफल्गुन्यां, म. ५०।२९ उपरि। |
| १४ | २१ | ३ | **श्रीहेरम्ब** ४ व्रतं, उत्तरयात्रा पूर्वफल्गुन्यां, म. १८।३७ यावत्। |
| १५ | २२ | ४ | विवाहः पञ्चम्यां, पूर्वदक्षिणयात्रा हस्ते। |
| १६ | २३ | ५ | कुम्भे शुक्रः १२।३८, **मुण्डन** पञ्चम्यां, कर्णवेधः, **विवाहो** दिवारात्रौ, दक्षिणयात्रा कन्यास्थे चन्द्रे ततः पश्चिमदक्षिणयात्रा। |
| १७ | २४ | ६ | **धनिष्ठायां रविः** २४।५९, म. १३।४१ उ. ४४।०६ या., पश्चिमदक्षिणयात्रा सप्तम्याम्। |
| १८ | २५ | ७ | विवाहः स्वात्यां, पश्चिमदक्षिणयात्रा सप्तम्याम्। |
| १९ | २६ | ८ | अष्टका, (८ एको.)। **वैद्यनाथसिद्धेश्वरनाथयोः प्रतिष्ठादिनं**, सिद्धेश्वरमेलापकः, म. १२।३८ यावत्। |
| २० | २७ | ९ | अन्वष्टका, **विवाहो** दशम्यामनुराधायां, उत्तरयात्रा, म. ५२।१३ उपरि। |
| २१ | २८ | १० | **वृश्चिके गुरुः** ४६।३१, गं. ३१।१३ उ. ४६।१३ या., म. २४।२४ या., पश्चिमोत्तरयात्रा ज्येष्ठैकादश्योः तत उत्तरयात्रा। |
| २२ | २९ | ११ | **विजया** ११ व्रतं सर्वेषां, **विवाह एकादश्यां**, द.ति. २९।२९ उपरि। |
| २३ | ३० | १२ | गोदध्ना पारणं, **कुम्भे रविः** ५९।११ मु. ४५ फलं समर्घं, मासान्तः, कुम्भे बुधः ०२।३२, द.ति. ३४।५५ यावत्। |
| २४ | १ | १३ | **प्रदोष** १३ व्रतं, **विष्णुपदीसंक्रान्तिपुण्यकालो** घं.१२ मि.० यावद्दिने, **पुण्याहः**, **माघस्नानसमाप्तिः**, **प्रयागे कल्पवाससमाप्तिः**, म. ४०।१५ उपरि। |
| २५ | २ | १४ | मासादिः, **प्रदोष** १४ व्रतं, नक्तव्रतं, **महाशिवरात्रिव्रतं**, प्रदोषे घं.७ मि.९ यावद्रात्रौ शिवार्चनं सहस्राश्वमेधसमफलदं, श्रीगौरीशंकरविवाहोत्सवः, शिवदर्शनं, |
| २६ | ३ | १५ | **गोसहस्रिका** ३० स्नानदानादिः, राहुवेधाद्विवाहो **मध्यमो द्विरागमनञ्च** प्रतिपदि, **पञ्चकारम्भो** दिवा घं. ०७ मि. २५ उपरि। |

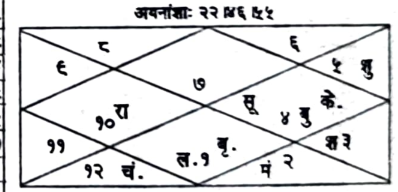
## मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च

| ति.दि. | मंगलः | बुधः | गुरुः | शुक्रः | शनिः | केतुः |
|---|---|---|---|---|---|---|
| १ बृ. | ७।०७।४९।०९ | ९।११।३४।३६ | ६।२९।०५।३८ | ९।२५।३६।२५ | ८।०८।३७।१२ | ९।२३।१९।५९ |
| २ शु. | ७।०८।२५।१४ | ९।१३।२१।५६ | ६।२९।१२।३४ | ९।२६।५२।०५ | ८।०८।४३।०९ | ९।२३।१६।४८ |
| ३ श. | ७।०९।०१।१९ | ९।१५।०९।१६ | ६।२९।१९।३० | ९।२८।०७।४५ | ८।०८।४९।०६ | ९।२३।१३।३७ |
| ४ र. | ७।०९।३७।२४ | ९।१६।५६।३६ | ६।२९।२६।२६ | ९।२९।२३।२४ | ८।०८।५५।०३ | ९।२३।१०।२७ |
| ५ चं. | ७।१०।१३।२९ | ९।१८।४३।५६ | ६।२९।३३।२१ | १०।००।३९।०३ | ८।०९।०१।०० | ९।२३।०७।१७ |
| ६ मं. | ७।१०।४९।२० | ९।२०।३१।०२ | ६।२९।३८।३५ | १०।०१।५४।२९ | ८।०९।०६।५९ | ९।२३।०४।०६ |
| ७ बु. | ७।११।२५।११ | ९।२२।१८।०८ | ६।२९।४३।४९ | १०।०३।०९।५५ | ८।०९।१२।५८ | ९।२३।००।५५ |
| ८ बृ. | ७।१२।०१।०१ | ९।२४।०५।१४ | ६।२९।४९।०३ | १०।०४।२५।२१ | ८।०९।१८।५७ | ९।२२।५७।४४ |
| ९ शु. | ७।१२।३६।५१ | ९।२५।५२।२० | ६।२९।५४।१७ | १०।०५।४०।४७ | ८।०९।२४।५६ | ९।२२।५४।३३ |
| १० श. | ७।१३।१२।४१ | ९।२७।३९।२६ | ६।२९।५९।३० | १०।०६।५६।१३ | ८।०९।३०।५५ | ९।२२।५१।२२ |
| ११ र. | ७।१३।४८।३१ | ९।२९।२६।३२ | ७।००।०४।४३ | १०।०८।११।३९ | ८।०९।३६।५४ | ९।२२।४८।१२ |
| १२ चं. | ७।१४।२४।२१ | १०।०१।१३।३७ | ७।००।०९।५६ | १०।०९।२७।०५ | ८।०९।४२।५३ | ९।२२।४५।०२ |
| १३ मं. | ७।१४।५९।४५ | १०।०२।५८।१५ | ७।००।१४।२१ | १०।१०।४२।२४ | ८।०९।४८।१३ | ९।२२।४१।५१ |
| १४ बु. | ७।१५।३५।०९ | १०।०४।४२।५२ | ७।००।१८।४६ | १०।११।५७।४३ | ८।०९।५३।३२ | ९।२२।३८।४० |
| ३० बृ. | ७।१६।१०।३३ | १०।०६।२७।२९ | ७।००।२३।११ | १०।१३।१३।०२ | ८।०९।५८।५१ | ९।२२।३५।२९ |

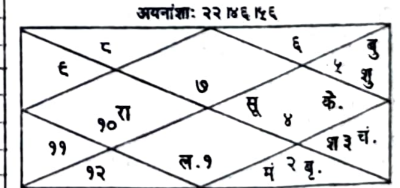
## दैनिकलग्नसारिणीचक्रम्

| ति.दि. | मिश्रमानं | मे.अं. | वृ.अं. | मि.अं. | क.अं. | सिं.अं. | कं.अं. | तु.अं. | वृ.अं. | ध.अं. | म.अं. | कुं.अं. | मी.अं. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ बृ. | ४३।३१ | ११।५५ | १३।५१ | १६।०४ | १८।२२ | २०।३८ | २२।५३ | १।१० | ३।२७ | ५।३२ | ७।१८ | ८।४९ | १०।१८ |
| २ शु. | ४३।३३ | ११।५१ | १३।४७ | १६।०० | १८।१८ | २०।३४ | २२।४९ | १।०६ | ३।२३ | ५।२८ | ७।१४ | ८।४५ | १०।१४ |
| ३ श. | ४३।३५ | ११।४६ | १३।४२ | १५।५५ | १८।१३ | २०।२९ | २२।४४ | १।०१ | ३।१८ | ५।२३ | ७।०९ | ८।४० | १०।०९ |
| ४ र. | ४३।३६ | ११।४२ | १३।३८ | १५।५१ | १८।०९ | २०।२५ | २२।४० | ०।५७ | ३।१४ | ५।१९ | ७।०५ | ८।३६ | १०।०५ |
| ५ चं. | ४३।३७ | ११।३८ | १३।३४ | १५।४७ | १८।०५ | २०।२१ | २२।३६ | ०।५३ | ३।१० | ५।१५ | ७।०१ | ८।३२ | १०।०१ |
| ६ मं. | ४३।३९ | ११।३४ | १३।३० | १५।४३ | १८।०१ | २०।१७ | २२।३२ | ०।४९ | ३।०६ | ५।११ | ६।५७ | ८।२८ | ९।५७ |
| ७ बु. | ४३।४१ | ११।३० | १३।२६ | १५।३९ | १७।५७ | २०।१३ | २२।२८ | ०।४५ | ३।०२ | ५।०७ | ६।५३ | ८।२४ | ९।५३ |
| ८ बृ. | ४३।४३ | ११।२६ | १३।२२ | १५।३५ | १७।५३ | २०।०९ | २२।२४ | ०।४१ | २।५८ | ५।०३ | ६।४९ | ८।२० | ९।४९ |
| ९ शु. | ४३।४५ | ११।२२ | १३।१८ | १५।३१ | १७।४९ | २०।०५ | २२।२० | ०।३७ | २।५४ | ४।५९ | ६।४५ | ८।१६ | ९।४५ |
| १० श. | ४३।४६ | ११।१७ | १३।१३ | १५।२६ | १७।४४ | २०।०० | २२।१५ | ०।३२ | २।४९ | ४।५४ | ६।४० | ८।११ | ९।४० |
| ११ र. | ४३।४७ | ११।१३ | १३।०९ | १५।२२ | १७।४० | १९।५६ | २२।११ | ०।२८ | २।४५ | ४।५० | ६।३६ | ८।०७ | ९।३६ |
| १२ चं. | ४३।४८ | ११।०९ | १३।०५ | १५।१८ | १७।३६ | १९।५२ | २२।०७ | ०।२४ | २।४१ | ४।४६ | ६।३२ | ८।०३ | ९।३२ |
| १३ मं. | ४३।५० | ११।०५ | १३।०१ | १५।१४ | १७।३२ | १९।४८ | २२।०३ | ०।२० | २।३७ | ४।४२ | ६।२८ | ७।५९ | ९।२८ |
| १४ बु. | ४३।५२ | ११।०१ | १२।५७ | १५।१० | १७।२८ | १९।४४ | २१।५९ | ०।१६ | २।३३ | ४।३८ | ६।२४ | ७।५५ | ९।२४ |
| ३० बृ. | ४३।५४ | १०।५७ | १२।५३ | १५।०६ | १७।२४ | १९।४० | २१।५५ | ०।१२ | २।२९ | ४।३४ | ६।२० | ७।५१ | ९।२० |

**५ चन्द्रे वल्ती ८।३९।२१।३०**
**अयनांशाः २२।४६।५५**




**१२ चन्द्रे वल्ती ८।३९।२१।३७**
**अयनांशाः २२।४६।५६**




**विविधविषयाः-माघफाल्गुनकृष्णचतुर्दश्यां** शिवरात्रिव्रतं तन्माहात्म्यञ्च ब्रह्मादिखण्डे- माघफाल्गुनयोर्मध्ये कृष्णा या च चतुर्दशी। दत्ते शिवः फलं यस्मात्तेन सर्वसुरासुरैः। शिवरात्रिरिति ख्याता मत्कलेव पृथक् स्थिता।। **तथा च** - उपवासं करिष्यन्ति जागरणेन समन्वितम्। यथोक्तशास्त्रमार्गेण तेषां मोक्षो न संशयः।। वर्षे वर्षे महादेवि नित्यं भक्त्या प्रपूजयेत्। अर्णवो यदि वा सूर्यश्छाद्यते हिमवानपि।। चलन्त्येते कदाचिद्वै निश्चलं च शिवव्रतम्। **गंगासागरसंगमस्नानमन्त्रः** - त्वं देव सरितां नाथ त्वं देवि सरितां वरे। उभयोः संगमे स्नात्वा मुञ्चामि दुरितानि वै।। **समुद्रस्नानमन्त्रः** - त्वमग्निर्द्विपदां नाथ रेतोधाः कामदीपन। प्रधानः सर्वभूतानां जीवानां प्रभुरव्ययः।। अमृतस्यारणिस्त्वं हि देवयोनिरपांपते। वृजिनं हर मे सर्वं तीर्थराज नमोऽस्तुते।। **गंगास्नानमन्त्रः** - ब्रह्मस्वरूपे हे गंगे स्नानमाचर्यते मया। त्वदीये निर्मले तोये यथोक्तफलदा भव।। **गंगामाहात्म्यं विष्णुपुराणे** - गंगा गंगेति यन्नाम योजनानां शतैरपि। स्थितैरुच्चरितं हन्ति पापं जन्मत्रयार्जितम्।। **पुनश्च** - इदं हि गाङ्गं त्यजतामिहाङ्गं पुनर्न चाङ्गं यदि वापि चाङ्गम्। याने विहङ्गं शयने भुजङ्गं करे रथाङ्गं चरणेऽपि गाङ्गम्।।

**ग्रहस्थितिः**-मार्गिणः पूर्वोदिताः कुजगुरुशनयः,मार्गी पूर्वास्तो बुधः, मार्गी पश्चिमोदितः शुक्रः।
**वातावरणम्** - पक्षाद्यन्तभागयोः मेघचारवातोपलपातादयस्तन्मध्यभागे वातमेघच्छायातापवृद्धयः।

# फाल्गुनशुक्लपक्षः

शकाब्दः १९३९, संवत् २०७४, सन् १८२५ साल, दि. १६ ।२ ।१८ ई. तः दि. २ ।३ ।१८ ई. या., दक्षिणे कालः। मार्गी पूर्वोदितो गुरुः, मार्गी पश्चिमोदितः शुक्रः, शुद्धः, शिशिरर्तुः, याम्यगोलः, सौम्यायनम्।

| तिथयः दिनानि | तिथयः द. प. | घं. मि. | नक्षत्राणि द. प. | घं. मि. | योगाः द. प. | करणानि द. प. | चन्द्रराशयः द. प. | घं. मि. | स्पष्टसूर्यः राश्यादिः | दिनमानं द. प. | सूर्योदयः घं. मि. | सूर्यास्तः घं. मि. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ शु. | ५१ ।५२ | रा.०३ ।११ | ध.०७ ।२३ | दि.०६ ।२३ | प.२२ ।५३ | किं.२० ।२७ | कुम्भ | अहोरात्रं | १० ।०३ ।४७ ।१७ | २७ ।४६ | ६ ।२६ | ५ ।३४ |
| २ श. | ५३ ।२६ | रा.०३ ।५० | शत.११ ।१३ | दि.१० ।५५ | शि.२१ ।४८ | बा.२२ ।४० | कुम्भ ५८ ।११ | रा.०५ ।४२ | १० ।०४ ।४७ ।५६ | २७ ।५२ | ६ ।२६ | ५ ।३४ |
| ३ .. | ५३ ।४५ | रा.०३ ।५५ | पूभा.१३ ।५१ | दि.११ ।५७ | सि.१६ ।४० | तै.२३ ।३७ | मीन | अहोरात्रं | १० ।०५ ।४८ ।४१ | २७ ।५५ | ६ ।२५ | ५ ।३५ |
| ४ चं. | ५२ ।४७ | रा.०३ ।३१ | उभा.१५ ।१० | दि.१२ ।२८ | सा.१६ ।३१ | व.२३ ।१६ | मीन | अहोरात्रं | १० ।०६ ।४६ ।२३ | २७ ।५८ | ६ ।२४ | ५ ।३६ |
| ५ मं. | ५० ।३६ | रा.०२ ।३८ | रे.१५ ।१९ | दि.१२ ।३२ | शु.१२ ।२४ | ब.२१ ।४१ | मीन १५ ।१९ | दि.१२ ।३२ | १० ।०७ ।४९ ।५४ | २८ ।०२ | ६ ।२४ | ५ ।३६ |
| ६ बु. | ४७ ।२१ | रा.०१ ।१९ | अ.१४ ।१६ | दि.१२ ।०५ | शु.०७ ।२४ | कौ.१८ ।५८ | मेष | अहोरात्रं | १० ।०८ ।५० ।२५ | २८ ।०६ | ६ ।२३ | ५ ।३७ |
| ७ वृ. | ४३ ।१४ | रा.११ ।४० | भ.१२ ।२२ | दि.११ ।१९ | ब्र.०१ ।३६ | ग.१५ ।१७ | मेष २६ ।४० | सं.०५ ।०२ | १० ।०९ ।५० ।५६ | २८ ।१० | ६ ।२२ | ५ ।३८ |
| ८ शु. | ३८ ।२१ | रा.०९ ।४१ | कृ.०९ ।३३ | दि.१० ।१० | वै.४८ ।०३ | वि.१० ।४७ | वृष | अहोरात्रं | १० ।१० ।५१ ।२७ | २८ ।१४ | ६ ।२१ | ५ ।३९ |
| ९ श. | ३२ ।५७ | रा.०७ ।३१ | रो.०६ ।०७ | दि.०८ ।४७ | वि.४० ।३६ | बा.०५ ।३९ | वृष ३४ ।११ | रा.०८ ।०० | १० ।११ ।५१ ।५७ | २८ ।१८ | ६ ।२० | ५ ।४० |
| १० र. | २७ ।०९ | सं.०५ ।१२ | मृ.०२ ।१५ | दि.०७ ।१४ | प्री.३२ ।५३ | तै.०० ।०३ | मिथुन | अहोरात्रं | १० ।१२ ।५२ ।२७ | २८ ।२२ | ६ ।२० | ५ ।४० |
| ११ चं. | २१ ।१३ | दि.०२ ।४८ | पुन.५३ ।५७ | रा.०३ ।५४ | आ.२५ ।०२ | वि.२१ ।१३ | मिथुन४० ।०० | रा.१० ।१९ | १० ।१३ ।५२ ।५७ | २८ ।२६ | ६ ।१९ | ५ ।४१ |
| १२ मं. | १५ ।२० | दि.१२ ।२६ | पु.४९ ।५८ | रा.०२ ।१७ | सौ.१७ ।१७ | बा.१५ ।२० | कर्क | अहोरात्रं | १० ।१४ ।५३ ।१६ | २८ ।३० | ६ ।१८ | ५ ।४२ |
| १३ बु. | ०९ ।४४ | दि.१० ।११ | श्ले.४६ ।२२ | रा.१२ ।५० | शो.०९ ।४४ | तै.०९ ।४४ | कर्क ४६ ।२२ | रा.१२ ।५० | १० ।१५ ।५३ ।३५ | २८ ।३४ | ६ ।१७ | ५ ।४३ |
| १४ वृ. | ०४ ।३३ | दि.०८ ।०५ | म.४३ ।२० | रा.११ ।३६ | अग.०२ ।३१ | व.०४ ।३३ | सिंह | अहोरात्रं | १० ।१६ ।५३ ।५४ | २८ ।३८ | ६ ।१६ | ५ ।४४ |
| १५ शु. | ०० ।०२ | प्रा.०६ ।१७ | पूफ.४१ ।०७ | रा.१० ।४३ | धृ.४९ ।४९ | ब.०० ।०२ | सिंह ५५ ।४६ | रा.०४ ।३४ | १० ।१७ ।५४ ।१३ | २८ ।४२ | ६ ।१६ | ५ ।४४ |

| दिनांकाः रा. | सौ. | अं. | |
|---|---|---|---|
| २७ | ४ | १६ | कल्याणेश्वराज्जनकपुरपरिक्रमारंभः, रामकृष्णजयन्ती, द्विरागमनं प्रतिपदि, कणविधो राहुवेधाद्विवाहो मध्यमश्च वनिष्ठायाम्। |
| २८ | ५ | १७ | चन्द्रदर्शनं मु.३० समशृंगफलं साम्यं, पश्चिमयात्रा पूर्वभाद्रे। |
| २९ | ६ | १८ | उपनयनं, द्विरागमनं **विवाहश्च** तृतीयायामुत्तरभाद्रे, द.ति. ५३ ।४३ उ., देवादिप्रतिष्ठोत्तरभाद्रे। |
| ३० | ७ | १९ | **शतभिषायां रविः** ३४ ।४२, पश्चिमोदितो बुधः ५५ ।५३, **गणेश** ४ व्रतं, **द्विरागमनं विवाहः** पश्चिमोत्तरयात्रा च पंचम्यां, द.ति.५२ ।४७या., म.२३ ।१६ उ. ५२ ।४७ या.। |
| १ | ८ | २० | **छन्दोगानामुपनयनं, पञ्चकान्तो** दिवा घं.१२ मि.३२ उ., गं.३ ।१९ उ. १८ ।१९ या., पश्चिमयात्रा रेवत्यां तत उत्तरां विना यात्रा पञ्चम्याम्। |
| २ | ९ | २१ | कणविधो **द्विरागमनं विवाहो** देवादिप्रतिष्ठा उत्तरां विना यात्रा चाश्विन्याम्। |
| ३ | १० | २२ | ऐन्द्रमानं ५३ ।३१, भ.४३ ।१४उ.। 卐तत्र पूर्ववायौ राजप्रजासुखमग्निकोणेऽग्निभयं, दक्षिणनैर्ऋत्ययोर्दुर्भिक्षं, पश्चिमे वृष्टिर्वायव्ये वायुवृद्धिरुत्तरैशान्योः सुभिक्षं, निर्वातसमयो |
| ४ | ११ | २३ | द्विरागमनं **विवाहश्च** रोहिण्यामष्टम्यां, देवादिप्रतिष्ठा पूर्वदक्षिणयात्रा च रोहिण्यां, भ.१० ।४७ यावत्। |
| ५ | १२ | २४ | **गृहप्रवेशः** दशम्यां, दक्षिणयात्रा रोहिण्यां ततः पूर्वां विना यात्रा नवम्याम्। राज्ञो हानिकरः, भ. ४ ।३३ उ. ३२ ।१७यावत्। |
| ६ | १३ | २५ | आर्द्रामानं ५५ ।५४, **उपनयनं,** पश्चिमां विना यात्रा द्विरागमनं च मृगशिरसि, भ.५४ ।१९उपरि। देवादिप्रतिष्ठा, भ.२१ ।१३ या., पश्चिमदक्षिणयात्रैकादश्याम्। |
| ७ | १४ | २६ | **आमलकी** ११ व्रतं सर्वेषां, जनकपुरस्य लघ्वीपरिक्रमारंभः, **क्षत्रियवैश्ययोरुपनयनं, ११ व्रतोद्यापनं, मुण्डनं,** कणविधः द्विरागमनमेकादश्यां, **गृहारंभः, गृहप्रवेशः,** |
| ८ | १५ | २७ | गोविन्द १२, गोदघ्ना पारणं, **समुद्रस्नानं जगन्नाथदर्शनञ्च, प्रदोष** १३ व्रतं, उत्तरां विना यात्रा पुष्ये, (१२-१३ एको.)। |
| ९ | १६ | २८ | **प्रदोष** १४ व्रतं, गं.३५ ।२२उ. ५० ।२२यावत्। **जनकपुरस्यान्तर्गृहीय परिक्रमातत्समाप्तिश्च,** चैतन्यमहाप्रभुजयन्ती, **होलिकादाहो** रात्रौ घं.७ मि.१९उ., 卐 |
| १० | १७ | १ | मार्च३, सुकर्मामानं५३ ।१९, मीने शुक्रः०८ ।४५, भ.४ ।३३ उ. ३२ ।१८ या., **फाल्गुनी** १५ स्नानदानादिः, **सावर्णिमन्वादिः,**कुलदेवताभ्यः **सिन्दूरार्पणं (पातरिदानं.)** |
| ११ | १८ | २ | प्रतिपन्मानं५६ ।१८, मीने बुधः१३ ।५४, **होलिकाभस्मधारणं,** सचैलस्नानं,**होली, सप्ताडोरकबन्धनं,** द्विरागमनमुत्तरफल्गुन्यां प्रतिपदि, **विवाह** उत्तरफल्गुन्यां, पूर्वोत्तरयात्रा पूर्वफल्गुन्याम्। |

## मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरं गातिश्च

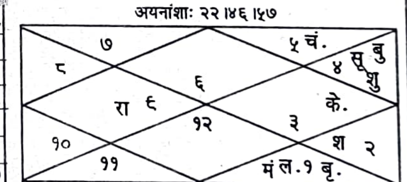
| ति.दि. | मंगलः | बुधः | गुरुः | शुक्रः | शनिः | केतुः |
|---|---|---|---|---|---|---|
| १ शु. | ७ ।१६ ।४५ ।५७ | १० ।०८ ।१२ ।०६ | ७ ।०० ।२७ ।३६ | १० ।१४ ।२८ ।२१ | ८ ।१० ।०४ ।१० | ६ ।२२ ।३२ ।१८ |
| २ श. | ७ ।१७ ।२१ ।२० | १० ।०९ ।५६ ।४३ | ७ ।०० ।३२ ।०१ | १० ।१५ ।४३ ।४० | ८ ।१० ।०९ ।२६ | ६ ।२२ ।२९ ।०७ |
| ३ र. | ७ ।१७ ।५६ ।४३ | १० ।११ ।४१ ।२० | ७ ।०० ।३६ ।२५ | १० ।१६ ।५८ ।५९ | ८ ।१० ।१४ ।४८ | ६ ।२२ ।२५ ।५७ |
| ४ चं. | ७ ।१८ ।३२ ।०६ | १० ।१३ ।२५ ।५७ | ७ ।०० ।४० ।४९ | १० ।१८ ।१४ ।१७ | ८ ।१० ।२० ।०७ | ६ ।२२ ।२२ ।४७ |
| ५ मं. | ७ ।१९ ।०७ ।१७ | १० ।१५ ।०४ ।२२ | ७ ।०० ।४३ ।५५ | १० ।१९ ।२९ ।२१ | ८ ।१० ।२४ ।५२ | ६ ।२२ ।१९ ।३६ |
| ६ बु. | ७ ।१९ ।४२ ।२८ | १० ।१६ ।४२ ।४७ | ७ ।०० ।४७ ।०१ | १० ।२० ।४४ ।२५ | ८ ।१० ।२९ ।३७ | ६ ।२२ ।१६ ।२५ |
| ७ वृ. | ७ ।२० ।१७ ।३८ | १० ।१८ ।२१ ।१२ | ७ ।०० ।५० ।०७ | १० ।२१ ।५९ ।२८ | ८ ।१० ।३४ ।२२ | ६ ।२२ ।१३ ।१४ |
| ८ शु. | ७ ।२० ।५२ ।४८ | १० ।१९ ।५९ ।३७ | ७ ।०० ।५३ ।१३ | १० ।२३ ।१४ ।३१ | ८ ।१० ।३९ ।०७ | ६ ।२२ ।१० ।०३ |
| ९ श. | ७ ।२१ ।२७ ।५८ | १० ।२१ ।३८ ।०२ | ७ ।०० ।५६ ।१९ | १० ।२४ ।२९ ।३४ | ८ ।१० ।४३ ।५१ | ६ ।२२ ।०६ ।५२ |
| १० र. | ७ ।२२ ।०३ ।०८ | १० ।२३ ।१६ ।२६ | ७ ।०० ।५९ ।२४ | १० ।२५ ।४४ ।३७ | ८ ।१० ।४८ ।३५ | ६ ।२२ ।०३ ।४१ |
| ११ चं. | ७ ।२२ ।३८ ।१८ | १० ।२४ ।५४ ।५० | ७ ।०१ ।०२ ।२९ | १० ।२६ ।५९ ।४० | ८ ।१० ।५३ ।१९ | ६ ।२२ ।०० ।३१ |
| १२ मं. | ७ ।२३ ।१३ ।०३ | १० ।२६ ।२२ ।१२ | ७ ।०१ ।०४ ।०३ | १० ।२८ ।१४ ।३४ | ८ ।१० ।५७ ।२९ | ६ ।२१ ।५७ ।२० |
| १३ बु. | ७ ।२३ ।४७ ।४८ | १० ।२७ ।४९ ।३४ | ७ ।०१ ।०५ ।३७ | १० ।२९ ।२९ ।२८ | ८ ।११ ।०१ ।३९ | ६ ।२१ ।५४ ।०९ |
| १४ वृ. | ७ ।२४ ।२२ ।३३ | १० ।२९ ।१६ ।५६ | ७ ।०१ ।०७ ।११ | ११ ।०० ।४४ ।२२ | ८ ।११ ।०५ ।४९ | ६ ।२१ ।५० ।५८ |
| १५ शु. | ७ ।२४ ।५७ ।१८ | ११ ।०० ।४४ ।१८ | ७ ।०१ ।०८ ।४५ | ११ ।०१ ।५९ ।१५ | ८ ।११ ।०९ ।५८ | ६ ।२१ ।४७ ।४७ |

## दैनिकलग्नसारिणीचक्रम्

| ति.दि. | मिश्रमानं | मे.अं. | वृ.अं. | मि.अं. | क.अं. | सिं.अं | कं.अं. | तु.अं. | वृ.अं | ध.अं. | म.अं. | कुं.अं. | मी.अं. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ शु. | ४३ ।५६ | १० ।५३ | १२ ।४९ | १५ ।०२ | १७ ।२० | १९ ।३६ | २१ ।५१ | ० ।०८ | २ ।२५ | ४ ।३० | ६ ।१६ | ७ ।४७ | ६ ।१६ |
| २ श. | ४३ ।५७ | १० ।४९ | १२ ।४५ | १४ ।५८ | १७ ।१६ | १९ ।३२ | २१ ।४७ | ० ।०४ | २ ।२१ | ४ ।२६ | ६ ।१२ | ७ ।४३ | ६ ।१२ |
| ३ र. | ४३ ।५८ | १० ।४६ | १२ ।४२ | १४ ।५५ | १७ ।१३ | १९ ।२९ | २१ ।४४ | ० ।०१ | २ ।१[illegible] | ४ ।२३ | ६ ।०९ | ७ ।४० | ६ ।०९ |
| ४ चं. | ४३ ।५९ | १० ।४२ | १२ ।३८ | १४ ।५१ | १७ ।०९ | १९ ।२५ | २१ ।४० | २३ ।५९ | २ ।१४ | ४ ।१९ | ६ ।०५ | ७ ।३६ | ६ ।०५ |
| ५ मं. | ४४ ।०१ | १० ।३८ | १२ ।३४ | १४ ।४७ | १७ ।०५ | १९ ।२१ | २१ ।३६ | २३ ।५३ | २ ।१० | ४ ।१५ | ६ ।०१ | ७ ।३२ | ६ ।०१ |
| ६ बु. | ४४ ।०३ | १० ।३४ | १२ ।३० | १४ ।४३ | १७ ।०१ | १९ ।१७ | २१ ।३२ | २३ ।४९ | २ ।०६ | ४ ।११ | ५ ।५७ | ७ ।२८ | ८ ।५७ |
| ७ वृ. | ४४ ।०५ | १० ।३० | १२ ।२६ | १४ ।३९ | १६ ।५७ | १९ ।१३ | २१ ।२८ | २३ ।४५ | २ ।०२ | ४ ।०७ | ५ ।५३ | ७ ।२४ | ८ ।५३ |
| ८ शु. | ४४ ।०७ | १० ।२७ | १२ ।२३ | १४ ।३६ | १६ ।५४ | १९ ।१० | २१ ।२५ | २३ ।४२ | १ ।५९ | ४ ।०४ | ५ ।५० | ७ ।२१ | ८ ।५० |
| ९ श. | ४४ ।०९ | १० ।२३ | १२ ।१९ | १४ ।३२ | १६ ।५० | १९ ।०६ | २१ ।२१ | २३ ।३८ | १ ।५५ | ४ ।०० | ५ ।४६ | ७ ।१७ | ८ ।४६ |
| १० र. | ४४ ।११ | १० ।१९ | १२ ।१५ | १४ ।२८ | १६ ।४६ | १९ ।०२ | २१ ।१७ | २३ ।३४ | १ ।५१ | ३ ।५६ | ५ ।४२ | ७ ।१३ | ८ ।४२ |
| ११ चं. | ४४ ।१३ | १० ।१५ | १२ ।११ | १४ ।२४ | १६ ।४२ | १८ ।५८ | २१ ।१३ | २३ ।३० | १ ।४७ | ३ ।५२ | ५ ।३८ | ७ ।०९ | ८ ।३८ |
| १२ मं. | ४४ ।१५ | १० ।११ | १२ ।०७ | १४ ।२० | १६ ।३८ | १८ ।५४ | २१ ।०९ | २३ ।२६ | १ ।४३ | ३ ।४८ | ५ ।३४ | ७ ।०५ | ८ ।३४ |
| १३ बु. | ४४ ।१७ | १० ।०८ | १२ ।०४ | १४ ।१७ | १६ ।३५ | १८ ।५१ | २१ ।०६ | २३ ।२३ | १ ।४० | ३ ।४५ | ५ ।३१ | ७ ।०२ | ८ ।३१ |
| १४ वृ. | ४४ ।१९ | १० ।०४ | १२ ।०० | १४ ।१३ | १६ ।३१ | १८ ।४७ | २१ ।०२ | २३ ।१९ | १ ।३६ | ३ ।४१ | ५ ।२७ | ६ ।५८ | ८ ।२७ |
| १५ शु. | ४४ ।२१ | १० ।०० | ११ ।५६ | १४ ।०९ | १६ ।२७ | १८ ।४३ | २० ।५८ | २३ ।१५ | १ ।३२ | ३ ।३७ | ५ ।२३ | ६ ।५४ | ८ ।२३ |

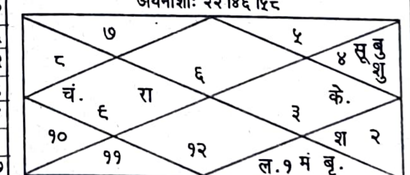
४ चन्द्रे वल्ली ८ ।३६ ।२१ ।४४

अयनांशाः २२ ।४६ ।५७




११ चन्द्रे वल्ली ८ ।३६ ।२१ ।५१

अयनांशाः २२ ।४६ ।५८




**विविधविषयाः** – फाल्गुनपूर्णिमायां **होलिकादाहः** – तत्राग्नौ विधिवद्धुत्वा काममन्त्रं विवर्जयेत्। घृतैः किलकिलाशब्दैस्तालशब्दैर्मनोरमैः।। तमग्निं त्रिः परिक्रम्य गायन्ति च हसन्ति च। जल्पन्ति स्वेच्छया लोके होलिकाख्यातमागतः।। अस्यां काष्ठादिकमेकत्रीकृत्य होलिकां **ध्यायेत्तन्मन्त्रः** – असृमयावसन्तप्तैः कृत्वा त्वं होलि वालिश। अतस्त्वां पूजयिष्यामि भूते भूतिप्रदा भव।। ततो 'होलिकायै नमः' इति पञ्चोपचारैः संपूज्य प्रदीपयेत्। **तत्प्रदीपनमन्त्रः** – दीपयाम्यत्र ते घोरां चितिं राक्षसि ते नमः। हिताय सर्वजगतः प्रीतये पार्वतीपतेः।। ततः परदिने **होलिकाभस्मधारणमन्त्रः** – वन्दितासि सुरेन्द्रेण ब्रह्माच्युतशिवादिभिः। अतस्त्वं पाहि नो भीतेर्भूषिता भूतिदा भव।। प्रयागे **केशवपनफलम्** – किं गयापिण्डदानेन काश्यां वा मरणेन किम्। किं कुरुक्षेत्रदानेन प्रयागे मुण्डनं यदि।। केशानां यावतीसंख्या छिन्नानां जाह्नवीजले। तावद्वर्षसहस्राणि स्वर्गलोके महीयते।। **स्थानविशेषमहत्त्वम्** – प्रयागे वपनं कुर्याद् गयायां पिण्डपातनम्। दानं दद्यात् कुरुक्षेत्रे वाराणस्यां तनुं त्यजेत्।। **सुवर्णपवित्रीमहत्त्वम्** – अन्यानि च पवित्राणि कुशदूर्वात्मकानि च। **स्वर्णात्मकपवित्रस्य** कलां नार्हन्ति षोडशीम्।। अभावे रजतादीनामपि।

**ग्रहस्थितिः** – मार्गिणः पूर्वोदिताः कुजगुरुशनयः, मार्गी पूर्वास्तो बुधः ४ तः पश्चिमोदितः, मार्गी पश्चिमोदितः शुक्रः।

**वातावरणम्** – पक्षादिभागे झंझावातोपलपातमेघचारादयस्तदन्तभागे मेघचाराग्निभयवातादयः।

## चैत्रकृष्णपक्षः

शकाब्दः १९३९, संवत् २०७४, सन् १४२५ साल, दि. ०३।०३।२०१८ ई. तः दि. १७।०३।२०१८ ई. या., दक्षिणे कालः।
मार्गी पूर्वोदितो गुरुः ९ तो वक्री, मार्गी पश्चिमोदितः शुक्रः, बुधः, शिशिरर्तुः, १२ तो वसन्तर्तुः, याम्यगोलः, सौम्यायनम्।

| तिथयः दिनानि | तिथयः द. प. | घं. मि. | नक्षत्राणि द. प. | घं. मि. | योगाः द. प. | करणानि द. प. | चन्द्रराशयः द. प. | घं. मि. | स्पष्टसूर्यः राश्यादिः | दिनमान द. प. | सूर्योदयः घं. मि. | सूर्यास्तः घं. मि. | दिनांकाः रा. | सौ. | अं. | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २ श. | ५३।३३ | रा. ०३।४० | उफ. ३९।४४ | रा. १०।०९ | शू. ४४।३४ | तै. २४।५६ | कन्या | अहोरात्रं | १०।१८।५४।३१ | २८।४६ | ६।१५ | ५।४५ | १२ | १९ | ३ | चैत्रे लक्ष्मणास्नानं महापुण्यप्रदं, चैत्रे मेघाच्छन्नत्वं शोभनं, **गृहारम्भः**, दक्षिणयात्रा हस्ते। |
| ३ र. | ५१।५४ | रा. ०३।०० | ह. ३९।२६ | रा. १०।०० | गं. ४०।०९ | व. २२।४३ | कन्या | अहोरात्रं | १०।१९।५४।४९ | २८।५० | ६।१४ | ५।४६ | १३ | २० | ४ | **पूर्वभाद्रे रविः ४९।३४, द्विरागमनं पूर्वदक्षिणयात्रा** च तृतीयायां, बुधवेवाद्धियाको मध्यमो रात्रौ घं.२ मि.४ या., द.ति. ५१।५४ उ., भ. २२।४३ उ. ५१।५४ यावत्। |
| ४ चं. | ५१।२६ | रा. ०२।४७ | चि. ४०।२० | रा. १०।२१ | वृ. ३६।४३ | ब. २१।४० | कन्या ०९।५३ | दि. १०।१० | १०।२०।५५।०७ | २८।५४ | ६।१३ | ५।४७ | १४ | २१ | ५ | **श्रीविकट ४ व्रतं, द्विरागमनं विवाहः** पश्चिमदक्षिणयात्रा च पंचम्याम्, द.ति. ५१।२६ यावत्। |
| ५ मं. | ५२।१९ | रा. ०३।०८ | स्वा. ४२।३० | रा. ११।१२ | ध्रु. ३४।१७ | कौ. २१।५२ | तुला | अहोरात्रं | १०।२१।५५।११ | २८।५८ | ६।१२ | ५।४८ | १५ | २२ | ६ | पश्चिमदक्षिणयात्रा स्वात्याम्। |
| ६ बु. | ५४।३३ | रा. ०४।०१ | वि. ४५।५७ | रा. १२।३५ | व्या. ३२।५४ | ग. २३।२६ | तुला ३०।०६ | सं. ०६।१४ | १०।२२।५५।१५ | २९।०२ | ६।१२ | ५।४८ | १६ | २३ | ७ | विवाहः पश्चिमयात्रा चानुराधायां, भ. ५४।३३ उपरि। |
| ७ वृ. | ५७।५२ | रा. ०५।२० | अनु. ५०।३१ | रा. ०२।२३ | ह. ३२।२२ | वि. २६।१३ | वृश्चिक | अहोरात्रं | १०।२३।५५।१९ | २९।०६ | ६।११ | ५।४९ | १७ | २४ | ८ | विवाहोऽनुराधायां, पश्चिमोत्तरयात्रा, भ.२६।१३ यावत्। |
| ८ शु. | ६०।०० | अहोरात्रं | ज्ये. ५६।०७ | रा. ०४।३७ | व. ३२।४२ | बा. ३०।०२ | वृश्चिक ५६।०७ | रा. ०४।३७ | १०।२४।५५।२३ | २९।१० | ६।१० | ५।५० | १८ | २५ | ९ | विवाहो मूले, गं. ५०।०७ उ., उत्तरयात्रा ज्येष्ठायां ततः पूर्वोत्तरयात्रा। |
| ८ श. | ०२।१३ | प्रा. ०७।०२ | मू. ६०।०० | अहोरात्रं | सि. ३३।३९ | कौ. ०२।१३ | धनु | अहोरात्रं | १०।२५।५५।२७ | २९।१४ | ६।०९ | ५।५१ | १९ | २६ | १० | गं. ०५।०७ या., उत्तरयात्रा। |
| ९ र. | ०७।१४ | दि. ०९।०२ | मू. ०२।२० | प्रा. ०७।०४ | व्य. ३५।०४ | ग. ०७।१४ | धनु | अहोरात्रं | १०।२६।५५।३० | २९।१८ | ६।०८ | ५।५२ | २० | २७ | ११ | **वक्री गुरुः ३४।५३, मूले धनुषि कुजः** ३०।३०, भ. ३९।५५ उ., पूर्वोत्तरयात्रा दशम्याम्। |
| १० चं. | १२।३६ | दि. ११।१० | पूषा. ०८।५४ | दि. ०९।४२ | व. ३६।३४ | वि. १२।३६ | धनु २५।३१ | दि. ०४।२० | १०।२७।५५।३३ | २९।२२ | ६।०८ | ५।५२ | २१ | २८ | १२ | **विवाह** उत्तराषाढे, भ.१२।३६ या., उत्तरयात्रा पूर्वाषाढे, (११ एको.)। |
| ११ मं. | १७।४७ | दि. ०१।१४ | उषा. १५।२३ | दि. १२।१६ | प. ३७।५० | बा. १७।४७ | मकर | अहोरात्रं | १०।२८।५५।२२ | २९।२६ | ६।०७ | ५।५३ | २२ | २९ | १३ | **पापमोचिनी ११ व्रतं सर्वेषां**, उत्तरां विना यात्रा द्वादश्याम्। |
| १२ बु. | २२।२७ | दि. ०३।०५ | श्र. २१।२२ | दि. ०२।३९ | शि. ३८।३९ | तै. २२।२७ | मकर ५३।५९ | रा. ०३।४२ | १०।२९।५५।११ | २९।३० | ६।०६ | ५।५४ | २३ | ३० | १४ | **मीने रविः** ४९।३५ मु.३० फलं साम्यं, मासान्तः, गोघृतेन पारणं, प्रदोष १३ व्रतं, पंचकारंभो दिवा घं.०२ मि.३९ उ., (१२ एको.)। |
| १३ वृ. | २६।१८ | दि. ०४।३६ | ध. २६।३३ | दि. ०४।४२ | सि. ३८।४४ | व. २६।१८ | कुम्भ | अहोरात्रं | ११।००।५५।०० | २९।३४ | ६।०५ | ५।५५ | २४ | १ | १५ | **षडशीतिसंक्रान्तिपुण्यकालो** घं.१२ मि.० यावद्दिने, **पुण्याहः, प्रदोष १४ व्रतं**, भ. २६।१८ उ. ५७।३८ यावत्। |
| १४ शु. | २८।५९ | सं. ०५।४० | शत. ३०।३६ | सं. ०६।१८ | सा. ३७।५६ | श. २८।५९ | कुम्भ | अहोरात्रं | ११।०१।५४।४९ | २९।३८ | ६।०४ | ५।५६ | २५ | २ | १६ | मासादिः। |
| ३० श. | ३०।३१ | सं. ०६।१६ | पूभा. ३३।३१ | रा. ०७।२८ | शु. ३६।११ | ना. ३०।३१ | कुम्भ १७।४९ | दि. ०१।११ | ११।०२।५४।३८ | २९।४२ | ६।०४ | ५।५६ | २६ | ३ | १७ | चैत्री३० स्नानदानादिः। |

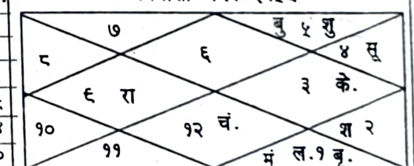
### मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च

| ति.दि. | मंगलः | बुधः | गुरुः | शुक्रः | शनिः | केतुः |
|---|---|---|---|---|---|---|
| २ श. | ७।२५।३२।०३ | ११।०२।११।४० | ७।०१।१०।१९ | ११।०३।१४।०८ | ८।११।१४।०७ | ६।२१।४४।३६ |
| ३ र. | ७।२६।०६।४८ | ११।०३।३९।०२ | ७।०१।११।५३ | ११।०४।२९।०१ | ८।११।१८।१६ | ६।२१।४१।२६ |
| ४ चं. | ७।२६।४१।३२ | ११।०५।०६।२३ | ७।०१।१३।२६ | ११।०५।४३।५४ | ८।११।२२।२५ | ६।२१।३८।१६ |
| ५ मं. | ७।२७।१५।५८ | ११।०६।१६।३६ | ७।०१।१३।५५ | ११।०६।५८।३५ | ८।११।२६।०८ | ६।२१।३५।०५ |
| ६ बु. | ७।२७।५०।२४ | ११।०७।२६।४९ | ७।०१।१४।२४ | ११।०८।१३।१६ | ८।११।२९।५१ | ६।२१।३१।५४ |
| ७ वृ. | ७।२८।२४।५० | ११।०८।३७।०२ | ७।०१।१४।५३ | ११।०९।२७।५७ | ८।११।३३।३४ | ६।२१।२८।४३ |
| ८ शु. | ७।२८।५९।१६ | ११।०९।४७।१५ | ७।०१।१५।२२ | ११।१०।४२।३८ | ८।११।३७।१७ | ६।२१।२५।३२ |
| ८ श. | ७।२९।३३।४२ | ११।१०।५७।२८ | ७।०१।१५।३५ | ११।११।५७।१९ | ८।११।४१।०० | ६।२१।२२।२१ |
| ९ र. | ८।००।०८।०७ | ११।१२।०७।४१ | ७।०१।१५।४० | ११।१३।१२।०० | ८।११।४४।४३ | ६।२१।१९।११ |
| १० चं. | ८।००।४२।३२ | ११।१३।१७।५४ | ७।०१।१५।०० | ११।१४।२६।४० | ८।११।४८।२६ | ६।२१।१६।०१ |
| ११ मं. | ८।०१।१६।१६ | ११।१३।५८।५२ | ७।०१।१३।५८ | ११।१५।४१।०९ | ८।११।५१।२६ | ६।२१।१२।५० |
| १२ बु. | ८।०१।५०।०० | ११।१४।३९।४९ | ७।०१।१२।५६ | ११।१६।५५।३८ | ८।११।५४।२६ | ६।२१।०९।३९ |
| १३ वृ. | ८।०२।२३।४४ | ११।१५।२०।४६ | ७।०१।११।५४ | ११।१८।१०।०७ | ८।११।५७।२५ | ६।२१।०६।२८ |
| १४ शु. | ८।०२।५७।२७ | ११।१६।०१।४३ | ७।०१।१०।५२ | ११।१९।२४।३६ | ८।१२।००।२४ | ६।२१।०३।१७ |
| ३० श. | ८।०३।३१।१० | ११।१६।४२।४० | ७।०१।०९।५१ | ११।२०।३९।०४ | ८।१२।०३।२३ | ६।२१।००।०६ |

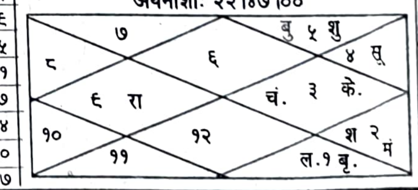
### दैनिकलग्नसारिणीचक्रम्

| ति.दि. | मिश्रमानं | मे.अं. | वृ.अं. | मि.अं. | क.अं. | सिं.अं. | कं.अं. | तु.अं. | वृ.अं. | ध.अं. | म.अं. | कुं.अं. | मी.अं. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २ श. | ४४।२३ | ६।५६ | ११।५२ | १४।०५ | १६।२३ | १८।३९ | २०।५४ | २३।११ | १।२८ | ३।३३ | ५।१९ | ६।५० | ८।१९ |
| ३ र. | ४४।२५ | ६।५२ | ११।४८ | १४।०१ | १६।१९ | १८।३५ | २०।५० | २३।०७ | १।२४ | ३।२९ | ५।१५ | ६।४६ | ८।१५ |
| ४ चं. | ४४।२७ | ६।४९ | ११।४५ | १३।५८ | १६।१६ | १८।३२ | २०।४७ | २३।०४ | १।२१ | ३।२६ | ५।१२ | ६।४३ | ८।१२ |
| ५ मं. | ४४।२९ | ६।४५ | ११।४१ | १३।५४ | १६।१२ | १८।२८ | २०।४३ | २३।०० | १।१७ | ३।२२ | ५।०८ | ६।३९ | ८।०८ |
| ६ बु. | ४४।३१ | ६।४१ | ११।३७ | १३।५० | १६।०८ | १८।२४ | २०।३९ | २२।५६ | १।१३ | ३।१८ | ५।०४ | ६।३५ | ८।०४ |
| ७ वृ. | ४४।३३ | ६।३७ | ११।३३ | १३।४६ | १६।०४ | १८।२० | २०।३५ | २२।५२ | १।०९ | ३।१४ | ५।०० | ६।३१ | ८।०० |
| ८ शु. | ४४।३५ | ६।३३ | ११।२९ | १३।४२ | १६।०० | १८।१६ | २०।३१ | २२।४८ | १।०५ | ३।१० | ४।५६ | ६।२७ | ७।५६ |
| ८ श. | ४४।३७ | ६।३० | ११।२६ | १३।३९ | १५।५७ | १८।१३ | २०।२८ | २२।४५ | १।०२ | ३।०७ | ४।५३ | ६।२४ | ७।५३ |
| ९ र. | ४४।३९ | ६।२६ | ११।२२ | १३।३५ | १५।५३ | १८।०९ | २०।२४ | २२।४१ | ०।५८ | ३।०३ | ४।४९ | ६।२० | ७।४९ |
| १० चं. | ४४।४१ | ६।२२ | ११।१८ | १३।३१ | १५।४९ | १८।०५ | २०।२० | २२।३७ | ०।५४ | २।५९ | ४।४५ | ६।१६ | ७।४५ |
| ११ मं. | ४४।४३ | ६।१८ | ११।१४ | १३।२७ | १५।४५ | १८।०१ | २०।१६ | २२।३३ | ०।५० | २।५५ | ४।४१ | ६।१२ | ७।४१ |
| १२ बु. | ४४।४५ | ६।१४ | ११।१० | १३।२३ | १५।४१ | १७।५७ | २०।१२ | २२।२९ | ०।४६ | २।५१ | ४।३७ | ६।०८ | ७।३७ |
| १३ वृ. | ४४।४७ | ६।११ | ११।०७ | १३।२० | १५।३८ | १७।५४ | २०।०९ | २२।२६ | ०।४३ | २।४८ | ४।३४ | ६।०५ | ७।३४ |
| १४ शु. | ४४।४९ | ६।०७ | ११।०३ | १३।१६ | १५।३४ | १७।५० | २०।०५ | २२।२२ | ०।३९ | २।४४ | ४।३० | ६।०१ | ७।३० |
| ३० श. | ४४।५१ | ६।०४ | ११।०० | १३।१३ | १५।३१ | १७।४७ | २०।०२ | २२।१९ | ०।३६ | २।४१ | ४।२७ | ५।५८ | ७।२७ |

४ चन्द्रे वल्ली ८।३९।२१।५८
अयनांशाः २२।४६।५९




१० चन्द्रे वल्ली ८।३९।२२।०५
अयनांशाः २२।४७।००




**विविधविषयाः** – दिक्क्रमेण प्रहरार्द्धवशेन च **छिक्काफलं**, मुहूर्त्तगणपती–मृत्युर्वह्निभयं हानिस्तुष्टिर्द्रव्यागमः सुखम्। क्लेशोऽर्थागमनं प्रोक्तं दिक्षु छिक्काफलं क्रमात्।। **गोक्षुतस्य दोषाधिक्यमुक्तं** नारदेन–सर्वदिक्षु क्षुतं नेष्टं गोक्षुतं मरणप्रदम्। अफलं तत्क्षुतं वाच्यमन्यपीनसकैतवः।। कैतवः–कपटः। पीनसो–मुहुर्नासास्रावी। **रत्नावलीरत्नकलापयोः** – प्रागन्यपुंसः पुरतोऽपरस्तात् पुनः पुनर्वा तत एव जातम्। वृद्धाच्छिशोर्वा कफतो हठाद्वा जातं क्षुतं केऽपि वदन्त्यसत्यम्।। यात्रायां क्षुतमवश्यमेव वर्जनीयम्। **रत्नकलापे**–अग्रे क्षुतं चेच्छकुनैः किमन्यैः पश्चाच्छुतं चेच्छकुनैः किमन्यैः। जातानजाताञ्छकुनानि हन्ति क्षुतप्रदेनात्र वदन्ति तज्ज्ञाः।। **शुभक्षुतं सर्वशाकुने**–औषधे च नवारोहे दिवादे शयनेऽशने। विद्यारम्भे बीजवापे क्षुतं सप्तसु शोभनम्।। क्षुतादिषु **कर्त्तव्यमाह**–छिक्कापतनजृम्भासु जीवेतिष्ठांगुलीध्वनिः। गुरावपि च कर्त्तव्या अकृत्वा ब्रह्महा भवेत्।। **होमविधौ विशेषः** – विवाहयात्राव्रतगोचरेषु चूडोपनीतिग्रहणे युगादौ। दुर्गाविधाने च सुतप्रसूतौ नैवाग्निचक्रं परिचिन्तनीयम्।। **प्रतिष्ठाप्रकारो** – दुर्गाहोमविधौ विवाहसमये सीमन्तपुत्रोत्सवे गर्भाधानविधौ च वास्तुसमये विष्णोः प्रतिष्ठादिषु। मौञ्जीबन्धनवैश्वदेवकरणे संस्कारनैमित्तिके होमे नित्यभवे न दोषकथनं चक्रं च वह्नेरपि।।

**ग्रहस्थितिः** – मार्गिणौ पूर्वोदितौ कुजशनी, मार्गिणौ पश्चिमोदितौ बधशुक्रौ, मार्गी पूर्वोदितो गुरुः ९ तो वक्री।

**वातावरणम्** – पक्षादिभागे तापाग्निभयाभ्रचारादयस्तदन्तभागे झंझावाताभ्रचारादयः।

## चैत्रशुक्लपक्षः

शकाब्दः १९३६, संवत् २०७५, सन् १४२५ साल, दि. १८।०३।२०१८ इ. तः दि. ३१।०३।२०१८ इ. या., दक्षिणे कालः। वक्री पूर्वोदितो गुरुः, मार्गी पश्चिमोदितः शुक्रः, शुद्धः, वसन्तर्तुः, याम्यगोलः, सौम्यायनम्।

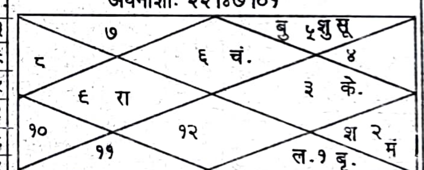
| तिथयः दिनानि | तिथयः द. प. | घं. मि. | नक्षत्राणि द. प. | घं. मि. | योगाः द. प. | करणानि द. प. | चन्द्रराशयः द. प. | घं. मि. | स्पष्टसूर्यः राश्यादिः | दिनमानं द. प. | सूर्योदयः घं. मि. | सूर्यास्तः घं. मि. | दिनाकाः रा. | सौ. | अं. | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ र. | ३० ।४१ | सं. ०६ ।१६ | उभा.३५ ।०६ | रा. ०८ ।०७ | शु. ३३ ।२५ | किं.०० ।३६ | मीन | अहो. | ११ ।०३ ।५४ ।२७ | २६ ।४६ | ६ ।०३ | ५ ।५७ | २७ | ४ | १८ | उत्तरभाद्रे रविः १० ।१८, नववर्षविक्रमसंवत् २०७५ प्रारंभः, वसन्तनवरात्रारंभः, कलशस्थापनं, श्रीदुर्गापूजनोत्सवः, **नवरात्रव्रतारंभः**, द.ति. ३० ।४१ उपरि। |
| २ चं. | २६ ।३४ | सं. ०५ ।५२ | रे. ३५ ।३३ | रा. ०८ ।१५ | ब्र. २६ ।३६ | बा.०० ।०७ | मी. ३५ ।३३ | रा. ०८ ।१५ | ११ ।०४ ।५४ ।१५ | २६ ।५० | ६ ।०२ | ५ ।५८ | २८ | ५ | १९ | चन्द्रदर्शनं मु.३० याम्यश्रृंगफलं महार्घं, **रेमन्तपूजा**, द.ति. २६ ।३४ या., **पंचकान्तो** रात्रौ घं. ८ मि. १५ उ., गं. २३ ।३३ उ. ३८ ।३३ या., ← |
| ३ मं. | २७ ।१३ | दि. ०४ ।५४ | अ. ३४ ।४८ | रा. ०७ ।५६ | ऐं. २४ ।५६ | ग. २७ ।१३ | मेष | अहो. | ११ ।०५ ।५३ ।४९ | २६ ।५४ | ६ ।०१ | ५ ।५९ | २९ | ६ | २० | गौरी ३ व्रतं, स्वायंभुवमन्वादिः, **गणेश ४ व्रत**, भ. ५५ ।३१ उ., उत्तरां विना यात्राश्विन्याम्। ←पश्चिमोत्तरयात्रा तृतीयायां रेवत्यां ततः पूर्वां विना यात्रा। |
| ४ बु. | २३ ।४९ | दि. ०३ ।३२ | भ. ३३ ।०१ | रा. ०७ ।१२ | वै. १९ ।२४ | वि. २३ ।४९ | मे. ४७ ।२२ | रा. १२ ।५७ | ११ ।०६ ।५३ ।२३ | २९ ।५८ | ६ ।०० | ६ ।०० | ३० | ७ | २१ | भ. २३ ।४९ यावत्। ☸ ब्रह्मपुत्रस्नानञ्च, त्रिशूलिनीपूजा, रामावतारः, **रामनवमीव्रतं**, हनुमद्ध्वजदानं, सीतारामपूजनदर्शनादिकम्। |
| ५ वृ. | १९ ।३४ | दि. ०१ ।५० | कृ. ३० ।२५ | सं. ०६ ।१० | वि. १३ ।११ | बा. १९ ।३४ | वृष | अहो. | ११ ।०७ ।५२ ।५६ | ३० ।०२ | ६ ।०० | ६ ।०० | १ | ८ | २२ | वक्री बुधः २४ ।४३, श्रीपंचमी, **लक्ष्मीपूजनं**, मीनावतारः, रामराज्याभिषेकोत्सवः, षष्ठीव्रतैकभुक्तं(खरना), पूर्वयात्रा रोहिण्याम्। |
| ६ शु. | १४ ।३६ | दि. ११ ।४९ | रो. २७ ।०८ | दि. ०४ ।५० | प्री. ०६ ।१९ | तै. १४ ।३६ | वृ. ५५ ।१५ | रा. ०४ ।०५ | ११ ।०८ ।५२ ।२९ | ३० ।०६ | ५ ।५९ | ६ ।०१ | २ | ९ | २३ | आयुष्मानमानं ५२ ।४१, सूर्य ६ व्रतं, **सायंकालिकार्घदानं**, गजपूजा, **विल्वाभिमन्त्रणं**, पूर्वदक्षिणयात्रा षष्ठ्यां, (६-७ स्को.)। |
| ७ श. | ०९ ।०५ | दि. ०९ ।३६ | मृ. २३ ।२२ | दि. ०३ ।१९ | सौ. ५१ ।२३ | व. ०९ ।०५ | मिथुन | अहो. | ११ ।०९ ।५२ ।०२ | ३० ।१० | ५ ।५८ | ६ ।०२ | ३ | १० | २४ | **प्रातःकालिकार्घदानं पारणञ्च, पत्रिकाप्रवेशः, महारात्रिर्निशापूजा**, भ. ०९ ।०५ उ. ३६ ।०८ या., पूर्वां विना यात्रा मृगशिरसि। |
| ८ र. | ०३ ।१२ | दि. ०७ ।१४ | आ. १९ ।१७ | दि. ०१ ।४० | शो. ४३ ।३९ | ब. ०३ ।१२ | मिथुन | अहो. | ११ ।१० ।५१ ।३५ | ३० ।१४ | ५ ।५७ | ६ ।०३ | ४ | ११ | २५ | नवमीमानं ५४ ।००, अश्विन्यां मेषे शुक्रः १८ ।५०, पश्चिमास्तो बुधः ५८ ।१८, महाष्टमीनवमीव्रतं, दीक्षाग्रहणं, **अशोकाष्टमी**, अशोककलिकापानं ☸ |
| १० चं. | ५१ ।१५ | रा. ०२ ।२६ | पुन. १५ ।०७ | दि. ११ ।५९ | अगं ३५ ।५५ | तै. २४ ।१४ | मि. ०१ ।१० | प्रा. ०६ ।२४ | ११ ।११ ।५१ ।०८ | ३० ।१८ | ५ ।५६ | ६ ।०४ | ५ | १२ | २६ | **विजया १०**, अपराजितापूजा, देवीविसर्जनं, **जयन्तीधारणं**, नवरात्रव्रतपारणं, यात्रा, नीलकण्ठखञ्जनादिदर्शनं, **क्षत्रियवैश्ययोरुपनयन, विप्रोपनयनं पुष्य**,◆ |
| ११ मं. | ४५ ।३५ | रा. १२ ।१० | पु. ११ ।०६ | दि. १० ।२२ | सु. २८ ।२१ | व. १८ ।२५ | कर्क | अहो. | ११ ।१२ ।५० ।२६ | ३० ।२२ | ५ ।५६ | ६ ।०४ | ६ | १३ | २७ | **कामदा ११ व्रतं सर्वेषां**, गं. ५६ ।२५ उ., भ. १८ ।२५ उ. ४५ ।३५ या., **छन्दोगानामुपनयनम्**। |
| १२ बु. | ४० ।२० | रा. १० ।०३ | श्ले. ०७ ।२५ | दि. ०८ ।५३ | धृ. २१ ।०४ | ब. १२ ।५८ | कर्क ०७ ।२५ | दिं. ०८ ।५३ | ११ ।१३ ।४९ ।४४ | ३० ।२६ | ५ ।५५ | ६ ।०५ | ७ | १४ | २८ | विष्णु १२, गोघृतेन पारणं, गं. ११ ।२५ यावत्। ◆पश्चिमदक्षिणयात्रा मिथुनस्थे चन्द्रे ततः पश्चिमोत्तरयात्रा पुनर्वसौ ततः पूर्वां विना यात्रा। |
| १३ वृ. | ३५ ।४७ | रा. ०८ ।१३ | म. ०४ ।१३ | दि. ०७ ।३५ | शू. १४ ।१८ | कौ. ०८ ।०४ | सिंह | अहो. | ११ ।१४ ।४९ ।०२ | ३० ।३० | ५ ।५४ | ६ ।०६ | ८ | १५ | २९ | **प्रदोष १३ व्रतं**, चैत्रावली मदन१३ मदनपूजनं, गोष्ठे सत्संगारंभः, महावीर(२६१६) जयन्ती, पूर्वोत्तरयात्रा त्रयोदश्यां पूर्वफल्गुन्याम्। |
| १४ शु. | ३२ ।०२ | सं. ०६ ।४२ | पूफ. ०१ ।५० | प्रा. ०६ ।३७ | गं. ०८ ।१० | ग. ०३ ।५५ | सिं. १६ ।२६ | दि. १२ ।२७ | ११ ।१५ ।४८ ।२० | ३० ।३४ | ५ ।५३ | ६ ।०७ | ९ | १६ | ३० | **प्रदोष १४ व्रतं**, मदनभंजिका १४, भ. ३२ ।०२ उ., पूर्वोत्तरयात्रा पूर्वफल्गुन्याम्। |
| १५ श. | २९ ।१५ | सं. ०५ ।३४ | उफ. ०० ।१५ | प्रा. ०५ ।५८ | वृ. ०२ ।४५ | वि. ०० ।३९ | कन्या | अहो. | ११ ।१६ ।४७ ।३७ | ३० ।३८ | ५ ।५२ | ६ ।०८ | १० | १७ | ३१ | हस्तमानं ५९ ।२६, ध्रुवमानं ५५ ।२५, रेवत्यां रविः ३७ ।३६, चैत्री १५ स्नानदानादिः **स्वारोचिषमन्वादिः**, म. ०० ।३९ या., दक्षिणयात्रा प्रतिपदि। |

### मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च — दैनिकलग्नसारिणीचक्रम्

| ति.दि. | मंगलः | बुधः | गुरुः | शुक्रः | शनिः | केतुः | मिश्रमानं | मे.अं. | वृ.अं. | मि.अं. | क.अं. | सिं.अं. | कं.अं. | तु.अं. | वृ.अं. | ध.अं. | म.अं. | कुं.अं. | मी.अं. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ र. | ८ ।०४ ।०४ ।५३ | ११ ।१७ ।२३ ।३७ | ७ ।०१ ।०८ ।५० | ११ ।२१ ।५३ ।३२ | ८ ।१२ ।०६ ।२२ | ६ ।२० ।५६ ।५६ | ४४ ।५३ | ९ ।०० | १० ।५६ | १३ ।०९ | १५ ।२७ | १७ ।४३ | १९ ।५८ | २२ ।१५ | ० ।३२ | २ ।३७ | ४ ।२३ | ५ ।५४ | ७ ।२३ |
| २ चं. | ८ ।०४ ।३८ ।३६ | ११ ।१८ ।०४ ।३४ | ७ ।०१ ।०७ ।४९ | ११ ।२३ ।०८ ।०० | ८ ।१२ ।०६ ।२१ | ६ ।२० ।५३ ।४६ | ४४ ।५५ | ८ ।५६ | १० ।५२ | १३ ।०५ | १५ ।२३ | १७ ।३९ | १९ ।५४ | २२ ।११ | ० ।२८ | २ ।३३ | ४ ।१९ | ५ ।५० | ७ ।१९ |
| ३ मं. | ८ ।०५ ।११ ।४८ | ११ ।१८ ।२० ।५९ | ७ ।०१ ।०५ ।२० | ११ ।२४ ।२२ ।०५ | ८ ।१२ ।११ ।४६ | ६ ।२० ।५० ।३५ | ४४ ।५७ | ८ ।५२ | १० ।४८ | १३ ।०१ | १५ ।१९ | १७ ।३५ | १९ ।५० | २२ ।०७ | ० ।२४ | २ ।२९ | ४ ।१५ | ५ ।४६ | ७ ।१५ |
| ४ बु. | ८ ।०५ ।४५ ।०० | ११ ।१८ ।३७ ।२३ | ७ ।०१ ।०२ ।५२ | ११ ।२५ ।३६ ।१० | ८ ।१२ ।१४ ।११ | ६ ।२० ।४७ ।२४ | ४४ ।५९ | ८ ।४९ | १० ।४५ | १२ ।५८ | १५ ।१६ | १७ ।३२ | १९ ।४७ | २२ ।०४ | ० ।२१ | २ ।२६ | ४ ।१२ | ५ ।४३ | ७ ।१२ |
| ५ वृ. | ८ ।०६ ।१८ ।१२ | ११ ।१८ ।४३ ।३८ | ७ ।०१ ।०० ।२४ | ११ ।२६ ।५० ।१५ | ८ ।१२ ।१६ ।३६ | ६ ।२० ।४४ ।१३ | ४५ ।०१ | ८ ।४५ | १० ।४१ | १२ ।५४ | १५ ।१२ | १७ ।२८ | १९ ।४३ | २२ ।०० | ० ।१७ | २ ।२२ | ४ ।०८ | ५ ।३९ | ७ ।०८ |
| ६ शु. | ८ ।०६ ।५१ ।२३ | ११ ।१८ ।४२ ।५२ | ७ ।०० ।५७ ।५६ | ११ ।२८ ।०४ ।१९ | ८ ।१२ ।१९ ।०१ | ६ ।२० ।४१ ।०२ | ४५ ।०३ | ८ ।४१ | १० ।३७ | १२ ।५० | १५ ।०८ | १७ ।२४ | १९ ।३९ | २१ ।५६ | ० ।१३ | २ ।१९ | ४ ।०४ | ५ ।३५ | ७ ।०४ |
| ७ श. | ८ ।०७ ।२४ ।३४ | ११ ।१८ ।२९ ।४८ | ७ ।०० ।५५ ।२८ | ११ ।२९ ।१८ ।२३ | ८ ।१२ ।२१ ।२५ | ६ ।२० ।३७ ।५१ | ४५ ।०५ | ८ ।३८ | १० ।३४ | १२ ।४७ | १५ ।०५ | १७ ।२१ | १९ ।३६ | २१ ।५३ | ० ।१० | २ ।१५ | ४ ।०१ | ५ ।३२ | ७ ।०१ |
| ८ र. | ८ ।०७ ।५७ ।४५ | ११ ।१८ ।१६ ।४४ | ७ ।०० ।५३ ।०० | ० ।०० ।३२ ।२७ | ८ ।१२ ।२३ ।४९ | ६ ।२० ।३४ ।४० | ४५ ।०७ | ८ ।३४ | १० ।३० | १२ ।४३ | १५ ।०१ | १७ ।१७ | १९ ।३२ | २१ ।४९ | ० ।०६ | २ ।११ | ३ ।५७ | ५ ।२८ | ६ ।५७ |
| १० चं. | ८ ।०८ ।३० ।५६ | ११ ।१८ ।०३ ।३९ | ७ ।०० ।५० ।३२ | ० ।०१ ।४६ ।३१ | ८ ।१२ ।२६ ।१३ | ६ ।२० ।३१ ।३० | ४५ ।०९ | ८ ।३० | १० ।२६ | १२ ।३९ | १४ ।५७ | १७ ।१३ | १९ ।२८ | २१ ।४५ | ० ।०२ | २ ।०७ | ३ ।५३ | ५ ।२४ | ६ ।५३ |
| ११ मं. | ८ ।०९ ।०३ ।२४ | ११ ।१७ ।२४ ।०७ | ७ ।०० ।४६ ।४४ | ० ।०३ ।०० ।२२ | ८ ।१२ ।२७ ।४८ | ६ ।२० ।२८ ।१९ | ४५ ।११ | ८ ।२६ | १० ।२२ | १२ ।३५ | १४ ।५३ | १७ ।०९ | १९ ।२४ | २१ ।४१ | २३ ।५८ | २ ।०३ | ३ ।४९ | ५ ।२० | ६ ।४९ |
| १२ बु. | ८ ।०९ ।३५ ।५१ | ११ ।१६ ।४४ ।३५ | ७ ।०० ।४२ ।५७ | ० ।०४ ।१४ ।१३ | ८ ।१२ ।२९ ।२३ | ६ ।२० ।२५ ।०८ | ४५ ।१३ | ८ ।२३ | १० ।१९ | १२ ।३२ | १४ ।५० | १७ ।०६ | १९ ।२१ | २१ ।३८ | २३ ।५५ | २ ।०० | ३ ।४६ | ५ ।१७ | ६ ।४६ |
| १३ वृ. | ८ ।१० ।०८ ।१८ | ११ ।१६ ।०५ ।०३ | ७ ।०० ।३९ ।१० | ० ।०५ ।२८ ।०४ | ८ ।१२ ।३० ।५८ | ६ ।२० ।२१ ।५७ | ४५ ।१५ | ८ ।१९ | १० ।१५ | १२ ।२८ | १४ ।४६ | १७ ।०२ | १९ ।१७ | २१ ।३४ | २३ ।५१ | १ ।५६ | ३ ।४२ | ५ ।१३ | ६ ।४२ |
| १४ शु. | ८ ।१० ।४० ।४५ | ११ ।१५ ।२५ ।३१ | ७ ।०० ।३५ ।२३ | ० ।०६ ।४१ ।५५ | ८ ।१२ ।३२ ।३३ | ६ ।२० ।१८ ।४६ | ४५ ।१७ | ८ ।१५ | १० ।११ | १२ ।२४ | १४ ।४२ | १६ ।५८ | १९ ।१३ | २१ ।३० | २३ ।४७ | १ ।५२ | ३ ।३८ | ५ ।०९ | ६ ।३८ |
| १५ श. | ८ ।११ ।१३ ।१२ | ११ ।१४ ।४५ ।५९ | ७ ।०० ।३१ ।३६ | ० ।०७ ।५५ ।४६ | ८ ।१२ ।३४ ।०८ | ६ ।२० ।१५ ।३५ | ४५ ।१९ | ८ ।१२ | १० ।०८ | १२ ।२१ | १४ ।३९ | १६ ।५५ | १९ ।१० | २१ ।२७ | २३ ।४४ | १ ।४९ | ३ ।३५ | ५ ।०६ | ६ ।३५ |

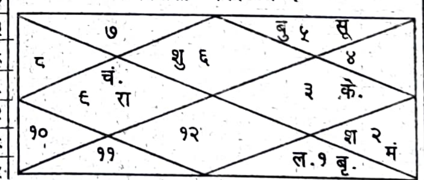
२ चन्द्रे वल्ली ८ ।३६ ।२२ ।१२

अयनांशाः २२ ।४७ ।०१




१० चन्द्रे वल्ली ८ ।३६ ।२२ ।१९

अयनांशाः २२ ।४७ ।०२




**विविधविषयाः**–चैत्रशुक्लप्रतिपत्तो नवमीं यावत् दुर्गापूजनोत्सवस्तत्र घटे यन्त्रे चित्रे प्रतिमायां वा देवीं पूजयेत्, सप्तशतीपाठादिकं च कुर्यात्। **चैत्रशुक्लाष्टम्यामशोककलिकापानमन्त्रः** – त्वामशोककराभीष्ट मधुमाससमुद्भव। पिवामि शोकसन्तप्तो मामशोकं सदा कुरु।। एतत्पानफलं **लिंगपुराणे** – अशोककलिका ह्यष्टौ ये पिवन्ति पुनर्वसौ। चैत्रे मासि सिताष्टम्यां न ते शोकमवाप्नुयुः।। **ब्रह्मपुत्रस्नानमन्त्रः** ब्रह्मपुत्रमहाभाग शन्तनोः कुलसम्भवः। अमोघागर्भसम्भूत पापं लौहित्य मे हर।। **चैत्रशुक्लनवम्यां** रामनवमीव्रतन्तत्रांगदेवतापूजनपूर्वकं **श्रीरामं संपूज्यार्घ्यं दद्यात्तन्मन्त्रः** – दशाननवधार्थाय धर्मसंस्थापनाय च। राक्षसानां विनाशाय दैत्यानां निधनाय च।। परित्राणाय साधूनां जातो रामः स्वयं हरिः। गृहाणार्घ्यं मया दत्तं भ्रातृभिः सहितोऽनघ।। ततः परदिने इदं विष्णुरिति मन्त्रेण जुहुयाद् ब्राह्मणांश्च भोजयेत्। **मिथिलामाहात्म्यं** बृहद्विष्णुपुराणे – मिथिलां ये नमस्यन्ति देशान्तरगता अपि। तेषां भुक्तिश्च मुक्तिश्च जायते नात्र संशयः।। मिथिलावासमासाद्य जीवन्मुक्तो भवेन्नरः। देहान्ते राघवं प्राप्य तद्भक्तैः सह मोदते।। **चक्षूरक्षार्थं पठनीयमन्त्रः** – शर्यातिञ्च सुकन्यां च च्यवनं शक्रमश्विनौ। भोजनान्ते स्मरेन्नित्यं तस्य चक्षुर्न हीयते।।

**ग्रहस्थितिः** – मार्गिणौ पूर्वोदितौ कुजशनी, मार्गी पश्चिमोदितो बुधः ५ तो वक्री ८ तः पश्चिमास्तः, वक्री पूर्वोदितो गुरुः, मार्गी पश्चिमोदितः शुक्रः।

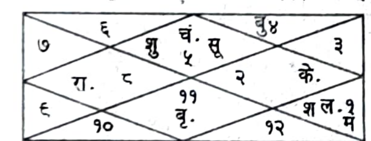
**वातावरणम्** – पक्षादिभागे तापाग्निभयमेघचारादयस्तदन्तभागे तापझंझावातोपलपातादयः।

# वैशाखकृष्णपक्षः

शकाब्दः१६३६, १३ तः १६४०, सम्वत् २०७५, सन्१४२५ साल,दि.१।०४।१८ इ. तः १६।०४।१८ इ.या.,दक्षिणे कालः। वक्री पूर्वोदितो गुरुः, मार्गी पूर्वोदितः शुक्रः, शुद्धः, वसन्तर्तुः, याम्यगोलः १३ तः सौम्यगोलः, सौम्यायनम्।

| तिथयः दिनानि | तिथयः द. प. | घं. मि. | नक्षत्राणि द. प. | घं. मि. | योगाः द. प. | करणानि द. प. | चन्द्रराशयः द. प. | घं. मि. | स्पष्टसूर्यः राश्यादिः | दिनमान द. प. | सूर्योदयः घं. मि. | सूर्यास्तः घं. मि. | दिनांकाः रा. | सौ. | अं. | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ र. | २७।३८ | दि. ०४।५५ | चि. ६०।०० | अहोरात्रं | व्या. ५४।३१ | कौ. २७।३८ | कन्या ३०।०१ | सं.०५।५२ | ११।१७।४६।५४ | ३०।४२ | ५।५२ | ६।०८ | ११ | १८ | १ | अप्रेल ४, वैशाखे तैलं त्यजेत्, द.ति.२७।३८ उपरि। |
| २ चं. | २७।०६ | दि. ०४।४३ | चि. ००।२१ | प्रा. ०५।५६ | ह. ५१।५४ | ग. २७।०६ | तुला | अहो. | ११।१८।४६।११ | ३०।४६ | ५।५१ | ६।०६ | १२ | १६ | २ | द.ति.२७।०६ या., भ.५७।३४ उ., पश्चिमदक्षिणयात्रा तृतीयायाम्। |
| ३ मं. | २८।०० | सं. ०५।०२ | स्वा. ०२।१५ | दि. ०६।४४ | व. ५०।१६ | वि. २८।०० | तुला ४६।३६ | रा.०१।४२ | ११।१६।४५।१४ | ३०।५० | ५।५० | ६।१० | १३ | २० | ३ | **वक्रतुण्ड ४ व्रत**, भ.२८।०० या., पश्चिमदक्षिणयात्रा स्वात्याम्। |
| ४ बु. | ३०।११ | सं. ०५।५३ | वि. ०५।२६ | दि. ०७।५६ | सि. ४६।३५ | बा. ३०।११ | वृश्चिक | अहो. | ११।२०।४४।१६ | ३०।५४ | ५।४६ | ६।११ | १४ | २१ | ४ | पश्चिमयात्रा पञ्चम्याम्। |
| ५ बृ. | ३३।२७ | रा. ०७।११ | अनु. ६।४५ | दि. ०६।४२ | व्य. ४६।४६ | कौ. ०१।४६ | वृश्चिक | अहो. | ११।२१।४३।१८ | ३०।५८ | ५।४८ | ६।१२ | १५ | २२ | ५ | पश्चिमोत्तरयात्रा। |
| ६ शु. | ३७।४५ | रा. ०८।५४ | ज्ये. १५।०८ | दि. ११।५१ | व. ५०।४३ | ग. ०५।३६ | वृश्चिक १५।८ | दिन.११।५१ | ११।२२।४२।२० | ३१।०२ | ५।४८ | ६।१२ | १६ | २३ | ६ | कोकिला ६, गं.६।८ उ. २४।०८ या., भ.३७।४५ उ., उत्तरयात्रा ज्येष्ठायां ततः पूर्वोत्तरयात्रा षष्ठ्याम्। |
| ७ श. | ४२।४१ | रा. १०।५१ | मू. २१।१३ | दि. ०२।१६ | प. ५२।०६ | वि. १०।१३ | धनु | अहो. | ११।२३।४१।२२ | ३१।०६ | ५।४७ | ६।१३ | १७ | २४ | ७ | वक्रात्तुलायां गुरुः ४०।३८, भ.१०।१३ या., उत्तरयात्रा। |
| ८ र. | ४७।५८ | रा. १२।५७ | पूषा.२७।४६ | दि. ०४।५२ | शि. ५३।४० | बा. १५।२० | धनु ४४।२४ | रा.११।३२ | ११।२४।४०।२४ | ३१।१० | ५।४६ | ६।१४ | १८ | २५ | ८ | पूर्वोत्तरयात्रा पूर्वाषाढे। ←हनुमद्ध्वजदानं,**सोपकरणवारिपूर्णघटदानं, सतुआइन**, प्रपागलन्तिकादानं, नववर्षारंभः,सृष्ट्यादिः,सृष्टिगताब्दाः१६७२६४६११६,◆ |
| ९ चं. | ५३।०५ | रा. ०२।५६ | उषा.३४।२० | रा. ०७।२६ | सि. ५५।०७ | तै. २०।३२ | मकर | अहो. | ११।२५।३६।२६ | ३१।१४ | ५।४५ | ६।१५ | १६ | २६ | ९ | पूर्वां विना यात्रा दशम्याम्। ◆भोग्याब्दाः२३४७०५०८८१,**आर्यभटजयन्ती**, सौम्यगोलारंभः१६४०शकाब्दारंभश्च११।४६उ.,मार्गीबुधः४०।००,**प्रदोष१४ व्रतं**, भ.५।२२उ.३५।२२ या.। |
| १० मं. | ५७।३७ | रा. ०४।४७ | श्र. ४०।२६ | रा. ०६।५४ | सा. ५६।०७ | व. २५।२१ | मकर | अहो. | ११।२६।३८।१३ | ३१।१८ | ५।४४ | ६।१६ | २० | २७ | १० | **पंचकारम्भो रात्री घं.६ मि.५४ उ.**, भ.२५।२१ उ. ५७।३७ या., उत्तरां विना यात्रा श्रवणायां ततः पूर्वयात्रा दशम्याम्। |
| ११ बु. | ६०।०० | अहोरात्रं | ध. ४५।४६ | रा. १२।०४ | शु. ५६।२७ | ब. २६।२६ | मकर १३।०८ | दि.१०।५६ | ११।२७।३६।५६ | ३१।२२ | ५।४४ | ६।१६ | २१ | २८ | ११ | त्र्यहो जन्मदिनकृत्यं, **वल्लभाचार्यजयन्ती**, पूर्वयात्रा मकरस्थे चन्द्रे ततः पश्चिमयात्रा धनिष्ठायाम्। |
| ११ बृ. | ०१।२१ | प्रा. ०६।१५ | शत. ५०।०६ | रा. ०१।४५ | शु. ५५।५४ | बा. ०१।२१ | कुम्भ | अहो. | ११।२८।३५।४५ | ३१।२६ | ५।४३ | ६।१७ | २२ | २६ | १२ | पूर्वोदितो बुधः ७।४२, वक्री शनिः४७।२३, वरुथिनी११ व्रतं सर्वेषां, पश्चिमयात्रा धनिष्ठायाम्। |
| १२ शु. | ०४।०२ | दि. ०७।१६ | पूभा.५३।१६ | रा. ०३।०२ | ब्र. ५४।३१ | तै. ०४।०२ | कुम्भ ३७।३१ | रा.०८।४२ | ११।२६।३४।३१ | ३१।३० | ५।४२ | ६।१८ | २३ | ३० | १३ | मासान्तः, कुशोदकेन पारणं, **प्रदोष १३ व्रतम्**। |
| १३ श. | ०५।२२ | दि. ०७।५० | उभा.५५।१३ | रा. ०३।४६ | ऐं. ५२।०५ | व. ०५।२२ | मीन | अहो. | ०।००।३३।१७ | ३१।३४ | ५।४१ | ६।१६ | २४ | १ | १४ | **अश्विन्यां मेषे रविः ११।४६ मु.४५ फलं समर्घ, यवविपुवसंक्रान्तिपुण्यकाला** घं.१० मि.२३ उ. घं.४ मि.४७ यावद्दिने, पुण्याहः, वैशाखस्नानारंभः, हरिद्वारे कल्पवासारंभः,← |
| १४ र. | ०५।२२ | दि. ०७।४६ | रेव. ५५।५३ | रा. ०४।०१ | वै. ४८।४० | श. ०५।२२ | मीन ५५।५३ | रा.०४।०१ | ०।०१।३२।०३ | ३१।३८ | ५।४० | ६।२० | २५ | २ | १५ | **मासादिः, पंचकान्तो रात्री घं.४ मि.१ उ.**, ग.४३।५३ उ. ५८।५३ या., **जुडिशीतल**, पर्युषितान्नपानादिभक्षणं, तुलस्यश्वत्थाप्रादिवृक्षसेचनम्। |
| ३० चं. | ०४।०६ | दि. ०७।२० | अ. ५५।२० | रा. ०३।४८ | वि. ४४।१६ | ना. ०४।०६ | मेष | अहो. | ०।०२।३०।४६ | ३१।४२ | ५।४० | ६।२० | २६ | ३ | १६ | वैशाखी३० स्नानदानादि, **सोमबारीव्रतं** घं.७ मि.२० यावद्दिने, विवाहो द्विरागमनञ्च प्रतिपद्यश्विन्याम्। |

**३० चन्द्रे वल्ली ८।३६।२२।४० अयनांशाः २२।४७।०५**



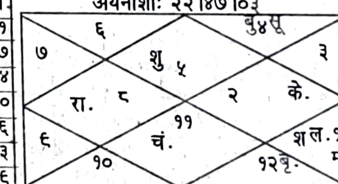

## मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च

| ति.दि. | मंगलः | बुधः | गुरुः | शुक्रः | शनिः | केतुः |
|---|---|---|---|---|---|---|
| १ र. | ८।११।४५।३६ | ११।१४।०६।२८ | ७।००।२७।४६ | ०।०६।०६।३७ | ८।१२।३५।४३ | ६।२०।१२।२५ |
| २ चं. | ८।१२।१८।०६ | ११।१३।२६।५७ | ७।००।२४।०२ | ०।१०।२३।२७ | ८।१२।३७।१८ | ६।२०।०६।१५ |
| ३ मं. | ८।१२।४६।२० | ११।१२।४४।५३ | ७।००।१६।०८ | ०।११।३७।०८ | ८।१२।३८।२२ | ६।२०।०६।०४ |
| ४ बु. | ८।१३।२०।३४ | ११।१२।०२।४६ | ७।००।१४।१५ | ०।१२।५०।४६ | ८।१२।३६।२६ | ६।२०।०२।५३ |
| ५ बृ. | ८।१३।५१।४७ | ११।११।२०।४५ | ७।००।०६।२२ | ०।१४।०४।३० | ८।१२।४०।३० | ६।१६।५६।४२ |
| ६ शु. | ८।१४।२३।०० | ११।१०।३८।४१ | ७।००।०४।२६ | ०।१५।१८।११ | ८।१२।४१।३४ | ६।१६।५६।३१ |
| ७ श. | ८।१४।५४।१३ | ११।०६।५६।३७ | ६।२६।५६।३६ | ०।१६।३१।५२ | ८।१२।४२।३८ | ६।१६।५३।२० |
| ८ र. | ८।१५।२५।२६ | ११।०६।१४।३३ | ६।२६।५४।४३ | ०।१७।४५।३२ | ८।१२।४३।४२ | ६।१६।५०।१० |
| ९ चं. | ८।१५।५६।३६ | ११।०८।३२।३० | ६।२६।४६।५० | ०।१८।५६।१२ | ८।१२।४४।४५ | ६।१६।४७।०० |
| १० मं. | ८।१६।२७।१० | ११।०८।१६।०१ | ६।२६।४३।४५ | ०।२०।१२।२७ | ८।१२।४५।३५ | ६।१६।४३।४६ |
| ११ बु. | ८।१६।५७।४१ | ११।०८।०५।३३ | ६।२६।३७।४१ | ०।२१।२५।४२ | ८।१२।४६।२५ | ६।१६।४०।३८ |
| ११ बृ. | ८।१७।२८।१२ | ११।०७।५२।०५ | ६।२६।३१।३७ | ०।२२।३८।५७ | ८।१२।४६।२३ | ६।१६।३७।२७ |
| १२ शु. | ८।१७।५८।४३ | ११।०७।३८।३७ | ६।२६।२५।३३ | ०।२३।५२।११ | ८।१२।४६।०७ | ६।१६।३४।१६ |
| १३ श. | ८।१८।२६।१४ | ११।०७।४१।२८ | ६।२६।१६।२६ | ०।२५।०५।२५ | ८।१२।४५।५१ | ६।१६।३१।०५ |
| १४ र. | ८।१८।५६।४४ | ११।०७।४६।४१ | ६।२६।१३।२५ | ०।२६।१८।३६ | ८।१२।४५।३४ | ६।१६।२७।५५ |
| ३० चं. | ८।१६।३०।१४ | ११।०८।०६।०३ | ६।२६।०७।२१ | ०।२७।३१।५३ | ८।१२।४५।१७ | ६।१६।२४।४५ |

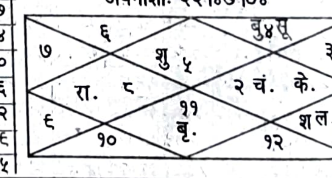
## दैनिकलग्नसारिणीचक्रम्

| ति.दि. | मिश्रमानं | मे.अं. | वृ.अं. | मि.अं. | क.अं. | सिं.अं. | कं.अं. | तु.अं. | वृ.अं. | ध.अं. | म.अं. | कुं.अं. | मी.अं. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ र. | ४५।२१ | ८।०८ | १०।०४ | १२।१७ | १४।३५ | १६।५१ | १६।०६ | २१।२३ | २३।४० | १।४५ | ३।३१ | ५।०२ | ६।३१ |
| २ चं. | ४५।२३ | ८।०४ | १०।०० | १२।१३ | १४।३१ | १६।४७ | १६।०२ | २१।१६ | २३।३६ | १।४१ | ३।२७ | ४।५८ | ६।२७ |
| ३ मं. | ४५।२५ | ८।०१ | ६।५७ | १२।१० | १४।२८ | १६।४४ | १८।५६ | २१।१६ | २३।३३ | १।३८ | ३।२४ | ४।५५ | ६।२४ |
| ४ बु. | ४५।२७ | ७।५७ | ६।५३ | १२।०६ | १४।२४ | १६।४० | १८।५५ | २१।१२ | २३।२६ | १।३४ | ३।२० | ४।५१ | ६।२० |
| ५ बृ. | ४५।२६ | ७।५३ | ६।४६ | १२।०२ | १४।२० | १६।३६ | १८।५१ | २१।०८ | २३।२५ | १।३० | ३।१६ | ४।४७ | ६।१६ |
| ६ शु. | ४५।३१ | ७।५० | ६।४६ | ११।५६ | १४।१७ | १६।३३ | १८।४८ | २१।०५ | २३।२२ | १।२७ | ३।१३ | ४।४४ | ६।१३ |
| ७ श. | ४५।३३ | ७।४६ | ६।४२ | ११।५५ | १४।१३ | १६।२६ | १८।४४ | २१।०१ | २३।१८ | १।२३ | ३।०६ | ४।४० | ६।०६ |
| ८ र. | ४५।३५ | ७।४२ | ६।३८ | ११।५१ | १४।०६ | १६।२५ | १८।४० | २०।५७ | २३।१४ | १।१६ | ३।०५ | ४।३६ | ६।०५ |
| ९ चं. | ४५।३७ | ७।३८ | ६।३४ | ११।४७ | १४।०५ | १६।२१ | १८।३६ | २०।५३ | २३।१० | १।१५ | ३।०१ | ४।३२ | ६।०१ |
| १० मं. | ४५।३६ | ७।३४ | ६।३० | ११।४३ | १४।०१ | १६।१७ | १८।३२ | २०।४६ | २३।०६ | १।११ | २।५७ | ४।२८ | ५।५७ |
| ११ बु. | ४५।४१ | ७।३१ | ६।२७ | ११।४० | १३।५८ | १६।१४ | १८।२६ | २०।४६ | २३।०३ | १।०८ | २।५४ | ४।२५ | ५।५४ |
| ११ बृ. | ४५।४३ | ७।२७ | ६।२३ | ११।३६ | १३।५४ | १६।१० | १८।२५ | २०।४२ | २२।५६ | १।०४ | २।५० | ४।२१ | ५।५० |
| १२ शु. | ४५।४५ | ७।२३ | ६।१६ | ११।३२ | १३।५० | १६।०६ | १८।२१ | २०।३८ | २२।५५ | १।०० | २।४६ | ४।१७ | ५।४६ |
| १३ श. | ४५।४७ | ७।१६ | ६।१५ | ११।२८ | १३।४६ | १६।०२ | १८।१७ | २०।३४ | २२।५१ | ०।५६ | २।४२ | ४।१३ | ५।४२ |
| १४ र. | ४५।४६ | ७।१६ | ६।१२ | ११।२५ | १३।४३ | १५।५६ | १८।१४ | २०।३१ | २२।४८ | ०।५३ | २।३६ | ४।१० | ५।३६ |
| ३० चं. | ४५।५१ | ७।१२ | ६।०८ | ११।२१ | १३।३६ | १५।५५ | १८।१० | २०।२७ | २२।४४ | ०।४६ | २।३५ | ४।०६ | ५।३५ |

**२ चन्द्रे वल्ली ८।३६।२२।२६**
**अयनांशाः २२।४७।०३**




**६ चन्द्रे वल्ली ८।३६।२२।३३**
**अयनांशाः २२।४७।०४**




**विवियविषयाः – वैशाखे प्रातःस्नानमन्त्रः** - वैशाखे सकलं मासं मेषसंक्रमणे रवेः। प्रातः सनियमं स्नास्ये प्रीयतां मधुसूदन।। मधुहन्तुः प्रसादेन ब्राह्मणानामनुग्रहात्। निर्विघ्नमस्तु मे पुण्यं वैशाखस्नानमन्वहम्।। माधवे मेषगे भानौ मुरारे मधुसूदन। प्रातः स्नानेन मे देव फलदो भव पापहन्।। **प्रातःस्नानसमयः** – उत्तमं तु सनक्षत्रं मध्यमं लुप्ततारकम्। सवितर्युदिते भूप ततो हीनं प्रकीर्तितम्।। **वैशाखे त्याज्यवस्तूनि**–कांस्यं मांसं मसूरान्नं चणकं कोद्रवन्तथा। शाकं मधु परान्नं च पुनर्भोजनमैथुने।। **वैशाखे दानवस्तूनि** - प्रपा कार्या च वैशाखे देवे देया गलन्तिका। उपानद्व्यजनं छत्रं सूक्ष्मवासांसि चन्दनम्।। जलपात्राणि देयानि तथापूपगृहाणि च।। **तिथितत्त्वे** - ददाति यो हि मेषादौ सक्तूनम्बुघटान्वितान्। पितृनुद्दिश्य विप्रेभ्यः सर्वपापैः प्रमुच्यते ।। **मासविशेषे स्नानम्**–कौशिकीं माधवे स्नायान्माघे वै कमलान्तथा। दुग्धां विल्ववतीं मार्गे कार्तिके यामुनीं तथा।। भूयसी गैरिका चैवमाश्विने फलदा मता। भाद्रे जलाधिका पुण्या ज्येष्ठे व्याघ्रवती तथा।। विरजा श्रावणे पुण्या मण्डना फाल्गुने मता। इच्छावती तथा पौषे चैत्रे वै लक्ष्मणा शुभा।। वाङ्मती फाल्गुने शस्ता गण्डकी चापि कार्तिके। मलमासे विशेषेण गैरिका फलदायिनी।। चन्द्रसूर्योपरागेषु सर्वा नद्यः शुभावहाः।। गंगा तु सर्वदेति।

**ग्रहस्थितिः** – मार्गी पूर्वोदितः कुजः, वक्री पश्चिमास्तो बुधः ११ तः पूर्वोदितः १३ तो मार्गी, वक्री पूर्वोदितो गुरुः, **मार्गी पश्चिमोदितः शुक्रः**, मार्गी पूर्वोदितः शनिः ११ तो वक्री।

**वातावरणम्**–पक्षाद्यन्तभागयोः अग्निभयतापवृद्धियोगस्तन्मध्यभागे झंझावातोपलपातमेघच्छायादयः।

## वैशाखशुक्लपक्षः

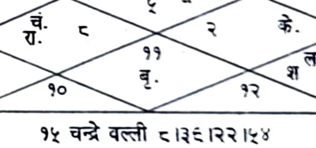
शकाब्दः १९४०, संवत् २०७५, सन् १४२५ साल, दि. १७।०४।१८ ई. तः दि. ३०।०४।१८ ई. [illegible] कालः। वक्री पूर्वोदितो गुरुः, मार्गी पूर्वोदितः शुक्रः, शुक्रः, बसन्तर्तुः, सौम्यगोलः, सौम्यायनम्।

| तिथयः दिनानि | तिथयः द. प. | घं. मि. | नक्षत्राणि द. प. | घं. मि. | योगाः द. प. | करणानि द. प. | चन्द्रराशयः द. प. | घं. मि. | स्पष्टसूर्यः राश्यादिः | दिनमानं द. प. | सूर्योदयः घं. मि. | सूर्यास्तः घं. मि. | दिनांकाः रा. | सौ. | अं. | वैशाखशुक्लपक्षः |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ मं. | ०१।४१ | प्रा.०६।१६ | भ. ५३।४६ | रा.०३।०६ | प्री. ३६।०१ | ब. ०१।४१ | मेष | अहोरात्रं | ०।०३।२६।२० | ३१।४६ | ५।३६ | ६।२१ | २७ | ४ | १७ | द्वितीयामानं ५६।३२, चन्द्रदर्शनं मु.१५ [illegible] महार्घ, शिवाजीजयन्ती। ← द्विरागमनं [illegible], विवाहो दिवारात्रौ तत्र दिवा घ.११ मि.५२ तः ✗ |
| ३ बु. | ५३।५२ | रा.०३।११ | कृ. ५१।२२ | रा.०२।११ | आ. ३३।०३ | तै. २६।०३ | मेष ०८।१० | दि.०८।५४ | ०।०४।२७।५१ | ३१।५० | ५।३८ | ६।२२ | २८ | ५ | १८ | वृषे शुक्रः४७।४३, अक्षयतृतीया, गंगास्नानदानादि., त्रेतायुगादि., परशुरामावतारः, परशुरामजयन्ती, विवाहो रोहिण्यां तृतीयचरणात्। ◆ततः पश्चिमा विना यात्रा। |
| ४ वृ. | ४८।४८ | रा.०१।०८ | रो. ४८।११ | रा.१२।५३ | सौ. २६।२५ | व. २१।२० | वृष | अहोरात्रं | ०।०५।२६।२२ | ३१।५४ | ५।३७ | ६।२३ | २९ | ६ | १९ | गणेश ४ व्रतं, विवाहो द्विरागमनं दक्षिणा विना यात्रा च पञ्चम्याम्, भ.२१।२० उ.४८।४८ यावत्। ♊मिथुनस्थे चन्द्रे ततः उत्तरयात्रा पुनर्वसौ ◆ |
| ५ शु. | ४३।११ | रा.१०।५३ | मृ. ४४।३० | रा.११।२५ | शो. १६।१६ | ब. १६।०० | वृष १६।२१ | दि.१२।०६ | ०।०६।२४।५३ | ३१।५७ | ५।३७ | ६।२३ | ३० | ७ | २० | शंकराचार्य(२५२५) जयन्ती, उपनयनं, मुण्डनं, कर्णवेधः, देवादिप्रतिष्ठा, विवाहो द्विरागमनं पश्चिमा विना यात्रा च पञ्चम्याम्, द.ति.४३।११ उपरि। |
| ६ श. | ३७।१४ | रा.०८।३० | आ. ४०।२९ | रा.०९।४८ | अगं.११।४८ | कौ.१०।१३ | मिथुन | अहोरात्रं | ०।०७।२३।२३ | ३२।०० | ५।३६ | ६।२४ | १ | ८ | २१ | द.ति.३७।१४ या., गृहप्रवेशः पश्चिमदक्षिणयात्रा च पुनर्वसौ, रामानुजजयन्ती। ✗ दिवा घ.१ मि.५९ यावत् बुधवेधाद्विवाहो मध्यमः, देवादिप्रतिष्ठा। |
| ७ र. | ३१।०८ | सं.०६।०२ | पुन. ३६।२० | रा.०८।०७ | सु. ०४।०८ | ग. ०४।११ | मिथुन२२।२३ | दि.०२।३२ | ०।०८।२१।५३ | ३२।०३ | ५।३५ | ६।२५ | २ | ९ | २२ | धृतिमानं५२।१७, भ.३१।०८ उ.५८।३८ या., द्विरागमनं देवादिप्रतिष्ठा, जह्नु७, जह्नुमुनेः कर्णरन्ध्राद् गंगायाः प्राकट्यं, गंगास्नानदानादि., दक्षिणयात्रा ♍ |
| ८ चं. | २५।०६ | दि.०३।३६ | पु. ३२।१४ | सं.०६।२६ | शू. ४८।५१ | ब. २५।०६ | कर्क | अहोरात्रं | ०।०९।२०।२३ | ३२।०६ | ५।३५ | ६।२५ | ३ | १० | २३ | वीरकुँवरसिंहजयन्ती, देवादिप्रतिष्ठा, द्विरागमनं पूर्वा विना यात्रा चाष्टम्याम्। ♋हनुमद्ध्वजदान, म.१७।२८ उ.३२।२८ यावत्। |
| ९ मं. | १९।२७ | दि.०१।२१ | श्ले. २८।२८ | दि.०४।५७ | गं. ४१।३३ | कौ.१९।२७ | कर्क २८।२८ | दि.०४।५७ | ०।१०।१८।३६ | ३२।१० | ५।३४ | ६।२६ | ४ | ११ | २४ | जानकीनवमीव्रतं, भूगर्भाज्जगज्जनन्याः जानक्याः प्रादुर्भावः, सीतामढ्यां पुण्यारण्ये श्रीसीतारामदर्शनं, मैथिलीदिवसः, दीक्षाग्रहणं, ♋ |
| १० बु. | १४।०८ | दि.११।१२ | म. २५।१२ | दि.०३।३८ | वृ. ३४।४३ | ग. १४।०८ | सिंह | अहोरात्रं | ०।११।१६।५५ | ३२।१३ | ५।३३ | ६।२७ | ५ | १२ | २५ | जानकीनवमीव्रतपारणं, केतुवेधाद्विवाहो मध्यमो मघायां, तडागकूपखननं, पूर्वयात्रा पूर्वफल्गुन्यां, भ.४१।५० उपरि, (१०-११ एको.)। |
| ११ वृ. | ०९।३२ | दि.०९।२२ | पूफ.२२।३४ | दि.०२।३५ | ध्रु. २८।३० | वि. ०९।३२ | सिंह ३७।०८ | रा.०८।२४ | ०।१२।१५।१० | ३२।१६ | ५।३३ | ६।२७ | ६ | १३ | २६ | मोहिनी ११ व्रतं सर्वेषां, उपनयनं, ११ व्रतोद्यापन, विवाहो द्विरागमनं गृहप्रवेशश्चोत्तरफल्गुन्यां, पूर्वोत्तरयात्रा पूर्वफल्गुन्यां, भ.०९।३२ यावत्। |
| १२ शु. | ०५।४२ | दि.०७।४९ | उफ.२०।४९ | दि.०१।५२ | व्या.२२।५५ | बा.०५।४२ | कन्या | अहोरात्रं | ०।१३।१३।२५ | ३२।१९ | ५।३२ | ६।२८ | ७ | १४ | २७ | कुशोदकेन पारणं, भरण्यां रविः ५२।५८, मधुसूदन१२, प्रदोष १३ व्रत, गृहप्रवेशः, मुण्डनं गृहारम्भो वापीकूपखननं पूर्वदक्षिणयात्रा च हस्ते, कर्णवेधः ← |
| १३ श. | ०२।४९ | दि.०६।४० | ह. २०।०४ | दि.०१।३४ | ह. १८।१२ | तै. ०२।४९ | कन्या५०।१७ | रा.०१।३९ | ०।१४।११।४० | ३२।२२ | ५।३२ | ६।२८ | ८ | १५ | २८ | प्रदोष १४ व्रतं, नरसिंहावतारः, नरसिंह १४ व्रत, प्रदोष घं.८ मि.४ यावद्रात्रौ, दक्षिणयात्रा कन्यास्थे चन्द्रे ततः पश्चिमदक्षिणयात्रा। |
| १४ र. | ०१।०३ | प्रा.०५।५६ | चि. २०।२९ | दि.०१।४३ | व. १४।२३ | व. ०१।०३ | तुला | अहोरात्रं | ०।१५।०९।५५ | ३२।२५ | ५।३१ | ६।२९ | ९ | १६ | २९ | षाण्मासिकरविव्रतसप्ताडोरकविसर्गः, वैशाखी १५ स्नानदानादि., कच्छपावतारः, बुद्धावतारः, बुद्ध(२६४२)जयन्ती, द्विरागमनं देवादिप्रतिष्ठा विवाहो ❖ |
| १५ चं. | ००।३० | प्रा.०५।४२ | स्वा.२२।०६ | दि.०२।२२ | सि. ११।३४ | ब. ००।३० | तुला | अहोरात्रं | ०।१६।०८।१० | ३२।२८ | ५।३० | ६।३० | १० | १७ | ३० | विवाहो द्विरागमनं पश्चिमदक्षिणयात्रा च स्वात्याम्। ❖दक्षिणयात्रा च पूर्णिमायां, भ.१।०३ उ.३०।४६ यावत्। |

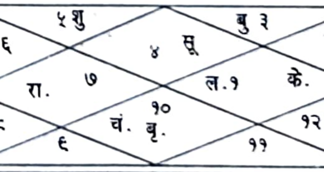
### मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च — दैनिकलग्नसारिणीचक्रम्

| ति.दि. | मंगलः | बुधः | गुरुः | शुक्रः | शनिः | केतुः | मिश्रमानं | मे.अं. | वृ.अं. | मि.अं. | क.अं. | सिं.अं. | कं.अं. | तु.अं. | वृ.अं. | ध.अं. | म.अं. | कुं.अं. | मी.अं. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ वृ. | ८।१९।५९।१८ | ११।०८।४४।३९ | ६।२९।००।३१ | ०।२८।४४।५१ | ८।१२।४४।४८ | ६।१९।२१।३४ | ४५।५३ | ७।०८ | ९।०४ | ११।१७ | १३।३५ | १५।५१ | १८।०६ | २०।२३ | २२।४० | ०।४५ | २।३१ | ४।०२ | ५।३१ |
| ३ शु. | ८।२०।२८।२२ | ११।०९।२३।१५ | ६।२८।५३।४१ | ०।२९।५७।४९ | ८।१२।४४।२० | ६।१९।१८।२३ | ४५।५५ | ७।०४ | ९।०० | ११।१३ | १३।३१ | १५।४७ | १८।०२ | २०।१९ | २२।३६ | ०।४१ | २।२७ | ३।५८ | ५।२७ |
| ४ श. | ८।२०।५७।२६ | ११।१०।०१।५१ | ६।२८।४६।५१ | १।०१।१०।४६ | ८।१२।४३।५२ | ६।१९।१५।१२ | ४५।५७ | ७।०० | ८।५६ | ११।०९ | १३।२७ | १५।४३ | १७।५८ | २०।१५ | २२।३२ | ०।३७ | २।२३ | ३।५४ | ५।२३ |
| ५ र. | ८।२१।२६।३० | ११।१०।४०।२७ | ६।२८।४०।०१ | १।०२।२३।४३ | ८।१२।४३।२४ | ६।१९।१२।०१ | ४५।५९ | ६।५७ | ८।५३ | ११।०६ | १३।२४ | १५।४० | १७।५५ | २०।१२ | २२।२९ | ०।३४ | २।२० | ३।५१ | ५।२० |
| ६ चं. | ८।२१।५५।३४ | ११।११।१९।०३ | ६।२८।३३।१२ | १।०३।३६।४० | ८।१२।४२।५६ | ६।१९।०८।५० | ४६।०१ | ६।५३ | ८।४९ | ११।०२ | १३।२० | १५।३६ | १७।५१ | २०।०८ | २२।२५ | ०।३० | २।१६ | ३।४७ | ५।१६ |
| ७ मं. | ८।२२।२४।३८ | ११।११।५७।३९ | ६।२८।२६।२३ | १।०४।४९।३७ | ८।१२।४२।२८ | ६।१९।०५।३९ | ४६।०२ | ६।४९ | ८।४५ | १०।५८ | १३।१६ | १५।३२ | १७।४७ | २०।०४ | २२।२१ | ०।२६ | २।१२ | ३।४३ | ५।१२ |
| ८ बु. | ८।२२।५३।४१ | ११।१२।३६।१४ | ६।२८।१९।३४ | १।०६।०२।३४ | ८।१२।४२।०० | ६।१९।०२।२९ | ४६।०३ | ६।४५ | ८।४१ | १०।५४ | १३।१२ | १५।२८ | १७।४३ | २०।०० | २२।१७ | ०।२२ | २।०८ | ३।३९ | ५।०८ |
| ९ वृ. | ८।२३।२१।३८ | ११।१३।४५।५७ | ६।२८।१२।०० | १।०७।१५।०७ | ८।१२।४०।३९ | ६।१८।५९।१८ | ४६।०५ | ६।४१ | ८।३७ | १०।५० | १३।०८ | १५।२४ | १७।३९ | १९।५६ | २२।१३ | ०।१८ | २।०४ | ३।३५ | ५।०४ |
| १० शु. | ८।२३।४९।३४ | ११।१४।५५।४० | ६।२८।०४।२७ | १।०८।२७।४० | ८।१२।३९।१८ | ६।१८।५६।०७ | ४६।०७ | ६।३८ | ८।३४ | १०।४७ | १३।०५ | १५।२१ | १७।३६ | १९।५३ | २२।१० | ०।१५ | २।०१ | ३।३२ | ५।०१ |
| ११ श. | ८।२४।१७।३० | ११।१६।०५।२३ | ६।२७।५६।५४ | १।०९।४०।१३ | ८।१२।३७।५७ | ६।१८।५२।५६ | ४६।०९ | ६।३४ | ८।३० | १०।४३ | १३।०१ | १५।१७ | १७।३२ | १९।४९ | २२।०६ | ०।११ | १।५७ | ३।२८ | ४।५७ |
| १२ र. | ८।२४।४५।२६ | ११।१७।१५।०६ | ६।२७।४९।२१ | १।१०।५२।४६ | ८।१२।३६।३६ | ६।१८।४९।४५ | ४६।११ | ६।३० | ८।२६ | १०।३९ | १२।५७ | १५।१३ | १७।२८ | १९।४५ | २२।०२ | ०।०७ | १।५३ | ३।२४ | ४।५३ |
| १३ चं. | ८।२५।१३।२२ | ११।१८।२४।४८ | ६।२७।४१।४८ | १।१२।०५।१९ | ८।१२।३५।१५ | ६।१८।४६।३४ | ४६।१२ | ६।२६ | ८।२२ | १०।३५ | १२।५३ | १५।०९ | १७।२४ | १९।४१ | २१।५८ | ०।०३ | १।४९ | ३।२० | ४।४९ |
| १४ मं. | ८।२५।४१।१८ | ११।१९।३४।३० | ६।२७।३४।१५ | १।१३।१७।५२ | ८।१२।३३।५५ | ६।१८।४३।२४ | ४६।१३ | ६।२२ | ८।१८ | १०।३१ | १२।४९ | १५।०५ | १७।२० | १९।३७ | २१।५४ | २३।५९ | १।४५ | ३।१६ | ४।४५ |
| १५ बु. | ८।२६।०९।१४ | ११।२०।४४।१२ | ६।२७।२६।४२ | १।१४।३०।२५ | ८।१२।३२।३५ | ६।१८।४०।१४ | ४६।१४ | ६।१८ | ८।१४ | १०।२७ | १२४५ | १५।०१ | १७।१६ | १९।३३ | २१।५० | २३।५५ | १।४१ | ३।१२ | ४।४१ |

८ चन्द्रे वल्ली ८।३६।२२।४७
अयनांशाः २२।४७।०६




१५ चन्द्रे वल्ली ८।३६।२२।५४
अयनांशाः २२।४७।०७




**विविधविषयाः**:-वैशाखशुक्लतृतीयायां **परशुरामार्घ्यदानमन्त्रः**:-जामदग्न्य महावीर क्षत्रियान्तकर प्रभो। गृहाणार्घ्यं मया दत्तं कृपया परमेश्वर।। वैशाखशुक्लनवम्यां **जानकीनवमीव्रतं** बृहद्विष्णुपुराणे-वैशाखस्य सिते पक्षे नवमी तु मघायुता। सैव मध्याह्नयोगेन शस्यते व्रतकर्मणि।। तत्र जानकीं सम्पूज्य **प्रणमेत्तन्मन्त्रः**:-दशाननविनाशाय जाता धरणिसम्भवा। मैथिली शीलसम्पन्ना पातु नः पतिदेवता।। **मूलवासः**:-स्वर्गे शुचिप्रौष्ठपदेषमाघे भूमौ नभःकार्तिकचैत्रपौषे। मूलं ह्यधस्तात्तु तपस्यमार्गे वैशाखशुक्रेष्वशुभं च तत्र।। **अभुक्तमूलविचारः**:-अश्विनीमघमूलादौ त्रिवेदनवनाडिकाः। रेवतीसर्पशक्रान्ते मासष्टरसाः क्रमात्।। तस्मादेषूत्पन्नानां शान्तिः कार्या। मूलोत्पन्नानां विशेषेण, यतो हि - मूलाद्यपादजो हन्ति पितरञ्च द्वितीयजम्। मातरञ्च तृतीयेऽर्थं शुभदस्तु तुरीयजः।। सा शान्तिः जन्मानन्तरमाग्रिममूलादिनक्षत्रेषु कार्या। **मूलवृक्षविचारः**:-मूलस्तम्भस्त्वचा शाखा पत्रं पुष्पं फलं शिखा। मुनयोऽष्टौ दिशा रुद्राः सूर्याः पञ्चाब्धयोऽग्नयः।। मूले मूलविनाशः स्यात्स्तम्भे वंशविनाशनम्। त्वचि मातुर्भवेत्क्लेशः शाखायां मातुलस्य च।। पत्रे राज्यं विजानीयात्पुष्पे मन्त्रिपदं स्मृतम्। फले च विपुला लक्ष्मीः शिखायामल्पजीवितम्।। त्रीतर**शान्तिरपि** विधेया। तत्र सजातीयापत्यत्रयानन्तरं विजातीयापत्यप्रसवस्त्रीतरः।

**ग्रहस्थितिः**:-मार्गिणौ पूर्वोदितौ कुजबुधौ, वक्रिणौ पूर्वोदितौ गुरुशनी, मार्गी पश्चिमोदितः शुक्रः।

वातावरणम् - पक्षाद्यन्तभागयोः तापवातमेघचारादयस्तन्मध्यभागे झंझावातमेघच्छायादयः।

# प्रथमज्येष्ठकृष्णपक्षः

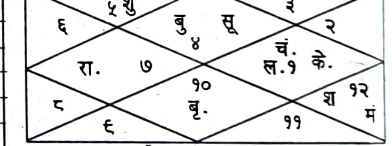
शकाब्द:१९४०,संवत्२०७५,सन्१४२५साल,दि.१।०५।१८ई.त.दि.१५।०५।१८ई.या.,दक्षिणे कालः ३० तः पश्चिमे कालः वक्री पूर्वोदितो गुरुः, मार्गी पश्चिमोदितः शुक्रः, शुद्धः, ३० तो ग्रीष्मर्तुः, वसन्तर्तुः, ३० तो ग्रीष्मर्तुः, सौम्यगोलायने।

| तिथयः दिनानि | तिथयः द. प. | घं. मि. | नक्षत्राणि द. प. | घं. मि. | योगाः द. प. | करणानि द. प. | चन्द्रराशयः द. प. | घं. मि. | स्पष्टसूर्यः राश्यादिः | दिनमानं द. प. | सूर्योदयः घं. मि. | सूर्यास्तः घं. मि. | दिनांकाः रा. | सौ. | अं. | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ मं. | ०१।१६ | प्रा. ०६।०० | वि. २५।०३ | दि. ०३।३१ | व्य. ०६।४६ | कौ. ०१।१६ | तु.०६।२० | दि.०६।१४ | ०।१७।०६।११ | ३२।३२ | ५।३० | ६।३० | ११ | १८ | १ | मई ५, पश्चिमयात्रानुराधायाम्, ज्येष्ठे वृन्ताकं त्यजेत्। |
| २ बु. | ०३।२३ | दि. ०६।५० | अनु. २६।०७ | सं. ०५।०८ | व. ०८।५६ | ग. ०३।२३ | वृश्चिक | अहो. | ०।१८।०४।१२ | ३२।३५ | ५।२६ | ६।३१ | १२ | १६ | २ | **कर्णविधः, द्विरागमनं** पश्चिमयात्रा च द्वितीयायां, **गृहारम्भोऽनुराधायां**, सूर्यवेधाद्विवाहो नैव, म.३४।५६ उपरि। |
| ३ वृ. | ०६।३५ | दि. ०८।०६ | ज्ये. ३४।२० | रा. ०७।१२ | प. ०६।०४ | वि. ०६।३५ | वृ.३४।२० | रा.०७।१२ | ०।१६।०२।१३ | ३२।३८ | ५।२८ | ६।३२ | १३ | २० | ३ | **आखुरथ ४ व्रत, मुण्डनं** पश्चिमोत्तरयात्रा च तृतीयायां, गं.२८।२० उ. ४३।२० या., म.०६।३५ यावत्। |
| ४ शु. | १०।४७ | दि. ०६।४७ | मू. ४०।१८ | रा. ०६।३५ | शि. ०६।५३ | बा. १०।४७ | धनु | अहो. | ०।२०।००।१४ | ३२।४१ | ५।२८ | ६।३२ | १४ | २१ | ४ | **विवाहो द्विरागमनञ्च** पञ्चम्यां मूले, **गृहारम्भः** पञ्चम्यां, पूर्वोत्तरयात्रा। |
| ५ श. | १५।४१ | दि. ११।४३ | पूषा. ४६।४६ | रा. १२।०६ | सि. ११।१३ | तै. १५।४१ | धनु | अहो. | ०।२०।५८।१४ | ३२।४४ | ५।२७ | ६।३३ | १५ | २२ | ५ | द.ति.१५।४१ उपरि, (६ एको.)। |
| ६ र. | २०।५१ | दि. ०१।४७ | उषा. ५३।२० | रा. ०२।४७ | सा. १२।५० | व. २०।५१ | ध.००।५४ | प्रा.०५।४६ | ०।२१।५६।१४ | ३२।४७ | ५।२७ | ६।३३ | १६ | २३ | ६ | **विवाहः** सप्तम्यां, पश्चिमां विना यात्रा श्रवणायां, द.ति.२०।५१ या., म.२०।५१ उ.५३।२३ यावत्। |
| ७ चं. | २५।५५ | दि. ०३।४८ | श्र. ५६।३५ | रा. ०५।१६ | शु. १४।२१ | ब. २५।५५ | मकर | अहो. | ०।२२।५४।१४ | ३२।५० | ५।२६ | ६।३४ | १७ | २४ | ७ | **विवाहः श्रवणाया**, पूर्वां विना यात्रा श्रवणाष्टम्योः, अश्विन्यां मेषे बुधः ००।२०, **पञ्चकारम्भो** रात्रौ घं.५ मि.१६ उपरि, (७ एको.)। |
| ८ मं. | ३०।२२ | सं. ०५।३४ | ध. ६०।०० | अहोरात्रं | शु. १५।३२ | कौ. ३०।२२ | म.३२।२१ | सं.०६।२१ | ०।२३।५२।०३ | ३२।५४ | ५।२५ | ६।३५ | १८ | २५ | ८ | पूर्वयात्रा मकरस्थे चन्द्रे ततः पश्चिमयात्रा। |
| ९ बु. | ३४।०१ | रा. ०७।०१ | ध. ०५।०७ | दि. ०७।२८ | ब्र. १६।०६ | तै. ०२।१२ | कुम्भ | अहो. | ०।२४।४६।५२ | ३२।५७ | ५।२५ | ६।३५ | १९ | २६ | ९ | **मकरे कुजः ५३।०२।** |
| १० वृ. | ३६।३१ | रा. ०८।०० | शत. ०६।३६ | दि. ०६।१६ | ऐं. १५।४६ | व. ०५।१६ | कुं.५७।१५ | रा.०४।१८ | ०।२५।४७।४१ | ३३।०० | ५।२४ | ६।३६ | २० | २७ | १० | पश्चिमयात्रा पूर्वभाद्रे, भ.०५।१६ उपरि ३६।३१ यावत्। |
| ११ शु. | ३७।५१ | रा. ०८।३१ | पूभा. १३।०७ | दि. १०।३८ | वै. १४।४४ | ब. ०७।११ | मीन | अहो. | ०।२६।४५।३० | ३३।०३ | ५।२३ | ६।३७ | २१ | २८ | ११ | **अपरा ११ व्रतं सर्वेषां, विवाह** उत्तरभाद्रे, उत्तरयात्रा पूर्वभाद्रे, **कृत्तिकायां** रविः ४०।५१। |
| १२ श. | ३७।५० | रा. ०८।३१ | उभा. १५।१५ | दि. ११।२६ | वि. १२।३५ | कौ. ०७।५० | मीन | अहो. | ०।२७।४३।१६ | ३३।०६ | ५।२३ | ६।३७ | २२ | २९ | १२ | तिलेन पारणं, पश्चिमोत्तरयात्रा रेवत्याम्। ←ततः पश्चिमां विना यात्रा त्रयोदश्याम्। |
| १३ र. | ३६।३३ | रा. ०७।५९ | रे. १६।१० | दि. ११।५० | प्री. ०६।२६ | ग. ०७।१२ | मी.१६।१० | दि.११।५० | ०।२८।४१।०८ | ३३।०९ | ५।२२ | ६।३८ | २३ | ३० | १३ | मिथुने शुक्रः ४०।४८, **प्रदोष १३-१४ व्रतं, विवाहस्त्रयोदश्या, पञ्चकान्तो दिवा घं.११ मि.५०** उ., गं.०४।१० उ.१९।१० या., म.३६।३३ उ., उत्तरयात्रा रेवत्यां ← |
| १४ चं. | ३४।०१ | सं. ०६।५८ | अ. १५।५३ | दि. ११।४३ | आ. ०५।१७ | वि. ०५।१७ | मेष | अहो. | ०।२९।३८।५७ | ३३।१२ | ५।२२ | ६।३८ | २४ | ३१ | १४ | मासान्तः, भ.०५।१७ यावत्। ◆**पुण्यकालो** घं.५ मि.३४ उ. घं.११ मि.५८ यावद्दिने, **पुण्याहः**, वैशाखस्नान-हरिद्वारकल्पवाससमाप्तिः, पूर्वास्तो बुधः ३५।४९। |
| ३० मं. | ३०।२८ | सं. ०५।३२ | भ. १४।२९ | दि. ११।०६ | सौ. ००।१७ | च. ०२।१४ | मे.२८।५६ | दि.०४।५५ | १।००।३६।३३ | ३३।१६ | ५।२१ | ६।३९ | २५ | १ | १५ | **मलमासारंभः अशुद्धारंभश्च** ३०।२८ उपरि, **वटसावित्रीव्रतं, ज्येष्ठी ३०** स्नानदानादिः, शोभनमानं ५४।१५, **वृषे रविः ०८।३२** मु.१५ फलं महार्घं, विष्णुपदीसंक्रान्ति◆ |

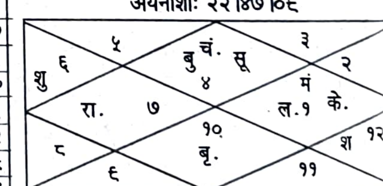
## मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च — दैनिकलग्नसारिणीचक्रम्

| ति.दि. | मंगलः | बुधः | गुरुः | शुक्रः | शनिः | केतुः | मिश्रमानं | मे.अं. | वृ.अं. | मि.अं. | क.अं. | सिं.अं. | कं.अं. | तु.अं. | वृ.अं. | ध.अं. | म.अं. | कुं.अं. | मी.अं. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ मं. | ८।२६।३४।५९ | ११।२२।१३।२३ | ६।२७।१६।०१ | १।१५।४२।२६ | ८।१२।३०।३१ | ६।१८।३७।०३ | ४६।१६ | ६।१५ | ८।११ | १०।२४ | १२।४२ | १४।५८ | १७।१३ | १९।३० | २१।४७ | २३।५२ | १।३८ | ३।०६ | ४।३८ |
| २ बु. | ८।२७।००।४४ | ११।२३।४२।३४ | ६।२७।११।२० | १।१६।५४।३३ | ८।१२।२८।२७ | ६।१८।३३।५२ | ४६।१८ | ६।११ | ८।०७ | १०।२० | १२।३८ | १४।५४ | १७।०९ | १९।२६ | २१।४३ | २३।४८ | १।३४ | ३।०५ | ४।३४ |
| ३ वृ. | ८।२७।२६।२६ | ११।२५।११।४५ | ६।२७।०३।३९ | १।१८।०६।३७ | ८।१२।२६।२४ | ६।१८।३०।४१ | ४६।२० | ६।०७ | ८।०३ | १०।१६ | १२।३४ | १४।५० | १७।०५ | १९।२२ | २१।३९ | २३।४४ | १।३० | ३।०१ | ४।३० |
| ४ शु. | ८।२७।५२।१४ | ११।२६।४०।५६ | ६।२६।५५।५९ | १।१९।१८।४१ | ८।१२।२४।२१ | ६।१८।२७।३० | ४६।२२ | ६।०३ | ७।५९ | १०।१२ | १२।३० | १४।४६ | १७।०१ | १९।१८ | २१।३५ | २३।४० | १।२६ | २।५७ | ४।२६ |
| ५ श. | ८।२८।१७।५९ | ११।२८।१०।०७ | ६।२६।४८।१९ | १।२०।३०।४४ | ८।१२।२२।१८ | ६।१८।२४।१९ | ४६।२३ | ५।५९ | ७।५५ | १०।०८ | १२।२६ | १४।४२ | १६।५७ | १९।१४ | २१।३१ | २३।३६ | १।२२ | २।५३ | ४।२२ |
| ६ र. | ८।२८।४३।४३ | ११।२९।३९।१८ | ६।२६।४०।३९ | १।२१।४२।४७ | ८।१२।२०।१५ | ६।१८।२१।०९ | ४६।२४ | ५।५६ | ७।५२ | १०।०५ | १२।२३ | १४।३९ | १६।५४ | १९।११ | २१।२८ | २३।३३ | १।१९ | २।५० | ४।१९ |
| ७ चं. | ८।२९।०९।२७ | ०।०१।०८।२८ | ६।२६।३२।५९ | १।२२।५४।५० | ८।१२।१८।१२ | ६।१८।१७।५९ | ४६।२५ | ५।५५ | ७।४८ | १०।०१ | १२।१९ | १४।३५ | १६।५० | १९।०७ | २१।२४ | २३।२९ | १।१५ | २।४६ | ४।१५ |
| ८ मं. | ८।२९।३३।२५ | ०।०२।४९।५९ | ६।२६।२४।५४ | १।२४।०६।५२ | ८।१२।१५।३७ | ६।१८।१४।४८ | ४६।२७ | ५।४८ | ७।४४ | ९।५७ | १२।१५ | १४।३१ | १६।४६ | १९।०३ | २१।२० | २३।२५ | १।११ | २।४५ | ४।११ |
| ९ बु. | ८।२९।५७।२३ | ०।०४।३१।३० | ६।२६।१९।४९ | १।२५।१८।५३ | ८।१२।१३।०२ | ६।१८।११।३७ | ४६।२९ | ५।४४ | ७।४० | ९।५३ | १२।११ | १४।२७ | १६।४२ | १८।५९ | २१।१६ | २३।२१ | १।०७ | २।३८ | ४।०७ |
| १० वृ. | ९।००।२१।२० | ०।०६।१३।०१ | ६।२६।०८।४४ | १।२६।३०।५४ | ८।१२।१०।२७ | ६।१८।०८।२६ | ४६।३१ | ५।४० | ७।३६ | ९।४९ | १२।०७ | १४।२३ | १६।३८ | १८।५५ | २१।१२ | २३।१७ | १।०३ | २।३४ | ४।०३ |
| ११ शु. | ९।००।४५।१७ | ०।०७।५४।३२ | ६।२६।००।३९ | १।२७।४२।५५ | ८।१२।०७।५२ | ६।१८।०५।१५ | ४६।३३ | ५।३७ | ७।३३ | ९।४६ | १२।०४ | १४।२० | १६।३५ | १८।५२ | २१।०९ | २३।१४ | १।०० | २।३१ | ४।०० |
| १२ श. | ९।०१।०९।१४ | ०।०९।३६।०२ | ६।२५।५२।३४ | १।२८।५४।५६ | ८।१२।०५।१७ | ६।१८।०२।०४ | ४६।३४ | ५।३३ | ७।२९ | ९।४२ | १२।०० | १४।१६ | १६।३१ | १८।४८ | २१।०५ | २३।१० | ०।५६ | २।२७ | ३।५६ |
| १३ र. | ९।०१।३३।११ | ०।११।१७।३२ | ६।२५।४४।२९ | २।००।०६।५७ | ८।१२।०२।४२ | ६।१७।५८।५४ | ४६।३५ | ५।२९ | ७।२५ | ९।३८ | ११।५६ | १४।१२ | १६।२७ | १८।४४ | २१।०१ | २३।०६ | ०।५२ | २।२३ | ३।५२ |
| १४ चं. | ९।०१।५७।०८ | ०।१२।५९।०२ | ६।२५।३६।२५ | २।०१।१८।५८ | ८।१२।००।०८ | ६।१७।५५।४४ | ४६।३६ | ५।२५ | ७।२१ | ९।३४ | ११।५२ | १४।०८ | १६।२३ | १८।४० | २०।५७ | २३।०२ | ०।४८ | २।१९ | ३।४८ |
| ३० मं. | ९।०२।१८।३४ | ०।१४।४८।१३ | ६।२५।२८।३६ | २।०२।३०।११ | ८।११।५६।५२ | ६।१७।५२।३३ | ४६।३८ | ५।२१ | ७।१७ | ९।३० | ११।४८ | १४।०४ | १६।१९ | १८।३६ | २०।५३ | २२।५८ | ०।४४ | २।१५ | ३।४४ |

७ चन्द्रे वल्ली ८।३६।२३।०१
अयनांशाः २२।४७।०८




१४ चन्द्रे वल्ली ८।३६।२३।०८
अयनांशाः २२।४७।०९




**विविधविषयाः** – अमायां **वटसावित्रीव्रतम्** – अमायाञ्च तथा ज्येष्ठे वटमूले महासती। त्रिरात्रोपोषिता नारी विधानेन प्रपूजयेत्।। सावित्रीप्रतिमां कुर्यात् सौवर्णीं वापि मृण्मयीम्। सप्तधान्येन संयुक्तां सावित्रीप्रतिमां शुभाम्।। सार्द्धं सत्यवता साध्वी फलनैवेद्यदीपकैः। सावित्र्याख्यानकञ्चापि वाचयित्वा द्विजोत्तमैः।। एवं विधिपूर्वकं सम्पूज्य ब्राह्मणाय **दद्यात्तन्मन्त्रः**-सावित्रीयं मया दत्ता सहिरण्या महासती। ब्रह्मणः प्रीणनार्थाय ब्राह्मण! प्रतिगृह्यताम्।। **कतिचिन्नियमाः**-समित्पुष्पकुशादीनि ब्राह्मणः स्वयमाहरेत्। शूद्रानीतैः क्रयक्रीतैः कर्म कुर्वन् पतत्यधः।। **सन्तानप्रदसन्तानगोपालमन्त्रः** – देवकीसुत गोविन्द वासुदेव जगत्पते। देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः।। इति मन्त्रस्य सपादलक्षसंख्यकजपः, तिलपायसघृतैस्तद्दशांशहोमः, तद्दशांशतर्पणं, तद्दशांशमार्जनं, तद्दशांशब्राह्मणभोजनञ्च कारयेत्। **काशीमाहत्म्यं** स्कान्दे **काशीखण्डे**-कैलाशादधिका काशी काशी सर्वप्रकाशिका। कैलाशे शंकरोऽप्येकः काश्यां सर्वेऽपि शंकराः।। अन्यानि मुक्तिक्षेत्राणि काशीप्राप्तकराणि च। काशीं प्राप्य विमुच्येत नान्यथा तीर्थकोटिभिः।। **पितृतर्पणादिमहत्त्वमाह मनुः** – राजतैर्भाजनैरेषामथो वा राजतान्वितैः। वार्यपि श्रद्धया दत्तमक्षयायोपकल्पते।। देवकार्याद् द्विजातीनां पितृकार्यं विशिष्यते। दैवं हि पितृकार्यस्य पूर्वमाप्यायनं श्रुतम्।।

**ग्रहस्थितिः** – मार्गी पूर्वोदितः कुजः, मार्गी पूर्वोदितो बुधः ३० तः पूर्वास्तः, वक्रिणौ पूर्वोदितौ गुरुशनी, मार्गी पश्चिमोदितः शुक्रः।

**वातावरणम्** – पक्षाद्यन्तभागयोः तापाग्निभयझंझावातादयस्तन्मध्यभागे वाताभ्रचारच्छिन्नवृष्टयः।

| तिथयः दिनानि | तिथयः द. प. | घं. मि. | नक्षत्राणि द. प. | घं. मि. | योगाः द. प. | करणानि द. प. | चन्द्रराशयः द. प. | घं. मि. | स्पष्टसूर्यः राश्यादिः | दिनमानं द. प. | सूर्योदयः घं. मि. | सूर्यास्तः घं. मि. | दिनांकाः रा. | सौ. | अं. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ बु. | २६।०५ | दि.०३।४६ | कृ. १२।१८ | दि.१०।१५ | अग.४८।०५ | ब. २६।०५ | वृष | अहोरात्रं | १।०१।३४।०६ | ३३।१६ | ५।२० | ६।४० | २६ | २ | १६ |
| २ बृ. | २०।५५ | दि.०१।४२ | रो. ०६।१६ | दि.०६।०२ | सु. ४१।०६ | कौ.२०।५५ | वृष ३७।२८ | रा.०८।१६ | १।०२।३१।४५ | ३३।२२ | ५।२० | ६।४० | २७ | ३ | १७ |
| ३ शु. | १५।१६ | दि.११।२५ | मृ. ०५।४१ | दि.०७।३५ | धृ. ३३।४४ | ग. १५।१६ | मिथुन | अहोरात्रं | १।०३।२६।२१ | ३३।२५ | ५।१६ | ६।४१ | २८ | ४ | १८ |
| ४ श. | ०६।१४ | दि.०६।०० | आ. ०१।४१ | प्रा.०५।५८ | शू. २६।११ | वि. ०६।१४ | मिथुन ४३।३५ | रा.१०।४४ | १।०४।२६।५७ | ३३।२८ | ५।१८ | ६।४२ | २६ | ५ | १६ |
| ५ र. | ०३।०६ | दि.०६।३२ | पुष्य. ५३।२७ | रा.०२।४१ | गं. १८।३१ | बा.०३।०६ | कर्क | अहोरात्रं | १।०५।२४।३३ | ३३।३१ | ५।१८ | ६।४२ | ३० | ६ | २० |
| ७ चं. | ५१।१२ | रा.०१।४६ | श्ले. ४६।३६ | रा.०१।०७ | वृ. १०।५८ | ग. २४।०७ | कर्क ४६।३६ | रा.०१।०७ | १।०६।२२।०८ | ३३।३४ | ५।१७ | ६।४३ | ३१ | ७ | २१ |
| ८ मं. | ४५।५० | रा.११।३७ | म. ४६।०६ | रा.११।४५ | ध्रु. ०३।४१ | वि. १८।३१ | सिंह | अहोरात्रं | १।०७।१६।३२ | ३३।३६ | ५।१७ | ६।४३ | १ | ८ | २२ |
| ६ बु. | ४१।०७ | रा.०६।४३ | पूफ. ४३।२४ | रा.१०।३८ | ह. ५०।२८ | बा. १३।२६ | सिंह ५७।५५ | रा.०४।२६ | १।०८।१६।५६ | ३३।३८ | ५।१६ | ६।४४ | २ | ६ | २३ |
| १० बृ. | ३७।११ | रा.०८।०८ | उफ. ४१।३० | रा.०६।५२ | व. ४४।५० | तै. ०६।०६ | कन्या | अहोरात्रं | १।०६।१४।२० | ३३।४० | ५।१६ | ६।४४ | ३ | १० | २४ |
| ११ शु. | ३४।१६ | सं.०६।५८ | ह. ४०।२८ | रा.०६।२७ | सि. ४०।०० | व. ०५।४४ | कन्या | अहोरात्रं | १।१०।११।४४ | ३३।४१ | ५।१६ | ६।४४ | ४ | ११ | २५ |
| १२ श. | ३२।२६ | सं.०६।१४ | चि. ४०।३७ | रा.०६।३१ | व्य. ३६।०४ | ब. ०३।२१ | कन्या १०।३२ | दि.०६।२६ | १।११।०६।०८ | ३३।४२ | ५।१६ | ६।४४ | ५ | १२ | २६ |
| १३ र. | ३१।४६ | सं.०५।५७ | स्वा. ४१।५८ | रा.१०।०२ | व. ३३।०६ | कौ.०२।०६ | तुला | अहोरात्रं | १।१२।०६।३२ | ३३।४३ | ५।१५ | ६।४५ | ६ | १३ | २७ |
| १४ चं. | ३२।२४ | सं.०६।१३ | वि. ४४।३७ | रा.११।०६ | प. ३१।१० | ग. ०२।०५ | तुला २८।५८ | दि.०४।५० | १।१३।०३।५५ | ३३।४४ | ५।१५ | ६।४५ | ७ | १४ | २८ |
| १५ मं. | ३४।२५ | रा.०७।०१ | अनु. ४८।२८ | रा.१२।३८ | शि. ३०।१७ | वि. ०३।२५ | वृश्चिक | अहोरात्रं | १।१४।०१।०६ | ३३।४६ | ५।१५ | ६।४५ | ८ | १५ | २६ |

## प्रथमज्येष्ठशुक्लपक्षः मलमासः

शकाब्दः १६४०, संवत् २०७५, सन् १४२५ साल, दि.१६।०५।२०१८ ई. तः दि.२६।०५।२०१८ ई.या. पश्चिमे कालः।
वक्री पूर्वोदितो गुरुः, मार्गी पश्चिमोदितः शुक्रः, अशुद्धः, ग्रीष्मर्तुः, सौम्यगोलः, सौम्यायनम्।

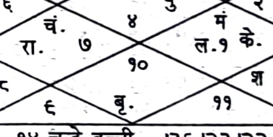
मासादिः, मलमासे स्त्रीणां यात्रा न प्रशस्ता। ⇔ म. ४२।१५ उ., (३-४ एको.)।
चन्द्रदर्शनं मु.३० सम शृंगफलं साम्यं, पूर्वयात्रा रोहिण्यां ततो दक्षिणां विना यात्रा।
गणेश ४ व्रतं, पश्चिमां विना यात्रा मृगशिरसि, द.ति. १५।१६ उ., ⇔
पुनर्वसुमानं ५५।५१, द.ति. ०६।१४ या., म. ०६।१४ यावत्।
षष्ठीमानं ५३।५६, पश्चिमां विना यात्रा पञ्चम्याम्।
गं. ३८।३६ उपरि ५३।३६ यावत्, भ. ५१।१२ उपरि।
व्याघातमानम् ५३।०८, भ. १८।३१ यावत्, पूर्वयात्रा पूर्वफल्गुन्याम्।
पूर्वयात्रा दशमीपूर्वफल्गुन्योः। ◆ **न तु द्वितीयज्येष्ठशुक्ले। तत्र योगा (४) एवोपलभ्यन्ते।**
वृषे बुधः ०२।५८, पूर्वयात्रा हस्ते, **गंगादशहरा,** गंगास्नानदानादिः, पृथिव्यां गंगावतरणं, **ऐषमः योगा** (६) **क्रियान्मलमासे** एव गंगादशहरा, ◆
**कमला ११ व्रतं सर्वेषां,** पूर्वदक्षिणयात्रैकादश्यां, **रोहिण्यां रविः ३४।३५,** म. ०५।४४ उ. ३४।१६ या., **वृश्चिके मध्यमो गुरुः** १६।०५ तत एव ←
कुशोदकेन पारणं, **प्रदोष १३ व्रतं,** दक्षिणयात्रा कन्यास्थे चन्द्रे ततः पश्चिमदक्षिणयात्रा। ← परियावीनामा षट्चत्वारिंशन्मध्यमगुरुसम्वत्सरारम्भः।
**प्रदोष १४ व्रतं,** दक्षिणयात्रा त्रयोदश्याम्।
पश्चिमोत्तरयात्रानुराधायाम्, भ. ३२।२४ उपरि।
प्रथमज्यैष्ठी १५ स्नानदानादिः, **नैर्ऋत्यामगस्त्यास्तः,** पश्चिमयात्रा पूर्णिमायां, भ. ०३।२५ यावत्।

**गंगादशहरायां दशयोगाः स्कान्दे** - ज्येष्ठे मासि सिते पक्षे दशमी बुधहस्तयोः। व्यतीपाते गरानन्दे कन्याचन्द्रे वृषे रवौ।। दशयोगे नरः स्नात्वा सर्वपापैः प्रमुच्यते।। ज्येष्ठस्य मलमासत्वे सति,योगाधिक्ये फलाधिक्याद्यत्रैव योगबाहुल्यं तत्रैवेयं ग्राह्येति। **दशपापानि** - पारुष्यमनृतं **चैव पैशुन्यं** चापि सर्वतः। असम्बद्धप्रलापं च वाङ्मयं स्याच्चतुर्विधम्।। अदत्तानामुपादानं हिंसा चैवाविधानतः। परदारोपसेवा च कायिकं त्रिविधं स्मृतम्।। परद्रव्येष्वभिध्यानं मनसानिष्टचिन्तनम्। वितथाभिनिवेशश्च मानसं त्रिविधं स्मृतम्।। एतानि दशपापानि हर त्वं **मम जाह्नवि**। दशपापहरा यस्मात्तस्माद्दशहरा स्मृता।।

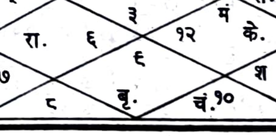
### मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च / दैनिकलग्नसारिणीचक्रम्

| ति.दि. | मंगलः | बुधः | गुरुः | शुक्रः | शनिः | केतुः | मिश्रमानं | मे.अं. | वृ.अं. | मि.अं. | क.अं. | सिं.अं | कं.अं. | तु.अं. | वृ.अं. | ध.अं. | म.अं. | कुं.अं. | मी.अं. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ बु. | ६।०२।४०।०० | ०।१६।३७।२४ | ६।२५।२०।४८ | २।०३।४१।२४ | ८।११।५३।३६ | ६।१७।४६।२२ | ४६।४० | ५।१७ | ७।१३ | ६।२६ | ११।४४ | १४।०० | १६।१५ | १८।३२ | २०।४६ | २२।५४ | ०।४० | २।११ | ३।४० |
| २ बृ. | ६।०३।०१।२६ | ०।१८।२६।३५ | ६।२५।१३।०० | २।०४।५२।३७ | ८।११।५०।२० | ६।१७।४६।११ | ४६।४२ | ५।१३ | ७।०६ | ६।२२ | ११।४० | १३।५६ | १६।११ | १८।२८ | २०।४५ | २२।५० | ०।३६ | २।०७ | ३।३६ |
| ३ शु. | ६।०३।२२।५१ | ०।२०।१५।४६ | ६।२५।०५।१२ | २।०६।०३।४६ | ८।११।४७।०४ | ६।१७।४३।०० | ४६।४४ | ५।०६ | ७।०५ | ६।१८ | ११।३६ | १३।५२ | १६।०७ | १८।२४ | २०।४१ | २२।४६ | ०।३२ | २।०३ | ३।३२ |
| ४ श. | ६।०३।४४।१६ | ०।२२।०४।५७ | ६।२४।५७।२४ | २।०७।१५।०१ | ८।११।४३।४८ | ६।१७।३६।४६ | ४६।४५ | ५।०५ | ७।०१ | ६।१४ | ११।३२ | १३।४८ | १६।०३ | १८।२० | २०।३७ | २२।४२ | ०।२८ | १।५६ | ३।२८ |
| ५ र. | ६।०४।०५।४१ | ०।२३।५४।०८ | ६।२४।४६।३६ | २।०८।२६।१३ | ८।११।४०।३२ | ६।१७।३६।३६ | ४६।४६ | ५।०१ | ६।५७ | ६।१० | ११।२८ | १३।४४ | १५।५६ | १८।१६ | २०।३३ | २२।३८ | ०।२४ | १।५५ | ३।२४ |
| ७ चं. | ६।०४।२७।०६ | ०।२५।४३।१६ | ६।२४।४१।४८ | २।०६।३७।२५ | ८।११।३७।१७ | ६।१७।३३।२६ | ४६।४७ | ४।५७ | ६।५३ | ६।०६ | ११।२४ | १३।४० | १५।५५ | १८।१२ | २०।२६ | २२।३४ | ०।२० | १।५१ | ३।२० |
| ८ मं. | ६।०४।४५।३८ | ०।२७।३६।२६ | ६।२४।३४।११ | २।१०।४८।३५ | ८।११।३३।३१ | ६।१७।३०।१८ | ४६।४८ | ४।५३ | ६।४६ | ६।०२ | ११।२० | १३।३६ | १५।५१ | १८।०८ | २०।२५ | २२।३० | ०।१६ | १।४७ | ३।१६ |
| ६ बु. | ६।०५।०४।१० | ०।२६।२६।३३ | ६।२४।२६।३४ | २।११।५६।४५ | ८।११।२६।४५ | ६।१७।२७।०७ | ४६।४६ | ४।४६ | ६।४५ | ८।५८ | ११।१६ | १३।३२ | १५।४७ | १८।०४ | २०।२१ | २२।२६ | ०।१२ | १।४३ | ३।१२ |
| १० बृ. | ६।०५।२२।४२ | १।०१।२२।४० | ६।२४।१८।५७ | २।१३।१०।५५ | ८।११।२५।५६ | ६।१७।२३।५६ | ४६।५० | ४।४५ | ६।४१ | ८।५४ | ११।१२ | १३।२८ | १५।४३ | १८।०० | २०।१७ | २२।२२ | ०।०८ | १।३६ | ३।०८ |
| ११ शु. | ६।०५।४१।१४ | १।०३।१५।४७ | ६।२४।११।२० | २।१४।२२।०५ | ८।११।२२।१३ | ६।१७।२०।४५ | ४६।५१ | ४।४१ | ६।३७ | ८।५० | ११।०८ | १३।२४ | १५।३६ | १७।५६ | २०।१३ | २२।१८ | ०।०४ | १।३५ | ३।०४ |
| १२ श. | ६।०५।५६।४५ | १।०५।०८।५४ | ६।२४।०३।४३ | २।१५।३३।१५ | ८।११।१८।२८ | ६।१७।१७।३४ | ४६।५२ | ४।३७ | ६।३३ | ८।४६ | ११।०४ | १३।२० | १५।३५ | १७।५२ | २०।०६ | २२।१४ | ००।०० | १।३१ | ३।०० |
| १३ र. | ६।०६।१८।१६ | १।०७।०२।०१ | ६।२३।५६।०६ | २।१६।४४।२५ | ८।११।१४।४३ | ६।१७।१४।२३ | ४६।५२ | ४।३३ | ६।२६ | ८।४२ | ११।०० | १३।१६ | १५।३१ | १७।४८ | २०।०५ | २२।१० | २३।५६ | १।२७ | २।५६ |
| १४ चं. | ६।०६।३६।४७ | १।०८।५५।०८ | ६।२३।४८।२६ | २।१७।५५।३४ | ८।११।१०।५८ | ६।१७।११।१३ | ४६।५२ | ४।२६ | ६।२५ | ८।३८ | १०।५६ | १३।१२ | १५।२७ | १७।४४ | २०।०१ | २२।०६ | २३।५२ | १।२३ | २।५२ |
| १५ मं. | ६।०६।५२।१४ | १।१०।४६।४६ | ६।२३।४१।२२ | २।१६।०५।५६ | ८।११।०६।४७ | ६।१७।०८।०२ | ४६।५३ | ४।२५ | ६।२१ | ८।३४ | १०।५२ | १३।०८ | १५।२३ | १७।४० | १६।५७ | २२।०२ | २३।४८ | १।१६ | २।४८ |

७ चन्द्रे वल्ली ८।३६।२३।१५
अयनांशाः २२।४७।१०




१४ चन्द्रे वल्ली ८।३६।२३।२२
अयनांशाः २२।४७।११




**विविधविषयाः**-मलमासे कर्त्तव्याकर्त्तव्यविचारस्तत्र **बृहस्पतिः**-नित्यनैमित्तिकं कुर्यात्प्रयतः सन् मलिम्लुचे। तीर्थस्नानं गजच्छायां प्रेतस्नानं तथैव **च।। गर्भे** वार्द्धुषिकृत्ये च मृतानां पिण्डकर्मसु। सपिण्डीकरणे चैव नाधिमासं विदुर्बुधाः।। तत्र नित्यं **सन्ध्यावन्दनादि**,नैमित्तिकं ग्रहशान्त्यादिनिमित्तकस्नानादि, तीर्थस्नानं द्वितीयाद्यावृत्ति, गजच्छायेति **ग्रहणनिमित्तकश्राद्धं**, प्रेतस्नानं मरणनिमित्तकस्नानं, गर्भाधानजातकर्मप्रयोग-मृतनरपिण्डकर्मसपिण्डीकरणानि च मलमासेऽपि कर्त्तव्यानि तदतिरिक्तान्याग्न्याधानयज्ञदानव्रतचूडाकरणोपनयनवेदारंभ समावर्तनमहादानवापीकूपतडागदेवालयारंभादिकार्याणि त्याज्यानि। **मलमासे** दानादि-विष्णुं **जिष्णुं महाविष्णुं** हरिं कृष्णमधोक्षजम्। केशवं माधवं राममच्युतं पुरुषोत्तमम्।। गोविन्दं वामनं **श्रीशं** श्रीकान्तं विश्वसाक्षिणम्। नारायणं मधुरिपुमनिरुद्धं त्रिविक्रमम्।। वासुदेवं जगद्योनिमनन्तं **शेषशायिनम्**। संकर्षणं च प्रद्युम्नं दैत्यारिं विश्वतोमुखम्।। जनार्दनं धरावासं दामोदरमघार्दनम्। **श्रीपतिञ्च** त्रयस्त्रिंशदुद्दिश्य प्रतिनामभिः।। त्रयस्त्रिंशदपूपानि कांस्यपात्रे निधाय च। सघृतं सहिरण्यं **च ब्राह्मणाय** निवेदयेत्।। प्राप्नुयात्तेन लक्ष्मी पुत्रपौत्रादिसम्पदः।। **मलमासे** राजगिरौ (पाटलिपुत्रसमीपे) **वासः, गैरिकानद्यां** (नेपालदेशे) स्नानं च महापुण्यप्रदमिति।

**ग्रहस्थितिः** - मार्गी पूर्वोदितः कुजः, **मार्गी** पूर्वास्तो बुधः, वक्रिणौ पूर्वोदितौ गुरुशनी, मार्गी पश्चिमोदितः शुक्रः।

**वातावरणम्** - पक्षाद्यन्तभागयोः तापाग्निमयवायवस्तन्मध्यभागे झंझावाताप्रचारादयः।

## द्वितीयज्येष्ठकृष्णपक्षः मलमासः

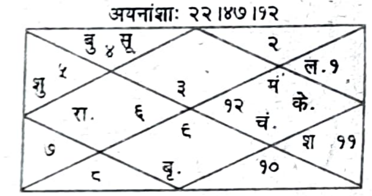
शकाब्दः १६४०, संवत् २०७५, सन् १४२५ साल, दि.३०।०५।१८ ई. तः दि. १३।०६।१८ ई. या., पश्चिमे कालः। वक्री पूर्वोदितो गुरुः, मार्गी पश्चिमोदितः शुक्रः, अशुद्धः ३० तः गुद्धः, ग्रीष्मर्तुः, सौम्यगोलः, सौम्यायनम्।

| तिथयः | तिथयः | | नक्षत्राणि | | योगाः | करणानि | चन्द्रराशयः | | स्पष्टसूर्यः | दिनमानं | सूर्योदयः | सूर्यास्तः |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दिनानि | द. प. | घं. मि. | द. प. | घं. मि. | द. प. | द. प. | द. प. | घं. मि. | राश्यादिः | द. प. | घं. मि. | घं. मि. |
| १ बु. | ३७।२६ | रा. ०८।१५ | ज्ये. ५३।२७ | रा. ०२।३८ | सि. ३०।१४ | बा. ०५।५७ | वृ. ५३।२७ | रा.०२।३८ | १।१४।५८।२३ | ३३।४७ | ५।१५ | ६।४५ |
| २ वृ. | ४१।३४ | रा. १०।५२ | मू. ५६।१५ | रा. ०४।५६ | सा. ३०।५६ | तै. ०६।३२ | धनु | अहोरात्रं | १।१५।५५।३७ | ३३।४८ | ५।१४ | ६।४६ |
| ३ शु. | ४६।१८ | रा. ११।४५ | पूषा.६०।०० | अहोरात्रं | शु. ३२।१६ | व. १३।५६ | धनु | अहोरात्रं | १।१६।५२।५१ | ३३।४९ | ५।१४ | ६।४६ |
| ४ श. | ५१।२५ | रा. ०१।४८ | पूषा.०५।३६ | दि. ०७।३० | शु. ३३।५६ | ब. १८।५२ | धनु २२।१८ | दि.०२।०६ | १।१७।५०।०५ | ३३।५० | ५।१४ | ६।४६ |
| ५ र. | ५६।२२ | रा. ०३।४७ | उषा.१२।१६ | दि. १०।०८ | ब्र. ३५।३३ | कौ. २३।५४ | मकर | अहोरात्रं | १।१८।४७।१८ | ३३।५१ | ५।१४ | ६।४६ |
| ६ चं. | ६०।०० | अहोरात्रं | श्र. १८।३५ | दि. १२।४० | ऐं. ३६।५१ | ग. २८।३५ | मकर ५१।२६ | रा.०१।४८ | १।१९।४४।३१ | ३३।५२ | ५।१४ | ६।४६ |
| ६ मं. | ००।४७ | प्रा. ०५।३२ | ध. २४।१६ | दि. ०२।५५ | वै. ३७।३८ | व. ००।४७ | कुम्भ | अहोरात्रं | १।२०।४१।३८ | ३३।५४ | ५।१३ | ६।४७ |
| ७ बु. | ०४।२६ | दि. ०६।५९ | शत. २६।०४ | दि. ०४।५१ | वि. ३७।३५ | ब. ०४।२६ | कुम्भ | अहोरात्रं | १।२१।३८।४४ | ३३।५६ | ५।१३ | ६।४७ |
| ८ वृ. | ०६।५१ | दि. ०७।५६ | पूभा ३२।४६ | सं. ०६।१८ | प्री. ३६।४३ | कौ. ०६।५१ | कुंभ १६।५१ | दि.११।५६ | १।२२।३५।५० | ३३।५८ | ५।१२ | ६।४८ |
| ९ शु. | ०८।०९ | दि. ०८।२८ | उभा ३५।१२ | रा. ०७।१७ | आ. ३४।४८ | ग. ०८।०९ | मीन | अहोरात्रं | १।२३।३२।५६ | ३३।५९ | ५।१२ | ६।४८ |
| १० श. | ०८।०८ | दि. ०८।२७ | रे. ३६।२० | रा. ०७।४४ | सौ. ३१।५१ | वि. ०८।०८ | मीन ३६।२० | रा.०७।४४ | १।२४।३०।०२ | ३४।०० | ५।१२ | ६।४८ |
| ११ र. | ०६।५३ | दि. ०७।५७ | अ. ३६।१७ | रा. ०७।४३ | शो. २७।५६ | बा. ०६।५३ | मेष | अहोरात्रं | १।२५।२७।०८ | ३४।०१ | ५।१२ | ६।४८ |
| १२ चं. | ०४।२५ | दि. ०६।५८ | भ. ३५।०६ | रा. ०७।१४ | अगं.२३।०७ | तै. ०४।२५ | मेष ४९।३६ | रा.०१।०२ | १।२६।२४।१४ | ३४।०२ | ५।१२ | ६।४८ |
| १३ मं. | ००।५२ | प्रा. ०५।३२ | कृ. ३३।०६ | सं. ०६।२५ | सु. १७।३१ | व. ००।५२ | वृष | अहोरात्रं | १।२७।२१।१३ | ३४।०४ | ५।११ | ६।४९ |
| ३० बु. | ५१।१७ | रा. ०१।४२ | रो. ३०।१२ | सं. ०५।१६ | धृ. ११।११ | च. २३।५२ | वृष ५८।२७ | रा.०४।३४ | १।२८।१८।१२ | ३४।०५ | ५।११ | ६।४९ |

| दिनांकाः रा. | सौ. | अं. | |
|---|---|---|---|
| ९ | १६ | ३० | पश्चिमयात्रा ज्येष्ठायां ततः पूर्वयात्रा मूले, गं. ४७।२७ उपरि। |
| १० | १७ | ३१ | पूर्वोत्तरयात्रा, गं. ०२।२७ यावत्। |
| ११ | १८ | १ | जून ६, द.ति. ४६।१८ उ., भ. १३।५६ उ. ४६।१८ या., पूर्वोत्तरयात्रा तृतीयायाम्। |
| १२ | १९ | २ | आखुरथ ४ व्रतं, द.ति. ५१।२५ यावत्। |
| १३ | २० | ३ | पश्चिमां विना यात्रा पञ्चम्यां श्रवणायाम्। |
| १४ | २१ | ४ | त्र्यहो जन्मदिनकृत्यं, पञ्चकारंभो दिवा घं.१२ मि.४० उपरि, पूर्वां विना यात्रा श्रवणायाम्। |
| १५ | २२ | ५ | पश्चिमयात्रा सप्तम्यां धनिष्ठायाम्, भ. ००।४७ उ. ३२।३६ यावत्। |
| १६ | २३ | ६ | ।।००।। |
| १७ | २४ | ७ | पश्चिमयात्राष्टम्याम्। |
| १८ | २५ | ८ | मृगशिरसि रविः ३३।२५, कर्के शुक्रः ०६।२४, मिथुने बुधः ५२।३७, भ. ३८।०८ उपरि, उत्तरयात्रा रेवत्याम्। |
| १९ | २६ | ९ | पञ्चकान्तो रात्रौ घं.७ मि.४४ उपरि, गं. २४।२० उ. ३६।२० यावत्, भ. ०८।०८ या., पश्चिमोत्तरयात्रैकादशी रेवत्योस्ततः पूर्वां विना यात्रा। |
| २० | २७ | १० | पद्मा ११ व्रतं सर्वेषां, पश्चिमां विना यात्रा द्वादश्यश्विन्योः। |
| २१ | २८ | ११ | कुशोदकेन पारणं, प्रदोष १३ व्रतम्। |
| २२ | २९ | १२ | चतुर्दशीमानं ५५।३४, प्रदोष १४ व्रतं, भ. ००।५२ उपरि २९।०६ यावत्, पूर्वदक्षिणयात्रा चतुर्दशीरोहिण्योः। |
| २३ | ३० | १३ | मलमासान्तः शुद्धारम्भश्च ५१।१७ उपरि, द्वितीयज्यैष्ठी ३० स्नानदानादिः। |

६ चन्द्रे वल्ली ८।३६।२३।२६

अयनांशाः २२।४७।१२




### मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च

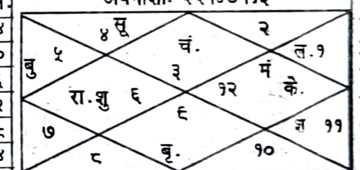
| ति.दि. | मंगलः | बुधः | गुरुः | शुक्रः | शनिः | केतुः |
|---|---|---|---|---|---|---|
| १ बु. | ९।०७।०७।४० | १।१२।४४।३० | ६।२३।३४।१५ | २।२०।१६।२४ | ८।११।०२।३६ | ९।१७।०४।५१ |
| २ वृ. | ९।०७।२३।०६ | १।१४।३९।१० | ६।२३।२७।०८ | २।२१।२६।४८ | ८।१०।५८।२६ | ९।१७।०१।४० |
| ३ शु. | ९।०७।३८।३२ | १।१६।३३।५० | ६।२३।२०।०१ | २।२२।३७।१२ | ८।१०।५४।१६ | ९।१६।५८।२९ |
| ४ श. | ९।०७।५३।५८ | १।१८।२८।३० | ६।२३।१२।५४ | २।२३।४७।३६ | ८।१०।५०।०६ | ९।१६।५५।१८ |
| ५ र. | ९।०८।०९।२४ | १।२०।२३।१० | ६।२३।०५।४८ | २।२४।५८।०० | ८।१०।४५।५६ | ९।१६।५२।०८ |
| ६ चं. | ९।०८।२४।५० | १।२२।१७।५० | ६।२२।५८।४२ | २।२६।०८।२४ | ८।१०।४१।४६ | ९।१६।४८।५८ |
| ६ मं. | ९।०८।३६।१२ | १।२४।१०।४४ | ६।२२।५२।२२ | २।२७।१८।०५ | ८।१०।३७।१७ | ९।१६।४५।४७ |
| ७ बु. | ९।०८।४७।३४ | १।२६।०३।३८ | ६।२२।४६।०२ | २।२८।२७।४६ | ८।१०।३२।४८ | ९।१६।४२।३६ |
| ८ वृ. | ९।०८।५८।५६ | १।२७।५६।३२ | ६।२२।३९।४२ | २।२९।३७।२७ | ८।१०।२८।१९ | ९।१६।३९।२५ |
| ९ शु. | ९।०९।१०।१७ | १।२९।४९।२६ | ६।२२।३३।२२ | ३।००।४७।०८ | ८।१०।२३।५० | ९।१६।३६।१४ |
| १० श. | ९।०९।२१।३८ | २।०१।४२।१९ | ६।२२।२७।०३ | ३।०१।५६।४९ | ८।१०।१९।२२ | ९।१६।३३।०३ |
| ११ र. | ९।०९।३२।५९ | २।०३।३५।१२ | ६।२२।२०।४४ | ३।०३।०६।३० | ८।१०।१४।५४ | ९।१६।२९।५३ |
| १२ चं. | ९।०९।४४।२० | २।०५।२८।०५ | ६।२२।१४।२५ | ३।०४।१६।११ | ८।१०।१०।२६ | ९।१६।२६।४३ |
| १३ मं. | ९।०९।५१।०० | २।०७।१६।५१ | ६।२२।०९।०५ | ३।०५।२५।११ | ८।१०।०५।४५ | ९।१६।२३।३२ |
| ३० बु. | ९।०९।५७।३९ | २।०९।०५।३७ | ६।२२।०३।४५ | ३।०६।३४।११ | ८।१०।०१।०४ | ९।१६।२०।२१ |

### दैनिकलग्नसारिणीचक्रम्

| मिश्रमानं | मे.अं. | वृ.अं. | मि.अं. | क.अं. | सिं.अं. | कं.अं. | तु.अं. | वृ.अं. | ध.अं. | म.अं. | कुं.अं. | मी.अं. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ४६।५४ | ४।२१ | ६।१७ | ८।३० | १०।४८ | १३।०४ | १५।१९ | १७।३६ | १९।५३ | २१।५८ | २३।४४ | १।१५ | २।४४ |
| ४६।५५ | ४।१७ | ६।१३ | ८।२६ | १०।४४ | १३।०० | १५।१५ | १७।३२ | १९।४९ | २१।५४ | २३।४० | १।११ | २।४० |
| ४६।५६ | ४।१३ | ६।०९ | ८।२२ | १०।४० | १२।५६ | १५।११ | १७।२८ | १९।४५ | २१।५० | २३।३६ | १।०७ | २।३६ |
| ४६।५६ | ४।०९ | ६।०५ | ८।१८ | १०।३६ | १२।५२ | १५।०७ | १७।२४ | १९।४१ | २१।४६ | २३।३२ | १।०३ | २।३२ |
| ४६।५६ | ४।०५ | ६।०१ | ८।१४ | १०।३२ | १२।४८ | १५।०३ | १७।२० | १९।३७ | २१।४२ | २३।२८ | ०।५९ | २।२८ |
| ४६।५६ | ४।०१ | ५।५७ | ८।१० | १०।२८ | १२।४४ | १४।५९ | १७।१६ | १९।३३ | २१।३८ | २३।२४ | ०।५५ | २।२४ |
| ४६।५७ | ३।५७ | ५।५३ | ८।०६ | १०।२४ | १२।४० | १४।५५ | १७।१२ | १९।२९ | २२।३४ | २३।२० | ०।५१ | २।२० |
| ४६।५८ | ३।५३ | ५।४९ | ८।०२ | १०।२० | १२।३६ | १४।५१ | १७।०८ | १९।२५ | २२।३० | २३।१६ | ०।४७ | २।१६ |
| ४६।५९ | ३।४९ | ५।४५ | ७।५८ | १०।१६ | १२।३२ | १४।४७ | १७।०४ | १९।२१ | २१।२५ | २३।१२ | ०।४३ | २।१२ |
| ४७।०० | ३।४५ | ५।४१ | ७।५४ | १०।१२ | १२।२८ | १४।४३ | १७।०० | १९।१७ | २१।२२ | २३।०८ | ०।३९ | २।०८ |
| ४७।०१ | ३।४१ | ५।३७ | ७।५० | १०।०८ | १२।२४ | १४।३९ | १६।५६ | १९।१३ | २१।१८ | २३।०४ | ०।३५ | २।०४ |
| ४७।०१ | ३।३७ | ५।३३ | ७।४६ | १०।०४ | १२।२० | १४।३५ | १६।५२ | १९।०९ | २१।१४ | २३।०० | ०।३१ | २।०० |
| ४७।०१ | ३।३३ | ५।२९ | ७।४२ | १०।०० | १२।१६ | १४।३१ | १६।४८ | १९।०५ | २१।१० | २२।५६ | ०।२७ | १।५६ |
| ४७।०२ | ३।२९ | ५।२५ | ७।३८ | ९।५६ | १२।१२ | १४।२७ | १६।४४ | १९।०१ | २१।०६ | २२।५२ | ०।२३ | १।५२ |
| ४७।०३ | ३।२५ | ५।२१ | ७।३४ | ९।५२ | १२।०८ | १४।२३ | १६।४० | १८।५७ | २१।०२ | २२।४८ | ०।१९ | १।४८ |

१२ चन्द्रे वल्ली ८।३६।२३।३६

अयनांशाः २२।४७।१३




**विविधविषयाः – मलमासविमर्शः –** सूर्यसंक्रान्तिविहीनशुक्लादिचान्द्रमासोऽधिमासः सूर्यसंक्रान्तिद्वययुक्तशुक्लादिचान्द्रमासश्च क्षयाख्यो मासः। तथा हि **कमलाकरः** – असंक्रान्तिमासो हि चान्द्रोऽधिमासो द्विसंक्रान्तिमासः क्षयाख्यस्तदानीम्। क्षयाख्यः कदाचित्ततः प्राक् च पश्चादवश्यं हि तत्राधिमासद्वयं स्यात्।। तत्र क्षयमासवति वर्षे क्षयमासात्पूर्वं पश्चाच्च मासत्रयान्तरेऽधिमासद्वयं जायते। अधिमासद्वयमित्यसंक्रान्तमासद्वयमसंक्रान्तिमासोऽधिमास इति लक्षणेन केवलमसंक्रान्तमासद्वयमेव भवति, न तूभयत्र मासवृद्धिः, मासवृद्धेरधिशेषोद्भवमासासन्नकालसापेक्षत्वात्। तेन तद्वर्षे पूर्वाधिमासस्य त्रिंशत्तिथ्यात्मकस्यासंक्रान्तत्वादधिमासत्वमिति मासवृद्ध्यभाव एव ज्यौतिषलक्षणसंगतिः तथा चाधिशेषरूपकालाधिक्यवशाच्चोत्तरासंक्रान्ताधिमासे एव मासवृद्धिः, यथोक्तलक्षणसन्निकटत्वात्। अत्रेदं ध्येयं सावनदिनप्रविष्टे चान्द्रदिने तिथिक्षयः, चान्द्रमासप्रविष्टे सौरमासे क्षयमास इत्युभौ भिन्नपदार्थौ। तेन यथाधिशेषवशादधिमासो जायते न तथा क्षयदिनवशात् क्षयमासः। अतो मध्यममानसिद्धो व्यवहारबहिर्भूतः प्रथमः स्पष्टमानसिद्धो व्यवहारविहितश्च द्वितीयोऽधिमासः। तत्रासंक्रान्तोऽवृद्धिमदधिमासः एकः असंक्रान्तो वृद्धिमदधिमासश्चापर इति स्पष्टमानसिद्धोऽप्यधिमासो द्विविध इति। अत्र अधिशेषोद्भवकालाधिक्यवशाज्जायमान असंक्रान्तो वृद्धिमदधिमासः २७ तः २९ मासाभ्यन्तरे पततीति यथैषमो मासेऽस्मिन् ज्येष्ठे इति।

**ग्रहस्थितिः** – मार्गी पूर्वोदितः कुजः, मार्गी पूर्वास्तो बुधः, वक्रिणौ पूर्वोदितौ गुरुशनी, मार्गी पश्चिमोदितः शुक्रः।

वातावरणम् – पक्षाद्यन्तभागयोः तापवायुयोगस्तन्मध्यभागे वातच्छिन्नवृष्टिमेघचारादयः।

## द्वितीयज्येष्ठशुक्लपक्षः

शकाब्दः १९४०, संवत्२०७५,सन् १४२५ साल, दि.१४।०६।१८ ई. तः दि.२८।०६।१८ ई.या., पश्चिमे कालः।
वक्री पूर्वोदितो गुरुः, मार्गी पश्चिमोदितः शुक्रः, शुद्धः, ग्रीष्मर्तुः, सौम्यगोलः, सौम्यायनम्।

| तिथयः दिनानि | तिथयः द. प. | घं. मि. | नक्षत्राणि द. प. | घं. मि. | योगाः द. प. | करणानि द. प. | चन्द्रराशयः द. प. | घं. मि. | स्पष्टसूर्यः राश्यादिः | दिनमान द. प. | सूर्योदयः घं. मि. | सूर्यास्तः घं. मि. | दिनांकाः रा. | सौ. | अं. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ बृ. | ४५।३७ | रा. ११।२६ | मृ. २६।४२ | दि. ०३।५२ | शू. ०४।१८ | किं. १८।२७ | मिथुन | अहो. | १।२९।१५।११ | ३४।०६ | ५।११ | ६।४९ | २४ | ३१ | १४ |
| २ शु. | ३९।३४ | रा. ०९।०१ | आ. २२।४५ | दि. ०२।१७ | वृ. ४९।३१ | बा. १२।३६ | मिथुन | अहो. | २।००।१२।१० | ३४।०७ | ५।११ | ६।४९ | २५ | १ | १५ |
| ३ श. | ३३।२० | सं. ०६।३० | पुन. १८।३८ | दि. १२।३७ | ध्रु. ४१।५२ | तै. ०६।२७ | मि.०४।४० | दि.०७।०२ | २।०१।०९।०९ | ३४।०८ | ५।१० | ६।५० | २६ | २ | १६ |
| ४ र. | २७।११ | दि. ०४।०२ | पु. १४।२६ | दि. १०।५८ | व्या. ३४।२० | व. ००।१६ | कर्क | अहो. | २।०२।०६।०८ | ३४।०९ | ५।१० | ६।५० | २७ | ३ | १७ |
| ५ चं. | २१।१८ | दि. ०१।४१ | श्ले. १०।३२ | दि. ०९।२३ | ह. २६।५८ | बा. २१।१८ | क.१०।३२ | दि.०९।२३ | २।०३।०३।०७ | ३४।१० | ५।१० | ६।५० | २८ | ४ | १८ |
| ६ मं. | १५।५० | दि. ११।३० | म. ०६।५७ | दि. ०७।५७ | व. २०।०१ | तै. १५।५० | सिंह | अहो. | २।०४।००।०२ | ३४।११ | ५।१० | ६।५० | २९ | ५ | १९ |
| ७ बु. | १०।५८ | दि. ०९।३३ | पूफ. ०३।५९ | प्रा. ०६।४६ | सि. १३।३६ | व. १०।५८ | सिं.१८।२८ | दि.१२।३३ | २।०४।५६।५७ | ३४।१२ | ५।१० | ६।५० | ३० | ६ | २० |
| ८ बृ. | ०६।५७ | दि. ०७।५७ | उफ. ०१।५४ | प्रा. ०५।५६ | व्य. ०७।५० | ब. ०६।५७ | कन्या | अहो. | २।०५।५३।५१ | ३४।१२ | ५।१० | ६।५० | ३१ | ७ | २१ |
| ९ शु. | ०३।५५ | प्रा. ०६।४४ | ह. ००।३८ | प्रा. ०५।२५ | व. ०२।५२ | कौ. ०३।५५ | कं.३०।३३ | सं.०५।२३ | २।०६।५०।४५ | ३४।१२ | ५।१० | ६।५० | १ | ८ | २२ |
| १० श. | ०१।५७ | प्रा. ०५।५७ | चि. ००।२८ | प्रा. ०५।२१ | शि. ५५।३९ | ग. ०१।५७ | तुला | अहो. | २।०७।४७।३९ | ३४।१२ | ५।१० | ६।५० | २ | ९ | २३ |
| ११ र. | ०१।१० | प्रा. ०५।३८ | स्वा. ०१।२९ | प्रा. ०५।४६ | सि. ५३।३२ | वि. ०१।१० | तु.४८।१४ | रा.१२।२८ | २।०८।४४।३३ | ३४।१२ | ५।१० | ६।५० | ३ | १० | २४ |
| १२ चं. | ०१।४४ | प्रा. ०५।५२ | वि. ०३।४९ | प्रा. ०६।४२ | सा. ५२।२९ | बा. ०१।४४ | वृश्चिक | अहो. | २।०९।४१।२७ | ३४।१२ | ५।१० | ६।५० | ४ | ११ | २५ |
| १३ मं. | ०३।३६ | प्रा. ०६।३६ | अनु. ०७।२३ | दि. ०८।०७ | शु. ५२।१५ | तै. ०३।३६ | वृश्चिक | अहो. | २।१०।३८।१९ | ३४।११ | ५।१० | ६।५० | ५ | १२ | २६ |
| १४ बु. | ०६।३१ | दि. ०७।४६ | ज्ये. १२।०६ | दि. १०।०० | शु. ५२।५५ | व. ०६।३१ | वृ.१२।०६ | दि.१०।०० | २।११।३५।१० | ३४।१० | ५।१० | ६।५० | ६ | १३ | २७ |
| १५ बृ. | १०।३१ | दि. ०९।२२ | मू. १७।४३ | दि. १२।१५ | ब्र. ५४।१० | ब. १०।३१ | धनु | अहो. | २।१२।३२।०१ | ३४।०९ | ५।१० | ६।५० | ७ | १४ | २८ |

गण्डमानम् ५२।४५, **मासान्तः**।
मिथुने रविः ३४।१६ मु. ४५ फलं समर्घ, **षडशीतिसंक्रान्तिपुण्यकालो** घं.१२ मि.०० उपरि सूर्यास्तं यावत्, पुण्याहः, चन्द्रदर्शनं मु. ४५ सौम्यशृंगफलं समर्घम्।
**मासादिः**, रम्भा ३, पञ्चाग्निव्रतं, **गणेश ४ व्रतं**, **महाराणाप्रतापजयन्ती**।
गं. ५९।३२ उपरि, भ. ००।१६ उपरि २७।११ यावत्।
पश्चिमोदितो बुधः ०१।१८, गं.१४।३२ या., **उपनयनमाश्लेषायां**, कुजवेधाद्विवाहो नैव, **कूपखननं** पञ्चम्यां मघायाम्। ←द.ति.१०।५८ उपरि।
अरण्य ६, विन्ध्यवासिनीपूजा, पूर्वयात्रा सप्तम्याम्, (६-७ एको.)। ◆**मैथिलदैवाहिकसभारम्भः(सौराठससौलयोः)**, गं. ०६।०६ उ. १५।०६ या., म. ०६।३१ उ. ३८।३१ यावत्।
**कर्णवेधो विवाहो गृहारम्भो गृहप्रवेशो वापीकूपतडागखननं देवादिप्रतिष्ठा** च सप्तम्यानुत्तरफल्गुन्यां, पूर्वयात्रा पूर्वफल्गुन्याम्, म. १०।५८ उपरि ३८।५७ यावत्,←
द.ति. ०६।५७ यावत्। ♋ **विवाहो गृहारम्भप्रवेशौ देवादिप्रतिष्ठा** च दशम्यां, पूर्वदक्षिणयात्रा **कन्यास्थे चन्द्रे** ततो दक्षिणयात्रा।
परिघमानं ५५।५३, **आर्द्रायां रविः** ३५।४६ स्त्रीस्त्रीसूचंयोगः धनुर्लग्नं गजवाहनमग्निनाडीपतिः कुजस्तेन तापमेघच्छायाझंझावातयोगः, **उपनयनं मुण्डनं कर्णवेधा** ♋
**रामेश्वरप्रतिष्ठादिनं** तद्दर्शनपूजनादिकं, **गृहारम्भः** स्वात्यां, **गृहप्रवेशः**, पश्चिमदक्षिणयात्रैकादश्यां, म. ३१।३३ उपरि।
वक्री कुजः ३५।०७, म. ०१।१० या., **निर्जला ११ व्रतं सर्वेषां**, **विवाहः** स्वात्यां, दक्षिणयात्रा द्वादश्यां स्वात्याम्, **एकादशीव्रतोद्यापनम**।
कर्के बुधः ४९।००, तिलेन पारणं, त्रिविक्रम १२, **प्रदोष १३ व्रतं**, **कर्णवेधा विवाहो गृहप्रवेशो देवादिप्रतिष्ठा** पश्चिमोत्तरयात्रा चानुराधायाम्।
**प्रदोष** १४ **व्रतं**, पश्चिमयात्रा, आर्द्रास्थे सूर्ये नवोदकनिमित्तकपार्वणं विधेयम्।
बुधवेधाद्विवाहो मध्यमो मूले तत्र रात्रौ घं.२ मि.३१ यावत् ततो वेधाभावः, **गृहारम्भो** . मूले, पश्चिमयात्रा पूर्णिमायां ज्येष्ठायां ततः पूर्वयात्रा, ◆
**द्वितीयज्यैष्ठी** १५ स्नानदानादिः, **साम्प्रतिकवैवस्वतमन्वादिः**, कबीरजयन्ती, **विवाहो** मूले, **गृहारंभः पूर्णिमायां**, पूर्वोत्तरयात्रा।

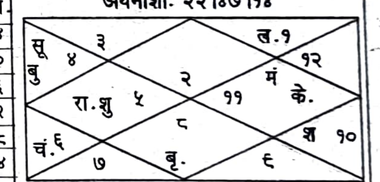
### मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च

| ति.दि. | मंगलः | बुधः | गुरुः | शुक्रः | शनिः | केतुः | मिश्रमानं |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ बृ. | ९।१०।०४।१८ | २।१०।५४।२३ | ६।२१।५८।२५ | ३।०७।४३।११ | ८।०९।५६।२४ | ९।१६।१७।१० | ४७।०४ |
| २ शु. | ९।१०।१०।५७ | २।१२।४३।०९ | ६।२१।५३।०५ | ३।०८।५२।११ | ८।०९।५१।४४ | ९।१६।१३।५९ | ४७।०५ |
| ३ श. | ९।१०।१७।३६ | २।१४।३१।५५ | ६।२१।४७।४६ | ३।१०।०१।११ | ८।०९।४७।०४ | ९।१६।१०।४८ | ४७।०५ |
| ४ र. | ९।१०।२४।१५ | २।१६।२०।४० | ६।२१।४२।२७ | ३।११।१०।१० | ८।०९।४२।२४ | ९।१६।०७।३८ | ४७।०५ |
| ५ चं. | ९।१०।३०।५४ | २।१८।०९।२५ | ६।२१।३७।०८ | ३।१२।१९।०९ | ८।०९।३७।४४ | ९।१६।०४।२८ | ४७।०५ |
| ६ मं. | ९।१०।३३।४५ | २।१९।५०।३२ | ६।२१।३२।५१ | ३।१३।२७।४९ | ८।०९।३३।०२ | ९।१६।०१।१७ | ४७।०६ |
| ७ बु. | ९।१०।३६।३६ | २।२१।३१।३९ | ६।२१।२८।३४ | ३।१४।३६।२९ | ८।०९।२८।२१ | ९।१५।५८।०६ | ४७।०६ |
| ८ बृ. | ९।१०।३९।२७ | २।२३।१२।४६ | ६।२१।२४।१७ | ३।१५।४५।०९ | ८।०९।२३।४० | ९।१५।५४।५५ | ४७।०६ |
| ९ शु. | ९।१०।४२।१७ | २।२४।५३।५३ | ६।२१।२०।०१ | ३।१६।५३।४९ | ८।०९।१८।५९ | ९।१५।५१।४४ | ४७।०६ |
| १० श. | ९।१०।४५।०७ | २।२६।३५।०० | ६।२१।१५।४५ | ३।१८।०२।२८ | ८।०९।१४।१८ | ९।१५।४८।३३ | ४७।०६ |
| ११ र. | ९।१०।४५।४२ | २।२८।१६।०६ | ६।२१।११।२९ | ३।१९।११।०७ | ८।०९।०९।३७ | ९।१५।४५।२२ | ४७।०६ |
| १२ चं. | ९।१०।४४।३८ | २।२९।५७।१२ | ६।२१।०७।१३ | ३।२०।१९।४६ | ८।०९।०४।५६ | ९।१५।४२।१२ | ४७।०६ |
| १३ मं. | ९।१०।४१।१३ | ३।०१।२५।३९ | ६।२१।०४।१७ | ३।२१।२७।३४ | ८।०९।००।१५ | ९।१५।३९।०१ | ४७।०५ |
| १४ बु. | ९।१०।३७।४८ | ३।०२।५४।०५ | ६।२१।०१।२१ | ३।२२।३५।२२ | ८।०८।५५।३४ | ९।१५।३५।५० | ४७।०४ |
| १५ बृ. | ९।१०।३४।२३ | ३।०४।२२।३१ | ६।२०।५८।२५ | ३।२३।४३।१० | ८।०८।५०।५३ | ९।१५।३२।३९ | ४७।०३ |

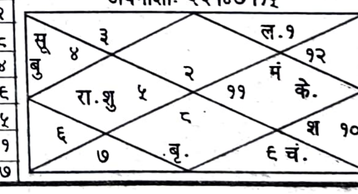
### दैनिकलग्नसारिणीचक्रम्

| ति.दि. | मे.अं. | वृ.अं. | मि.अं. | क.अं. | सिं.अं | कं.अं. | तु.अं. | वृ.अं. | ध.अं. | म.अं. | कुं.अं. | मी.अं. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ बृ. | ३।२१ | ५।१७ | ७।३० | ९।४८ | १२।०४ | १४।१९ | १६।३६ | १८।५३ | २०।५८ | २२।४४ | ०।१५ | १।४४ |
| २ शु. | ३।१७ | ५।१३ | ७।२६ | ९।४० | १२।०० | १४।१५ | १६।३२ | १८।४९ | २०।५४ | २२।४० | ०।११ | १।४० |
| ३ श. | ३।१३ | ५।०९ | ७।२२ | ९।४० | ११।५६ | १४।११ | १६।२८ | १८।४५ | २०।५० | २२।३६ | ०।०७ | १।३६ |
| ४ र. | ३।०९ | ५।०५ | ७।१८ | ९।३६ | ११।५२ | १४।०७ | १६।२४ | १८।४१ | २०।४६ | २२।३२ | ०।०३ | १।३२ |
| ५ चं. | ३।०५ | ५।०१ | ७।१४ | ९।३२ | ११।४८ | १४।०३ | १६।२० | १८।३७ | २०।४२ | २२।२८ | २३।५९ | १।२८ |
| ६ मं. | ३।०१ | ४।५७ | ७।१० | ९।२८ | ११।४४ | १३।५९ | १६।१६ | १८।३३ | २०।३८ | २२।२४ | २३।५५ | १।२४ |
| ७ बु. | २।५७ | ४।५३ | ७।०६ | ९।२४ | ११।४० | १३।५५ | १६।१२ | १८।२९ | २०।३४ | २२।२० | २३।५१ | १।२० |
| ८ बृ. | २।५३ | ४।४९ | ७।०२ | ९।२० | ११।३६ | १३।५१ | १६।०८ | १८।२५ | २०।३० | २२।१६ | २३।४७ | १।१६ |
| ९ शु. | २।४९ | ४।४५ | ६।५८ | ९।१६ | ११।३२ | १३।४७ | १६।०४ | १८।२१ | २०।२६ | २२।१२ | २३।४३ | १।१२ |
| १० श. | २।४५ | ४।४१ | ६।५४ | ९।१२ | ११।२८ | १३।४३ | १६।०० | १८।१७ | २०।२२ | २२।०८ | २३।३९ | १।०८ |
| ११ र. | २।४१ | ४।३७ | ६।५० | ९।०८ | ११।२४ | १३।३९ | १५।५६ | १८।१३ | २०।१८ | २२।०४ | २३।३५ | १।०४ |
| १२ चं. | २।३६ | ४।३२ | ६।४५ | ९।०३ | ११।१९ | १३।३४ | १५।५१ | १८।०८ | २०।१३ | २१।५९ | २३।३० | ०।५९ |
| १३ मं. | २।३२ | ४।२८ | ६।४१ | ८।५९ | ११।१५ | १३।३० | १५।४७ | १८।०४ | २०।०९ | २१।५५ | २३।२६ | ०।५५ |
| १४ बु. | २।२८ | ४।२४ | ६।३७ | ८।५५ | ११।११ | १३।२६ | १५।४३ | १८।०० | २०।०५ | २१।५१ | २३।२२ | ०।५१ |
| १५ बृ. | २।२४ | ४।२० | ६।३३ | ८।५१ | ११।०७ | १३।२२ | १५।३९ | १७।५६ | २०।०१ | २१।४७ | २३।१८ | ०।४७ |

**५ चन्द्रे वल्ली ८।३९।२३।४३**
**अयनांशाः २२।४७।१४**




**१२ चन्द्रे वल्ली ८।३९।२३।५०**
**अयनांशाः २२।४७।१५**




**विविधविषयाः** – ज्येष्ठमासे दानवस्तूनि **वामनपुराणे** – उदक्कुम्भं जलं धेनुस्तालवृन्तं सचन्दनम्। त्रिविक्रमस्य प्रीत्यर्थं प्रद्द्यात् ज्येष्ठमासि च।। **कृत्यशिरोमणौ** – निदाघकाले पानीयं यस्य तिष्ठत्यवारितम्। स **दुर्गं विषमं** कृच्छ्रं न कदाचिदवाप्नुयात्।। छत्रदानात्तथा ज्येष्ठे सर्वान् कामानवाप्नुयात्। **छत्रोपानहयोर्दानाज्ज्येष्ठे** मासि द्विजोत्तमाः।। अक्षयं फलमाप्नोति नाकलोकं च गच्छति।। **चतुर्थ्यां सौभाग्यवृद्धये उमापूजनं ब्रह्मपुराणे** – ज्येष्ठशुक्लचतुर्थ्यां तु जाता **पूर्वमुमा सती**। तस्मात् सा तत्र सम्पूज्या स्त्रीभिः सौभाग्यवृद्धये।। **अष्टम्यां चतुर्दश्या च** पञ्चाग्निव्रतधृक्। तयोस्तिथ्योः सायंकाले व्रतान्ते सुवर्णस्य धेनोश्च दाता दिवं **यातीति प्रोक्तं कृत्यमहार्णवे** – ज्येष्ठे पञ्चतपास्सायं हेमधेनुप्रदो दिवि। यात्यष्टमी-**चतुर्दश्यो** रुद्रव्रतमिदं स्मृतम्।। **पूर्णिमायां तिलदानमहत्त्वमादित्यपुराणे** – **ज्यैष्ठे मासि** तिलान् दद्यात् पौर्णमास्यां विशेषतः। अश्वमेधस्य यज्ञस्य फलं प्राप्नोत्यसंशयम्।।

**ग्रहस्थितिः** – मार्गी पूर्वोदितः कुजः ११ तो वक्री, मार्गी पूर्वास्तो बुधः ५ तः पश्चिमोदितः, वक्रिणौ पूर्वोदितौ गुरुशनी, मार्गी पश्चिमोदितः शुक्रः।
**वातावरणम्** – पक्षाद्यन्तभागयोः तापवायुमेघचारादयस्तन्मध्यभागे वातखण्डवृष्टयः।

## आषाढकृष्णपक्षः

शकाब्दः१९४०, सवत् २०७५, सन्१४२५ साल, दि.२६।०६।१८ ई. तः दि. १३।०७।१८ ई. या., पश्चिमे कालः। वक्री पूर्वोदितो गुरुः ३० तो मार्गी, मार्गी पश्चिमोदितः शुक्रः, शुद्धः, ग्रीष्मर्तुः, सौम्यगोलः, सौम्यायनम्।

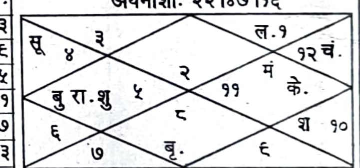
| तिथयः | तिथयः | | नक्षत्राणि | | योगाः | करणानि | चन्द्रराशयः | | स्पष्टसूर्यः | दिनमान | सूर्योदयः | सूर्यास्तः | दिनाकाः | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दिनानि | द. प. | घं. मि. | द. प. | घं. मि. | द. प. | द. प. | द. प. | घं. मि. | राश्यादिः | द. प. | घं. मि. | घं. मि. | रा. | सौ. | अं. | |
| १ शु. | १५।११ | दि. ११।१४ | पूषा. २३।५६ | दि. ०२।४६ | ऐ. ५५।४६ | कौ. १५।११ | धनु ४०।३७ | रा.०६।२५ | २।१३।२८।५२ | ३४।०८ | ५।१० | ६।५० | ८ | १५ | २९ | विल्वमाषाढके त्यजेत्, विवाहः कर्णवेधो गृहारम्भश्चोत्तरापाढे, पूर्वोत्तरयात्रा प्रतिपदि, (२ एको.)। |
| २ श. | २०।१२ | दि. ०१।१६ | उषा. ३०।३३ | स. ०५।२४ | वै. ५७।२५ | ग. २०।१२ | मकर | अहोरात्रं | २।१४।२५।४३ | ३४।०७ | ५।११ | ६।४९ | ९ | १६ | ३० | गृहारम्भः, पूर्वां विना यात्रा श्रवणायाम्, भ. ५२।४० उपरि। |
| ३ र. | २५।०८ | दि. ०३।१४ | श्र. ३६।५५ | रा. ०७।५७ | वि. ५८।५० | वि. २५।०८ | मकर | अहोरात्रं | २।१५।२२।३४ | ३४।०६ | ५।११ | ६।४९ | १० | १७ | १ | जुलाई ७, विघ्नराज ४ व्रतम्, विवाहः पश्चिमां विना यात्रा च तृतीयायाम्, पञ्चकारम्भो रात्रौ घं. ०७ मि. ५७ उपरि, म. २५।०८ या., (३ एको.)। |
| ४ चं. | २९।३५ | दि. ०५।०१ | ध. ४२।४७ | रा. १०।१८ | प्री. ५९।४३ | बा. २९।३५ | मकर ०९।५१ | दि.०९।०७ | २।१६।१९।२५ | ३४।०४ | ५।११ | ६।४९ | ११ | १८ | २ | गृहारम्भः पञ्चम्याम्, शुक्रवेधाद्विवाहो मध्यमः पश्चिमयात्रा च पञ्चम्यां धनिष्ठायाम्। |
| ५ मं. | ३३।१५ | सं. ०६।३० | शत. ४७।४९ | रा. १२।२० | आ. ५९।५१ | कौ. ०१।२५ | कुम्भ | अहोरात्रं | २।१७।१६।१६ | ३४।०२ | ५।१२ | ६।४८ | १२ | १९ | ३ | ।।००।। ←उत्तरयात्रा नवम्यां मीनगे चन्द्रे ततः पश्चिमां विना यात्रा, द.ति. ३७।०७ या., गं. ४३।५२ उ. ५८।५२ यावत्। |
| ६ बु. | ३५।४३ | रा. ०७।२६ | पूभा. ५१।४२ | रा. ०१।५३ | सौ. ५९।०७ | ग. ०४।२९ | कुम्भ ३५।४४ | रा.०७।३० | २।१८।१३।०७ | ३४।०० | ५।१२ | ६।४८ | १३ | २० | ४ | मघायां सिंहे शुक्रः २१।३५, भ. ३५।४३ उ., विवाह उत्तराभाद्रे, पश्चिमयात्रा पूर्वभाद्रे। |
| ७ बृ. | ३७।०५ | रा. ०८।०२ | उभा. ५४।२५ | रा. ०२।५८ | शो. ५७।२१ | वि. ०६।२४ | मीन | अहोरात्रं | २।१९।०९।५८ | ३३।५८ | ५।१२ | ६।४८ | १४ | २१ | ५ | विवाहः सप्तम्याम्, मैथिलवैवाहिकसभासमाप्तिः (सौराठससौलयोः), द.ति. ३७।०५ उपरि, भ. ०६।२४ यावत्। |
| ८ शु. | ३७।०७ | रा. ०८।०४ | रे. ५५।५२ | रा. ०३।३४ | अगं. ५४।३६ | बा. ०७।०६ | मीन ५५।५२ | रा.०३।३४ | २।२०।०६।४९ | ३३।५७ | ५।१३ | ६।४७ | १५ | २२ | ६ | पुनर्वसौ रविः ३९।४६ पुंस्त्रीचंयोगः मकरलग्नं मण्डूकवाहनमग्निनाडीपतिः कुजस्तेन तापमेघच्छायाझंझावातयोगः, पञ्चकान्तो रात्रौ घं. ०३ मि. ३४ उपरि, ← |
| ९ श. | ३५।५४ | रा. ०७।३५ | अ. ५६।०५ | रा. ०३।३९ | सु. ५०।५० | तै. ०६।३१ | मेष | अहोरात्रं | २।२१।०३।४० | ३३।५६ | ५।१३ | ६।४७ | १६ | २३ | ७ | पूर्वां विना यात्रा नवम्याम्। |
| १० र. | ३३।२७ | सं. ०६।३६ | भ. ५५।०७ | रा. ०३।१६ | धृ. ४६।०९ | व. ०४।४१ | मेष | अहोरात्रं | २।२२।००।३० | ३३।५५ | ५।१३ | ६।४७ | १७ | २४ | ८ | भ. ०४।४१ उ. ३३।२७ यावत्। |
| ११ चं. | २९।५९ | सं. ०५।१३ | कृ. ५३।१५ | रा. ०२।३१ | शू. ४०।४० | ब. ०१।४३ | मेष ०९।३९ | दि.०९।०५ | २।२२।५७।२० | ३३।५४ | ५।१३ | ६।४७ | १८ | २५ | ९ | योगिनी ११ व्रतं सर्वेषाम्, कुजवेधाद्विवाहो नैव रोहिण्याम्। |
| १२ मं. | २५।३७ | दि. ०३।२६ | रो. ५०।३१ | रा. ०१।२६ | गं. ३४।२६ | तै. २५।३७ | वृष | अहोरात्रं | २।२३।५४।१४ | ३३।५२ | ५।१४ | ६।४६ | १९ | २६ | १० | यवचूर्णेन पारणं, प्रदोष १३ व्रतं, पूर्वदक्षिणयात्रा रोहिण्यां तत उत्तरां विना यात्रा। |
| १३ बु. | २०।२७ | दि. ०१।२५ | मृ. ४७।०८ | रा. १२।०५ | वृ. २७।३९ | व. २०।२७ | वृष १८।५० | दि.१२।४६ | २।२४।५१।०७ | ३३।५१ | ५।१४ | ६।४६ | २० | २७ | ११ | प्रदोष १४ व्रतं, विवाहस्त्रयोदश्या, भ. २०।२७ उ. ४७।३७ यावत्। |
| १४ बृ. | १४।४७ | दि. ११।०९ | आ. ४३।१६ | रा. १०।३२ | ध्रु. २०।२६ | श. १४।४७ | मिथुन | अहोरात्रं | २।२५।४८।०० | ३३।५० | ५।१४ | ६।४६ | २१ | २८ | १२ | १४-३० एकोद्दिष्टम्। |
| ३० शु. | ०८।४२ | दि. ०८।४३ | पुन. ३९।०९ | रा. ०८।५४ | व्या. १२।५४ | ना. ०८।४२ | मिथुन २५।११ | दि.०३।१८ | २।२६।४४।५३ | ३३।४९ | ५।१४ | ६।४६ | २२ | २९ | १३ | मार्गी गुरुः ४४।२९, आषाढी ३० स्नानदानादिः। |

### मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च / दैनिकलग्नसारिणीचक्रम्

| ति.दि. | मंगलः | बुधः | गुरुः | शुक्रः | शनिः | केतुः | मिश्रमानं | मे.अं. | वृ.अं. | मि.अं. | क.अं. | सिं.अं. | कं.अं. | तु.अं. | वृ.अं. | ध.अं. | म.अं. | कुं.अं. | मी.अं. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ शु. | ९।१०।३०।५८ | ३।०५।५०।५७ | ६।२०।५५।३० | ३।२४।५०।५८ | ८।०८।४६।१२ | ९।१५।२९।२८ | ४७।०२ | २।२० | ४।१६ | ६।२९ | ८।४७ | ११।०३ | १३।१८ | १५।३५ | १७।५२ | १९।५७ | २१।४३ | २३।१४ | ००।४३ |
| २ श. | ९।१०।२७।३३ | ३।०७।१९।२३ | ६।२०।५२।३५ | ३।२५।५८।४६ | ८।०८।४१।३२ | ९।१५।२६।१७ | ४७।०२ | २।१६ | ४।१२ | ६।२५ | ८।४३ | १०।५९ | १३।१४ | १५।३१ | १७।४८ | १९।५३ | २१।३९ | २३।१० | ००।३९ |
| ३ र. | ९।१०।२४।०८ | ३।०८।४७।४९ | ६।२०।४९।४० | ३।२७।०६।३४ | ८।०८।३६।५२ | ९।१५।२३।०७ | ४७।०२ | २।१२ | ४।०८ | ६।२१ | ८।३९ | १०।५५ | १३।१० | १५।२७ | १७।४४ | १९।४९ | २१।३५ | २३।०६ | ००।३५ |
| ४ चं. | ९।१०।२०।४४ | ३।१०।१६।१५ | ६।२०।४६।४५ | ३।२८।१४।२१ | ८।०८।३२।१२ | ९।१५।१९।५७ | ४७।०२ | २।०८ | ४।०४ | ६।१७ | ८।३५ | १०।५१ | १३।०६ | १५।२३ | १७।४० | १९।४५ | २१।३१ | २३।०२ | ००।३१ |
| ५ मं. | ९।१०।१२।२५ | ३।११।२५।२५ | ६।२०।४५।१२ | ३।२९।२१।२२ | ८।०८।२७।३६ | ९।१५।१६।४६ | ४७।०१ | २।०४ | ४।०० | ६।१३ | ८।३१ | १०।४७ | १३।०२ | १५।१९ | १७।३६ | १९।४१ | २१।२७ | २२।५८ | ००।२७ |
| ६ बु. | ९।१०।०४।०९ | ३।१२।३४।३५ | ६।२०।४३।३९ | ४।००।२८।२३ | ८।०८।२३।०० | ९।१५।१३।३५ | ४७।०० | २।०० | ३।५६ | ६।०९ | ८।२७ | १०।४३ | १२।५८ | १५।१५ | १७।३२ | १९।३७ | २१।२३ | २२।५४ | ००।२३ |
| ७ बृ. | ९।०९।५५।४७ | ३।१३।४३।४५ | ६।२०।४२।०६ | ४।०१।३५।२४ | ८।०८।१८।२४ | ९।१५।१०।२४ | ४६।५९ | १।५६ | ३।५२ | ६।०५ | ८।२३ | १०।३९ | १२।५४ | १५।११ | १७।२८ | १९।३३ | २१।१९ | २२।५० | ००।१९ |
| ८ शु. | ९।०९।४७।२८ | ३।१४।५२।५५ | ६।२०।४०।३३ | ४।०२।४२।२४ | ८।०८।१३।४८ | ९।१५।०७।१३ | ४६।५८ | १।५२ | ३।४८ | ६।०१ | ८।१९ | १०।३५ | १२।५० | १५।०७ | १७।२४ | १९।२९ | २१।१५ | २२।४६ | ००।१५ |
| ९ श. | ९।०९।३९।०९ | ३।१६।०२।०४ | ६।२०।३९।०१ | ४।०३।४९।२४ | ८।०८।०९।१२ | ९।१५।०४।०२ | ४६।५७ | १।४८ | ३।४४ | ५।५७ | ८।१५ | १०।३१ | १२।४६ | १५।०३ | १७।२० | १९।२५ | २१।११ | २२।४२ | ००।११ |
| १० र. | ९।०९।३०।५१ | ३।१७।११।१३ | ६।२०।३७।२९ | ४।०४।५६।२४ | ८।०८।०४।३६ | ९।१५।००।५२ | ४६।५७ | १।४४ | ३।४० | ५।५३ | ८।११ | १०।२७ | १२।४२ | १४।५९ | १७।१६ | १९।२१ | २१।०७ | २२।३८ | ००।०७ |
| ११ चं. | ९।०९।२२।३३ | ३।१८।२०।२२ | ६।२०।३५।५७ | ४।०६।०३।२४ | ८।०८।००।०१ | ९।१४।५७।४२ | ४६।५७ | १।४० | ३।३६ | ५।४९ | ८।०७ | १०।२३ | १२।३८ | १४।५५ | १७।१२ | १९।१७ | २१।०३ | २२।३४ | ००।०३ |
| १२ मं. | ९।०९।०९।३० | ३।१८।५८।१८ | ६।२०।३५।१९ | ४।०७।०९।०९ | ८।०७।५५।३३ | ९।१४।५४।३१ | ४६।५६ | १।३६ | ३।३२ | ५।४५ | ८।०३ | १०।१९ | १२।३४ | १४।५१ | १७।०८ | १९।१३ | २०।५९ | २२।३० | २३।५९ |
| १३ बु. | ९।०८।५६।२७ | ३।१९।३६।१३ | ६।२०।३४।४१ | ४।०८।१४।४८ | ८।०७।५१।०५ | ९।१४।५१।२० | ४६।५५ | १।३२ | ३।२८ | ५।४१ | ७।५९ | १०।१५ | १२।३० | १४।४७ | १७।०४ | १९।०९ | २०।५५ | २२।२६ | २३।५५ |
| १४ बृ. | ९।०८।४३।२४ | ३।२०।१४।०८ | ६।२०।३४।०३ | ४।०९।२०।३० | ८।०७।४६।३७ | ९।१४।४८।०९ | ४६।५४ | १।२८ | ३।२४ | ५।३७ | ७।५५ | १०।११ | १२।२६ | १४।४३ | १७।०० | १९।०५ | २०।५१ | २२।२२ | २३।५१ |
| ३० शु. | ९।०८।३०।२१ | ३।२०।५२।०३ | ६।२०।३३।२८ | ४।१०।२६।१२ | ८।०७।४२।०९ | ९।१४।४४।५८ | ४६।५३ | १।२४ | ३।२० | ५।३३ | ७।५१ | १०।०७ | १२।२२ | १४।३९ | १६।५६ | १९।०१ | २०।४७ | २२।१८ | २३।४७ |

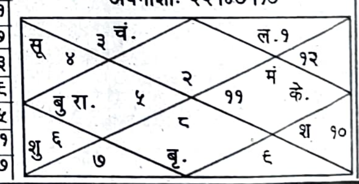
४ चन्द्रे वल्ली ८।३९।२३।५७

अयनांशाः २२।४७।१६




११ चन्द्रे वल्ली ८।३९।२४।०४

अयनांशाः २२।४७।१७




**विविधविषयाः** – ग्रहस्थितिवशेन वृष्टिविचारः – बुधः शुक्रसमीपस्थः करोत्येकार्णवां महीम्। तयोरन्तर्गतो भानुः समुद्रमपि शोषयेत्।। पुरतः पृष्ठतो भानुः शुभा यदि समीपगाः। तदा वृष्टिं प्रकुर्वन्ति न चेत्ते प्रतिलोमगाः।। ग्रहाणामुदये चास्ते राश्यन्तरगतेऽयने। संयोगो वापि पक्षान्ते प्रायो वृष्टिः प्रजायते।। उदयास्तगतः शुक्रः बुधश्च वृष्टिकारकः। चलत्यंगारके वृष्टिः ध्रुवा वृष्टिश्शनैश्चरे।। वारिपूर्णां महीं कृत्वा पश्चात्संचरते गुरुः। शुक्रे वास्तमिते मन्दे त्रिविघ्नेऽपि प्रजायते।। **सूर्यनक्षत्राणि**-रोहिणी-मृगशिरा-पूर्वोत्तरफल्गुनी-हस्त-चित्रा-स्वाती-विशाखा-अनुराधा-ज्येष्ठा-मूल-शतभिषोत्तरभाद्रपदानीति त्रयोदशर्क्षाणि, शेषाणि चन्द्रनक्षत्राणि ज्ञेयानि। **एतत्फलम**-चन्द्रे सूर्यर्क्षगे वृष्टिः सूर्ये चन्द्रर्क्षगे सति। उभौ चन्द्रर्क्षगौ स्यातां स्वल्पवृष्टिस्तदा भवेत्।। तावेव यदि सूर्यर्क्षे तदा वृष्टिर्न जायते।। नक्षत्राणां **पुरुषादिसंज्ञा**-मूलादीनि चतुर्दशर्क्षाणि पुरुषसंज्ञकानि, आर्द्रादिदश स्त्रीसंज्ञकानि, विशाखादि त्रीणि नपुंसकानि। तत्र पुंस्त्रीयोगे सुवृष्टिः, स्त्रीनपुंसकयोगे स्वल्पवृष्टिरन्यथा वृष्टेरभावः। **सजलादिराशयः**-कुम्भकर्कटकौ मीनमकरालितुलाधराः। सजला राशयः प्रोक्ता निर्जलाः शेषराशयः।।

**ग्रहस्थितिः** – वक्रिणः पूर्वोदिताः कुजगुरुशनयः, मार्गिणौ पश्चिमोदितौ बुधशुक्रौ।

**वातावरणम्** – पक्षादिभागे मेघचारतापखण्डवृष्टयस्तदुत्तरभागे वृष्टितापवायवः।

# आषाढशुक्लपक्षः

शकाब्दः १६४०, संवत् २०७५, सन्१४२५ साल, दि.१४।०७।१८ ई. तः दि. २७।०७।१८ ई. या., पश्चिमे कालः।
मार्गी पूर्वोदितो गुरुः, मार्गी पश्चिमोदितः शुक्रः, शुद्धः, ग्रीष्मर्तुः, सौम्यगोलायने, ५ तो वर्षर्तुर्याम्यायनञ्च।

| तिथयः दिनानि | तिथयः द. प. | तिथयः घं. मि. | नक्षत्राणि द. प. | नक्षत्राणि घं. मि. | योगाः द. प. | करणानि द. प. | चन्द्रराशयः द. प. | चन्द्रराशयः घं. मि. | स्पष्टसूर्यः राश्यादिः | दिनमानं द. प. | सूर्योदयः घं. मि. | सूर्यास्तः घं. मि. | दिनांकाः रा. | दिनांकाः सौ. | दिनांकाः अं. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ श. | ०२।३१ | प्रा. ०६।१४ | पु. ३४।५७ | रा. ०७।१३ | ह. ०५।१५ | ब. ०२।३१ | कर्क | अहो. | २।२७।४१।४६ | ३३।४८ | ५।१४ | ६।४६ | २३ | ३० | १४ |
| ३ र. | ५०।२४ | रा. ०१।२५ | श्ले. ३०।५५ | सं. ०५।३७ | सि. ५०।१७ | तै. २३।२२ | कर्क ३०।५५ | सं.०५।३७ | २।२८।३८।३६ | ३३।४७ | ५।१५ | ६।४५ | २४ | ३१ | १५ |
| ४ चं. | ४४।५२ | रा. ११।१२ | म. २७।१६ | दि. ०४।०६ | व्य. ४३।११ | व. १७।३८ | सिंह | अहो. | २।२९।३५।३२ | ३३।४६ | ५।१५ | ६।४५ | २५ | ३२ | १६ |
| ५ मं. | ३९।५४ | रा. ०९।१३ | पूफ. २४।०८ | दि. ०२।५४ | व. ३६।३८ | ब. १२।२३ | सिंह ३८।३३ | रा.०८।४० | ३।००।३२।३० | ३३।४४ | ५।१५ | ६।४५ | २६ | १ | १७ |
| ६ बु. | ३५।५० | रा. ०७।३५ | उफ. २१।४८ | दि. ०१।५८ | प. ३०।४६ | कौ. ०७।५२ | कन्या | अहो. | ३।०१।२९।२८ | ३३।४३ | ५।१५ | ६।४५ | २७ | २ | १८ |
| ७ बृ. | ३२।४१ | सं. ०६।२० | ह. २०।१९ | दि. ०१।२४ | शि. २५।३६ | ग. ०४।१६ | कन्या५०।०६ | रा.०१।१८ | ३।०२।२६।२६ | ३३।४२ | ५।१६ | ६।४४ | २८ | ३ | १९ |
| ८ शु. | ३०।३६ | सं. ०५।३० | चि. १९।५३ | दि. ०१।१३ | सि. २१।१९ | वि. ०१।३९ | तुला | अहो. | ३।०३।२३।२३ | ३३।४१ | ५।१६ | ६।४४ | २९ | ४ | २० |
| ९ श. | २९।४४ | दि. ०५।१० | स्वा. २०।४० | दि. ०१।३२ | सा. १८।०० | बा. ००।१० | तुला | अहो. | ३।०४।२०।२० | ३३।४० | ५।१६ | ६।४४ | ३० | ५ | २१ |
| १० र. | ३०।०८ | सं. ०५।१९ | वि. २२।४० | दि. ०२।२० | शु. १५।४३ | ग. ३०।०८ | तुला ०७।१० | दि.०८।०८ | ३।०५।१७।१७ | ३३।३९ | ५।१६ | ६।४४ | ३१ | ६ | २२ |
| ११ चं. | ३१।५७ | सं. ०६।०३ | अनु. २५।५९ | दि. ०३।४० | शु. १४।२८ | व. ०१।०३ | वृश्चिक | अहो. | ३।०६।१४।१४ | ३३।३८ | ५।१६ | ६।४४ | १ | ७ | २३ |
| १२ मं. | ३४।४७ | रा. ०७।१२ | ज्ये. ३०।२४ | सं. ०५।२७ | ब्र. १४।०४ | ब. ०३।२२ | वृश्चिक३०।२४ | सं.०५।२७ | ३।०७।११।१८ | ३३।३५ | ५।१७ | ६।४३ | २ | ८ | २४ |
| १३ बु. | ३८।४३ | रा. ०८।४७ | मू. ३५।४९ | रा. ०७।३८ | ऐं. १४।३६ | कौ. ०६।४५ | धनु | अहो. | ३।०८।०८।२२ | ३३।३२ | ५।१८ | ६।४२ | ३ | ९ | २५ |
| १४ बृ. | ४३।२२ | रा. १०।३९ | पूषा. ४१।५५ | रा. १०।०४ | वै. १५।३९ | ग. ११।०३ | धनु ५८।३३ | रा.०४।४३ | ३।०९।०५।२६ | ३३।२९ | ५।१८ | ६।४२ | ४ | १० | २६ |
| १५ शु. | ४८।२४ | रा. १२।४१ | उषा. ४८।२६ | रा. १२।४१ | वि. १७।०९ | वि. १५।५३ | मकर | अहो. | ३।१०।०२।३० | ३३।२६ | ५।१९ | ६।४१ | ५ | ११ | २७ |

**द्वितीयामानं ५३।४६,** वज्रमानं ५२।२६, चन्द्रदर्शनं मु.३० सौम्यशृंगफलं साम्यं, ग्रीष्मनवरात्रारम्भः, **कलशस्थापनं,** श्रीदुर्गापूजनोत्सवः, **जगन्नाथरथयात्रा,** ←
करमूले पुलिकमूलबन्धनं, **उपनयनम्,** केतुवेधाद्विवाहो मध्यमस्तृतीयायां मघायां, गं. १९।५५ उ. ३४।५५ यावत्।
मासान्तः, **गणेश ४ व्रतं,** भ. १७।३८ उपरि ४४।५२ यावत्। ← समुद्रस्नानं जगन्नाथदर्शनञ्च, पूर्वां विना यात्रा द्वितीयायां पुष्ये।
**कर्के रविः १२।३९ मु. ३०** फलं साम्यं, **याम्यायनसंक्रान्तिपुण्यकालो** घं.१० मि.१९ यावद्दिने, **पुण्याहः,** याम्यायनारंभः १२।३९ उपरि, द.ति. ३९।५४ उपरि।
मासादिः, द.ति. ३५।५० यावत्।
**वक्री बुधः** ०९।१७, **गृहारम्भः** सप्तम्यां चित्रायां, **गृहप्रवेशः** सप्तम्यां, पूर्वयात्रा कन्यास्थे चन्द्रे ततः पश्चिमयात्रा, भ. ३२।४१ उपरि।
**पुष्ये रविः** ४३।१५ स्त्रीस्त्रीसूचंयोगः मीनलग्नं रासभवाहनं वातानाडीपतिस्सूर्यस्तेन वातमेघचारवृष्टियोगः, **दक्षिणयात्रा,** भ. ०१।३९ यावत्।
पश्चिमदक्षिणयात्रा स्वात्याम्।
**पश्चिमास्तो बुधः** २१।३८, करमूले पुलिकमूलबन्चनं, रैवतमन्वादिः, उत्तरयात्रा दशम्यनुराधयोः।
**हरिशयन ११ व्रतं सर्वेषां,** चातुर्मास्यव्रतारंभः, **गृहारंभप्रवेशौ** अनुराधायां, पश्चिमोत्तरयात्रैकादश्यां, भ. ०१।०३ उ. ३१।५७ यावत्।
यवचूर्णेन पारणं, वासुदेव १२, **प्रदोष १३ व्रतं,** पश्चिमयात्रा ज्येष्ठायां ततः पूर्वयात्रा, गं. २४।२४ उपरि ३९।२४ यावत्।
**गृहप्रवेशो मूले।**
**प्रदोष १४ व्रतं,** भ. ४३।२२ उपरि। ◆ सन् १४२६ सालसंज्ञकवर्षारम्भः पूर्णान्तात्।
**आषाढी १५** स्नानदानादिः, गुरुपूर्णिमा, गुरुव्यासयोः पूजनं, चाक्षुषमन्वादिः, गृहारंभः, पश्चिमां विना यात्रा **श्रवणायां.** भ. १५।५३ यावत्, ◆

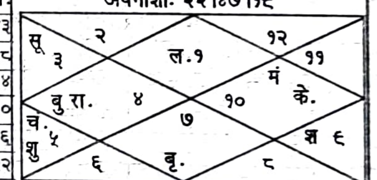
## मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च

| ति.दि. | मंगलः | बुधः | गुरुः | शुक्रः | शनिः | केतुः |
|---|---|---|---|---|---|---|
| १ श. | ९।०८।१७।१८ | ३।२१।२९।५८ | ६।२०।३३।४५ | ४।११।३१।५३ | ८।०७।३७।४१ | ९।१४।४१।४७ |
| ३ र. | ९।०८।०४।१६ | ३।२२।०७।५३ | ६।२०।३४।०२ | ४।१२।३७।३४ | ८।०७।३३।१४ | ९।१४।३८।३७ |
| ४ चं. | ९।०७।५१।१४ | ३।२२।४५।४८ | ६।२०।३४।१९ | ४।१३।४३।१५ | ८।०७।२८।४७ | ९।१४।३५।२७ |
| ५ मं. | ९।०७।३५।२१ | ३।२३।०१।१६ | ६।२०।३५।२६ | ४।१४।४७।४५ | ८।०७।२४।४२ | ९।१४।३२।१६ |
| ६ बु. | ९।०७।१९।२८ | ३।२३।०८।२१ | ६।२०।३६।३३ | ४।१५।५२।१५ | ८।०७।२०।३७ | ९।१४।२९।०५ |
| ७ बृ. | ९।०७।०३।३५ | ३।२३।०९।४३ | ६।२०।३७।४० | ४।१६।५६।४५ | ८।०७।१६।३२ | ९।१४।२५।५४ |
| ८ शु. | ९।०६।४७।४२ | ३।२३।०४।३६ | ६।२०।३८।४७ | ४।१८।०१।१५ | ८।०७।१२।२७ | ९।१४।२२।४३ |
| ९ श. | ९।०६।३१।४९ | ३।२२।४७।०४ | ६।२०।३९।५४ | ४।१९।०५।४५ | ८।०७।०८।२३ | ९।१४।१९।३२ |
| १० र. | ९।०६।१५।५६ | ३।२२।२९।३२ | ६।२०।४१।०१ | ४।२०।१०।१५ | ८।०७।०४।१९ | ९।१४।१६।२१ |
| ११ चं. | ९।०६।००।०३ | ३।२२।१२।०० | ६।२०।४२।०७ | ४।२१।१४।४५ | ८।०७।००।१५ | ९।१४।१३।११ |
| १२ मं. | ९।०५।४३।३१ | ३।२१।२९।४० | ६।२०।४४।४३ | ४।२२।१७।४८ | ८।०६।५६।३२ | ९।१४।१०।०० |
| १३ बु. | ९।०५।२६।५९ | ३।२०।४७।२० | ६।२०।४७।१९ | ४।२३।२०।५१ | ८।०६।५२।५० | ९।१४।०६।४९ |
| १४ बृ. | ९।०५।१०।२७ | ३।२०।०५।०० | ६।२०।४९।५५ | ४।२४।२३।५४ | ८।०६।४९।०८ | ९।१४।०३।३८ |
| १५ शु. | ९।०४।५३।५५ | ३।१९।२२।४१ | ६।२०।५२।३० | ४।२५।२६।५७ | ८।०६।४५।२६ | ९।१४।००।२७ |

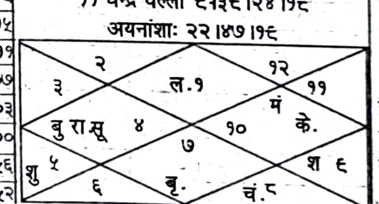
## दैनिकलग्नसारिणीचक्रम्

| ति.दि. | मिश्रमानं | मे.अं. | वृ.अं. | मि.अं. | क.अं. | सिं.अं | कं.अं. | तु.अं. | वृ.अं. | ध.अं. | म.अं. | कुं.अं. | मी.अं. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ श. | ४६।५३ | १।२० | ३।१६ | ५।२९ | ७।४७ | १०।०३ | १२।१८ | १४।३५ | १६।५२ | १८।५७ | २०।४३ | २२।१४ | २३।४३ |
| ३ र. | ४६।५३ | १।१५ | ३।११ | ५।२४ | ७।४२ | ९।५८ | १२।१३ | १४।३० | १६।४७ | १८।५२ | २०।३८ | २२।०९ | २३।३८ |
| ४ चं. | ४६।५३ | १।११ | ३।०७ | ५।२० | ७।३८ | ९।५४ | १२।०९ | १४।२६ | १६।४३ | १८।४८ | २०।३४ | २२।०५ | २३।३४ |
| ५ मं. | ४६।५२ | १।०७ | ३।०३ | ५।१६ | ७।३४ | ९।५० | १२।०५ | १४।२२ | १६।३९ | १८।४४ | २०।३० | २२।०१ | २३।३० |
| ६ बु. | ४६।५१ | १।०३ | २।५९ | ५।१२ | ७।३० | ९।४६ | १२।०१ | १४।१८ | १६।३५ | १८।४० | २०।२६ | २१।५७ | २३।२६ |
| ७ बृ. | ४६।५० | ०।५९ | २।५५ | ५।०८ | ७।२६ | ९।४२ | ११।५७ | १४।१४ | १६।३१ | १८।३६ | २०।२२ | २१।५३ | २३।२२ |
| ८ शु. | ४६।४९ | ०।५६ | २।५२ | ५।०५ | ७।२३ | ९।३९ | ११।५४ | १४।११ | १६।२८ | १८।३३ | २०।१९ | २१।५० | २३।१९ |
| ९ श. | ४६।४९ | ०।५२ | २।४८ | ५।०१ | ७।१९ | ९।३५ | ११।५० | १४।०७ | १६।२४ | १८।२९ | २०।१५ | २१।४६ | २३।१५ |
| १० र. | ४६।४९ | ०।४८ | २।४४ | ४।५७ | ७।१५ | ९।३१ | ११।४६ | १४।०३ | १६।२० | १८।२५ | २०।११ | २१।४२ | २३।११ |
| ११ चं. | ४६।४९ | ०।४४ | २।४० | ४।५३ | ७।११ | ९।२७ | ११।४२ | १३।५९ | १६।१६ | १८।२१ | २०।०७ | २१।३८ | २३।०७ |
| १२ मं. | ४६।४७ | ०।४० | २।३६ | ४।४९ | ७।०७ | ९।२३ | ११।३८ | १३।५५ | १६।१२ | १८।१७ | २०।०३ | २१।३४ | २३।०३ |
| १३ बु. | ४६।४५ | ०।३७ | २।३३ | ४।४६ | ७।०४ | ९।२० | ११।३५ | १३।५२ | १६।०९ | १८।१४ | २०।०० | २१।३१ | २३।०० |
| १४ बृ. | ४६।४३ | ०।३३ | २।२९ | ४।४२ | ७।०० | ९।१६ | ११।३१ | १३।४८ | १६।०५ | १८।१० | १९।५६ | २१।२७ | २२।५६ |
| १५ शु. | ४६।४२ | ०।२९ | २।२५ | ४।३८ | ६।५६ | ९।१२ | ११।२७ | १३।४४ | १६।०१ | १८।०६ | १९।५२ | २१।२३ | २२।५२ |

**४ चन्द्रे वल्ली ८।३९।२४।११**
**अयनांशाः २२।४७।१८**




**११ चन्द्रे वल्ली ८।३९।२४।१८**
**अयनांशाः २२।४७।१९**




**विविधविषयाः–आषाढे शकुनविचारः**–आषाढकृष्णाष्टम्यां चन्द्रोदये मेघे वृष्टिरुत्तमा सुभिक्षं चान्यथा दुर्भिक्षं, तथैव कृष्णनवम्यां मेघे विद्युति सत्यां सुवृष्टिः। आषाढशुक्लद्वितीयायां नवम्याञ्च शुभग्रहवारो वृष्टिकारकः समर्घकारकश्च। **पूर्णिमायामाषाढे** पूर्वाषाढे सति सुभिक्षं, प्रजापीडा च उत्तराषाढे। आषाढशुक्लद्वितीयायां **जगन्नाथरथयात्रा** – तद्दिने रथस्थरामावलोकिनो नैव विपद्यते। पूर्णिमायां **वायुपरीक्षणम्** – तत्र पूर्वपश्चिमवायुकोणोत्तरैशानवायुषु धान्योत्पतिः प्रजासुखञ्च जायते, इतरवायुषु भीतिः दुर्भिक्षादिकञ्चेति। आषाढशुक्लपक्षे रविवासरे करमूले **पुलिकमूलबन्धनमन्त्रः** – शुचिसितदिनकरवारे करमूले बद्धपुलिकमूलस्य। नागारेरिव नागाः प्रयान्ति किल दूरतस्तस्य।। एवं कृते सर्पभयं न जायते। चातुर्मास्यव्यतीते तु मुक्तिस्तस्य कराद् भवेदित्यनेन चातुर्मास्यनन्तरं कार्त्तिकशुक्लद्वादश्यां तस्य करान्मुक्तिः। आर्द्रानक्षत्रस्थे सूर्ये **पायसभोजनमहत्त्वम्** – आर्द्रायाः प्रथमे पादे क्षीरमश्नाति यो नरः। अपि रोषयुतस्तस्य तक्षकः किं करिष्यति।। क्षीरमत्र पायसमिति।

**ग्रहस्थितिः** – वक्रिणौ पूर्वोदितौ **कुजशनी, मार्गी** पश्चिमोदितो बुधः ७ तो वक्री १० तः पश्चिमास्तः, मार्गी पूर्वोदितो गुरुः, **मार्गी पश्चिमोदितः** शुक्रः।
**वातावरणम्** – पक्षस्य पूर्वभागे वातातपखण्डवृष्टयस्तदुत्तरभागे वातातपच्छिन्नवृष्टयः।

## ग्रहाणां दानादिपदार्थाः

| सूर्यः | चन्द्रः | मङ्गलः | बुधः | गुरुः | शुक्रः | शनिः | राहुः | केतुः |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| माणिक्य | वंशपात्र | विद्रुम | कांस्य | पीतधान्य | श्वेततण्डुल | माषान्न, तैल | गोमेद,तिल | माषान्न |
| गोधूम | श्वेततण्डुल | भूमि | हरितवस्त्र | पीतवस्त्र | श्वेतचित्रवस्त्र | कृष्णतिल | तुरग,माषान्न | कम्बल,कस्तूरी |
| गुड, ताम्र | श्वेतवस्त्र | मसूरद्विदल | हरितपुष्प | पीतपुष्प | श्वेतचन्दन | कृष्णवस्त्र | नीलवस्त्र | तिलतैल |
| रक्तपुष्प | श्वेतपुष्प | रक्तवृषभ | कर्पूर,शंख | पीतचन्दन | घृत, सुवर्ण | कृष्णपुष्प | नीलपुष्प | कृष्णवस्त्रादि |
| रक्तचन्दन | श्वेतचन्दन | गुड, ताम्र | फल, मुद्ग | सोना, घृत | रजत, स्फटिक | कंबल, उपानह | तिलतैल | सुवर्ण,लौह |
| रक्तवस्त्र | दधि, शंख | रक्तवस्त्र | गजदन्त | पीतफल,दधि | दधि, शंख | कस्तूरी,सोना | सप्तधान्य | छाग,खड्ग |
| सुवर्ण | सिता, चांदी | रक्तचन्दन | घृत,सोना | पोखराज | गोधूम, शक्कर | लौह,कुलत्थी | लौह, सुवर्ण | लोध्र |
| केसर | कर्पूर | रक्तपुष्प | मोथा | अश्व,मधु | सुगन्धद्रव्य | महिषी,छत्र | कृष्णपुष्प | वैदूर्यमणि |
| मूँगा | श्वेतवृषभ | सुवर्ण, केशर | मणि | पुस्तक,छत्र | श्वेताश्व | कृष्णधेनु | कम्बल | उपानह |
| सवत्सगौ | घृत, कूढ | कस्तूरी | षड्रसभोजन | भूमि,शक्कर | भूमि, श्वेतगौ | कज्जल, शमी | शस्त्र,छाग | कृष्णतिल |
| लाजा | मोती | बला | पत्रा | हरिद्रा | हीरा | नीलम | लाजावर्त | लाजावर्त |
| जप७००० | जप११००० | जप१०००० | जप८००० | जप१६००० | जप११००० | जप२३००० | जप१८००० | जप७००० |

**ग्रहाणां दानरत्नधारणजपादिकालः**- सूर्यादीनाञ्च यद्दानं जपहोमार्चनादिकम्। तेषां वारे(पूर्वाह्णे) प्रकुर्वीत सन्तुष्टास्ते भवन्ति हि। कन्यामीनपत्यो राहुकेत्वोर्जपादिकं शनौ बुधे वा कार्यम्। **धर्मप्रशंसा-धर्मेण हन्यते व्याधिर्धर्मेण शुभदा ग्रहाः। धर्मेण हन्यते शत्रुर्यतो धर्मस्ततो जयः।।**

## विंशोत्तरीमहादशान्तर्दशाचक्रम्

| सूर्यदशावर्षाणि ६ | चन्द्रदशावर्षाणि१० | भौमदशावर्षाणि ७ | राहुदशावर्षाणि१८ | गुरुदशावर्षाणि१६ | शनिदशावर्षाणि१९ | बुधदशावर्षाणि१७ | केतुदशावर्षाणि ७ | शुक्रदशावर्षाणि २० |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| कृ. उफ. उषा | रो. ह. श्रवणा | मृ. चि. ध. | आर्द्रा. स्वा. श. | पुन. वि. पूभा. | पुष्य. अनु. उभा. | आश्ले. ज्ये. रेव. | मघा. मू. अश्वि. | पूफ. पूषा. भर. |
| अन्तर्दशा १८ | अन्तर्दशा ३० | अन्तर्दशा २१ | अन्तर्दशा ५४ | अन्तर्दशा ४८ | अन्तर्दशा ५७ | अन्तर्दशा ५१ | अन्तर्दशा २१ | अन्तर्दशा ६० |
| ग्र. व. मा. दि. | ग्र. व. मा. दि. | ग्र. व. मा. दि. | ग्र. व. मा. दि. | ग्र. व. मा. दि. | ग्र. व. मा. दि. | ग्र. व. मा. दि. | ग्र. व. मा. दि. | ग्र. व. मा. दि. |
| सू. ० ३ १८ | चं. ० १० ० | मं. ० ४ २७ | रा. २ ८ १२ | वृ. २ १ १८ | श. ३ ० ३ | बु. २ ४ २७ | के. ० ४ २७ | शु. ३ ४ ० |
| चं. ० ६ ० | मं. ० ७ ० | रा. १ ० १८ | वृ. २ ४ २४ | श. २ ६ १२ | बु. २ ८ ६ | के. ० ११ २७ | शु. १ २ ० | सू. १ ० ० |
| मं. ० ४ ६ | रा. १ ६ ० | वृ. ० ११ ६ | श. २ १० ६ | बु. २ ३ ६ | के. १ १ ९ | शु. २ १० ० | सू. ० ४ ६ | चं. १ ८ ० |
| रा. ० १० २४ | वृ. १ ४ ० | श. १ १ ९ | बु. २ ६ १८ | के. ० ११ ६ | शु. ३ २ ० | सू. ० १० ६ | चं. ० ७ ० | मं. १ २ ० |
| वृ. ० ९ १८ | श. १ ७ ० | बु. ० ११ २७ | के. १ ० १८ | शु. २ ८ ० | सू. ० ११ १२ | चं. १ ५ ० | मं. ० ४ २७ | रा. ३ ० ० |
| श. ० ११ १२ | बु. १ ५ ० | के. ० ४ २७ | शु. ३ ० ० | सू. ० ९ १८ | चं. १ ७ ० | मं. ० ११ २७ | रा. १ ० १८ | वृ. २ ८ ० |
| बु. ० १० ६ | के. ० ७ ० | शु. १ २ ० | सू. ० १० २४ | चं. १ ४ ० | मं. १ १ ९ | रा. २ ६ १८ | वृ. ० ११ ६ | श. ३ २ ० |
| के. ० ४ ६ | शु. १ ८ ० | सू. ० ४ ६ | चं. १ ६ ० | मं. ० ११ ६ | रा. २ १० ६ | वृ. २ ३ ६ | श. १ १ ९ | बु. २ १० ० |
| शु. १ ० ० | सू. ० ६ ० | चं. ० ७ ० | मं. १ ० १८ | रा. २ ४ २४ | वृ. २ ६ १२ | श. २ ८ ९ | बु. ० ११ २७ | के. १ २ ० |

## योगिनीदशान्तर्दशाचक्रम्

| मंगला १ | पिंगला २ | धान्या३ | भ्रामरी ४ | भद्रिका ५ | उल्का ६ | सिद्धा ७ | संकटा ८ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| श्र.आ.चि. | ध. पुन. स्वा | श.पु.वि. | अ.आश्ले. अनु.पूभा. | भर.म. ज्ये.उभा | कृ.पूफ.मू.रे. | रो.उफ.पूषा | मृ.ह.उषा |
| मा.१२ च. | मा.२४ सू. | मा.३६वृ | मा.४८मं | मा.६०बु. | मा.७२श. | मा.८४शु. | मा.९६ के. |
| मं.०।१० | पिं.१।१० | धा.३।० | भ्रा.५।१० | भ.८।१० | उ.१२।० | सि.१६।१० | सं.२१।१० |
| पि.०।२० | धा.२।०० | भ्रा.४।० | भ.६।२० | उ.१०।० | सि.१४।० | सं.१८।२० | मं.२।२० |
| धा.१।० | भ्रा.२।२० | भ.५।० | उ.८।० | सि.११।२० | सं.१६।० | मं.२।१० | पि.५।१० |
| भ्रा.१।१० | भ.३।१० | उ.६।० | सि.९।१० | सं.१३।१० | मं.२।० | पिं.४।२० | धा.८।०० |
| भ.१।२० | उ.४।० | सि.७।० | सं.१०।२० | मं.१।२० | पिं.४।० | धा.७।० | भ्रा.१०।२० |
| उ.२।० | सि.४।२० | सं.८।० | मं.१।१० | पि.३।१० | धा.६।०. | भ्रा.९।१० | भ.१३।१० |
| सि.२।१० | सं.५।१० | मं.१।० | पि.२।२० | धा.५।० | भ्रा.८।० | भ.११।२० | उ.१६।०० |
| सं.२।२० | मं.०।२० | पि.२।०० | धा.४।०० | भ्रा.६।२० | भ.१०।० | उ.१४।० | सि.१८।२० |

### योगिनीदशाभुक्तभोग्यानयनम्

जन्मर्क्षं त्रियुतं भक्तमष्टभिः शेषतः क्रमात्।
मङ्गलाद्याः सङ्कटान्ता वर्षवृद्ध्या दशाः स्मृताः।
ततो [illegible]तरीदशावद् भुक्तभोग्यवर्षानयनं कार्यम्।

### योगिनीशान्तिमन्त्रः

मङ्गला—ॐ ह्रीं मंगले मंगलायै स्वाहा।
पिङ्गला—ॐ ग्लौं पिंगले वैरिकारिणि प्रसीद फट् स्वाहा।
धान्या—ॐ श्रीं धनदे धान्यायै स्वाहा।
भ्रामरी—ॐ भ्रामरि जगतामधीश्वरि क्लीं स्वाहा।
भद्रिका— ॐ भद्रिके भद्रं देहि अभद्रं नाशय स्वाहा।
उल्का—ॐ उल्के ममरोगं नाशय जृंभय स्वाहा।
सिद्धा—ॐ ह्रों सिद्धे मे सर्वमानसं साधय स्वाहा।
सङ्कटा—ॐ ह्रीं संकटे ममरोगं नाशय स्वाहा।

### गरुडादिवर्गवशेन शुभाशुभज्ञानप्रकारः

नाम-ग्राम-दिशाऽऽद्यक्षरवशेन शरसंख्यान् संयोज्याष्टभिर्भक्त्वा एकादिशेषे क्रमशः सूर्य-चन्द्र-मंगल-बुध-शनि-वृहस्पति-राहु-शुक्राणां दशा ज्ञातव्याः। तत्र शुभग्रहाणां दशाः शुभदाः, पापग्रहाणाञ्च हानिकरा भवन्ति। स्वनामाद्यक्षरवशेन यो वर्गेशस्तस्माद्दिग्वर्गेशस्य शत्रुवर्गे पतनात्तद्दिशि यद्गृहं तन्न शुभप्रदम्। अतएव स्ववर्गमित्रवर्गदिग्गृहवासः शुभः, समवर्गदिग्गृहवासो मध्यमः, शत्रुदिग्गृहवासश्च हानिकर इति।

## गरुडादिवर्गचक्रम्

| वर्गेशः | गरुड | मार्जार | सिंह | श्वान | सर्प | मूषक | गज | मेष |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| शरसंख्या | ८ | ५ | ६ | ४ | ७ | १ | ३ | २ |
| वर्गनाम | अवर्ग | कवर्ग | चवर्ग | टवर्ग | तवर्ग | पवर्ग | यवर्ग | शवर्ग |
| वर्गदिक् | पू. | आ. | द. | नै. | प. | वा. | उ. | ई. |
| वर्गशत्रुः | सर्प | मूषक | गज | मेष | गरुड | मार्जार | सिंह | श्वान |
| वर्गसमः | सिंह | श्वान | सर्प | मूषक | गज | मेष | गरुड | मार्जार |
| वर्गमित्रम् | श्वान | सर्प | मूषक | गज | मेष | गरुड | मार्जार | सिंह |

## अंगस्फुरणफलम्

| स्थानम् | फलम् | स्थानम् | फलम् | स्थानम् | फलम् |
|---|---|---|---|---|---|
| मस्तके | भूमिलाभः | वक्षसि | सुखम् | कण्ठे | ऐश्वर्यम् |
| ललाटे | पदलाभः | हृदये | इष्टसिद्धिः | ग्रीवाधः | शत्रुभयम् |
| स्कन्धे | भोगः | कटिदेशे | प्रमोदः | पृष्ठे | पराजयः |
| भ्रूमध्ये | सुखम् | नाभौ | स्त्रीनाशः | मुखे | मधुरभोजनं |
| भ्रुवोः | सुखम् | कटिपार्श्वे | प्रीतिः | कपोलौ | व्यभिचारः |
| कपाले | शुभम् | आन्त्रिके | कोषवृद्धिः | बाहौ | प्रियलाभः |
| नेत्रयोः | धनाप्तिः | भगे | पतिसमागमः | बाहुमध्ये | धनागमः |
| नेत्रकोणयो | धनम् | कुक्षौ | प्रीतिः | वस्तिदेशे | उन्नतिः |
| नेत्रसमीपे | प्रियसमागमः | उदरे | धनम् | उरसी | वस्त्रलाभः |
| नेत्रपक्ष्मणि | राज्याप्तिः | लिंगे | स्त्रीसमागमः | जानुन्यो | भयम् |
| नेत्रपक्ष्मणोः | विजयः | गुदे | वाहनाप्तिः | जंघे | स्वामिप्राप्तिः |
| नेत्रापांगे | स्त्रीलाभः | वृषणौ | पुत्रलाभः | पादयोरुपरि | स्थानलाभः |
| नासिकयोः | सुखम् | ओष्ठे | इष्टसिद्धिः | पादतले | पराक्रमः |
| हस्ते | धनलाभः | हनौ | भयम् | पादयोः | हानिः |

**नेत्रस्फुरणफलम्**-नेत्रस्योर्ध्वं हरति सकलं मानसं दुःखजालं नेत्रोपान्ते दिशति च धनं नासिकान्ते च मृत्युः। नेत्रस्याधः स्फुरणसमकृत् संगरेऽभद्रहेतुःवामे चैतत्फलमविकलं दक्षिणे वैपरीत्यम्। एतानि फलानि पुरुषाणां ज्ञेयानि, स्त्रीणान्तु प्रोक्तवैपरीत्येन बोध्यानि।

| शतपदचक्रम् नक्षत्रवर्णाः | चु.चे. चो.ल. अश्विनी | लि.लु. ले.लो. भरणी | अ.इ उ.ए. कृतिका | ओ.व. वि.वु रोहिणी | वे.वो. क.कि मृगशिरा | कु.घ. ङ.छ आर्द्रा | के.को. ह.हि. पुनर्वसु | हु.हे. हो.ड. पुष्य | डि.डु. डे.डो. आश्लेषा | म.मि. मु.मे. मघा | मो.ट. टि.टु. पूफ. | टे.टो. प.पि. उफ. | पु.ष. ण.ठ. हस्त | पे.पो. र.रि. चित्रा |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| राशिः | मेष | मेष | मे१वृ३ | वृष | वृ२मि२ | मिथुन | मि३क१ | कर्क | कर्क | सिंह | सिंह | सिं१कं३ | कन्या | कं२तु२ |
| वर्णः | क्षत्रिय | क्षत्रिय | क्ष१वै३ | वैश्य | वै२शू२ | शूद्र | शू३वि१ | विप्र | विप्र | क्षत्रिय | क्षत्रिय | क्ष१वै३ | वैश्य | वै२शू२ |
| वश्यः | चतुष्पद | चतुष्पद | चतुष्पद | चतुष्पद | च२म२ | मनुष्य | म३ज१ | जलचर | जलचर | वनचर | वनचर | व१म३ | मनुष्य | मनुष्य |
| कुंजा | पूर्व | पूर्व | पूर्व | पूर्व | पूर्व | मध्य | मध्य | मध्य | मध्य | मध्य | मध्य | मध्य | मध्य | मध्य |
| हंसकः | अग्नि | अग्नि | अ१भू३ | भूमि | भू२वा२ | वायु | वा३ज१ | जल | जल | अग्नि | अग्नि | अ१भू३ | भूमि | भू२वा२ |
| योनिः | अश्व | गज | मेष | सर्प | सर्प | श्वांन | मार्जार | मेष | मार्जार | मूषक | मूषक | गो | महिष | व्याघ्र |
| योनिवैरः | महिष | सिंह | वानर | नकुल | नकुल | मृग | मूषक | वानर | मूषक | मार्जार | मार्जार | व्याघ्र | अश्व | गो |
| राशीशः | मंगल | मंगल | मं१शु३ | शुक्र | शु२बु२ | बुध | बु३च१ | चन्द्र | चन्द्र | सूर्य | सूर्य | सू१बु३ | बुध | बु२शु२ |
| गणः | देव | मनुष्य | राक्षस | मनुष्य | देव | मनुष्य | देव | देव | राक्षस | राक्षस | मनुष्य | मनुष्य | देव | राक्षस |
| नाडी | आदि | मध्य | अन्त्य | अन्त्य | मध्य | आदि | आदि | मध्य | अन्त्य | अन्त्य | मध्य | आदि | आदि | मध्य |

| शतपदचक्रम् नक्षत्रवर्णाः | रु.रे. रो.त. स्वाती | ति.तु. ते.तो. विशाखा | न.नि. नु.ने. अनुराधा | नो.य. यि.यु. ज्येष्ठा | ये.यो. भ.भि. मूल | भु.ध. फ.ढ. पूषा. | भे.भो. ज.जि. उषा. | खि.खु खे.खो. श्रवणा | ग.गि. गु.गे. धनिष्ठा | गो.स. सि.सु. शतभिषा | से.सो. द.दि. पूभा. | दु.थ. झ.ञ. उभा. | दे.दो. च.चि. रेवती |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| राशिः | तुला | तु३वृ१ | वृश्चिक | वृश्चिक | धनु | धनु | ध१म३ | मकर | म२कु२ | कुम्भ | कु३मी१ | मीन | मीन |
| वर्णः | शूद्र | शू३वि१ | विप्र | विप्र | क्षत्रिय | क्षत्रिय | क्ष१वै३ | वैश्य | वै२शू२ | शूद्र | शू३वि१ | विप्र | विप्र |
| वश्यः | मनुष्य | म३की१ | कीट | कीट | मनुष्य | म।।च३।। | चतुष्पद | च१।।ज२।। | ज२म२ | मनुष्य | म३ज१ | जलचर | जलचर |
| कुंजा | मध्य | मध्य | मध्य | अन्त्य | अन्त्य | अन्त्य | अन्त्य | अन्त्य | अन्त्य | अन्त्य | अन्त्य | अन्त्य | पूर्व |
| हंसकः | वायु | वा३ज१ | जल | जल | अग्नि | अग्नि | अ१भू३ | भूमि | भू२वा२ | वायु | वा३ज१ | जल | जल |
| योनिः | महिष | व्याघ्र | मृग | मृग | श्वान | वानर | नकुल | वानर | सिंह | अश्व | सिंह | गो | गज |
| योनिवैरः | अश्व | गो | श्वान | श्वान | मृग | मेष | सर्प | मेष | गज | महिष | गज | व्याघ्र | सिंह |
| राशीशः | शुक्र | शु३मं१ | मंगल | मंगल | बृह. | बृह. | बृ१श३ | शनि | शनि | शनि | श३बृ१ | बृह. | बृह. |
| गणः | देव | राक्षस | देव | राक्षस | राक्षस | मनुष्य | मनुष्य | देव | राक्षस | राक्षस | मनुष्य | मनुष्य | देव |
| नाडी | अन्त्य | अन्त्य | मध्य | आदि | आदि | मध्य | अन्त्य | अन्त्य | मध्य | आदि | आदि | मध्य | अन्त्य |

## पल्लीपतनफलबोधकचक्रम्

| स्थानम् | फलम् | स्थानम् | फलम् | स्थानम् | फलम् | स्थानम् | फलम् | स्थानम् | फलम् |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| शिरसि | राज्यलाभः | दक्षिणकर्णे | आयुर्वृद्धिः | स्तनयोः | सौभाग्यम् | स्कन्धयोः | विजयः | मुखे | मधुरभोजनम् |
| ललाटे | बन्धुदर्शनम् | वामकर्णे | लाभः | उदरे | भूषणाप्तिः | नाभौ | धनाप्तिः | केशान्ते | कष्टम् |
| भ्रूमध्ये | सम्मानम् | नेत्रयोः | धनलाभः | पृष्ठदेशे | बुद्धिनाशः | कटिभागे | पशुलाभः | गुल्फयोः | धनम् |
| उत्तरोष्ठे | धनहानिः | द.भुजे | पराक्रमः | जानुद्वये | शुभः | द.मणिबंधे | हानिस्तापः | द.चरणे | भ्रमणम् |
| अधरोष्ठे | ऐश्वर्याप्तिः | वामभुजे | राजभयम् | जंघयोः | शुभः | वा.मणिबंधे | कीर्तिनाशः | वा.चरणे | बन्धुनिग्रहः |
| नासाग्रे | रोगः | कण्ठे | शत्रुनाशः | हस्तद्वये | लाभः | हृदये | धनाप्तिः | पादान्ते मध्ये | स्त्रीनाशः |

**पल्लीपतनफलम्**- यदि पतति च पल्ली दक्षिणांगे नराणां स्वजनधनवियोगी लाभदा वामभागे। उदरशिरसि कण्ठे पृष्ठदेशे च मृत्युः करचरणहृदिस्था सर्वसम्पत्तिदा स्यात्।। एतानि फलामि पुरुषाणां, स्त्रीणान्तु वैपरीत्येन ज्ञेयानि। अनिष्टपल्लीपतने स्नात्वा तिलमाषादिदानं कुर्यात्, शिवालये दीपं दद्यात्, अष्टोत्तरशतसंख्यक "**नमः शिवाय**" इति मन्त्रं च जपेत्।

## जन्मराशेःसायुररिष्टदवर्षाणि

| राशिः | अरिष्टदवर्षाणि | आयु |
|---|---|---|
| मेषः | १।१३।५०।६२ | ७५ |
| वृषः | ३।६।८।३३।४६।५२।६३ | ७५ |
| मिथुनम् | ६।१०।११।१८।२४।५३।६३ | ७५ |
| कर्कः | १।१६।२२।२७।३५।४५।५५।६० | ७० |
| सिंहः | १।१०।१५।२५।४५।५१।६१ | [illegible] |
| कन्या | १।३।१३।२६।३३।४३ | ६८ |
| तुला | २।४।१६।२१।३३।४१।५१।६१ | ६५ |
| वृश्चिकः | ३।७।८।१३।३२।३५।४५।६३ | ७५ |
| धनुः | ३।१०।१२।१६।२३।३६।४७।६७ | ८५ |
| मकरः | २।१०।२२।३३।४२।५१।५६।६१ | १०० |
| कुम्भः | १८।३२ | ६१ |
| मीनः | १८।३३ | ६१ |

## जन्मलग्नात् सायुररिष्टदवर्षाणि

| राशिः | अरिष्टदवर्षाणि | आयु |
|---|---|---|
| मेषः | ४।११।१६।४४।५८ | १०० |
| वृषः | १।२८।३३।४४ | ६० |
| मिथुनम् | १।१०।१४।३८।५८ | ६४ |
| कर्कः | ५।२५।४०।४८।६२ | १०० |
| सिंहः | ५।१३।२८।३६।४८ | ६३ |
| कन्या | ४।१६।२३।३६।४५ | १०० |
| तुला | १५।३१।३५।५४।६२ | ७५ |
| वृश्चिकः | ११।२८।३८।५२।६२ | १०० |
| धनुः | २।८।१०।१८।३१।३८।४२।६७ | ८१ |
| मकरः | ५।१३।२७।३६।५७।६२ | ८५ |
| कुम्भः | २।२८।३३।४८।६४ | ९० |
| मीनः | १।८।१३।३६।४८ | ८३ |

## माहेन्द्रादियोगचक्रम्

### चैत्रवैशाखश्रावणभाद्रमाघफाल्गुनमासेषु

रवि- मा२ अ८ व१० शू८ मा२ शू२ अ६ शू८ व६ मा२ व४ अ२
चन्द्र- मा४ शू६ व१२ मा२ अ२ शू४ व२ मा६ व२२
मंगल- व४ शू२ मा६ व४ शू२ अ४ शू४ अ६ व४ शू२ व८ अ६ शू४ अ४
बुध- व४ अ४ व६ अ४ शू२ व४ मा२ व४ शू४ अ६ शू६ व८ अ६
बृह- अ६ शू४ व४ अ६ व६ अ४ व४ मा४ अ२ व८ अ४ शू४ अ४
शुक्र- शू२ अ१६ व८ अ२ शू२ व४ शू८ अ६ व८ अ२ शू२
शनि- शू४ व४ शू६ अ४ शू२ अ४ शू२ अ४ शू४ व४ अ४ व४ अ६ व४ अ२ शू२

### ज्येष्ठाषाढमासयोः

रवि-शू४ अ६ मा६ व६ शू२ व४ अ२ शू४ मा६ शू४ व६ शू२ मा४ व४
चन्द्र-व८ अ४ शू६ अ६ मा६ व६ अ८ व८ शू४ व४
मंगल-अ४ शू४ व४ शू२ अ४ व२ मा८ शू२ व६ अ४ व४ अ२ शू२ व२ अ६ व४
बुध-शू२ व४ अ८ व६ अ८ शू२ अ१० शू२ व८ अ६ शू२ अ२
बृह-अ२ शू२ अ४ व८ अ६ शू२ अ६ शू४ अ४ शू२ व६ अ६ शू४ व४
शुक्र-शू४ अ१४ व८ अ२ शू२ व४ शू२ अ६ शू६ अ८ मा२ शू२
शनि-शू४ व६ अ६ शू२ व४ अ४ शू६ व४ अ६ व४ अ४ शू२ अ२ व६

### आश्विनकार्तिकमार्गपौषमासेषु

रवि-मा६ व८ अ८ शू२ मा४ शू६ व४ अ४ व४ अ६ शू२ अ४ शू२
चन्द्र-अ४ व४ अ६ व२२ अ८ व६ अ४ व६
मंगल-मा२ व६ अ१० व६ शू२ व१२ अ२ शू२ अ६ व४ मा४ व४
बुध-शू४ अ४ मा६ शू४ व६ शू२ व८ अ४ व८ अ६ शू८
बृह-अ४ व६ अ८ शू४ व६ शू६ अ८ व४ अ६ व६ मा२
शुक्र-अ२ व६ शू६ व६ अ८ व१४ शू४ मा२ व६ मा६
शनि-मा४ शू४ अ८ शू८ अ४ शू२ अ१२ शू४ व६ मा२ शू६

**फलम्**-ज्योतिषां ग्रहशास्त्राणां सारमुद्धृत्य यत्नतः। क्रियते मिहिरेणेदं नराणां हितकाम्यया।। न वारतिथिनक्षत्रं न योगः करणन्तथा। शिवस्याज्ञां समासाद्य देवकार्यं विचारयेत्।। माहेन्द्रे विजयो नित्यममृते कार्यशोभनम्। वक्रे कार्यविनाशः स्याच्छून्ये च मरणं ध्रुवम्।। अयं रव्यादिवारेषु माहेन्द्रादियोगः प्रोक्तदण्डप्रमाणकालेन व्यतीतो भवतीति चक्रे विलोकनीयम्।